बे-नकाब-1

(दो दुनिया में भटकते हरेक
व्यक्ति की नकाबी कथा...)

नकाबी

Benakaab

(A fiction novel based on Life Of Many Unknowns)

Benakaab
Written in Gujarati

By **NAKAABI**
2022

First Edition: 1,000, 24th May, 2022
Second Edition : 5,000, 26th May,2022
Price: ₹ 90
Translated In Hindi By
NAKAABI SISTERS
First Edition :1000, 26th August,2022
Second Edition : 5000, 30th August,2022

© **NAKAABI,2022**

This Book Is A Work Of Fiction And Any Resembelance To Actual Persons, Living Or Dead, Events And Locales Is Purely Coincidental.

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced,stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, eBook or otherwise, without the prior written permission of the author.

Design By :
DHARAMVEER :
91763 64790/81488 36505

Printed By
Sudarsan Graphics, Chennai

प्रस्तावना

आज की दुनियाँ में एक कटु वास्तविकता देखने को मिलती है..........

व्यक्ति एक मुखडा अनेक....

और बहुत घटनायें सुनने में आती है... न्यूझ पेपर खोलो और दिखाई देती है...

▶ लड़की ने पप्पा का मर्डर कर दिया...

▶ टेन्शन के कारण लड़की ने स्युसाइड कर दिया...

▶ लड़की का ब्रेकअप होते लड़की डीप्रेशन में चली गई...

▶ संपूर्णतः शाकाहारी लड़की ने मांस पकाने की तैयारी के साथ शादी कर ली...

क्यों ऐसा होता है? क्यों लोग भटकते है? इसका उपाय क्या?

नोवेल में बहुत कुछ है....

▶ नवलकथा में वैश्विक धर्म जैनदर्शन के अनेक सिद्धान्त अति अद्भूत रीत से बताने में आये हैं....

▶ पाठक जुडे रहे, इसलिये इसमें मुख्य तत्त्व रखा है सस्पेन्स-रहस्य....

▶ समाजमें- संघ में हो रही अनेक कडवी वास्तविकता

भी इस पुस्तक में बतायी गयी हैं...

एक ही विनंति, **13** वर्ष से **45** वर्ष की उम्रवाले हरेक को ये नवलकथा खास पढ़ने जैसी हैं... दूसरों को भी पढ़ाने जैसी है। अपनी मान्यताओं के कारण अटकते जीवों को **100%** इसमें से मार्ग मिलेगा.... टूटी हुई दुनियां फिर से रंगों से परिपूर्ण होगी...

इसमें बहुत लोगों को बुरा भी लग सकता है, ऐसी शक्यता है। लेकिन **'कडवा'** भी सत्य कहना तो पड़ेगा ही.... इस वास्तविकता को ध्यान में रखकर यहाँ पेश किया है। बुरा लगानेवाले यदि अंतस्तल से खोज करेंगे, तो उनका नकाब भी उतर जायेगा, ऐसा विश्वास हैं....

बेनकाबी

ता. 18 मई **2022**.

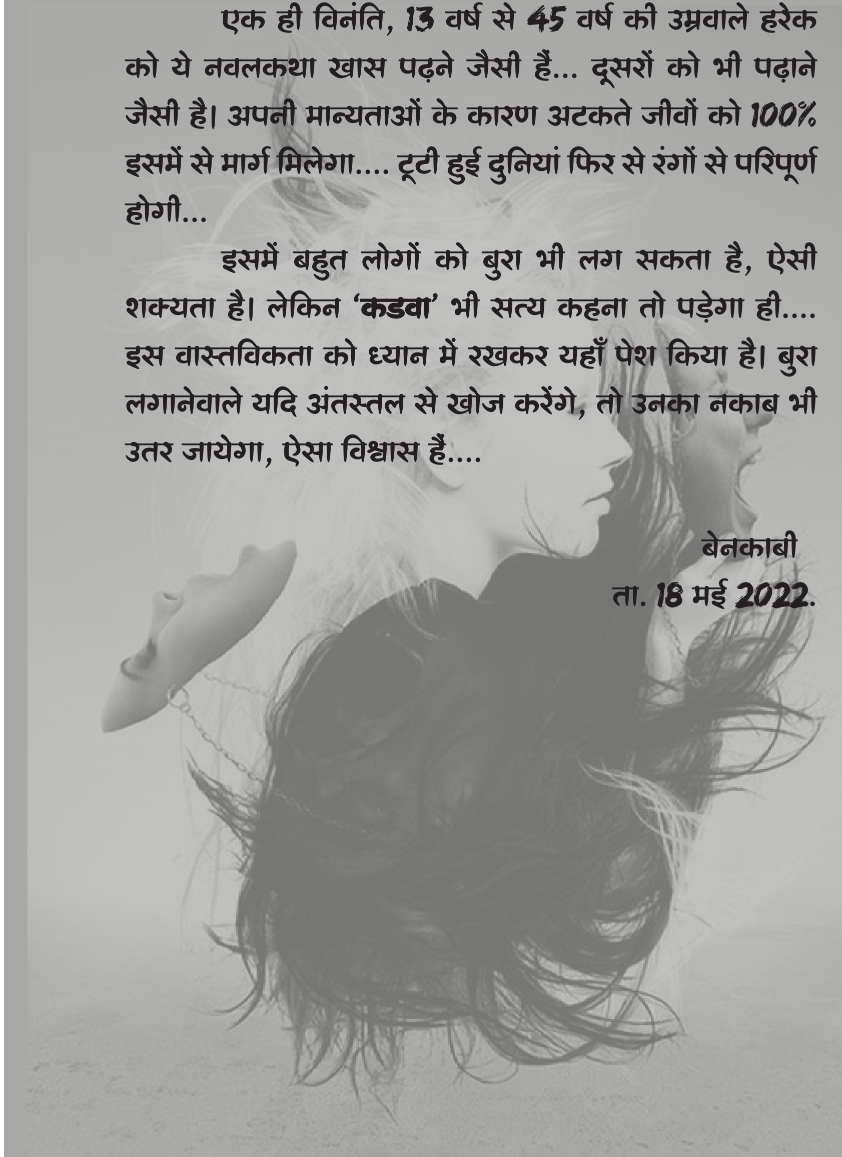

INDEX

अनुक्रमणिका

Prologue

Book 1

- Chapter 1 ..15
- Chapter 2 ..17
- Chapter 3 ..19
- Chapter 4 ..21
- Chapter 5 ..22
- Chapter 6 ..24
- Chapter 7 ..26
- Chapter 8 ..28
- Chapter 9 ..30
- Chapter 10 ..32
- Chapter 11 ..34

Book 2

- Chapter 1 .. 37
- Chapter 2 .. 39
- Chapter 3 .. 41
- Chapter 4 .. 44
- Chapter 5 .. 47
- Chapter 6 .. 50
- Chapter 7 .. 53
- Chapter 8 .. 55
- Chapter 9 .. 57
- Chapter 10 .. 61
- Chapter 11 .. 64

Book 3

- Chapter 1 .. 68
- Chapter 2 .. 72
- Chapter 3 .. 75
- Chapter 4 .. 79
- Chapter 5 .. 83
- Chapter 6 .. 85
- Chapter 7 .. 88
- Chapter 8 .. 90
- Chapter 9 .. 94
- Chapter 10 .. 97
- Chapter 11 ..100
- Chapter 12 ..103

Book 4

- Chapter 1 .. 107

Chapter 2 ..109
Chapter 3 .. 111
Chapter 4 ..115
Chapter 5 ..119
Chapter 6 .. 121
Chapter 7 ..126
Chapter 8 ..130
Chapter 9 ..133
Chapter 10 ..137
Chapter 11 ..141

Book 5

Chapter 1 .. 144
Chapter 2 .. 147
Chapter 3 .. 150
Chapter 4 .. 154
Chapter 5 .. 161
Chapter 6 .. 163
Chapter 7 .. 166
Chapter 8 .. 169
Chapter 9 .. 171
Chapter 10 .. 174
Chapter 11 ..177
Chapter 12 ..181
Chapter 13 ..185

Book 6

Chapter 1 .. 191
Chapter 2 .. 196
Chapter 3 .. 200
Chapter 4 .. 204
Chapter 5 .. 209
Chapter 6 .. 212
Chapter 7 .. 216
Chapter 8 .. 219
Chapter 9 .. 224
Chapter 10 .. 228
Chapter 11 .. 232
Chapter 12 .. 238

Book 7

Chapter 1 .. 243
Chapter 2 .. 247
Chapter 3 .. 250
Chapter 4 .. 253
Chapter 5 .. 256
Chapter 6 .. 260
Chapter 7 .. 264
Chapter 8 .. 269
Chapter 9 .. 273
Chapter 10 .. 290
Chapter 11 .. 310
Chapter 12 .. 318

Book 8

Chapter 1 .. 330
Chapter 2 .. 341
Chapter 3 .. 347
Chapter 4 .. 351
Chapter 5 .. 357
Chapter 6 .. 368

Book 9

Chapter 1 .. 377
Chapter 2 .. 384
Chapter 3 .. 387
Chapter 4 .. 392
Chapter 5 .. 400
Chapter 6 .. 409
Chapter 7 .. 414
Chapter 8 .. 418
Chapter 9 .. 423
Chapter 10 .. 434
Chapter 11 .. 439
Chapter 12 .. 441

Book 10

Chapter 1 .. 446
Chapter 2 .. 450
Chapter 3 .. 452
Chapter 4 .. 464
Chapter 5 .. 468
Chapter 6 .. 472
Chapter 7 .. 475

BE-NAKAAB

यदि सत्सङ्गनिरतो, भविष्यसि भविष्यसि
अथासज्जनगोष्ठिषु- पतिष्यसि पतिष्यसि ।।
– योगशास्त्र टीका

यदि आप सज्जनों के संग में तल्लीन होंगे,
तो
जीवन में कुछ होगा, कुछ बनोगे...
यदि आप असज्जनों के संग में पडोंगे,
तो आप का भी पतन होंगा...

दुनियाँ में गुरू की शक्ति ऐसी है,
कि जो भलभली गुरू-भारी
वस्तुओं को लघु कर सकती है...
और भलभली लघु-हल्की
वस्तुओं को गुरू कर सकती हैं...

इसलिए ही कहा गया है...

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूर्साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
– स्कंध पूराण,
महर्षि व्यास

जीवन में जब चारों तरफ हार ही दिखे,
तब हार को प्रभु का हार मानकर गले में
पहन लेना चाहिये
क्योंकि ऐसी हार में प्रभु ही हमारे
हृदय के
सबसे ज्यादा समीप होते हैं...

याद रखना,

करो रक्षा विपदमांही, न एवी
प्रार्थना मारी....
विपदथी डरूं न को दी,
बस एवी प्रार्थना मारी...

Prologue

2/3/2020 **I.S.T. - 12.30** Khetwadi, Mumbai

आत्मकथा अति भयंकर होती है....!

आज तारीख के अनुसार मेरे सच्चे जीवन के 8 वर्ष संपूर्ण हो रहे है। प्रभु ने मैंने सोचा उससे बहुत-बहुत ज्यादा दिया है। सबसे ज्यादा तो मेरे गुरुदेव मुझे दिये हैं।

आज सुबह मैं जैनधर्म का ग्रंथ **आचारांग सूत्र** पढ़ रही थी। उसमें आये हुये एक पद ने मुझे ये आत्मकथा लिखने प्रेरणा की है।

"अट्टे लोए..."

संपूर्ण जगत दुःखों से व्याप्त हैं।

WHO के हाल ही *2020* में हुये सर्वे के ओनुसार, दुनिया के *6-7%* यानी कि *300* मिलियन लोगों को कोरोना नामक महाभयानक वायरस होनी की शक्यता है, यदि उसकी कोई दवा न मिली तो.....

अभी के ओफिशियल रिपोर्ट के अनुसार *3000* लोग इस कोरोना नामकी बीमारी से इस दुनियाँ से नामशेष हो गये हैं और *1,00,000* लोगों में ये बीमारी संक्रमित हो चुकी हैं।

भारत मे भी इस वाईरस के *30-35* केस आ चुके हैं।

छोटे-बड़े सब लोगों में एक अकल्प्य भय की छाया व्याप्त हो

चुकी है और एक-दूसरे से मिलने और एक दूसरे को स्पर्श करने में भी लोग कतराते हैं।

लेकिन आज मुझे इस कोरोना वायरस की बातें नहीं करती है। मुझे बात करनी है एक ऐसे भयानक रोग की जो कोरोना वायरस को भी छोटा साबित कर दें। उसका नाम है- डिप्रेशन।

WHO के रिपोर्ट अनुसार **2019** में **264** मिलियन यानी कि **24** करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त थे, जिसमें से **8** लाख लोगों ने अपना जीवन समाप्त कर दिया था। उन्होंने स्युसाइड कर लिया था। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उसमें **60-65%** लोग **15-24** वर्ष की उम्रवाले थे।

क्यों होता है ऐसा?

''अट्टे लोए..''

हमारे भगवान महावीर ही कहकर गये हैं।

आज से **12** वर्ष पहले मेरी भी ये ही हालत थी। ८ लाख लोगों में मेरा भी नंबर लगनेवाला था। लेकिन,

प्रभुने मेरे लिये कोई अलग ही पंथ ढाला था।

ये कथा लिखने के पीछे मेरे **2** कारण हैं।

पहला ये कि मेरी मम्मी की मौत सिर्फ दो दिन पहले ही ब्रेस्ट केन्सर से हुयी। दूसरा ये कि मैंने बहुत लोगों को ऐसा बोलते हुये देखा है ''मेरे अंदर इतने ज्यादा पाप भरे हुये है, तो मैं धर्म के पंथ पर किस तरह प्रयाण कर सकता हूँ।''

मुझे उन लोगों से कहने की इच्छा होती है कि ''आप मेरी आत्म-कथा पढ़ो। आपका **100%** कॉन्फीडेन्स आ जायेंगा कि मैं सिर्फ भगवान के मार्ग पर चल ही सकता हूँ ऐसा नहीं, लेकिन दीक्षा भी ले सकता हूँ।'' मेरे से खराब लाईफ शायद ही किसी की होगी और इसलिये ही मैं मेरे हरेक प्रसंग थोडे विस्तार से लिखूँगी।

बहुत सारे लोग शायद मेरी स्पष्टता से दंग रह जायेंगे, लेकिन सर्वस्व निवेदन करके, स्पष्टता के साथ निवेदन करके आजकी यंग-जनरेशन में ''हम भी ये कर सकते हैं...'' ये भावना जगानी अति-आवश्यक हैं।

मैं शुरुआत के थोड़े पन्नों में मेरे भोगवाद का निरूपण करूंगी। **उपमितिभवप्रपंचा** कथा नाम के अद्भुत ग्रंथ के रचयिता **1100** वर्ष पहले हुये सिद्धर्षि गणी ने शुरुआत की पहली प्रस्तावना के डेढ़ श्लोक में कहा हैं।

न चादौ मुग्धबुद्धिनां, धर्मो मनसि भासते ||
कामार्थकथनात्तेन, तेषामाक्षिप्यते मन: ||**49**||
आक्षिप्तांस्ते तत: शक्या, धर्मं ग्राहयितुं नरा: ||**50-1/2**||

कोई भी नये व्यक्ति को पहले ही धर्म का आदेश देना शक्य नहीं है, क्योंकि कि उन्हें ये पसन्द आयेगा ही नहीं और इसलिये सबसे पहले उनके मन को आक्षिप्त करने के लिये उन्हें अर्थ काम की बातें कहनी अति-जरूरी हैं। फिर व्यक्ति को धर्म कि जो एक जीवनरीति है, ये बता सकते है।

बस मैं भी इसी बात का अनुसरण कर रही हूँ। शायद बहुत सारे लोगों को मेरा स्पष्ट लेखन नहीं भी पसंद आये, लेकिन मैं उसके लिये पहले से ही मिच्छामि दुक्कडम् मांग लेती हूँ। मेरी भावना समझकर और काव्य धर्मग्रन्थों में भी इसी प्रकार का निरुपण होने से आप सब इस वस्तु को स्वीकारोंगे ऐसी आशा है। मार्गदर्शन करने के लिये भी विद्वान लोगों को दुनियाँ का ये चितार जानना अति आवश्यक है... बस ये इसीका प्रयास है।

मात्र सबसे एक नम्र निवेदन

''ये कथा संपूर्ण पढ़ना, फिर ही कोई विमर्श करना...''

तो बहुत हो गया। अब स्टोरी...

ये मेरे जीवन की उस दिन की घटना है कि...

....जिस दिन मुझे हकीकत पता चली कि.....

Chapter - 1

14/4/2007 **I.S.T. - 22.30** Signature club, Mumbai

राग अति भयंकर होता है.....।

आज पहली बार मम्मी ने मुझे पार्टी देने की छूट दी। 5 लड़कों और 5 लड़कियों के ग्रुप के साथ मैं आज मुम्बई की प्रसिद्ध पार्टी होटल में गयी थी।

रति के मुँह पर भी सलवटें पड़ें इस प्रकार छोटे-छोटे कपड़ें में मैं सज्ज थी। आज मेरा 13 वाँ जन्मदिन था । एक तरह से मेरे 13 वर्ष बहुत अच्छी तरह से बीते थे। तो भी मैं आज सबसे ज्यादा खुश थी ।

मेरे मित्रों ने मेरे लिए बहुत जोरदार तैयारी की थी और जोरदार सरप्राइज दिया था। मेरे रूप के कारण मेरे पुरूष मित्र ज्यादा होने से और सभी मुझे चाहने वाले होने से अभी मैं उनके साथ बॉलिवुड के प्रसिद्ध गीत पर डांस कर रही थी ।

मुझे नाचने का बहुत शौक था और डांस करते समय खराब चेष्टयें करनी ये मुम्बई कल्चर में कॉमन था। इसलिये बिना विरोध किये मै अपने चारित्र को लड़कों को लूटने दे रही थी।

नाच-गाने में कितना समय बीत गया उसका मुझे ख्याल ही नही रहा। इसलिये जब मैने घड़ी देखी तो 11.00 बजे थे ।

''मैं जाती हूं।'' कहकर मैं निकलने गयी। लड़कों ने मुझे रोका।

''नहीं, नहीं। अभी तो इतनी रात बाकी है..... बाद में जाना ना.... इन्जॉय।''

''नहीं...मुझे 11.00 बजे घर आने का टाइम दिया हुआ है। यदि मैं लेट हो गयी तो..'' मुझे मेरे भाई का लाल चेहरा याद आया।

''नहीं। आज कुछ नही चलेगा। आज तो तूं बर्थ-डे गर्ल है....'' वो सब मुझे उठाकर वापस अंदर ले गये। वापस वो ही डांस!

11.45 हो गये। मेरा टेन्शन बढ़ता गया। मेरा बड़ा भाई कि जो मुझसे 10 वर्ष बड़ा था, उसका गुस्सा मुझे पता था।

''बस! नाऊ इझ द लिमिट। अब ज्यादा नहीं।'' कहकर मैं बाहर निकल गयी।

एक लड़का मुझे बाईक पर छोड़ने आया।

Chapter - 2

15/4/2007 I.S.T. - 00.01 Mumbai Central

क्रोध अति भयंकर होता है.....।

मैने 100 फीट दूर से मेरे घर की लाईट देखी । अभी भी वह चालू थी । अंतिम बार लड़के ने मुझे गले लगाया और मैं घर की ओर मुड़ी। लड़का बाईक लेकर चला गया ।

अभी भी मेरा मन डांस में ही था और मुँह भी बॉलिवुड के गीत ही गुनगुना रहा था। मैं मेरी बिल्डिंग के नीचे पहुंची।

आज के दिन का आनंद अवर्णनीय था। इसी पॉजिटिव मूड में मैं तीसरे माले में रहे हुए 350 स्क्वेयर फीट के घर में पहुंची। मुझे आज के लिये मम्मी ने घर की चाबी दे रखी थी, जिससे यदि मैं लेट हो जाऊं तो अपने आप दरवाजा खोलकर अंदर आ सकुं।

दरवाजे में चाबी डालकर मैने चाबी घुमाई। लॉक खुल गया, लेकिन दरवाजा नही खुला। मैने दरवाजे को जोर से धक्का दिया। दरवाजा खुल गया। लेकिन सामने का दृश्य देखकर मेरे चेहरे का रंग उतर गया।

सामने मेरा 24 वर्ष का भाई खड़ा था।

''ये घर आने का टाईम है?'' बर्थ-डे वगेरे विश किये बिना ही सीधा ही ये प्रश्न मुंह पर अमाप गुस्से के साथ भाई ने पूछा।

भाई का डर बेहद होने से मैं प्रत्युतर नही दे सकी। मैने देखा कि मम्मी अभी तक जाग रही थी और एक कोने में बैठकर रो रही थी।

''मम्मी! क्या हुआ? क्यों रो रही हो?'' भाई के सामने से मुंह फेरकर मम्मी से मैंने पूछा।

''हे-''गाली देकर भाई ने मुझे बुलाया।'' पहले मेरी बात का जवाब दे। ये घर आने का टाइम है?'' गाली सुनकर मैं सकपका गयी।

''मेरी जिंदगी है....तूं इसमें इन्टरफेयर करनेवाला.....'' मैं वाक्य पूरा करूं उसके पहले तो मेरे पूरे शरीर को हिला दे इतना जोरदार चांटा मुझे पड़ा।

मैं जमीन पर गिर पड़ी। मेरे मुँह से खून निकलने लगा।

मम्मी मेरे पास आने लगी, लेकिन मेरी बड़ी बहन ने उन्हे रोक लिया।

''निकल जा.... इस घर से....तूं निकल जा.... अब मैं तुझे नही रख सकता।'' भाई ने मेरे सामने मेरी भरी हुई बेग लाकर पटक दी।

''तूं तेरी मम्मी से थोड़ी भी अलग नही हैं।'' इतना कहकर भाई ने मम्मी का इतिहास खोल दिया। मम्मी आश्चर्य से देखती रही।

ये सुनकर मुझे मेरे भूतकाल में घटी हुयी घटनाऐं याद आती गयी।

Chapter - 3

19/7/2001 I.S.T. 10.00 St. Xaviers School, Mumbai

अभाव अति भयंकर होता है.....!

मेरे आस-पास बैठे हुए लड़के-लड़कियां बहुत आवाज कर रहे थे। कोई हंस रहा था, तो कोई रो रहा था। मैं गुमसुम बैठी हुई थी।

''तेरा नाम क्या है?'' एक लड़के ने आकर मुझे पूछा।

''अपेक्षा...'' धीरे से, नही बोलने की इच्छा होते हुए भी मैंने कहा।

''हाय आई एम संकेत।''

मैने मम्मी के पास जिद्द करके स्कूल बदलवायी थी, और इसलिये मेरे लिये सभी नये थे। पहले मम्मी ने मुझे सरकारी स्कूल में डाला था, लेकिन मुझे वहाँ लोगों के साथ जमा नही, इसलिये परिस्थिति अच्छी नही होते हुए भी मम्मी ने बहुत मेहनत से पैसा लाकर मुझे मुम्बई की अच्छी स्कूल में भर्ती किया था।

परफॉर्मंस अच्छा होने के कारण मेरी मार्कशीट देखकर इन्टरव्यु में ही मुझे प्रिन्सिपल ने हां कह दिया था और इसलिये 2ND क्लास में मेरी प्लेसमेंट हुयी थी। नया-नया होने के कारण मुझे कम जम रहा था।

''गुड मॉर्निंग टीचर!'' कहते हुये सभी बच्चे खड़े हो गये। मैं भी खड़ी हो गयी।

''गुड मोर्निंग स्टुडन्ट्स! प्लीझ! सीट डाऊन....''

टीचर के कहने के बाद हम सब बैठे। ये स्कूल अपने डिसिप्लीन के लिए बहुत प्रसिद्ध थी। इंग्लिश में बात करना अनिवार्य था।

टीचर फ्लुअंट इंग्लिश में बोलने लगी।

''बच्चो! आज मैं तुम सबकी हेन्डबुक चैक करूंगी.... मैने तुम सबको कल कहा था कि तुम सब केलेन्डर भरकर लाना। सभी ने भरा ही होगा। मैं अभी रोल नम्बर से बुलाऊँगी। तब तुम अपने केलेन्डर लेकर आगे आ जाना।''

मैने कल ही मम्मी से कहा था और मम्मी ने भरा भी था।

मैने मेरा केलेन्डर निकाला। मैने देखा सब जगह भरी हुई थी, लेकिन 'पप्पा' के नाम की जगह खाली थी।

''पप्पा।''

मुझे पप्पा नाम की वस्तु बचपन से नही मिली थी। मैं मेरे पिता को जानती नही थी। सब अच्छा हो और टीचर मुझे डांटें नही उसकी भगवान के पास मैने प्रार्थना की। मि. लोयला बहुत स्ट्रीक्ट थी, ऐसा सब कहते थे।

एक के बाद एक सभी के नम्बर और नाम बोलने में आये।

''नं. **23**, अपेक्षा जैन......''

मैं खड़ी हुई और टीचर के पास गयी। मैने केलेन्डर दिया।

''तुम्हारे पप्पा का नाम क्या है?'' सभी सुन सके इस प्रकार टीचर ने पूछा। सभी मेरी ओर देख रहे थे।

''नहीं है....'' मैने कहा। मेरी आँखों में आँसू थे। टीचर ने आगे कुछ नही पूछा।

Chapter - 4

19/7/2001 I.S.T. 16.00 St. Xaviers School, Mumbai

जिज्ञासा अति भयंकर होती है.....।

मम्मी मुझे स्कूल में लेने आयी। स्कूल में पूरा दिन रोने में ही बीता।

मेरी सूजी हुयी आंखों को देखकर मम्मी ने मुझे पूछा।

''क्यों, आज बहुत रोयी थी?''

तब मैने कुछ भी जवाब दिया नही। बस में बैठकर हम घर गये।

शाम को खाना खिलाते समय मम्मी से मैने पूछा,

''मम्मी! मेरे पप्पा कौन है?''

दो क्षण के लिये मम्मी मुझे एकटक देखती रही।

''मम्मी! आज स्कूल में टीचर ने मुझे पूछा था, लेकिन मैं कुछ भी कह नही सकी इसलिये ही मैं रो रही थी। मम्मी की आंखों में भी पानी की बूंदे तैरती हुई मैंने देखी।

''तेरे पप्पा.... पप्पा का नाम सुरेश है।''

''वे अब कहां है?''

''वे हमसे बहुत दूर चले गये है। इतने दूर कि इस जन्म में तो हम उनके पास नही जा सकते।'' मम्मी संपूर्ण रीत से टूट गयी थी। मैं भी रो रही थी।

मम्मी ने मुझे बाँहों में भर लिया।

Chapter - 5

24/11/2001 I.S.T. 8.00 Mumbai central

दूरी अति भयंकर होती है....!

पप्पा सुरेशभाई जैन की आज श्रद्धांजलि तिथि थी। सुबह मम्मी सबके लिये और पप्पा के फोटो को चढ़ाने के लिए प्रसाद में सीरा बना रही थी।

10 बजे भाई-बहन, मम्मी और मैं पूजा करने वाले थे। प्रतिवर्ष ये होता। परंतु मुझे पहली बार इतनी उत्सुकता थी, क्योंकि मुझे थोड़े महिने पहले ही पता चला की पप्पा को क्या हुआ था।

''पप्पा से मिलने का मौका कल है।'' ऐसा मम्मी ने मुझे कल कहा था। आज मैने स्कूल से छुट्टी ली थी।

10 बजे... रोती हुयी आंखों से मेरे बड़े भाई ने पप्पा का फोटो दीवार से नीचे उतारा। मेरे से 8 वर्ष बड़ी बहन भी रो रही थी। मेरी आंखों में भी गंगाजल तैर आया।

सभी ने बारी-बारी उनके फोटो का दूध से प्रक्षालन किया और फिर कपड़े से फोटो को साफ किया। उनके सामने धूप-दीपक-फूल वगेरे की पूजा की। मैं चुपचाप ये सब देख रही थी। पप्पा न होने का दुःख मुझे अनुभव हो रहा था। प्रसाद लेने के लिये मम्मी अंदर गयी।

मेरा मन भर जाने से मैं पप्पा का फोटो लेकर अपनी छाती से लगाने लगी।

''हे अपेक्षा! ये तेरे पप्पा नही है.... फालतू नाटक छोड़ दे।'' मेरे भाई ने मेरे हाथ से फोटो खींचते हुये कहा। मुझे धक्का लगा।

''क्या मम्मी झूठ बोल रही थी? नही... हो ही नहीं सकता। ये मेरे ***पप्पा ही है।''*** मैने फिर से मेरे भाई के हाथ में से फोटो खींचने का प्रयास किया। लेकिन वह बहुत शक्तिशाली होने के कारण मैं निष्फल हो गयी।

बाहर आकर मुझे रोती हुई देखकर मम्मी ने मुझसे सब जानकर भाई को बराबर मैथीपाक खिलाया। सख्ती के साथ वापस ऐसा नही करने की चेतावनी दी।

भाई और बड़ी बहन मुझे विचित्र आंखों से देखते रहे। मैने आंखे बंद कर दी।

Chapter - 6

25/12/2001 I.S.T. 18.00 Mumbai Central

रहस्य अति भयंकर होता है....!

क्रिसमस की गिफ्ट के लिये मैं मम्मी के पास जिद्द कर रही थी। सुबह पार्टी के लिये जब मैं स्कूल गयी थी, तो सब मुझे अपने-अपने मम्मी-पप्पा ने क्रिसमस के लिये दिये हुये गिफ्ट दिखा रहे थे। सिर्फ मेरे पास ही गिफ्ट नही थी और इसलिये घर आकर मैं दिनभर मम्मी के पास बार्बी डॉल लाने की जिद्द करती रही।

आज मम्मी के एकदम ''ना'' कहने पर भी मैं नही मानी। मैने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। आज बड़े भाई-बहन स्कूल की ट्रीप में नैनीताल घुमने गये हुये थे। इसलिये मैं और मम्मी घर पर अकेले ही थे।

''देखो अपेक्षा! शाम के 6 बज गये है। तुमने सुबह से कुछ भी खाया नही है। मैने कहा ना कि पहले तू खा ले, फिर मैं तुझे लाकर दूंगी....

सांताक्लोझ तुम्हें खुद देने आयेगें।'' मैं मानी नही।

मम्मी रोने लगी। मेरे मन में कुछ हलचल हुई। कठोरता की जगह करूणा ने स्थान ले लिया। मैने मम्मी के पास उनके आँसू पोंछे और उनकी गोद में बैठकर खाने लगी।

धीरे-धीरे खाते हुये 7 बज गये। मैं अंतिम कौर खा रही थी और उसी समय किसी ने घर की बेल बजायी।

रोकेट की तरह मैं मम्मी की गोद से उठाकर दौड़ी और मैने दरवाजा खोला। सामने एक 30-40 वर्ष का भाई खड़ा था। उसकी दाढ़ी-मूँछ बड़ी-बड़ी थी। उसने मुझे अपने हाथों में उठाया और दरवाजा बंद कर दिया। मम्मी उस भाई को देखकर घबरा गयी।

''आप यहां?''

''हां! आज मेरी बेटी को मुझे बार्बी डॉल देनी है....'' कहकर एक थैली में से एकदम नयी बार्बी डॉल निकालकर उस भाई ने मुझे दी। मैं उसके साथ खेलने में मशगुल थी।

मेरी मम्मी और वो भाई कुछ बात कर रहे थे, लेकिन मेरा ध्यान तो बार्बी डॉल की तरफ ही था।

मम्मी की आवाज थोड़ी जोर से होते ही मैने मम्मी की ओर देखा। मम्मी उस भाई को कह रही थी वापस कभी इस घर में पैर रखने की कोशिश मत करना....''

वो भाई वहां से निकल गया। वापस उस भाई को मैने कभी भी नही देखा।

Chapter - 7

31/12/2001 I.S.T.24.00 Mumbai Central

एकान्त अति भयंकर होता है.....।

पटाखे फूटने के कारण मैं अचानक रात को 12.00 बजे उठ गयी। नये वर्ष की शुभकामनाएं पूरे बॉम्बे में गूंज रही थी।

मैं मम्मी के बाजू में ही सोयी थी, लेकिन आज मम्मी भी पास में-बाजू में नहीं थी। मैं बहुत डर गयी और मम्मी के नाम की आवाजें लगाने लगी। लेकिन पटाखों की आवाज के सामने मेरी आवाज दब गयी।

मैं पलंग पर से नीचे उतरी और मम्मी को पूरे घर में ढूंढने लगी। भाई-बहन ट्रीप से वापस आये नही थे। एक बार ढूंढने पर भी मम्मी मुझे मिली नही।

मैं फिर से ढूंढने लगी। मुझे हमारे बाथरूम की लाईट चालू दिखाई दी। मैने बाथरूम का दरवाजा खोला। उसमें मुझे मम्मी दिखाई दी। मम्मी कही जाने के लिये छोटे कपड़ों में तैयार हो रही थी। ,

''मम्मी! तुम कही जा रही हो?''

अचानक मम्मी मुझे आयी देखकर चौंक गयी। ''तूं अभी यहां क्या कर रही है? क्यों सोयी नहीं?'' मम्मी के सिर पर पसीने की बूंदे उभरती मैने देखी।

''पटाखों ने मेरी नींद खराब कर दी, लेकिन तू कहां जा रही

है?'' वापस मम्मी से मैंने पूछा। अपना मेक-अप छोड़कर मम्मी मुझे लेकर रूम में आयी। लाईट बंद करके मुझे बेड पर सुलाने लगी। लोरी गाते-गाते रोने जैसी आवाज में मम्मी मुझे कहती रही।

''मैं कही भी नही जाती तुझे छोड़कर.... मैं कहाँ जाऊँ?''

मुझे मम्मी का वात्सल्य भरा स्पर्श मिला। मुझे नींद आ गयी। सुबह उठकर मैने देखा तो मम्मी मेरे पास सोयी हुई थी।

Chapter - 8

14/3/2003 I.S.T. 10.00 Bhatia Hospital, Mumbai

रोग अति भयंकर होता है.....।

हॉस्पीटल के चक्कर काट-काटकर मम्मी और मैं थक गयी। 3 महिने से सतत मैं बुखार से तप रही थी। तरह-तरह के टॅस्ट करवाये, लेकिन कुछ भी पकड़ में आया नहीं।

अंत में बड़ी हॉस्पीटल भाटिया में जाने का निश्चय किया। आर्थिक परिस्थिति अच्छी नही थी, तो भी माँ के लिए अपनी संतान से ज्यादा क्या होता है ?

दो दिन पहले ही मेरी 2 घंटे की बड़ी टेस्टिंग हुयी थी और उसकी रिपोर्ट के साथ हम डॉक्टर से मिलने के लिए लाईन में खड़ें थे।

''तूं ठीक हो जायेगी हां!'' मम्मी मुझे आश्वासन दे रही थी। मेरी फाइनल एक्जाम एकदम नजदीक थी और तैयारियां सब बाकी थी। स्कूल में फर्स्ट आनेवाली मुझे इसका भी टॅन्शन था।

''पेशन्ट नम्बर 12....'' आवाज आयी और हम दोनों डॉक्टर के केबिन में गए। मुझे चेयर पर बैठे डॉक्टर बहुत अच्छे लगते, क्योंकि मैं उनसे दो बार मिली थी और मुझे दोनों बार डॉक्टर ने चॉकलेट दी थी।

''हेल्लो अपेक्षा! कैसी हो? अच्छी हो क्या?'' डॉक्टर ने मुझे पूछा। मैने मुंह हिलाकर ना कहा।

''रिपोर्ट्स लाये हो?'' मेरी मम्मी की ओर देखकर डॉक्टर बोले।

मम्मी ने रिपोर्ट्स डॉक्टर के हाथ में दिये। ५ मिनट तक डॉक्टर ने बराबर रिपोर्ट्स देखे। फिर डॉक्टर ने बेल बजायी और मुझे केडबरी चॉकलेट दी।

नर्स! अंदर आयी। ''बेटा! तू बाहर जायेगी? मुझे तेरी मम्मी के साथ बात करनी है। मुझे विनंती करते हुए डॉक्टर ने कहा।

केडबरी मिल जाने के बाद ना कहने की बात ही नही थी। नर्स के साथ मैं बाहर गयी।

''नर्स ! प्लीझ कम हीयर।'' एक दूसरे डॉक्टर ने नर्स को बुलाया। मुझे अंदर नही जाने की सुचना देकर नर्स वहां से निकल गयी।

मेरी चॉकलेट पूरी हो गयी, लेकिन मम्मी बाहर नही आयी, इसलिए मुझे दरवाजे पर कान लगाकर अंदर की बातें सुनने की उत्सुकता हुई।

''अपेक्षा को एक ''जेनेटिक डिसोर्डर'' हुआ है। उसी कारण बुखार आ रहा है। मैं दवा दे रहा हूं, वो आप उसे देते रहना। बुखार क्युरबल है। ज्यादा चिंता की बात नही है।'' ऐसा मुझे सुनाई दिया।

''जेनेटिक डिसोर्डर'' क्या होता है ये मुझे समझ में आया नहीं। पैरों की आवाज सुनकर मैने मेरा मुंह पीछे किया और बाहर के सोफे पर बैठ गयी। मम्मी बाहर आयी। मम्मी के चेहरे पर मुझे चिंता दिखाई दी।

Chapter - 9

26/7/2003 **I.S.T. 22.30** Mumbai Central

संक्लेश अति भयंकर होता है.....।

''क्योंकि सास भी कभी बहु थी'' सिरियल चालू हो रही थी। मैं टी.वी. के सामने दूसरे तीन व्यक्ति के साथ आंखे फाडकर बैठी थी।

''ठक....ठक....ठक...।'' दरवाजे पर किसी ने खटखटाया। हम चारों में से कोई भी खड़ा हुआ नही। दरवाजे पर आवाज बढ़ी। मम्मी ने कंटाले से खड़े होकर दरवाजा खोला।

मम्मी की चीख ने हम सब का ध्यान दरवाजे की तरफ खिचा। मैं बहुत घबरा गयी।

मैने दरवाजे की तरफ देखा तो पता चला कि एक दारू पीया हुआ व्यक्ति मम्मी को खिंच रहा था। वो बकबक कर रहा था।

''रेशमा! तुझे मेरे साथ आना ही पड़ेगा।''

मम्मी उसके हाथ से छूटने का प्रयास कर रही थी, लेकिन उसका हाथ बहुत मजबूत था।

''डॉली! अपेक्षा और तू अंदर चले जाओ....'' भाई ने हमसे कहा। साईड में पड़ी हुयी हॉकी की स्टीक भाई ने हाथ में ली। हम दोनों अंदर चले गये। रूम को आधा बंद करके हम बाहर चल रही घटनाओं को देखते रहे।

''एय! मेरी मम्मी को छोड़ दे।'' भाई ने धमकी भरी आवाज में कहा।

''हां रेशमा! ये क्या तेरा बॉडीगार्ड है ? आ....! मुझे मार....

देखता हूं कैसा दूध पीया है तेरी मां का...............'' मम्मी को पकड़ के रखकर शराबी व्यक्ति ने गालियां देते हुए कहा । भाई का चेहरा लाल हो गया। उसने हॉकी स्टीक उठायी और शराबी के पैर पर मारी।

जोरदार चीख शराबी के मुँह से निकली। मैने मेरी आंखे बंद कर दी। मम्मी शराबी के हाथ से छूट गयी, तो भी शराबी ने मम्मी की साड़ी पकड़ ली। मम्मी की साड़ी निकल गयी।

भाई ने उसके हाथ पर हॉकी स्टीक दे मारी। हॉकी स्टीक के दो टूकड़े हो गये । शराबी बहुत जोर से गालियां देने लगा। टूटी हुयी स्टीक से अंतिम बार भाई ने शराबी के पेट पर मारा। वो पेट पकड़कर बाहर गिर गया।

मम्मी और भाई ने दरवाजा बंद कर दिया। मैने मेरी आंखे बंद कर दी। लेकिन मेरे मन में उस शराबी की सब गालियां फीट हो गयी।

Chapter - 10

15/8/2003 I.S.T. 10.30 Grant Road

प्रश्न अति भयंकर होता है.....।

हम हर स्वातंत्र्य दिन ग्रांट रोड़ के नाके पर मनाते। 7.30 बजे-8.00 बजे स्कूल का प्रोग्राम खत्म करके मैं घर आ गयी थी। फिर मम्मी के पास मैने नाश्ता मांगा।

''चल हम वहां ही खा लेगें।'' कहकर मम्मी मुझे लेकर ध्वजा-रोहण के स्थान पर गयी। वहां हमने इटली-चटनी का नाश्ता किया। मैने 3 इडली खायी।

फिर हम जाकर चेयर पर बैठे। वहां आझादी के गीत चल रहे थे। मुझे संगीत का शौक होने से आँख बंद करके मैं संगीत सुन रही थी।

''रेशमा!'' किसी ने पीछे से मम्मी को बुलाया।

मैने पीछे देखा। एक 50 वर्ष की विचित्र लगती बहन वहां बैठी थी। उसके पैर विचित्र थे। मुझे वह जरा भी अच्छी नही लगती थी।

मम्मी घबराते-घबराते वहां पहुंची। मुझे मम्मी ने आने का मना किया था। मैं वहीं बैठकर देखती रही। जैसे-जैसे वो स्त्री बोलती गयी, वैसे-वैसे मेरी मम्मी के चेहरे के भाव बदलते रहे। कभी भय तो कभी आनंद दिखा....

वो स्त्री वहां से उठकर चली गयी। उसका मुँह लाल था। वो पान

चबाती है ऐसा मुझे लगा। ''मम्मी वो कौन थी?'' मेरे पास आकर मम्मी बैठी तब मैने पूछा।

''वो स्त्री यहां की मालकिन विक्टरी है।''

''वो पान क्यों चबाती है?''

मम्मी ने मेरे तरफ आश्चर्य से देखा।

''उसे आदत है इसलिये.....''

''वो क्या धंधा करती है? उसके पास इतने पैसे कहां से आते है?''

ये प्रश्न पूछते ही मम्मी के चेहरे का रंग बदल गया।

''ज्यादा चप्पर-चप्पर नहीं करने का। शांति से सुन.... कितना सुंदर गीत चल रहा है।'' मुझे मम्मी में ये अचानक हुआ बदलाव समझ में आया नहीं। मैं मम्मी को देखती रही। मम्मी ने मेरे सामने देखा नही।

Chapter - 11

1/1/2004 I.S.T. 23.00 Mumbai Central

तनाव अति भयंकर होता है.....।

मम्मी की अवदशा देखकर मैं चकित हो गयी। पेट पकड़कर पिछले २ घंटों से मम्मी रो रही थी। 'कहो ना मम्मी क्या हुआ?' पन्द्रह बार मैने पिछले २ घंटों में यही प्रश्न पूछा था और वापस एकबार ये ही प्रश्न पूछा।

मम्मी ने वापस प्रश्न का उतर दिया नही और अपना पेट पकड़कर रोती रही। मुझे मम्मी के पेट से भी मम्मी का चेहरा ज्यादा तंग लगा। मैं भी वहीं रोती-रोती बैठ गयी।

भाई और बहन घर पर नही थे। वे नानी के घर गये थे और कल सुबह आनेवाले थे।

15 मिनट गुजर गये। किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। अचानक रखे हाथ से मैं घबरा गयी। मैने ऊपर देखा। मम्मी मुझे बुला रही थी।

''हाँ मम्मी! बोल ना मम्मी! क्या काम है?''

बिना बोले मम्मी ने अपने कबाट की तरफ इशारा किया। मैं वहां पहूंची। कबाट में मम्मी का पर्स पड़ा था, वो लेकर मैं मम्मी के पास आयी। मम्मी ने पानी मंगाया।

मैं पानी लेने रसोड़े में गयी। पानी का ग्लास मैने मम्मी के हाथ में दिया। मम्मी के बायें हाथ में २ गोलियां थी। मम्मी ने पानी के साथ गोलियां

गटक ली।

15 मिनट में मम्मी सो गयी। मम्मी के चेहरे पर रही हुयी तंगता यथावत् दिख रही थी। मैने मम्मी के आस-पास पड़े कचरे को एक तरफ किया। मेरी नजर उस गोलियों की स्ट्रीप पर गयी। एक स्ट्रीप नींद की गोली की थी। दूसरी पर **'कोन्ट्रासेप्टीव पिल्स'** ऐसा कुछ लिखा हुआ था। नहीं समझते हुए मैने स्ट्रीप नीचे फेंक दी।

Chapter - 1

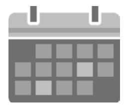

15/4/2007 **I.S.T.1.00** Mumbai Central

सच्चाई अति भयंकर होती है.....।

मैं किसी भी तरह भूतकाल को मानने के लिए तैयार नही हुयी। मुम्बई सेन्ट्रल स्टेशन के महिला आराम कक्ष में मैं मेरे पर फैंके हुए मेरे सामान को लेकर बैठी थी।

"आगे क्या करना?" ये विचार करते ही दिमाग में अंधेरे के सिवाय दूसरा कुछ दिख रहा नहीं था। मेरा जन्मदिन तहस-नहस हो गया था। मेरी पूरी फ्रॉक आंसूओं के कारण भिगी हो गयी थी और इसलिए मन के विचारों और भीगेपन के कारण शरीर में कंपाहट हो रही थी। मैं असहाय थी। मेरे एक के एक आश्रय में से मुझे धक्का देकर बाहर निकालने में आया था।

"मेरे भाई का मर्डर कर दूं।" बिजली के चमकने जैसा विचार आया, लेकिन वो ओझल हो गया। *"मेरी मम्मी ने भी मेरे से सब हकीकत छुपायी। उसे मार दूं।"*

मेरा सिर गोल-गोल घुमने लगा।

"सब मेरा नुकसान करने वाले ही है।"

"भगवान ऐसी यातना आपने मुझे क्यों दी। पहले अनाथ... अब संपूर्ण अनाथ... क्या मैं लड़की हूं...?" अंतिम विचारों को मैं स्वीकार करने के लिये तैयार ही नही थी।

"मैं किसकी लड़की हूं...?" ये सवाल वेताल की तरह मेरे सिर पर हावी हो गया। मैं अपने बालों को हाथों से खिंचने लगी, लेकिन उससे भी मेरा मन शांत हुआ नही।

सामने फिनाईल की बॉटल पड़ी हुई दिखाई दी। मुझे आत्महत्या के सिवाए दूसरा कोई उपाय दिखाई दिया नही। मैने लेडिझ टॉयलेट में जाकर फिनायल की बॉटल गटका ली। 5 मिनट तक कुछ हुआ नही।

धीरे-धीरे आंखों के सामने सब धुंधला होता गया। अंधेरा छाने लगा। हाथ में फिनाईल की बॉटल के साथ मैं नीचे गिर पड़ी। मुंह में से खून निकल रहा हो ऐसा मुझे लगा। फिर एकदम अंधेरा.... एक अकथ्य शांति में मैं खो गयी।

Chapter - 2

30/4/2007 I.S.T. 8.00 Government Hospital, Sion

हकीकत अति भयंकर होती है....!

सफेद कपड़ों में आस-पास खड़े लोग मुझे दिखाई दे रहे थे। शरीर से रहित होकर जैसे कि मैं स्वर्ग में पहुंच गयी हूं, ऐसा आभास मुझे हो रहा था। सफेद स्वर्गदूत मेरे आस-पास मेरा स्वागत करने के लिए खड़े है, लेकिन! इन स्वर्गदूतों ने अपने मुंह पर ग्रीन कलर का मास्क क्यों पहना है, ये मुझे समझ में नहीं आया। एक स्वर्गदूत ने मेरे हाथ पर हाथ रखा, उसकी अंगुली मेरी नब्ज पर थी ।

"ये OK है..." एक स्वर्गदूत ने दूसरे स्वर्गदूत से कहा ।

"ये सब स्वर्गदूत इंग्लिश में क्यों बात कर रहे है...?" विचार आया। किसी ने पीछे से मेरा पलंग ऊपर किया। सामने आईना था। उसमें अपना चेहरा मुझे दिखाई दिया। मैने जोर से चीख निकाली। मेरे हाथ बांधे हुए थे। मैने उसे खोलने का प्रयत्न किया ।

"शांत हो जा, शांत हो जा अपेक्षा...." एक स्वर्गदूत ने मुझे कहा।

उसके सफेद कपड़ों पर '**डॉ. रेड्डी**' लिखा हुआ था ।

मुझे हकीकत का पता चला। भूतकाल याद आ गया। आंसूं निकलने लगे ।

"इस दुनिया ने मुझे मरने भी नहीं दिया...." मैं शांत हो गयी।

"रो मत अपेक्षा...! इट्स ओके.... "एक डॉक्टर ने कहा । लेकिन मेरी आंखे रूकी नही। डॉक्टर ने पास में लगी हुए हार्टपल्स की मशीन में देखा । 100-110 के बीच आंकड़ा दिखाई दे रहा था।

डॉक्टर ने बड़ा इंजेक्शन तैयार किया। मेरे सिर पर लटकते 'NS' के बॉटल में इंजेक्शन खाली किया। मेरी आंखें वापस बुझने लगी।

"मैं कहां हूँ?" एकदम धीरे स्वर मेरे मुंह से निकले ।

डॉक्टर ने मेरी पलके बंद कर दी। अनंत अंधकार में वापस मैं खो गयी ।

Chapter - 3

5/5/2007 I.S.T. 9.30 Government Hospital, Sion

स्नेह अति भयंकर होता है....!

लोगों की भीड़ के बीच एक पलंग पर बैठकर मैं आराम से पेपर पढ़ रही थी। आत्महत्या के केस के ढेर पेपर में नजर आ रहे थे। पिछले 2 दिनों से मेरे शरीर पर लगी हुई सारी ट्यूब निकाल दी गयी थी।

"प्रभु! तुने इन सबको मरने दिया और मुझे....?"

डॉक्टर कह रहा था कि अब मेरी तबियत में सुधार तेजी से हो रहा था। अभी भी चलने की शक्ति मेरे शरीर में संचारित हुई नहीं थी और इसलिए ही एक नर्स मेरा काम करती थी।

सबसे ज्यादा दुःख मुझे इस बात का था कि मेरे घर का कोई भी व्यक्ति मुझे देखने तक नही आया था। मैने नर्स से 2-3 बार पूछा था, लेकिन हर बार निराशा ही मिली। मेरे दोस्तों का भी अता-पता नही था।

आज सुबह ही मुझे नर्स ने मेरी सभी वस्तुऐं लाकर दी थी। उसमें मेरे बर्थ-डे के दिन दिया हुआ मोबाइल 6600 - 2000 रूपये, मेरा एकदम फेवरेट नेकलेस, मेरी घड़ी सब था।

एक समय ऐसा था कि इसे पहनने से मुझे राहत मिलती थी, लेकिन आज सुबह इन वस्तुओं को देखते ही मैं एकदम उदास हो गयी थी। उसके साथ भूतकाल जुड़ा हुआ था।

उस निराशावाद में से बाहर आने के लिए ही मैने नर्स के पास

पेपर मांगा था' लेकिन उसमें भी मुझे निराशा ही मिली। सब जगह मारा-मारी, आत्महत्या के सिवाय दूसरा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैने पेपर टेबल पर रख दिया।

''अपेक्षा कौन है?'' जनरल वॉर्ड में आये हुए पुलिस के कपड़ों में सज्ज एक लम्बे व्यक्ति ने पूछा। नर्स ने मेरी ओर अंगुली घुमायी। मैं घबरा गई, वैसे भी पुलिस से मुझे डर लगता था। एक बार हम पार्टी में गये थे और वहां पुलिस आते ही हम बाहर निकल गये थे। दूसरे दिन ही पेपर में उस पार्टी में पकड़े जाने वालों के फोटो थे।

पुलिसवाला मेरे पास टेबल पर आकर बैठा। दो मिनट तक वो मुझे ही देखता रहा। मैं उससे नजर बचाने के लिये दूसरी तरफ देखती रही।

पुलिसवालें ने अपने रफ हाथों से मेरा मुँह अपनी ओर किया। मैने आंखे बंद कर दी।

''अपेक्षा! तुमने मुझे मेरी प्रक्रिया में सपोर्ट नही किया तो मैं तुम्हें जेल में डाल दूंगा। तुम्हे देखना हो या नही देखना हो, उससे मुझे कोई फर्क नही पड़ता, लेकिन तुम्हें मेरे प्रश्नों के जवाब तो देने ही पड़ेगे। तेरे उपर **''अटेम्प्ट टू स्युसाइड''** का आरोप लगा है। बोल तुने आत्महत्या करने का प्रयास क्यों किया?''

मुझे मेरी नर्स ने इस झमेले के बारे में पहले से ही कह दिया था। इसलिये प्रश्नों की ये झड़ी के लिये मैं तैयार थी। ''मुझे मेरे भूतकाल में जाने में कोई इंटरस्ट नही है। इसलिए मुझे ये सब प्रश्न मत पूछना। आपको यदि उत्तर चाहिए तो मेरे दिमाग में आपको घुसना पड़ेगा।'' मुंह पर ही मैने पुलिसवालें को जवाब दे दिया ।

पुलिसवाले के चेहरे पर अमाप गुस्सा दिखाई दिया। उसकी मेरे मुंह पर पकड और भी ज्यादा टाईट हो गयी। मैने मेरे हाथ से उसके हाथ को धक्का दिया।

''बहुत ज्यादा होशियार हो गये है आज के नौजवान! जब तक मैथीपाक नही मिलेगी, तब तक सीधे नही होगे । गोलकोन्डा...''पुलिस वाले ने आवाज दी।

एक 40 वर्ष के आस-पास की उम्रवाली महिला कॉन्स्टेबल

अंदर आयी। उसका मुंह भूत के पिक्चर में देखी हुई डायन के जैसा था।

''क्या हुआ?'' अपने चेहरे के अनुरूप कर्कश भाषा में पुलिसवाली ने पूछा। ''इसे 3RD डिग्री देनी पड़ेगी। ये सीधी रीत से बोलती नही और हमें गेम के अंदर खेलते बच्चे समझती है।'' पुलिसवाली ने मेरे पैर पर जोर से दबाया। मेरे मुंह से चीख निकल गयी। मैं रोने लगी । नर्स-डॉक्टर दौड़ते-दौड़ते आये।

''ये क्या कर रहे हो पेशन्ट के साथ?''

''ज्यादा लप्पर-चप्पर करना नही, नही तो तुम्हें भी सलाखों के पीछे डाल दूंगा।'' पुलिसवाले ने डॉक्टर की बोलती बंद कर दी। ''पर...''

अपने मुंह पर एक अंगुली रख पुलिसवाले ने **"sshh"** किया। डॉक्टर अपने शब्दों को निगल गये।'' मैं इसे पुलिस स्टेशन लेकर जाऊंगा.... एक एम्ब्युलंस तैयार करवाओ।'' पुलिसवाले ने कहा।

डॉक्टर वहां से हिले नही।

''समझ में नही आया क्या? क्या जड़-भगत की तरह खड़ा है?'' डॉक्टर फटाफट बाहर निकल गया। मुझे बहुत डर लगने लगा। जेल की सलाखें मुझे दिखाई देने लगी।

तभी डॉक्टर दरवाजे से वापस अंदर आया। उसके साथ एक बहन भी अंदर आयी। ''सिस्टर... सिस्टर... सिस्टर।'' कहते हुए पुलिसवाला खड़ा हुआ। ''कॉन्स्टेबल सम्राट! ये पेशन्ट मेरा है । उसे छोड़ दो। अपेक्षा! तुम ये बुक पढ़ो....'' बहन ने मेर हाथ में बुक दी। पुलिसवाला गुस्से से मेरे और डॉक्टर के सामने देखकर चला गया। मुझे राहत मिली। पुलिसवाला और बहन बाहर कुछ बातें करते हुए मुझे दिखाई दिए।

मैने मेरे हाथ में रखी बुक के कवर को देखा।

उसके ऊपर 5 अक्षर लिखे हुए थे।

"BIBLE"

Chapter - 4

6/6/2007 I.S.T. 10.00 St. Paul's church, Dadar

मदद अति भयंकर होती है.....।

''सच्ची मदद करने वाला इस दुनिया में कोई नही है। सभी स्वार्थ से भरे हुए है। जब तुम्हारे सारे सहारे छूट जायेगें, तब तुम्हारी मदद करनेवाला सिर्फ ये भगवान होगा। इसु क्रिस्ट....'' फॉदर जो बात कह रहे थे उसकी सार्थकता मुझे मेरे जीवन में अनुभव हुई।

मैं चर्च में जमीन पर मेरे घुटनों के बल पर बैठी हुई थी। चर्च के फॉदर बाईबल में लिखे हुए शब्द पढ़ रहे थे और उन शब्दों का साक्षात्कार मेरे जीवन में मैने अनुभव किया था।

पुलिस के शिकंजे में से बचाने के बाद सिस्टर ने ही मेरी देखभाल की थी। हॉस्पीटल का बिल डेढ़ लाख रूपयों का हुआ था, लेकिन सिस्टर के कहने पर मेरा संपूर्ण इलाज फ्री में हुआ था। मेरा बिल सिस्टर और सामने खड़े फॉदर (पादरी) ने भरा था।

एक भी मेरे स्वजनों को मेरी चिंता ही नही थी। मेरे भाई को सिस्टर ने फोन किया था, सामने से जवाब आया था कि ''मेरी बहन तो मर गयी।''

तब मुझे जोरदार धक्का लगा था। आंखों में से नि:सहायता के आंसू बहने लगे थे। सिस्टर ने मुझे तब भी संभाला था। फॉदर से बात

करके सिस्टर ने मुझे अपने साथ सुलाया था। मेरा घर अब चर्च ही बन गया था। एक महिने के निर्दोष प्रेम के बाद मैने नक्की कर लिया था कि **''मुझे जैन से मिटकर क्रिश्चन बनना है। एक भी ट्रस्ट मेरी जवाबदारी लेने को तैयार नही है, जबकि ये दयालु क्रिश्चन लोग मुझे कितनी मदद करते है।''**

और इसलिए ही आज मैं सिस्टर के दिये हुए कपड़ों में सज्ज होकर क्रिश्चन धर्म को स्वीकार करने के लिए चर्च में आयी थी।

''आज हमारे लिए एकदम खुशी का अवसर है।'' फॉदर ने बोलना शुरू किया। ''हमारे बीच रहने वाली अपेक्षा आज हमारी कम्युनिटी में सम्मिलित होने जा रही है। सभी जीसस से प्रार्थना करो कि भगवान इसे शक्ति दे। कम ऑन अपेक्षा....''

मैं अपनी जगह से खड़ी हुई। सब लोग मुझे एकदम प्रेमपूर्वक देख रहे थे। हर एक की आंखों में मानवता का धोध बहता हुआ दिखाई दे रहा था। मैं फॉदर के पास पहुंची।

फॉदर ने मुझे पीने के लिये एक चम्मच पानी दिया। मैने वो पानी पीया। फादर ने मेरे सामने अपने गले में लटके क्रॉस से अमुक चिन्ह किये। मैं ये सब प्रक्रिया देखती रही। फिर मेरे सामने बाईबल रखी। मेरे गले में फॉदर ने क्रॉस डाला।

अपने साईड में रखी नॉनवेज डीश में से एक चम्मच फॉदर ने मेरे मुंह के आगे लायी। मैं एक क्षण के लिये हिचकिचाई। मुझे पता था कि यह वस्तु नॉनवेज है। 14 वर्षों में नॉनवेज को मैने मुंह के आगे तो क्या आंख के आगे भी आने नहीं दिया था।

मैने वह चम्मच मुंह के अन्दर जाने दी। बिना चबाये मैने कवल निगल लिया।

''अपेक्षा! अब तूं क्रिश्चन बन गयी है। सिर्फ एक ही प्रक्रिया बाकी है। इस पुस्तक पर तूं हाथ रख....'' बाईबल को दिखाते हुए फॉदर ने मुझे कहा। मैने बाईबल पर हाथ रखा।

''अब मैं जो बोलूंगा वो तुम बोलना....'' मैने आंखों से ''हाँ'' का इशारा किया। फॉदर ने बुलंद आवाज में बोलना शुरू किया।

''आज से मैं।''

''आज से मैं।'' धीरे आवाज से मैं बोली। सब लोग भी पीछे-पीछे बोलते गये।

''प्रतिज्ञा लेती हूं कि....''

''मैं जीसस की अनुयायी बनुंगी... और मेरे क्रिश्चन धर्म के सामने आनेवाली आफतों के सामने लड़ूंगी। मरना पड़ेगा तो मरूंगी। आज से मैं क्रिश्चन हूं।'' मैने सब दोहराया। और भी 5-10 वाक्य फॉदर ने बोले।

''ईन द नेम ऑफ फॉदर, सन, होली स्पीरिट।'' मैं बोली।

''अेमेन....'' फॉदर ने पूर्णाहुति की।

''अेमेन...'' चेहरे पर अटल निर्णय के साथ मैने अंतिम शब्द दोहराया।

''अेमेन... अेमेन...'' पूरे चर्च में आवाज गूंजी।

Chapter - 5

7/7/2007 I.S.T. 22.00 Juhu Chowpati, Juhu

प्रेम अति भयंकर होता है.....।

''अपेक्षा! आई लव यू...''

''आई लव यू टू....'' मैं और मेथ्यू पब्लिक में नही की जाती चेष्टायें करने लगे। मेथ्यू सिस्टर की बहन का लड़का था। जिस दिन मैं क्रिश्चन बनी थी, उसी दिन मैने उसे देखा था। एक-दूसरे को देखते ही हमें एक दूसरे के साथ प्रेम हो गया था।

उसी दिन ही उसके साथ मैने मेरा नंबर एक्सचेंज किया था और हर रोज 1-2-3 घण्टों तक हम बातें करते थे। वह मुझसे ५ साल बड़ा था, लेकिन मुम्बई कल्चर में ये कॉमन था। सब हीरो-हिरोइन की भी ये ही कहानी थी।

आज हम दोनों ने ''जुहु बीच'' जाने का नक्की किया था। सिस्टर ने सहर्श हां कह दी थी।

''ध्यान रखना तेरा....'' जाते समय मुझे सिस्टर ने कहा था।

हम दादर स्टेशन पर मिले और ट्रेन में भी हमारी असभ्य चेष्टायें चालू ही थी। फिर बीच पर आकर तो हमें कहने वाला भी कोई नही था। इसलिए पशु की तरह हम वहां चालू हो गए।

''बस! चल हो गया... अब मैं जाती हूं। सिस्टर चिंता कर रही

होगी।'' उठते-उठते मैने कहा। मेथ्यू ने वापस मेरा हाथ पकड़ा। मैने उसे मेरी पूरी ताकत से खड़ा किया। उसने मेरे हाथ पर हाथ रखा।

''आज मैं तुझे चर्च में नही जाने दूंगा। ये तो अपनी शुरुआत हुई है। पार्टी तो अभी बहुत बाकी है। सिस्टर को मैने कह दिया है कि ''आज अपेक्षा मेरे साथ ही नाईट आउट करेगी। इसलिए तुम मुझे सिस्टर के नाम से तो मत डराओ।''

''चल अब तू मुझे कहां लेकर जा रहा है?'' मैने उसके सामने झूठे गुस्से से पूछा। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और हम हाथ पकड़ते-पकड़ते ही बीच से बाहर आये।

हम आधा किलोमीटर खुल्ले रोड़ पर चले। राइट साइड पर हम मुड़े। वहां कॉर्नर में एक हॉटल थी। **"SHERLOCK"** नाम था उस हॉटल का।

बाहर दो बाउन्सर काले कपड़ों में खड़े थे। मेथ्यू को देखते ही सलाम मारकर हम दोनों को बाउन्सरों ने जाने दिया।

अंदर अंधेरा ही अंधेरा था। डिस्को लाईट के सिवाय दूसरी एक भी लाईट चालू नही थी। हम दोनों अंदर जाकर टेबल पर बैठे।

''वेटर! दो ग्लास व्हिस्की-कोको कोला मिक्स लाना।'' मेथ्यू ने टेबल के पास आये हुए वेटर से कहा।

''मेथ्यू! मैने कभी भी दारू छुआ भी नहीं है। मैं कोक लूंगी।''

''अपेक्षा! हर एक वस्तु जिंदगी में हमने की हुई हो ये जरूरी नही होता। ट्राय कर ना, एन्जॉय यो सेल्फ। सिस्टर के पास चर्च में पहुँचाने की जवाबदारी मेरी.... टेन्शन छोड़ दे।''

वेटर बॉटल लेकर आया। मेथ्यू ने दो ग्लास व्हिस्की ली। उसने एक ग्लास उठाया और एक ही घूंट में गटक कर खाली कर दिया।

''तूं किसकी राह देख रही है अपेक्षा? मेरी तरह तूं भी पी ले...''

मैने ग्लास उठाकर मुंह को लगाया। मुंह को टच होते ही व्हिस्की एकदम कड़वी लगी, थूंकने की इच्छा हुई, लेकिन उसके पहले तो मेथ्यू ने मेरा हाथ पकड़कर पूरा ग्लास मेरे गले से नीचे उतार दिया।

मेरा सिर चकराने लगा।

मेथ्यू ने मुझे खड़ा किया। मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे।

''चल अब डॉन्स करेगें।'' लड़खड़ाते पैरों से भी मेथ्यू के सहारे मैं डॉन्स करने लगी। मेथ्यू डॉन्स में एक्सपर्ट था। आधे-पौने घण्टे तक हम डॉन्स करते रहे। दारू का नशा कुछ कम हुआ।

मेथ्यू मुझे एक रूम के अंदर लेकर गया। वहां बहुत सारे लोग सिगरेट और दारू पी रहे थे। एक कोने में जाकर हम बैठे। मेथ्यू ने मुझे अपने पास बिठाया। पास में अलग-अलग प्रकार की सिगरेट पड़ी थी। उसके पास पाउडर जैसा कुछ था। मेथ्यू ने सिगरेट से तंबाकू बाहर निकालकर साइड में पड़े हुए पाउडर को सिगरेट में भरा।

''ये क्या है मेथ्यू?'' जिज्ञासा से मैने पूछा।

''वीड...'' सिगरेट का दम मारते हुए मेथ्यू ने कहा।

Chapter - 6

8/8/2007 **I.S.T. 23.00** St. Pauls church, Dadar

ऐडीक्शन अति भयंकर होता है.....।

मेरा सिर सख्त दुःख रहा था। पिछले 1 महिने से जब भी मैं हेर-ोइन नाम के पदार्थ को सुंघती नही, तो मेरा सिर दुःखने लगता है।

एक वीक पहले सिस्टर ने मुझे हेरोइन लेते हुए पकड़ा था।

''किसने दिया तुझे ये?'' गुस्से में सिस्टर ने मुझे धमकाया था।

''मेथ्यू ने...''

''मेथ्यू .... तुम दोनों की बहुत विचित्रतायें मुझे सुनने में आयी है। फिर से मुझे ये नशीली वस्तु मिली तो मैं तुझे पुलिस के हवाले कर दूंगी।'' पहली बार मैने सिस्टर को इतना गुस्सा होते देखा था ।

मेरे हाथ में से पैकेट को (रू. 10,000 का) खींचकर पास में रही हुई पानी की टंकी में सिस्टर ने डाल दिया था। उस दिन मैं बहुत रोयी थी। 7 दिन बीत गये थे। सिस्टर ने मुझे एक महिने पहले चालू कराई स्कूल में भी सिर के दुःखावे के कारण 7 दिन से मैं जा नही सकी थी।

सिस्टर हर रोज मुझे देखने आती लेकिन मेरे साथ बातें नही करती थी। फॉदर को पता चलते ही फॉदर ने भी मुझे समझाया था।

''बेटी! नशीला ड्रग्स शरीर के लिए बहुत ही नुकसानदायक होता है... तेरी जिंदगी बहुत लंबी है। इन सब व्यसनों में तू गिर जायेगी, तो तेरी जिंदगी साफ हो जायेगी.... समझमें आता है ना अपेक्षा?'' अपने

चश्में में से देखते हुए फॉदर ने मुझे पूछा था।

ड्रग्स की तलप के कारण मेरे दिमाग में एक भी अक्षर घूसा नही था, तो भी मैने सिर हिलाया था। दो दिन पहले ही मैने मेथ्यू को फोन किया था और ये सब बात बतायी थी।

''पगली! मेरा नाम क्यों लिया? अब क्या?'' वो भी मेरे ऊपर बहुत गुस्सा हो गया था। मैं एकदम निराश हो गयी थी, लेकिन आज सुबह मेथ्यू मुझे मिलने आया था और उसने अच्छी तरह बात की थी।

ये हकीकत है। तलप-तलप है। मुझसे रहा नही गया।

मैने आस-पास देखा। सिस्टर चर्च में मास के लिये गयी थी। मैने धीरे से एक सफेद पाउडर वाला पैकेट मेरे स्कूल बेग के खाने में से बाहर निकाला और उसे नाक से लगाया। सुगंध मजबूत थी। माल अच्छा था ।

चुपके से मेरे रूम के बाहर रहे हुए शौचालय में मैं घूस गयी ।

मैने अंदर से बाथरूम का दरवाजा बंद कर दिया और पाउडर बाहर निकाला। पास में ही स्नान करने का मग पड़ा था, उसमें मैने ये पाउडर खाली किया। मुझे आज सुबह पाउडर देने वाले मेथ्यू पर लगाव बढ़ा।

मैने मेरे जिन्स के दूसरे पॉकेट में रहे हुए इंजेक्शन को निकाला। सुई से मग में रहे हुए पानी वाले पाउडर को मैने सिरिंज में लिया। मेरे ऊपर पागलपन छा गया ।

मैने वो सुई अपनी नस में डाली। धीरे-धीरे मैने पूरा इंजेक्शन खाली किया। एक अकथ्य आनंद मुझे अनुभव हुआ। दिमाग की पीड़ा शांत हो गयी, एक दूसरी दुनिया की मुझे अनुभूति हुई ।

मैने वापस इंजेक्शन भरा। तलप बहुत भारी थी ।

मैने दूसरा इंजेक्शन नस में घुसाया । ड्रग्स का बहाव शरीर में बढ़ा। मेरा हाथ कांपने लगा । आधा इंजेक्शन खाली हुआ होगा और मैं मेरा कंट्रोल खो बैठी। बाथरूम के बाहर किसी ने खटखटाया। मैने उस तरफ ध्यान नही दिया ।

''अपेक्षा.... अपेक्षा...'' सिस्टर की आवाज सुनाई दी । मैने जवाब नहीं दिया । ड्रग्स ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया था। मैं बाहर

की दुनिया से अलिप्त हो गयी थी।

मैं फर्श पर गिर गयी और गटर के कीड़े की तरह लोटने लगी।

सिस्टर बाहर जोर-जोर से बाथरूम का दरवाजा खटखटा रही थी। भारी बूटों की आवाज सुनाई दी । कोई दरवाजा तोड़ रहा है, ऐसा लगा, लेकिन मैं तो ड्रग्स के नशे में चकनाचूर थी । दरवाजा टूटा, मेरे होश उड़ गये ।

Chapter - 7

15/9/2007 I.S.T. 11.00 Arthar Road Jail, Saat Rasta

जेल अति भयंकर होती है.....।

संडास-बाथरूम की दुर्गंध से पूरा रूम गंध मार रहा था। भारत की सब जेल ऐसी ही है, ऐसा मैने सुना था। उसका साक्षात्कार मुझे आज हुआ था।

पिछले एकाद महिने में मेरे साथ क्या हुआ उसका मुझे थोड़ा भी ख्याल नही था। आज सुबह जब मैं उठ रही थी, तब हॉस्पीटल से मुझे इस जेल में लाया गया था, इतना ही मुझे ख्याल था।

बाथरूम की गंध से त्रस्त होकर मैने जेल की सलाखें गुस्से से टकरायी...

जेलर ने अपनी आंखें ऊंची की।

''क्या है?'' कड़क आवाज में जेलर ने पूछा। जेलर ने वैसे तो मुझे सुबह से हैरान नही किया था, लेकिन वो मेरे साथ बातें भी नही करता था। एक शब्द भी बहुत पूछने के बाद भी वो बोला नही था।

''मुझे यहां से बाहर निकालो... यहां की दुर्गंध से मैं मर जाऊं-गी....''

''ये अच्छा ही है। धरती का बोझ थोड़ा हल्का होगा।'' मेरे सामने देखे बिना, मन को लग जाये ऐसे शब्द जेलर ने उच्चारे। ''लेकिन मैने मरने जैसा किया क्या है?'' एकदम गुस्से के साथ चिल्लाकर मैने पूछा।

“अेय....” जेलर की आंखें लाल हुई “तेरे बाप की ये जगह नही है कि तेरी मर्जी में जो आये वो तू बड़बड करें। मुंह बंद रखना, नहीं तो मुझे तुम्हारे हाथ बांधकर मुंह पर टेप लगानी पड़ेगी। समझ गयी ना?”

मै रोने लगी। मेरी आवाज पूरे जेल में गूंजने लगी, लेकिन एक आवाज भी दूसरी कोई सुनाई नही दी।

दोपहर का समय हुआ। जेलर खाने के लिए थाली लेकर आया। उसमें चावल थे और पानी से पतली दाल थी। जेलर थाली रखकर चला गया। कितने समय तक तो मैने थाली को वैसे के वैसे ही रहने दी। खाने की इच्छा मर गयी थी।

मैं बिना खाये ही सो गयी।

जेल के लोगों की आवाज से मैं उठी।

“कितने बजे?” सामने खड़े पुलिसवाले से मैने पूछा।

“सुबह के 8 बजे है।” मै 12 घण्टों के आस-पास सोती रही थी। मेरे पेट में भूख के कारण जलन हो रही थी।

“मुझे भूख लगी है....” मैने जेलर से कहा।

जेलर ने मुझे कल नही खायी जमीन पर पड़ी हुई थाली बताई।

ऑप्शन नही होने के कारण मैं खाने के लिए नीचे बैठी।

दाल को मैने चावल में डाली। दाल में से कॉकरोच बाहर गिरा। मुझे उल्टी आने लगी। उसी थाली में ही मेरे पेट में जो भी थोड़ा कुछ था वो भी मैने खाली कर दिया। फिर से आंसू बहने लगे। ये यातना कब पूर्ण होगी, विचार करते हुए आंसू भरी आंखों के साथ ही मैं सो गयी।

Chapter - 8

16/9/2007 I.S.T.10.00 (Juvenile Crime Court, Umar Khadi, Mumbai)

न्याय अति भयंकर होता है.....।

“अपेक्षा! तू ऑनरेबल कोर्ट ने बतायी हुई सभी शर्तों को पालने के लिए तैयार है?” मेन सीट पर बैठी हुई लेडी न्यायाधीश ने मुझे पूछा।

मैने सिर हिलाकर “हां” कहा।

“सिर हिलाने से कुछ भी नही होगा। आई कन्सेन्ट बोलना पड़ेगा।”

मैने ये शब्द दोहराये।

आज मुझे पता चला कि मुझे जेल में क्यों डाला गया था। एक-एक करके सब घटनाऐं याद आने लगी थी। इन सब में मुझे सबसे ज्यादा गुस्सा इस शिकंजे में से नही बचाने के लिए सिस्टर पर आया था।

ड्रग्स के नशे में मैं बाथरूम के फर्श पर गिर गयी थी। सिस्टर ने इमरजंसी समझकर पुलिस को फोन कर दिया था। पुलिसवाले आये थे और मुझे हॉस्पीटल लेकर गये थे।

वहां ड्रग्स का नशा उतारने में बहुत देर लगी थी और सिस्टर को मालूम पड़ते ही उसने मुझे पुलिस को सौंप दिया था। “जो मेरा सुनती नही, मैं उसको संभाल सकती नही। इसलिए आज से मैं इसकी गार्डियनशीप छोड़ रही हूं।”

फिर एक-सवा महिने तक मेरी ट्रीटमेंट चली थी। ड्रग्स की अतिमात्रा के कारण फेफड़ों और किडनी पर ज्यादा असर हो गयी थी। रिकवरी होते ही मुझे जेल में डाल दिया गया था। और आज मैं बच्चों के कोर्ट में खड़ी थी। मेरे ऊपर ड्रग्स लेने का केस लादने में आया था। मैं 18 वर्ष से नीचे, माईनर होने से मुझे सजा देने में नही आई थी, लेकिन ये ड्रग्स की आदत छुड़ाने के लिये मुझे ''रिहेबिलिटेशन सेन्टर'' (व्यसेनमुक्ति केन्द्र) में रखना तय हुआ था।

मुझे 6 महिने वहां ही निकालने थे।

मैं अनाथ होने के कारण एक एन.जी.ओ. संस्था को मेरे भरण-पोषण की जवाबदारी सौंपने में आयी थी। मुझे वहां उनके कहे अनुसार वर्तन करने का आदेश देने में आया था । 18 वर्ष बाद मैं इन बंधनों से छूटने वाली थी, यदि मेरी आदत छूट गयी तो....

कोर्ट ने मुझे वापस उस चर्च में जाने का निषेध फरमाया था। और अब से सिस्टर और फॉदर को किसी भी तरह हैरान करने की सख्त मनाही की थी।

कोर्ट ने पेपर पर साइन ली थी। उस पेपर में स्पष्ट लिखा था कि ''मैं आज से संपूर्ण जिंदगी तक कोई भी प्रकार का ड्रग्स सेवन नही करूंगी और ड्रग्स से संबंधित कार्यों में किसी की भी मदद नही करूंगी।''

इसके बिना दूसरा कोई रास्ता न देखकर मैने भी बात मंजूर कर ली थी।

''जेल में सड़ने से ज्यादा तो ड्रग्स नहीं लेना ही अच्छा...'' विचार मनमें आया था।

''तो''..... न्यायाधीश के कर्कश आवाज से मैं भूतकाल को छोड़कर वर्तमान में आयी।

''आज से तुम्हारी एक अच्छे नागरिक बनाने की ट्रेंनिंग शुरू होती है। मुझे आशा है कि तुम कानून को इसमें मदद करोगी।''

न्यायाधीश ने अपने बाजू में रहे हुए लकड़ी के हथौड़े को टेबल पर मारा।

Chapter - 9

2/2/2008 **I.S.T. 21.00** Rehabilitation centre, Thane

मौज का फल अति भयंकर होता है.....।

''SSSHHH'' सिसकियों से पूरा ऐ.वी.रूम गूंज रहा था।

आज हमें ड्रग्स लेनेवालों की कैसी दुर्दशा होती है उसका पी.पी.टी. दिखाने में आ रहा था। पिछले साढ़े चार माह से मुझे सतत ड्रग्स से मुक्त होने के अनेक उपाय सिखाने में आ रहे थे। अब मैं भी नये आनेवाले व्यसनग्रस्त छोटी उम्र के युवान-युवतियों को संभालने में सुपरिटेन्डेन्ट की मदद करती ।

शुरूआत के 2 महिने तो मेरे लिये भी महा-मुश्किल से गुजरे, लेकिन ड्रग्स की विषमता और उसके कानूनी और मानसिक रूप से होते नुकसानों को सुनकर मैने जिन्दगीभर उसे छोड़ने का निर्णय कर लिया था। उसके बाद के दिनों में मैं एक्टिव हुई थी ।

निश्चय करने के बाद दूसरे दिन मैंने सुपरिटेन्डेन्ट के पास सामने से जाकर उनको मदद करने की इच्छा बतायी थी। मेरा ये बदलाव देखकर सुपरिटेन्डेन्ट को भी बहुत आश्चर्य हुआ था ।

''अशक्य'' शब्द उनके मुख से निकल पड़ा था, क्योंकि उन्होनें मेरी पूरी केस हिस्ट्री पढ़ी हुई थी। पहले तो सुपरिटेन्डेन्ट को शंका हुई थी

कि *''ये मुझे उल्लू बनाने के लिए सिर्फ ऐसा कह रही है।''* लेकिन फिर मेरी निष्ठा देखकर वह मेरे से खुश हो गयी थी। वह कभी मुझे स्पेश्यल खाना देती और कभी बाहर से लायी हुई चॉकलेट आदि वस्तु भी गिफ्ट करती थी।

आज स्पेश्यल सेमिनार रखने में आया था और उसके लिए भारत के सर्वोच्च 'डॉक्टर मेहता' प्रेझन्टेशन करने आये थे।

स्लाइड पर आते हुए फोटो को देखकर मैं भयभीत हो गयी। ड्रग्स के कारण किसी के छाती में छेद हुआ दिखाई दे रहा था, तो किसी का जबड़ा निकालना पड़ा था। कोई पूरी जिंदगी के लिए कोमा में चला गया था, तो किसी को पागलों के हॉस्पीटल में एडमिट करने में आया था।

''देखो...'' डॉक्टर मेहता बोले, ''ऐसी हालत ड्रग्स लेनेवालों की हुई है। आपका भविष्य तो ऐसा नही है ना?'' ऐसे भविष्य की कल्पना से भी मुझे कंपकंपाहट हुई।

''ये तो सिर्फ ड्रग्स लेनेवालों की दुर्दशा का उदाहरण है। अब जो मैं बता रहा हूं, वो ध्यान से देखना....''

डॉक्टर मेहता ने अपने हाथ में रहा हुआ रिमोट दबाया और स्क्रीन पर 3,2,1,0 विडियो लोड होने के नंबर दिखाई दिये।

''आपको ड्रग्स लेना है?.... तो लो और फिर...'' अचानक आवाज अटक गई और पूरी स्क्रीन काली हो गयी। 2 सैकेंड के बाद सी-सीटीवी फुटेज चालू हुआ। पंजाब के कोई शहर में लिया हुआ ये फुटेज था। सब आंखें फाड़कर स्क्रीन की ओर देख रहे थे।

स्क्रीन पर 19-20 वर्ष का लड़का दिखाई दिया। उसके कपड़ें ऊपर से नीचे तक काले थे। उसके हाथ में 1000-500 के नोट थे। अंधेरी जगह में जाकर उस लड़के ने किसी को बुलाया। एक एकदम अच्छी दिखने वाली लड़की बाहर आयी। वह लड़की उस लड़के के साथ छेड़छाड़ करने लगी। लड़का भी उसके साथ पागलों की तरह छेड़छाडी करने लगा।

फिर दोनों अंदर गये। फिर 15 मिनट तक स्क्रीन पर कुछ भी दिखाई नही दिया। सिर्फ वह अंधेरी जगह दिखाई दी। 15 मिनट के बाद लड़का और लड़की बाहर आये। दोनों के हाथ में कोई सफेद वस्तु दिखाई

दी। डॉक्टर मेहता ने रिमोट से वह वस्तु झूम की और उस वस्तु के ऊपर विडियो रूक गया।

'ये क्या है? पता है?' डॉक्टर मेहता ने पूछा।

''हेरोईन....'' सभी ने एकसाथ कहा।

''अब देखो....''

वापस विडियो स्टार्ट हुआ । वो दोनों लड़का-लड़की एक पत्थर को घेरकर नीचे बैठे। उसके ऊपर वो सफेद वस्तु दोनों ने खाली की। फिर 1000-500 की नोट निकाली । उन दोनों ने वो नोट पागल की तरह सूँघी। नीचे पड़े हुए हेरोइन ड्रग्स के 10 विभाग नोट से लड़के ने किये। अब सी-सीटीवी केमेरा झूम हुआ ।

लड़के ने आस-पास देखा । 1000 की नोट को गोल-गोल कर-के उसने 10 में से पहले विभाग की हेरोइन को अपने नोट के एक किनारे से सूँघा । वो ड्रग्स लड़के के नाक में गया । जैसे कि पागल हो, उस प्रकार वो बर्ताव करने लगा । लड़की ने भी उसी प्रकार अनुकरण किया ।

1 मिनट में तो पूरा 150 ग्राम जितना हेरोइन उड गया । दोनों को उसका जबरदस्त नशा चढ़ा। नशे में लड़के ने अपनी R1 बाइक स्टार्ट की, लड़की उसके पीछे बैठी ।

अब सीसीटीवी केमेरा फटाफट बदलने लगा। बाइक फुल स्पीड में होने के कारण केमेरा भी एक के बाद एक बदलता गया ।

फिर एक ही केमेरा पूरे रोड़ पर लगा हुआ दिखाई दिया। इसमें बाइक दिखाई नही दी । लेकिन दूर से कुछ आता हुआ दिखाई जरूर दिया। केमेरा के नीचे एक बड़ी लोहे की सलाखोंवाली ट्रक रोड़ पर दूर से आती हुई उस वस्तु की ओर जाती हुई दिखाई दी ।

सामने से वो दूर रही हुई वस्तु पास आयी। वो उस लड़के-लड़की की बाईक ही थी। नशे-नशे में सामने से आती हुई ट्रक दोनों ने देखी नही। लड़की पीछे बाइक पर खड़ी नाच रही थी। अब केमेरा झूम हुआ ।

अचानक एक बड़ा विस्फोट हुआ हो ऐसी आवाज आयी । मैने मेरी आंखे बंद कर दी। आस-पास के लड़के-लड़कियां भी आवाज करने लगे ''बंद करो...बंद करो...।''

स्क्रीन पर लड़के-लड़की के सिर्फ धड ही दिखाई दिए। स्लाइड बदली। इसमें सिर्फ धड़ बिना के मस्तक लहुलुहान हुए रास्ते पर पड़े थे। बाइक तो चकनाचूर हो गयी थी । लड़के-लड़की को पहचानना भी मुश्किल था ।

मेरी आंखों से गंगा-जमुना बरसने लगी । हर वर्ष ऐसे कितने केस भारत में बनते होगें, ये विचार ने मेरे मन में अकथ्य वेदना उत्पन्न कर दी ।

Chapter - 10

15/2/2008 I.S.T. 20.00 Rehabilitation centre, Thane

खालीपन अति भयंकर होता है.....।

''हेप्पी बर्थ-डे टू यू ....'' ''हेप्पी बर्थ-डे टू यू'' ''हेप्पी बर्थ-डे टू डीयर रोहन....'' ''हेप्पी बर्थ-डे टू यू...'' रोहन ने हेप्पी बर्थ-डे का संगीत पूर्ण होने के बाद मोमबत्तियां बुझायी । सबने जोर-जोर से तालियां बजायी। रोहन ने केक कट की । सबके मुंह में पानी आने लगा।

हमारे सेन्टर में किसी का भी बर्थ-डे आता, तो यदि वो बर्थ-डे बॉय या गर्ल ने अच्छा बर्ताव किया हो तो उसका बर्थ-डे मनाया जाता । सुपरिटेन्डेन्टे खुद उसके लिए केक लेकर आते और सभी को एक-एक टुकड़ा केक मिलता।

बर्थ-डे बॉय को ४ टुकड़े मिलते और अंत में टीवी पर आ रही फिल्म सबको देखने को मिलती ।

आज रोहन का बर्थ-डे था । डॉक्टर मेहता ने बतायी हुई फिल्म देखने के बाद रोहन 2 दिन तक सो नही सका था । उसने 2 दिन के बाद सुपरिटेन्डेन्ट के पास जाकर जिंदगीभर ड्रग्स छोड़ देने का लिखित पेपर दे दिया था। सुपरिटेन्डेन्ट एकदम खुश हो गई थी, क्योंकि उसकी केस हिस्ट्री एकदम खतरनाक थी । उसने ड्रग्स के नशे में अपनी गली के कुत्ते को मार दिया था।

उसके सुधार को देखकर ही सुपरिंटेंडेंट ने आज अचानक सरप्राइज देकर उसका बर्थ-डे मनाया था। रोहन एकदम खुश दिख रहा था।

''हेप्पी बर्थ-डे रोहन...'' मैने रोहन को विश किया। वो हंसा और उसने ''थैंक्यू'' कहा। उसने मेरे मुंह में केक रखी। मैने भी उसे केक खिलायी।

आधे घंटे के बाद में पार्टी खत्म हो गयी। सुपरिटेन्डेन्ट ने रोहन को गिटार गिफ्ट में दिया । रोहन को गिटार बजाने का शौक पागलपन की हद तक का था। गिटार देखते ही वह सुपरिटेन्डेन्ट से गले लग गया।

9 बजे मैं अपना तकिया लेकर टी.वी. रूम में आयी। लेटे-लेटे पिक्चर देखना मुझे अच्छा लगता। टी.वी. में आती हुई ऐड में मैंने देखा कि 30 सैकेंड में **''तारे जमीन पर''** पिक्चर चालू होने वाली थी। जब 21.12.2007 के दिन ये पिक्चर रिलीझ हुई थी, तब से मुझे ये पिक्चर देखने की इच्छा बहुत थी, लेकिन संजोग बने नही थे। हर वक्त कुछ न कुछ प्रॉब्लम आ जाती।

अभी उसकी ऐड देखकर मैं बहुत खुश-खुश हो गयी। एकदम आगे बर्थ-डे बॉय रोहन के पास जाकर मैं बैठ गयी। पिक्चर स्टार्ट हुआ। लाइट्स बंद कर देने में आयी। एक के बाद एक दृश्य आते गये।

ईशान नाम का लड़का पढ़ता नही है, मस्ती करता है, इसलिए उसके मम्मी-पप्पा ने उसे हॉस्टल में रखने का निर्णय किया। मम्मी ईशान को हॉस्टल में लेकर आती है। मम्मी पूरे दिन उसके साथ रहती है और फिर जाने का समय हो जाता है। मम्मी ईशान को छोड़कर चली जाती है।

ईशान रोता है और फिर एक गीत गाता है।

''यूं तो मैं घबराता नहीं, पर अंधेरे से डरता हूं मैं माँ,
यूं तो मैं दिखलाता नहीं, पर तेरी परवा करता हूं मैं माँ
तुझे सब है पता मेरी माँ, तुझे सब है पता मेरी माँ.....''

इस गीत की करूणता के कारण मेरी आंखे भर आयी। इस गीत

के शब्द संपूर्ण रूप से मेरे ऊपर सही बैठते थे। मुझे मेरा पूरा भूतकाल याद आया। फूट फूटकर मैं रोने लगी। मुझे मेरा खालीपन अनुभव होने लगा।

''तुम क्यों रो रही हो अपेक्षा?'' मेरे सामने देखकर रोहन ने पूछा।

''मैं और ईशान बहुत ही समान है रोहन....''

Chapter - 11

01/03/2008 I.S.T. 08.00 Rehabilitation centre, Thane

बदलाव अति भयंकर होता है.....।

मुझे एक परिवार ऐडोप्ट करने के लिए तैयार हो गया था। आज सेन्टर में मेरा अंतिम दिन था। सुपरिटेन्डेन्ट के कहने से कोर्ट ने मेरे स्वभाव में सुधार देखकर 15 दिन पहले मुझे सेन्टर से छूट्टी दे दी थी। लेकिन मुझे अब ये सेन्टर छोड़ने की इच्छा नही हो रही थी।

जब सुपरिटेन्डेन्ट ने मुझे मेरे ऐडोप्शन के बारे में कहा था, तब मैं पूरी रात सो नही सकी थी। विचारों के तुफानों से मेरा मन एकदम तहस-नहस हो गया था। सुबह मैने सुपरिटेन्डेन्ट से इस विषय में बात की थी।

''अपेक्षा! तेरे अंदर मुझे एक बहुत अच्छा व्यक्तित्व दिखता है। पूरी जिंदगी यहां पसार करना शक्य नही है। चल यदि कोर्ट हां भी कह दे, तो भी मेरी इच्छा नही है। तेरा टेलेन्ट यहां वेस्ट हो रहा है, ये मुझे उचित नही लगता है।'' सुपरिटेन्डेन्ट ने मैं समझ रही हूं या नही ये देखने के लिए बीच में रूककर मेरे सामने देखा था।

''और हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गयी। तूं जिस घर में जा रही है, उन व्यक्तियों को पसंद मैने स्वयं ने किया है। पिछले 12 वर्षों से प्रयत्न करने के बावजूद भी उस कपल को बच्चे नही हुए। मुझे पिछले ४ वर्षों से वे फोर्स कर रहे थे कि आपके ध्यान में कोई हो तो कहना, इसलिए

ही मैने तुम्हारा नाम दिया। अब तुम जहां जा रही हो, बहुत अच्छी तरह ही रहोगी, इस बात का मुझे विश्वास है....'' सुपरिंटेंडेंट की आंखों में सचमुच ही एक अनेरा विश्वास दिखाई दिया था।

''दूसरी एक बात... ये कपल जॉब करते है और बहुत अच्छे सुखी है। तेरी सारी इच्छाएं जो अपूर्ण थी, वो वहां पूरी होगी ऐसा मु-झे विश्वास हैं। तूं परी की तरह वहां रहेगी।'' अंतिम शब्द बोलते-बोलते सुपरिंटेंडेट का गला भर आया था। सिर्फ आंसू ही आने बाकी रहे थे।

उस दिन तो सुपरिटेन्डेन्ट की बात समझकर मुझे नींद आ गयी थी, लेकिन जैसे-जैसे दिन नजदीक आते गये, वैसे-वैसे मेरे अंदर बैचेनी बढ़ती गई थी। अब सुपरिटेन्डेन्ट भी मेरे साथ ज्यादा बातें नही करती थी।

मुझे यहां से जाने में जरा भी प्रॉब्लम न हो इसलिए ही शायद सुपरिटेन्डेन्ट मेरे साथ जितना हो सके उतना कम संपर्क हो और लगाव बढ़ने के बदले कम हो जाये, उसकी मेहनत करती थी, लेकिन उससे मेरी विरह-व्यथा में जरा भी फर्क नही पड़ा था।

और अंत में आज का नही चाहने वाला दिना उगा था। सुबह ही मुझे ऐडोप्ट करनेवाले मम्मी-पप्पा आ गये थे। दिखने में तो दोनों एकदम शालीन थे। और मेरे साथ उन्होनें बातें भी बहुत अच्छी तरह से की थी, लेकिन मेरा मन अस्वस्थ ही था।

सुबह से सुपरिटेन्डेन्ट मुझे दिखाई नहीं दी। दोपहर को 2.00 बजे खाना खाने के बाद सुपरिटेन्डेन्ट मुझे दिखाई दी, उसने मुझे पास बुलाया। हम दोनों सुपरिटेन्डेन्ट की रूम में जाकर बैठे।

''अपेक्षा!'' एकदम प्रेमभरी नजर से अजब मीठास के साथ सुपरिटेन्डेन्ट ने मेरा नाम उच्चारण किया।

''ये दुनिया....'' जैसी बाहर से लालमलाल दिखती है, वास्तव में ऐसी होती नही है। अंदर से न जाने कितने कीड़ें इस दुनिया को कुतरते जाते है। तुझे सबसे अच्छा स्थान मिले उसके लिये मैने सख्त प्रयास किया है। तो भी इस दुनिया में अंदर से कुछ अलग और बाहर से कुछ अलग हो सकता है.... लेकिन...'' मेरे सामने दो क्षण के लिए सुपरिटेन्डेन्ट देखती रही।

''मैं अभी जो कह रही हूं वो ध्यान से सुनना और समझना। बाहर से परिस्थितियां कैसी भी हो, तेरे अंदर की परिस्थितियां अच्छी रखना। यदि तूं अपनी परिस्थितियां नही बदल सके, तो अपनी मनःस्थिति बदल देना। और हां...'' अपनी जेब में से कोई वस्तु निकालते हुए सुपरिंटेंडेंट ने कहा ''ये मेरी तरफ से तुम्हें गिफ्ट समझना...'' मेरे हाथ में एक चमकती वस्तु उसने रखी। एक नेकलेस मुझे दिखाई दिया।

आवाज में मीठास के साथ सुपरिंटेंडेंट बोली, ''मेरी मम्मी ने मुझे ये गिफ्ट दी थी और कहा था कि ''तुझे जो लड़का या लड़की हो उसे ये नेकलेस देना, लेकिन अफसोस मैंने शादी ही नही की और इसलिए ही मुझे कोई संतान नही है। इस सेन्टर में तुमसे ज्यादा सक्षम कोई मिलेगा ऐसा मुझे लगता नही है और इसलिए ही...'' वो आगे के शब्द बोल नही सकी। आंसू ही सब बोल गए।

बिना कोई कारण सुपरिटेन्डेन्ट के मेरे ऊपर बरसाये प्रेम को मैं झेल नहीं सकी। मैं सुपरिटेन्डेन्ट के गले लगकर बहुत रोयी। कितने ही क्षण तक इस प्रकार हम दोनों रोते रहे।

आखिर सुपरिटेन्डेन्ट ने मेरे आंसू पोंछे।

''बी स्ट्रोंग... मुझे विश्वास है कि तू सब जगह समन्वय करनेवा-ली बनेगी। बेस्ट ऑफ लक तेरी न्यू लाइफ के लिए।'' सुपरिंटेंडेंट ने मेरे सिर पर किस की और मेरा हाथ पकड़कर मुझे बाहर लेकर गयी।

सब लड़के-लड़कियां इकट्ठा हो गए थे।

''देखो, आज अपेक्षा अपने घर जा रही है। सब उसे गुड फ्युचर विश करो।'' सुपरिटेन्डेन्ट ने कहा। रोहन की आंखों में आंसू थे। सब ने मुझे विश किया।

मैं आंसूओं को रोकती-रोकती सुपरिंटेंडेंट के साथ बाहर आयी। बाहर होंडा सिटी कार में मुझे ले जाने के लिए मेरे मम्मी-पप्पा तैयार थे। मैंने अंतिम बार मेरे साढ़े पांच महिने के घर की तरफ देखा। कितनी ही यादें उसके साथ जुड़ी हुई थी। गाड़ी खुली और मैं उसमें बैठ गयी।

Chapter - 1

7/3/2008 **I.S.T. 10.00** A2 Tutorials, BKC

ADJUSTMENT अति भयंकर होता है.....।

मैं आई-पेड में नोट्स टाईप कर रही थी। बायोलॉजी के सर हमें पढ़ा रहे थे। पिछले 3 दिन से मम्मी-पप्पा (नये) ने मुझे पढ़ने के लिये ये ट्युशन जॉइन कराया था। मेरा पसंदीदा विषय बॉयोलॉजी था, इसलिए मैं बहुत ध्यान से सुन रही थी ।

''आज हम एक स्पेश्यल चेप्टर देखेगें। 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट।' इस दुनियां में जब हम आये थे, तब हमारे साथ दूसरे **8,99,999** जीव भी आये थे। तो भी तुम जिन्दा रह गये और बाकी मर गये, इसमें कारण क्या? कोई बतायेगा?'' बॉयोलॉजी सर ने हमारी तरफ देखा। किसी ने भी हाथ ऊपर नही किया ।

''इतने **15** साल के ताड़ हो गये हो, तो भी बुद्धु ही रहे। तुम्हे पता नही तुम कैसे बचे-जीवित रहे?'' मजाक में सर ने कहा और फिर एक विडियो स्टार्ट किया। उसमें व्यक्ति किस प्रकार माता के पेट में आता है और कैसे वृद्धि पाता है, वह बताने में आया था। विडियो पूरा हो गया ।

''विडियो देखने के बाद हमें एक बात का पता चलता है कि... '' सर ने गला साफ करके कहा कि ''जो एडजेस्ट होता है वो आगे बढ़ता है ।''

सर का ''एडजेस्ट'' शब्द ने मेरे दिमाग में पिछले 7 दिनों में बिती

हुई घटनाऐं ताजा कर दी। 1 तारीख को शाम को 5 बजे मैं मेरे नये घर जो **K2** टावर्स, B.K.C था, उसमें पहुंची थी। रास्ते में मेरे नये मम्मी-पप्पा ने मेरे एज्युकेशन, इन्टरस्ट, खाने के शौक, हॉबी के विषय में पूछा था। बोलने की इच्छा कम होते हुए भी मैने सब प्रश्नों के जवाब दिये थे। उनके स्वभाव से तो अब तक मुझे वे एकदम अच्छे लगे थे।

हमने कार को पार्किंग में पार्क किया था और 20 TH FLOOR में रहे अपने फ्लेट में गए थे। एक फ्लोर पर 4 फ्लेट थे। हमारे सामने का एक फ्लेट खुला था। बाकी के दो फ्लेट में काम चल रहा था। 2 महिने के बाद वो भी भरने वाले थे।

मैं मेरे नये फ्लेट में पहुंची थी। उसका इन्टीरीयर एकदम पोश था। 3 BHK का घर था। ''**इन दो व्यक्ति के लिए इतना बड़ा घर?**'' बल्ब की तरह विचार मन में आया था। नही पूछना ही मुझे अच्छा लगा था।

फिर पप्पा-मम्मी मुझे मेरे रूम की चाबी देकर मेरा रूम बताने ले गए थे। पप्पा ने मेरे हाथ में से चाबी लेकर रूम खोला था। मैं रूम की रौनक देखकर दंग रह गयी थी।

मेरे अलग-अलग पोझवाले फोटो से पूरे रूम की दीवार भर देने में आयी थी। उन सब फोटो के नीचे ।

"WELCOME APEKSHA TO YOUR OWN HOME..."

लिखा हुआ था । रूम के बीचोबीच एक बड़ा बेड था जिसके ऊपर 3 व्यक्ति आराम से सो सकते थे।

बेड की राइट साइड में एक टेबल था और उसके ऊपर एप्पल का आइपेड, मोबाइल और पीसी रखे हुए थे। टेबल के सामने एक बहुत आकर्षक मीरर था, जिसके नीचे ड्रोअर में सब प्रकार की मेक-अप की वस्तुऐं रखी हुई थी। मेरे बेड के सामने ही मेरा L.C.D. T.V. एकदम नया था । रूम की सिलिंग पर चमकते ग्रहोवाला वॉलपेपर लगाया हुआ था। रात को सोते समय ये सब चमकते थे।

फिर मम्मी ने मुझे ले जाकर मेरा कपड़ों का वोरड्रोब बताया था।

उसमें एक से बढकर एक 30 नयी ड्रेस मेरे माप की थी। उसके अलावा स्वीमिंग सूट, अलग-अलग नाईट ड्रेस, गेम्स के ड्रेस और तरह-तरह की घड़ियां, सेन्ट भी उसमें थे।

इतना सब मैने जिंदगी में पहली बार देखा था।

''तू फ्रेश हो जा फिर हमें आज शाम को बाहर जाना है। आज मैने कम्पनी से स्पेश्यल छूट्टी ली है...'' कहकर पप्पा और मम्मी दोनों बाहर चले गये थे।

वैसे तो मुझे सेन्टर छोड़ने का दुःख बहुत था, लेकिन यहां मेरी हो रही राजशाही ट्रीटमेंट को देखकर मुझे मेरा दुःख कम होता जाता लगने लगा था। रात को 8 बजे पप्पा ने मेरे रूम का दरवाजा खटखटाया था।

''अपेक्षा!'' एकदम मधुर स्वर में पप्पा की आवाज सुनाई दी थी। ''तू तैयार है?'' ऑटोमेटिक शॉवर में स्नान करके मैं कपड़े पहनकर तैयार हो गयी थी। मैने जाकर रूम का दरवाजा खोला था। "WOW" मुझे देखते ही पप्पा के मुंह में से शब्द निकल पड़े थे।

"WOW" सुनकर मम्मी भी क्या हुआ ये देखने के लिए आयी थी। मेरी ड्रेसिंग देखकर मम्मी एकदम चकित हो गयी थी। ''तूं क्या लगती है। देखना हां B.K.C वाले तेरे साथ मूवी का कोन्ट्रेक्ट साईन न कर ले।'' इस बात पर मैं हँस दी थी। मम्मी-पप्पा भी हँस रहे थे।

फिर उस दिन शाम को हम B.K.C. की फेमस होटल में गये थे। वहां मेरी पसंद की सब वस्तुऐं मम्मी-पप्पा ने मंगायी थी और हमने बातें करते-करते खाना खाया था। रात को घर आते-आते 12.00 बज गये थे, क्योंकि रास्ते में हम मॉल में भी घूमकर आये थे। वहां पप्पा ने मुझे मेरी पसंद की गेम्स खिलायी थी।

''गुड नाइट'' कहकर पप्पा ने दरवाजा बंद कर दिया था। सुबह जब मैं 6.00 बजे जागी, तब मम्मी और पप्पा मेरे ही रूम में मेरे ऊपर हाथ रखकर सो रहे थे। उनको डिस्टर्ब न हो इसलिए मैं भी वापस सो गयी थी। 8 बजे नाश्ता करके मम्मी पप्पा जॉब पर निकल गए थे।

''हम 6 बजे आ जायेगें, तब तक तुम्हें जो कुछ P.C पर करना हो, गेम्स खेलना हो, वो तूं करना। तुम्हारे लिए स्पेश्यल ऑनलाईन

इन्टरनेट कोर्स (फैशन डिझायनिंग) भी हमने सबस्क्राईब किया है। वो भी तुम ऑनलाईन जाकर सिख सकती हो।'' इतना कहकर वे चले गये थे।

8 बजे के बाद मैं एकदम अकेली हो गयी थी। पहली बार इस प्रकार अकेले रहने का हुआ था। 6 बजे तक तो कितनी बार मुझे विचार आ गया कि **' मैं सेन्टर में होती तो ही अच्छा होता...'**

शाम के 6 बजे और बेल बजी थी। तब मैं मेरे सामने पड़े एप्पल कम्पनी के मोबाइल को समझने की कोशिश कर रही थी। मैंने फटाफट दरवाजा खोला था और एकदम थके हुए पप्पा दिखाई दिये थे। मैंने स्माइल देकर उनका स्वागत किया था और उन्होनें मेरे लिए लायी हुई गिफ्ट मुझे दी थी। 15 मिनट के बाद मम्मी भी आ गयी और उन्होनें भी मेरे लिए नेचुरल्स की सीताफल की आईसक्रीम लायी थी।

हम सब फ्रेश होकर खाना खाने बैठे थे और दिनभर में हुई विविध घटनायें हमने एक-दूसरे को सुनायी थी। आज भी मम्मी-पप्पा मेरे रूम में ही मेरे आस-पास सोये थे।

3 दिन इसी प्रकार बीतें थे।

तीसरे दिन रूम में मुझे रोती हुई देखकर मम्मी-पप्पा दौड़कर आये थे।

''क्या हुआ अपेक्षा?'' एक ही प्रश्न मुझे मम्मी-पप्पा ने बहुत बार पूछा था। बहुत बार पूछने के बाद मैंने कहा था ''आप दोनों जॉब पर चले जाते हो फिर मैं बहुत बोर हो जाती हूं। मुझे बहुत अकेला-अकेला लगता है। मेरा जी घुटता है।'' पप्पा-मम्मी ने फिर नक्की करके मुझ ट्युशन जॉइन करवाया था। वहां मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता था... आगे के दिन भी अच्छी तरह से बीतें थे।

''अपेक्षा, अपेक्षा! तूम कहां हो ?'' बायोलोजी सर की आवाज ने मुझे क्लास में लाया।'' ''आर यू ओ.के.....'' सर ने मेरी तरफ कन्फ्युझन के साथ देखते हुए पूछा।

मैंने तुरंत ही ''यस सर!'' जवाब दिया। लेकिन मेरे मन में तो बॉयोलोजी के दो शब्द ही फ्लेश हो रहे थे। एडजस्टमेंट और सर्वाईवल।

Chapter - 2

20/3/2008 I.S.T. 21.00 K2 Towers, BKC

अवदशा अति भयंकर होती है.....।

'धड़ाम...' आवाज आते ही मेरी नींद उड़ गयी। जैसे कि भूंकप आया हो ऐसा अनुभव हुआ। मैने आस-पास देखा, लेकिन कुछ भी हिल नही रहा था।

''क्या हुआ?'' का विचार कौंधा। मैने घड़ी में समय देखा। हैना मोन्टेना की घड़ी 9 बजे का समय बता रही थी। फिर मुझे याद आया कि ''आज में जल्दी सो गयी थी।'' मैं उठी। मेरे डबल बेड के नीचे रखे स्लीपर मैने पहने। इसमें भी मिक्की का फोटो था।

मैं रूम खोलकर बाहर गयी। हॉल की लाइट बंद थी। आज मम्मी-पप्पा मेरे पास आकर नही सोये थे। *''शायद बाहर गये होगें।''* मैने सोचा।

मैं मेरे रूम की तरफ वापस मुड़ी कि मुझे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। इससे पहले कभी भी मैने इस घर में रोने की आवाज नहीं सुनी थी।

मम्मी-पप्पा के रूम की लाइट चालू थी। वहां से आवाज आ रही थी, ऐसा मुझे लगा। मैं मम्मी-पप्पा के रूम की तरफ बढ़ी। जैसे-जैसे नजदीक जाती रही, वैसे-वैसे रोने की आवाज बढ़ती गयी।

मम्मी-पप्पा के रूम के बाहर मैं पहुंची। *'दरवाजा खोलुं या*

नहीं?' उसकी दुविधा मन में खड़ी हुई। 5 मिनट मैं बुद्धु की तरह वहां की वहां ही खड़ी रही।

''इस दुनिया में दुःखियारे जीव ज्यादा है। तूं उनका सहारा बनना... आंख और मन खुला रखना।''सुपरिटेन्डेन्ट के शब्द दिमाग में उभरे और मैने दरवाजा खोला।

अंदर का दृश्य देखकर में चकित रह गयी। दो क्षण के लिए तो मैं डर गयी।

''मम्मी! मम्मी! ये क्या...? ये....ये... आपकी हालत किसने की?'' मम्मी का पहना हुआ गाउन फट गया था। मुंह के ऊपर किसी ने जोरदार तमाचा लगाया था, और उस के कारण होंठों के किनारे से खून निकल रहा था।

मम्मी की ऐसी अवदशा देखकर मेरी आंखों से भी धड़ाधड़ आंसू गिरने लगे।

''बोलो ना मम्मी! किसने किया ये सब?'' मैने वापस पूछा। मम्मी के रोने की आवाज और भी तीव्र हो गयी। मम्मी ने कांपते होंठों से कुछ बोलने का प्रयास किया, लेकिन मुँह में से खून के सिवाय कुछ भी निकला नहीं।

मैं दौड़कर अपना मोबाइल लेकर आयी। मैने **''डेडी''** के नाम से सेव किया हुआ नम्बर लगाया ''ध नम्बर यू आर ट्राईंग टू कॉल इझ बिझी।'' की आवाज सुनाई दी। मैने वापस कट करके नम्बर लगाया। इस बार भी ऐंगेज की ही आवाज सुनाई दी।

मम्मी फटे हुए गाऊन में ही खड़ी हुई। उसके पैर कांप रहे थे। मैने मम्मी का हाथ पकड़कर उसे पलंग पर बिठाया। गीझर में से थोड़ा गर्म पानी लाकर मैने मम्मी के मुंह से निकलता हुआ खून साफ किया, फिर सोफरामाइसिन ट्यूब लगाकर मैने खून बंद किया।

''मम्मी! किसने आपकी ये हालत की?'' मम्मी थोड़ी स्वस्थ हुई तब मैने पूछा।

मम्मी ने अपना हाथ ऊपर करके डनलोप बेड के अंत में रखी हुई फ्रेम की तरफ अंगुली से इशारा किया। मेरी नजर उस तरफ गई। मैं दंग

रह गई।

Chapter - 3

22/3/2008 | I.S.T. 19.00 | K2 towers Basement, BKC

इमोशन अति भयंकर होता है.....।

मुझे बेसमेंट में आकर आधा घण्टा हो गया था। मैं मेरे और पप्पा के बीच में हुई चेट पढ़ रही थी।

मैने चेट से ऊपर देखा कि एक होन्डा सिटी गाड़ी मुझे बेसमेंट में प्रवेश करती हुई दिखाई दी। मैने हाथ दिखाकर गाड़ी को रोका, गाड़ी रूक गयी। पप्पा ने खिड़की खोली, मैने गाड़ी का लॉक खोलने का ईशारा किया। पप्पा ने लॉक खोला। गाड़ी की आगे की सीट पर जाकर मैं बैठी।

''पप्पा मुझे लॉन्ग ड्राइव पर लेकर चलिए । मुझे आपके साथ बहुत बातें करनी है।'' पप्पा मेरे सामने अजीब नजरों से देखते रहे। मैने पहले कभी ऐसा किया नहीं था।

पप्पा! ने गाड़ी रिवर्स की और K2 टावर्स को पीछे छोड़कर हमारी गाड़ी वरली की तरफ दौड़ने लगी। 5 मिनट तक मैने कुछ भी नहीं कहा। फिर मैं रोने लगी।

पप्पा ने मुझे कांच में से देखा...

''तूं रो रही है अपेक्षा!? क्या मम्मी के साथ झघडा हुआ?'' पप्पा ने कांच में ही देखते हुए पूछा।

रोती हुई आवाज में ही मैंने कहा ''डेड! आपने मुझे धोखा क्यों दिया?''

''अपेक्षा! तूं क्या बक रही है?'' आवाज में आश्चर्य के साथ पप्पा ने कहा।

''मैं जो बोल रही हूं, वह बिल्कुल गलत नही है। मैं कितने अरमानों के साथ सेन्टर से निकली थी और मुझे अब क्या जानने को मिला? कि मॉय फादर इझ...''

अंतिम शब्द सुनकर पप्पा को धक्का लगा । हमारा एक्सीडेंट होते-होते बच गया। पप्पा ने गाड़ी एक साइड में पार्क की। मैं टेन्शन में आ गयी।

''अब पप्पा क्या करेंगें?''

5 मिनट तक कोई कुछ नही बोला। मेरे रोने की आवाज और गाड़ी में चलते ए.सी. की आवाज के सिवाय एक भी आवाज सुनाई नही दे रही थी।

5 मिनट के बाद पप्पा ने मेरी ओर देखा।

''आई एम सॉरी अपेक्षा !'' इतना कहकर पप्पा फुट-फुटकर

रोने लगे। मैने पहली बार पप्पा को रोते हुए देखा। मेरा टेन्शन थोड़ा कम हो गया।

''पप्पा! मुझे प्रॉमिस करो कि दुबारा आप ऐसा नही करेगें...नही तो मुझे वापस सेन्टर में ही भेज दो... मुझे आपके साथ नही रहना।''

पप्पा का रोना और ज्यादा बढ़ गया। अचानक पप्पा ने मुझे अपने नजदीक किया।

''वापस जाने की बात बिल्कुल मत करना, मैं प्रॉमिस करता हूं कि दुबारा ये सब नही होगा।'' हर्ष के आंसू मेरी आंखों से गिरने लगे।

मैने मम्मी का काम पूर्ण कर दिया था।

Chapter - 4

24/3/2008 | I.S.T. 20.00 | Le merridian hotel, Mumbai

अंतर अति भयंकर होता है.....।

''आज से 17 वर्ष पहले की घटना है।'' डीनर खत्म करके हम ओपन टू ओर हॉटल की छत पर बैठे थे। मैं मम्मी-पप्पा की 17 वर्ष पुरानी बातें सुन रही थी।

''तब मुझे चाहिए था प्रेम! जॉइन्ट फेमेली होने के कारण और मैं बीच का भाई होने के कारण मेरे ऊपर विशेष ध्यान कोई नही देता था। मेरा, मेरी फेमेली के साथ अंतर बढ़ता गया। इस बात का डंख मुझे हमेशा ही रहता और इसलिए ही तब...''बोलते-बोलते पप्पा की आंखों में शून्यता नजर आयी। पत्थर दिल पर रखकर बोल रहे हो ऐसा लगा।

''इसलिए ही तभी मैने नक्की कर लिया था कि मुझे जॉइन्ट फेमिली में रहना नही है। पप्पा अपने भाईयों की सेवा में तत्पर रहते और मम्मी अपने घरवालों की। तो भी दोनों को कभी भी यश नहीं मिला...'' पप्पा के हाव-भाव थोड़े शार्प हुए।

''मैं शायद तब ही घर में से भाग जाता, लेकिन मेरी एक कमजोर कड़ी थी 'सारिका, मेरी गर्लफ्रेंड... मैं सारिका को छोड़कर कोई दूसरी जगह नहीं जा सकता था। हम दोनों अभेद हो गए थे। अपेक्षा! मम्मी ने तुम्हें जो उस दिन फोटो बताया था ना? वो वही थी...'' 4 दिन पहले बीती

हुई घटना मेरे सामने आ गयी।

मम्मी का वो कांपता हुआ हाथ मेरे सामने आया। मैने मम्मी के सामने देखा। वो नीचे देख रही थी। मम्मी का होंठ अभी भी फटा हुआ ही था लेकिन, अब वह काला पड़ गया था। मम्मी के सुरूप चेहरे पर ये कलंक जैसा लग रहा था।

17 वर्ष की उमर में मैने पहली बार सारिका के साथ शारीरिक सुख भोगा। शायद तब वो पहली रात हमारे लिए स्वर्ग के सुखों से भी ज्यादा थी। फिर तो मुझे इस खराब आदत का पागलपन छा गया। कोई भी लड़की दिखाई दे, तो वो ही शारीरिक सुख का विचार...!!! समय बीतता गया। मैं और सारिका ज्यादा नजदीक आ गये। अब हम दोनों हर रोज शारीरिक सुख को भोगते।

लेकिन एक दिन हमारे ऊपर अनचाही आफत आ पड़ी। सारिका गर्भवती हो गयी...'' पप्पा दो क्षण के लिए रूक गए।

''हम दोनों उस समय 19 वर्ष के थे। हम दोनों हॉस्पीटल गये, ''6 वीक प्रेगन्सी को हो गए है।'' ऐसा डॉक्टर ने कहा। तब ''कोन्ट्रासेप्टीव पिल्स...'' अंतिम शब्द सुनते ही मेरे दिमाग में कोई पुरानी याद ताजा हो रही हो ऐसा मुझे लगा। लेकिन, तुरन्त ही वो बंद हो गयी।

''नहीं थी, इसलिए डॉक्टर को पैसे खिलाकर ऑपरेशन करवाना पड़ा। उसके बाद लगभग 6 महिने तक मैने उसे शारीरिक संबंध के लिए फोर्स नही किया, लेकिन वो 6 महिने मेरी जिंदगी के सबसे काले महिने साबित हुए कि जिसके अंश अभी भी मेरे जीवन में से दूर नही हो सके है।'' पप्पा की आंखों में से एक आंसू नीचे गिरा।

''मेरे ऊपर भोगसुखों का पागलपन सवार हो गया था। मैने 6 महिने में अलग-अलग 120 स्त्रियों के साथ रातें बितायी थी। मैं घर पर लेट आता था लेकिन किसी को भी मेरी पड़ी नही थी । 2-3 बार पुलिस के शिकंजे में से ये काम करते-करते पकड़ें जाने से मैं बाल-बाल बचा। कमाटीपुरा की ऐसी एक भी होटल नही होगी, एक भी लॉज नही होगी, एक भी एरिया नही होगा कि जहां मैं सोया न हूं।'' 2 मिनट पप्पा कुछ बोले नही।

''6 महिने के बाद सारिका ने मुझे सामने से विनंती की, लेकिन अब बडी और ज्यादा होशियार वेश्या के साथ सोने के बाद सारिका के साथ मुझे आनंद नही आता था, फिर भी मैं मना नहीं कर सकता था और मेरी चाहत भी उसके साथ बहुत थी। आगे के ढाई वर्ष इस प्रकार बीते। फिर मेरी 'ना' के ऊपर जाकर तेरी मम्मी के साथ मेरी शादी हुई थी। सारिका को मुझे छोड़ना पड़ा। वो दिन मेरे लिए कालरात्रि का दिन था।'' पप्पा ने मम्मी की तरफ देखा।

''तेरी मम्मी को मेरे और सारिका के रिलेशन के विषय में कुछ भी पता नही था। लेकिन, लग्न के 6 महिने में ही तेरी मम्मी को सब कुछ पता चल गया था। दूसरी ओर सारिका की शादी हो गयी थी। मैं और मम्मी उस समय जॉइन्ट फेमेली से अलग हो गए थे। मम्मी के पास मेरे साथ रहने के सिवाय कोई दूसरा ऑप्शन नही था। सारिका अपनी शादी के बाद भी घर आती थी। और तब हम दोनों तेरी मम्मी के सामने ही चालू हो जाते थे... तेरी मम्मी ने बहुत सहन किया है।'' पप्पा का गला भर आया ।

''मैं और तेरी मम्मी ने संतान के लिए बहुत प्रयास किए लेकिन हर बार मेरी ओर से प्रयास कम पड़ता था और मेरा शरीर सतत भोगसुखों के कारण कमजोर हो जाने से हम सफल नही हुए। मैने तेरी मम्मी से प्रॉमिस किया था कि जिस दिन हम दोनों की संतान होगी उस दिन से मैं ये गोरखधंधा बंद कर दूंगा। इस प्रकार 12 वर्ष बीत गए।

रिझल्ट कुछ भी आया नही, मेरी आदत चालू ही रही। फिर मम्मी ने बच्चा एडोप्ट करने का प्रस्ताव मेरे सामने रखा। शुरूआत में मैने स्वीकार नही किया, लेकिन आखिर में मैं भी मान गया। अपेक्षा! तूं हमारे जीवन में आयी वो दिन मेरी जिंदगी का सबसे पवित्र दिन था। उसके बाद थोड़े दिन मैने तेरी मम्मी को दिया वचन पाला, लेकिन बाद में मैं अपने आपको कंट्रोल नही कर सका।

तुम्हें पता होगा ना अपेक्षा!'' पप्पा ने मेरी ओर देखा और कहा ''मैं सेटरडे को घर पर नही रहता था।'' मैने सिर हिलाकर 'हां' कही।

''4 दिन पहले इसी बात के लिए मेरी मम्मी के साथ मेरी बहस हुई थी और मैं अपने आपको कंट्रोल नहीं कर सका था। सॉरी प्रियल...''

पप्पा उठे और सबके सामने ही मम्मी के गले लग गए। उनकी आंखों में से 12 वर्ष के पश्चात्ताप के आंसू गिरने लगे। मम्मी भी रो रही थी। मेरी आंखों से भी आंसू बहने लगे थे।

बहुत दिनों तक पप्पा के उस दिन के शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे।

''मैं दुबारा नही करूंगा प्रियल!''

Chapter - 5

1/4/2008 I.S.T. 10.00 CCD, BKC

मेचिंग अति भयंकर होता है.....।

'तू ड्रग्स लेता है?''

''नहीं, टच भी नही करता...''

''तू दारू पीता है, हुक्का मारता है, सिगरेट लेता है?''

''नहीं... ये सब वस्तुऐं तो मैं टच भी नहीं करता...''

''तेरी कोई गर्लफ्रेंड है?''

''हाँ....''

''कौन...?''

''तू..'' वो हंसा...

''तूं मेरे लिये क्या कर सकता है?''

''मरने के सिवाय कुछ भी.... सबसे ज्यादा मुझे मेरी जिन्दगी प्यारी है।''

''तूं मुझे कितना चाहता है?''

''मेरे मम्मी-पप्पा को छोड़कर बाकी सबसे ज्यादा....''

''मैने सुना है कि तुम एकदम रिलिजीयस हो। तुम रिलिजीयस को मेरे लिए छोड़ सकते हो?''

''मर जाऊंगा.... लेकिन छोडूंगा नहीं।'' गुस्सा उसके मुंह पर दिखाई दे रहा था।

"तो ठीक है। या तो मैं या तो रिलिजन..." मैं चेयर पीछे करके खड़ी हो गयी।

वह मुझे देखते हुए वहां का वहां बैठा रहा। ब्राइट चेहरा थोड़ा फिका पड़ गया था, लेकिन उसमें दृढ़ता तो थी ही।

मेरे प्रश्नों में ही मेरी पहली डेट पूरी हो गयी। मैं CCD के बाहर निकल गयी। वो वहां पर ही बैठा रहा । मैं CCD के पास की गली में मुड़ी और एक बिल्डिंग में जाकर खड़ी रही।

जैनम 10 मिनट के बाद बाहर निकला। उसने आस-पास देखा। वो मेरे सामने से पसार हुआ। मैने जाते हुए उसके हाथ को पकड़ा। मुझे मेरा मेच मिल गया था।

"मैं तेरे साथ हूं जैनम!"

हम दोनों साथ में चलते रहे।

Chapter - 6

13/04/2008 **I.S.T. 23.55** K2 Tower, BKC

भय अति भयंकर होता है.....।

तेज पवन की आवाज के कारण मेरी नींद खुल गयी। मैने घड़ी में देखा - 11.55 PM । मैं बेड पर से खड़ी हो गयी। खिड़की खोलकर बाहर देखा तो बाहर हवा की बिल्कुल आवाज नहीं आ रही थी।

"क्या है?" मन में विचार उठा । मैने 2 दिन पहले ही भूत की एक पिक्चर जैनम के साथ देखी थी। उस रात को मुझे बिल्कुल नींद ही नहीं आयी थी। शायद आज भी उसकी असर हो तो?

मैं रूम के बाहर गयी। हॉल की डीम लाइट चालू की। मैने देखा कि बाथरूम की लाइट बंद-चालू हो रही थी। एक अव्यक्त भय ने मेरे हृदय पर कब्जा कर लिया। मैं मेरे रूम की ओर मुड़ी। मेरे सामने ही रूम का दरवाजा बंद हो गया। अंदर से लॉक की आवाज आयी। मैं दौड़कर रूम की ओर भागी और उसे खोलने का प्रयत्न करने लगी, लेकिन रूम खुला नही।

मैने दौड़कर मम्मी के रूम का दरवाजा खटखटाया। आज पहली बार ऐसा हुआ था कि मेरे घर आने से पहले मम्मी-पप्पा सो गये थे। मुझे सब अजीब लग रहा था। मम्मी-पप्पा मेरे लेट आने से नाराज है ऐसा मुझे लग नही रहा था, क्योंकि मेरे और जैनम के रिलेशन के विषय में सब बातें मैंने मम्मी को बता ही दी थी। मम्मी ने भी एकदम खुश होकर मेरे बॉयफ्रेंड

के रूप में जैनम को स्वीकार कर लिया था।

मम्मी के रूम से कोई रिस्पॉन्स आ नही रहा था। अजीबों-गरीब आवाजें किचन में से आने लगी। मेरे दिल की धड़कने बढ़ गयी। मैने जोर से आवाज लगायी और दरवाजे की तरफ दौड़ी, तभी किसी ने साइड से एक काला कपड़ा मेरे मुंह के ऊपर डाल दिया।

मैं जोर-जोर से रोने लगी, तभी 12 बजने के डंके पड़े और ''हेप्पी बर्थ-डे'' का गीत चालू हुआ। मैं रोती रही, लेकिन धीरे-धीरे मैं शांत हो गई। मैं सचमुच ही बहुत डर गयी थी।

किसी ने मेरे ऊपर से काला कपड़ा निकाला। मैने आस-पास देखा। भीगी आंखों से मुझे पूरा घर सजा हुआ दिखाई दिया। फिर एक साइड से किसी ने मेरे गाल पर किस किया। मैने उस तरफ देखा तो मम्मी थी। उसी समय दूसरी ओर किसी ने किस किया, उस तरफ देखा तो पप्पा थे।

''हेप्पी बर्थ-डे अपेक्षा...!'' दोनों एक साथ बोले। मेरी आंखों में से भय की जगह हर्ष के आंसू गिरने लगे। बारी-बारी सबने मुझे विश किया।

अंत में सबने मिलकर मेरा बर्थ-डे मनाया, लेकिन मेरी आंखें एक व्यक्ति के लिए तरस रही थी, वो मुझे कही भी दिखाई नही दिया।

2 घण्टे पार्टी चली, फिर मम्मी-पप्पा और मित्रों ने वापस ''सॉरी और गुड नाइट'' कहकर मुझसे विदाई ली। कौन जाने क्यु मुझे मेरी पार्टी में इतना आनंद नही आया। मुझे इसका कारण पता था। मैने सोचा **''जैनम भूल गया होगा।''**

मैं रूम में गयी। रूम का दरवाजा बंद किया। रूम की लाइट बंद थी। बेड पर सोने का प्रयत्न करने लगी। नींद नही आयी। बार-बार जैनम का चेहरा सामने आता रहा। मैं उठी। मम्मी-पप्पा की आवाज बाहर से आ रही थी। मैने उनके साथ टाइमपास करने का तय किया।

मैं बेड पर से खड़ी हुई। मैने घर में पहनने के स्लीपर्स पहने। उसी

समय किसी ने मुझे बेड पर खींचा। एकदम पास आकर उस व्यक्ति ने मुझे कान में ''हेप्पी बर्थ-डे...'' कहा। मैने आवाज पहचान ली। मैं जिसकी राह देख रही थी वो तो मेरे पास ही था।

मैं खुशी से पागल हो गयी।

Chapter - 7

18/5/2008 I.S.T. 10.00 Burj-Al-Arab, Dubai

स्मरण अति भयंकर होता है.....।

चारों तरफ पीला-पीला दिखाई दे रहा था। जहां देखो वहां सोना ही सोना... हम सोने की नगरी दुबई में गर्मी से लड़ने के लिए आईसक्रीम खा रहे थे।

10 दिन - 11 रात की टूर में हम दुबई घुमने के लिए आये थे। एक्झाम बहुत अच्छी तरह हुई थी और शायद पूरे क्लास में फर्स्ट आने की पूर्ण संभावना थी। एक्झाम के अंतिम दिन जब एक्झाम देकर मैं घर आयी तब पप्पा ने मेरे हाथ में एक एन्वलप रखा था।

''अंदर जाकर देखना!'' कहकर पप्पा ऑफिस के लिए अपनी होन्डा सिटी में निकल गये थे। आज दुपहर को पप्पा घर में क्यों थे ये मुझे समझ में नही आया था।

मैने रूम में जाकर कवर खोला था। मेरे नये नाम से उसमें पास-पोर्ट और वीझा था। **''अपेक्षा प्रमोद सक्सेना''** वीझा के ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था। मैने वीझा खोलकर देखा। उसमें और भी एक कड़क पेपर था। मैने पेपर को सीधा किया था, उस पेपर में एयरलायन्स की टिकिट थी। मैने डेस्टीनेशन के स्थान पर देखा था-दुबई...

मैं हर्ष से डांस करने लगी थी।

शाम को मम्मी के घर पर आते ही मैने वो टिकटें मम्मी को बतायी थी। मम्मी को भी बहुत आश्चर्य हुआ था।

''पिछले 11 वर्षों से तेरे पप्पा मुझे कहीं भी लेकर नहीं गये... तूं मेरे लिए लक्की है। तेरे आने के बाद मेरे जीवन में बहुत गजब हो रहा है।'' मम्मी ने मुझे बांहों में भर लिया।

फिर आगे के दिन मम्मी और मेरी शॉपिंग में ही पूरे हो गये थे। मम्मी और मैने दुबई की गर्मी में पहनने योग्य छोटे-छोटे कपड़े लिए थे।

जैनम भी मेरे जाने की बात सुनकर थोड़ा खुश और थोड़ा दुःखी था। हम दोनों ने रात को बात करने का नक्की किया था।

''चल अपेक्षा! तेरे लिए ये नेकलेस खरीदते है?''

पप्पा की आवाज से मैं दुबई में हूं उसका मुझे ख्याल आया।

''हां चलो पप्पा...'' कहकर हम दुकान में घूसे।

दुकान में प्रवेश करते ही एक सेल्समेन पर मेरी नजर पड़ी।

''पप्पा! मुझे ठीक नही लग रहा है। उल्टी जैसा हो रहा हैं। हम बाद में आयेगें तो चलेगा?'' मैने पप्पा से पूछा। मेरी तकलीफ देखकर पप्पा ने हां कहा।

हम सब बाहर निकले गये। मैने शांति की सांस ली। मेरे भूतकाल के भूत को पीछे छोड़ देने का आनंद मुझे हुआ।

''कौन था वो?'' थोड़ा आगे चलने के बाद मम्मी ने मुझे पूछा। मम्मी को हकीकत पता चल गयी थी। ''मेरा नहीं जैसा भाई।'' मैंने उत्तर दिया।

Chapter - 8

20/3/2009 **I.S.T. 19.30** K2 Towers, BKC

आकर्षण अति भयंकर होता है.....।

''बाय मम्मी ! कल सुबह मिलेंगें। अच्छी तरह मेरे बिना रात गुजारना... झघडना मत हाँ !'' मम्मी को गाल पर किस करके नीचे हॉर्न बजाते हुए जैनम को **''बंद कर, आ रही हूं।''** मेसेज भेजकर मैं बेग लेकर लिफ्ट में नीचे जाने लगी।

आज हम 7 मित्र जैनम के घर नाईट आउट करने वाले थे। जैनम के मम्मी-पप्पा आऊट ऑफ टाउन थे और इसलिए ही हमने उसका घर निश्चित किया था। मम्मी-पप्पा को मनाने के लिए 2 घंटे लगे थे, लेकिन आखिर वे मान गये थे।

लिफ्ट में 4,3,2,1 फ्लोर दिखाई दिए और दरवाजा खुला, मैं बाहर निकली। सामने जैनम अपनी पल्सर लेकर खड़ा था। उसके 17 वर्ष पूरे हो गये थे, इसलिए ही उसके पप्पा ने उसे बाईक गिफ्ट में दी थी।

''तूं आज परी जैसी लग रही है।'' मुझे देखते ही जैनम ने कहा। बहुत दिनों के बाद मैने दुबई से लायी हुई नाईट ड्रेस पहनी थी। मैं जैनम के पीछे बैठी। उसने फुल स्पीड में बाईक भगायी।

15 मिनट में हम B.K.C के ही दूसरे कॉम्पलेक्स में पहुंचे। सामने 50 फ्लोर की बड़ी बिल्डिंग दिखाई दी। जैनम ने एक स्पेश्यल गैरेज में अपनी बाईक पार्क की। मैं बाईक के ऊपर से नीचे उतरी, सामने दूसरे सब फ्रेंड खड़े ही थे। ''हाय! अपेक्षा! तुम कैसी हो? तुम फटाकेदार लग रही

हो...'' कामिनी ने मेरा स्वागत किया।

''थैन्क यू...''

बाकी सबने भी ''हाय'' किया। कामिनी और मैं बातें करने लगे।

''तुम्हें पता है...''

''**OK.OK.OK....** मेरा घर है... चलो वहां जाकर तुमको जो करना है वो करना....'' कहकर जैनम मुझे हाथ पकड़कर वहां से चलाने लगा। बाकी 5 ने हमारा अनुसरण किया।

बिल्डिंग के स्ट्रक्चर से बिल्डिंग नया और हाई-क्लास लोगों के लिए बनाया हुआ लग रहा था। जैनम कभी भी दिखावा नही करता था, इसलिए वह इतना ज्यादा सुखी होगा ऐसा मुझे कभी लगा नही था।

हम लिफ्ट में चढ़ें। जैनम ने 31ST फ्लोर मुंह से कहा और हम सबके आश्चर्य के बीच जैसे लिफ्ट जैनम का आदेश मानती हो, उस प्रकार ऊपर जाने लगी।

31 फ्लोर आते ही लिफ्ट रूकी और हम सब लिफ्ट से बाहर आये। एक बड़े दरवाजें वाला घर दिखाई दिया। उसका दिखाव सुपर्ब था। उस दरवाजें के ऊपर मछली, कलश, स्वस्तिक वगैरह वस्तुएँ मार्बल में खुदी हुई थी।

''कहीं देखा है मैने इसे?'' मैं अपने दिमाग में ढूंढती रही, लेकिन कुछ भी मिला नहीं। जैनम ने दरवाजे के पास जाकर एक बटन दबाया और साइड में रहे स्पीकर में ''जैनम'' बोला। दरवाजा खुल गया और स्पीकार में से आवाज आई, ''वेलकम मास्टर जैनम !''

मुझे ये सब कुछ देखकर आश्चर्य हुआ और सबसे ज्यादा आश्चर्य मुझे जैनम की सिम्पलीसीटी पर हुआ। मुम्बई में फ्लेट लेना ये ही एक बड़ी बात है और उसमें भी ऐसा... अशक्य... जैनम के पास कितने पैसे होगें ये उससे दिखाई दे रहा था।

''जैनम ये क्या है?''

'कुछ नही... ये हमारा दरवाजा का रोबोट है... ये इसी प्रकार घर के किसी भी व्यक्ति का स्वागत करता है। तूं इसके केमेरे के एरिये में आयी नही हैं, नहीं तो ये तेरा भी नाम लेता... मैने तुम्हारा फोटो उसमें फीड किया

है। देखो तो सही...''

''वेलकम गर्लफ्रेंड ऑफ मास्टर जैनम, डीयर अपेक्षा...'' मेरे सब मित्र हंसने लगे।

हम सबने घर में प्रवेश किया। घर एकदम हाई फर्नीचर वाला था। किसी मुवी का सेट देख रही हूं ऐसा मुझे लग रहा था।

''क्या जोरदार बॉयफ्रेंड दिया है...'' मैने भगवान का आभार माना।

''तो... दो मिनट तुम यहां पर नाश्ता एन्जॉय करो... मैं आता हूं।'' जैनम वहां से निकल गया। मैं आस-पास की सब चीजें देखती रही। सब डाईनिंग टेबल पर रखे पास्ता खाने में मशगूल हो गए।

कोई मुझे बुला रहा हो ऐसा इस घर में प्रवेश करते ही मुझे लग रहा था।

''SSSHHH.....SSSHHH....'' आवाज आयी। मैने देखा। जैनम एक रूम में से बुला रहा था।

दूसरे दोस्तों को पता न चले, इस तरह मैं वहां से खिसक गयी।

मैने रूम के अंदर प्रवेश किया।

जैनम का यह आर्ट रूम था । लगभग 100 SQFT... जितना बड़ा था।

''चल...'' जैनम ने मेरे कान में आकर कहा । मैने हाथ पकड़ा। फिर जैनम ने मुझे अपनी बनायी हुई अलग-अलग पेन्टिंग जो कि दिवारों पर फ्रेम करने में आयी थी, वो बताता गया।

जैनम को पेंटिग का शौक है, इसका मुझे पता था, लेकिन वो इतना अच्छा पेन्टर है, ये तो मुझे आज ही पता चला। हर एक पेंटिग देखकर मेरे मुंह से "WOW WONDERFUL" शब्द निकल रहे थे। आखिर हम रूम के कॉर्नर में गये। वहां एक परदा लगा हुआ था।

''और यह मेरा मास्टरपीस है.... मुझे ये बनाते हुए एक वर्ष से ऊपर हो गया है। मुझे आशा है तुम्हे यह पेंटिग पसंद आयेगी।'' कहकर जैनम ने एक बटन दबाया। पर्दा अपने आप दूर हो गया।

सामने डायरेक्ट दिवार पर ही एक अद्भूत आकृति पेंट की हुई

थी। ये आकृति जैसे कि गौतमबुद्ध की प्रशांत मूर्ति हो ऐसी लग रही थी। अटूट शांतता उसमें ठूस-ठूस कर भरने में आयी थी।

5 मिनट तक हम दोनों में से एक भी कुछ नही बोला। अनिमेष नयनों से हम शांतता का अनूठा रसपान करते रहे। एक गजब का आकर्षण उस आकृति में भरा हुआ था।

''ये कौन है?'' अनायास मेरे मुंह से वाचा फूटी ।

जैनम ने मेरी तरफ देखा। उसकी आंखों में पानी दिखाई दे रहा था ।

Chapter - 9

23/3/2010 I.S.T. 1.00 K2 Towers, BKC

शांतता अति भयंकर होती है.....।

''चारों तरफ खंडहर ही खंडहर फैले हुए हैं। मुझे बहुत प्यास लगी है। आगे जल दिख रहा है, उस स्थान के पास जाती हूं तो जल ओझल हो जाता है।

चल-चलकर मेरे पैर थक गए है। अब आगे चलने की शक्ति मुझमें नहीं है। ''अब मैं नही चल सकती, मुझे नहीं जाना सुवर्णनगरी में।'' मैं अपने आपको ही कहती हूं।

''जाना पड़ेगा... चल उठ...''एक भारी आवाज कहीं से आती है। मैं आगे-पीछे देखती हूं। कोई भी दिखता नही है। मेरे अंदर डर का प्रवेश होता है।

मैं आगे दौड़ने लगती हूं। पीछे कोई मेरा पीछा करता हो, ऐसे पैरों की आवाज सुनाई दे रही है। मैं दौड़ती ही रहती हूं... दौड़ती ही रहती हूं...

सामने तालाब दिखता है। पानी से लबालब भरा हुआ है। पैरों की आवाज से बचने के लिए और प्यास के कारण मुझे इसमें कूदने की इच्छा होती है। मैं जोर से डूबकी लगाती हूं। पानी उड़ता है और मैं तालाब के अंदर तक जाकर तालाब की सतह पर आती हूं। पानी बहुत मीठा है। मैं पानी पीने की शुरूआत करती हूं।

तभी अचानक कोई मेरा पैर नीचे से पकड़ लेता है। भयंकर वेदना होती है। मैं जोर-जोर से आवाज लगा रही हूं। ''बचाओ... बचाओ....''

''अपेक्षा...अपेक्षा...''

'मुझे तालाब के ऊपर एक सफेद पक्षी दिखता है। पैरों में भयंकर वेदना में भी एक क्षण के लिए मुझे हृदय में अनोखी ठंडक अनुभव होती है। वो मेरी तरफ आ रहा है, ऐसा लगता है... लेकिन मेरा पैर नीचे खिंचनेवाला प्राणी बहुत बलवान हो ऐसा प्रतीत हो रहा है। मैं चिल्लाती हूं।

''बचाओ...बचाओ...''

''अपेक्षा...अपेक्षा... उठ ऐसे क्यों चिल्ला रही है। अपेक्षा!''

मेरी आंखे खूली... मेरा पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था।

''क्या हुआ अपेक्षा?... तूं क्यों चिल्ला रही है? क्या कोई खराब स्वप्न आया था? पप्पा मेरे हाथ को झकझोर रहे थे। मुझे मेरा स्वप्न याद आया। मैं मुश्किल से बैठी।

''जब से तूं जैनम के घर से नाईट-आऊट करके आई है, उस दिन से ही तू एकदम गुमसुम रहती है। क्या हुआ है तुझे?'' पप्पा ने मेरे सामने चिंता के भाव के साथ देखकर पूछा।

मेरे सामने ''शासनद्रष्टा'' की पेन्टिंग आयी। रात को सोने से पहले और सुबह उठने के बाद सबसे पहले मुझे ये ही पेन्टिंग दिखती। ये पेन्टिंग देखने के बाद मैं इस दुनिया से कुछ अलग हूं ऐसा मुझे आभास होने लगा था। एक अकथ्य अवर्णनीय संगीत मेरी रगरग में मुझे सुनाई दे रहा था। अभी भी उस मधुर संगीत के थोड़े मंद-मंद स्वर मुझे सुनाई दे रहे थे।

''अपेक्षा तूं कहां है?'' पप्पा ने वापस पूछा। पेन्टिंग ओझल हो गयी।

''हाँ पप्पा कहो?'' अपने आप में आते हुए मैने कहा।

''हाँ ''अब तूं बराबर बात कर रही है। बोल तुझे क्या हुआ है?''

''कुछ नहीं पप्पा!'' मेरे अंतर की बात छिपाते हुए मैने कहा।

''बेटा! जो भी हो वो बोल दे...'' मम्मी ने मेरे छुपाने के भाव को पकड़ते हुए कहा।

''और दूसरा, तूं इतनी शांत क्यों हो गयी?... तेरी धमधमाती एनर्जी कहां गयी?''

''सच कहुं ना मम्मी.... तो....'' मैं अटकी।

''बोल बेटा बोल...'' मम्मी ने बोलने के लिए दबाव डाला। मम्मी की आंखों में मैने देखा।

''मुझे शासनद्रष्टा को देखना है....'' मेरे मुंह में से शब्द निकले।

Chapter - 10

12/5/2009 I.S.T. 10.00 Pali, Rajasthan

मिलन अति भयंकर होता है.....।

पाली की सख्त गर्मी चमड़ी को जला रही थी। शासनद्रष्टा को मिलने हम तीन + जैनम यहां आये थे । मन में एक अनोखा उत्साह था शासनद्रष्टा को मिलने का...

एक **52** शिखरवाले मंदिर में हमने प्रवेश किया। मुझे जैन मंदिर में गये ढाई वर्ष ऊपर हो गये थे। ऐसे भी मैं जब मंदिर जाती, तब वहां क्या करना ये मुझे पता नही था ।

और क्रिश्चन बनने के बाद तो जैनधर्म पर मेरी आस्था टूट गयी थी ।

लेकिन आज जैनम के कहने से उसके संतोष के लिए मैं मंदिर में गयी। सामने भगवान की मूर्ति आकर्षक थी। जैनम जैसा करता गया वैसे मैं करती गयी। मैं नवकार मंत्र भी भूल गयी थी। मैं जैन हूं ये बात मैने जैनम के साथ शेयर नही की थी, मेरे भूतकाल के ऊपर मैने परदा ही रखा था । जैनम और मेरी मित्रता टूटे ऐसा एक भी रिस्क मैं लेना नही चाहती थी ।

''जैनम को किसी भी तरह पता चल गया तो?'' मेरे मन में विचार उठा, लेकिन भगवान की मूर्ति देखते ही ये विचार शम गया। भगवान मेरे ऊपर हंस रहे हो, ऐसा मुझे लगा ।

''टेन्शन मत ले। तेरे सब प्रॉब्लम मैं दूर कर दूंगा...'' ऐसा बोल रहे हो ऐसा आभास मुझे हुआ। मैने मेरे तेजवंत विचारों पर धूल डाली। मन

शांत हो गया। शासनद्रष्टा मन में प्रतिबिंबित हुए।

मंदिर से हम बाहर निकले। मम्मी-पप्पा और मैं बिना हाथ जोड़े ही मंदिर को निहारने में मग्न थे।

''प्लीझ! इस तरफ चलो...'' जैनम ने विनंती की।

हम उस तरफ मुड़े। सामने एक 4 फ्लोर की बिल्डिंग दिखाई दे रही थी। उसके ऊपर **''पाली आराधना भवन''** खुदा हुआ था। दो में से एक गेट खुला हुआ था।

बहुत सारे लोग हॉल में बैठकर किसी को सुन रहे है, ऐसा बाहर से दिखाई दिया। दरवाजे के अंदर हमने प्रवेश किया।

सामने एक बड़े स्टेण्ड पर सफेद कपड़ों में सज्ज एक महिला सब लोगों को उपदेश दे रही थी।

''यहां बैठ जाओ... डिस्टर्ब मत करना....'' जैनम ने हमें इशारें से कहा। हम जहां जगह मिली वहां बैठ गए। आगे की जगह इतनी दूर से दिखाई नहीं दे रही थी। मैने मोबाइल निकाला।

जैनम को मैं टैक्सट करने लगी।

''हम शासनद्रष्टा को कब मिलेगें? मैं यहां भाषण सुनने नहीं, बल्कि मिलने आयी हूं।''

''स्वीटहार्ट ! थोड़ा समय राह देखो... शायद 15 मिनट के बाद तुम्हें तुम्हारा गोल मिल जायें...सॉरी...''

जैनम का टेक्सट मैने देखा। मैं मेरे मोबाइल में गेम्स खेलने लगी। वैसे भी मुझे भाषणों में कोई इन्टरस्ट नही था। मम्मी-पप्पा हिन्दी में मधुर भाषा में बोल रहे सफेद कपड़ोंवाली महिला को सुन रहे थे। उनके चेहरे पर अजब के भाव थे।

15 मिनट पूरे हुए। 'सर्वमंगल' जैसा कुछ बोलकर सब उठे...

जैनम मेरे पास आया।

'चल, अब मैं तुम्हें शासनद्रष्टा से मिलाता हूं।''

मैं और मम्मी-पप्पा उसके पीछे-पीछे चलने लगे। वो दो फ्लोर ऊपर चढ़ा। लिफ्ट की आदत होने से हम सब थक गये। जैनम और हमने एक बड़े हॉल में प्रवेश किया। वहां सफेद कपड़े वाली बहुत सी महिलाएं

पढ़ने में, मेडिटेशन में लीन थे।

जैनम ने मेरे पीछे आकर एक जगह पर ईशारा किया । मैने उस तरफ देखा । 10-12 महिलाऐं एक सफेद कपड़े वाली महिला के पास पढ़ रही थी।

''अपेक्षा....शासनद्रष्टा ये रहे...'' जैनम ने शांततापूर्ण आवाज में कहा।

मेरी नजर उनके चेहरे पर गयी।

मैं क्लीन बोल्ड हो गयी।

Chapter - 11

12/5/2009 I.S.T. 12.30 Pali, Rajasthan

कन्वरसेशन अति भयंकर होता है.....।

मिश्रीमावा और पाली-ये शब्द पर्यायवाची जैसे है। पाली आकर कोई मावा न खाये ये अशक्यप्रायः जैसा है। अभी हम भी ये ही वस्तु जयन्त मिठाई भंडार में खा रहे थे। दो राउण्ड पानीपुरी के पूरे करके अभी हम डेझर्ट की जगह मावा खा रहे थे।

लेकिन मेरा मूड आज खाने में नही था। बहुत बार आज ऐसा हो गया था कि लंबे समय तक पुरी मेरे हाथ में ही रही और गलकर नीचे गिर गयी, तब मेरा ध्यान वापस खाने पर आया। शासनद्रष्टा का जादु गजब का था। ''शासनद्रष्टा....''

पेन्टिंग वाले साध्वीजी... इंग्लिश में जिसे 'नन' कहते है। ''जैनधर्म में संन्यास को स्वीकार करके उच्च स्तर पर पहुंचे हुए एक सर्वोच्च आत्मा!'' इस प्रकार ही जैनम ने मुझे समझाया था...

सचमुच ही उनका आकर्षण गजब का था। जैनम के बताने के बाद मैं 5 मिनट तक साध्वीजी को ऐसे के ऐसे देखती ही रही थी। उनके चेहरे पर अपने साथीदारों को पढ़ाते समय भी एक गजब की शांतता थी।

जैनम ने बनायी हुई पेन्टिंग इनको देखने के बाद एकदम फीकी लग रही थी। सच में ही बोलिवुड की सब टॉप हिरोइनों का रूप इनके रूप के सामने कोयले जैसा था। स्वर्ग की अप्सरा भी इनके चरणों की धूल जैसी लगती थी।

''अभी साध्वीजी पढ़ा रहे है, इसलिए डिस्टर्ब करना उचित नहीं लगता...''

जैनम ने मुझे कहा था। तो भी मुझे उनके पास से हटने का मन नही हुआ था।

''बहना!'' 5 मिनट के बाद एक मधुर आवाज सुनाई दी थी। उन्मत्त हाथी को भी शांत कर दे ऐसा मीठास से भरपूर आवाज उनकी थी। हम सब उठकर उनके पास गये थे।

''जैनम! तुम यहां? क्यों? आत्मा अच्छी तो है ना?'' अंतिम वाक्य मैं समझी नहीं, लेकिन जैनम समझ गया था। उसने एकदम सॉफ्ट आवाज में साध्वीजी को सबकुछ कह दिया था।

''अनुकूलता हो तो 1.30 बजे आना... तब तुम्हें जरूर मैं मिलूं-गी।'' मेरे सामने शासनद्रष्टाजी ने कहा था। अनायास मेरे मुंह से पता नहीं कैसे ''हां जी'' ऐसा निकल गया था...

जैनम ने अजब दृष्टिसे मेरे सामने देखा था।

बिल्डिंग के बाहर आते समय जैनम ने मुझे पूछा था ।

''तूं कहां से 'हां जी'' शब्द सीखी?''

मैने उसे देखे बिना मेरे कंधे ऊपर किये थे। फिर हम पेटपूजा करने गये थे।

मैने घड़ी में देखा। 1.00 बजा था।

''यहां देखने जैसा क्या है जैनम?'' मैने जैनम से पूछा।

''यहां देखने जैसा कुछ भी नही है, लेकिन खाने जैसा बहुत है, जो तुम बराबर कर नही रही हो।'' मैं हंसी। शासनद्रष्टाजी के मिलने के बाद मेरी सभी प्रक्रियाओं में शांतता आ गयी हो ऐसा मुझे लगा। आधा घण्टा बड़ी मुश्किल से पसार हुआ।

1.30 बजे शार्प हम भवन में पहुंच गये। सुबह जहां देखा था, वहां ही शासनद्रष्टाजी आंखें बंद करके बैठे थे। मैने मेरा मोबाइल निका-लकर उनका फोटो लिया। लंबे समय तक ये ही फोटो मेरी जीवनडोर बननेवाला था।

"मत्थएण वंदामि..." जैनम ने पास जाकर कहां। शासनद्रष्टाजी ने अपनी कमल जैसी आंखें खोली। जैनम ने मुझे इशारा किया और मैं शासनद्रष्टाजी के पास जाकर बैठी। मम्मी-पप्पा जैनम के साथ बैठे।

"तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?" जादुई भाषा में साध्वीजी ने पूछा। एक क्षण तो मेरे मुंह में से शब्द निकले ही नहीं।

"पता नहीं", मैने कहा। साध्वीजी के चेहरे पर राहत के भाव छाये। उनके चेहरे पर सौम्य स्मित तैरने लगा।

"अच्छा है, हमें तुम्हारे साथ बता करना ईझी होगा।" इतना कहकर 3 घण्टे तक शासनद्रष्टाजी ने अपनी मधुरभाषा में मुझे समझाया। जीवन के सभी प्रश्नों के हल मिल जाए ऐसे प्रिंसिपल्स उन्होनें मुझे समझायें।

विदाई की बेला आयी। हमारी फ्लाईट 9 बजे की थी। हमें अभी यहां से निकलना जरूरी था। रोती हुई आंखों से मैं खड़ी हुई। उनके चरणस्पर्श मैने किए।

"रो मत..." साध्वीजी ने कहा... "हम 6 महिने के बाद यहां से मुम्बई आने ही वाले है..."

इस समाचार की खुशी में साध्वीजी के सामने ही मैं जाकर जैनम के गले लग गई। साध्वीजी हंसते रहे।

Chapter - 12

15/8/2009 | I.S.T. 21.00 | Church Gate, Mumbai

अटॅक अति भयंकर होता है.....।

"बाय जैनम..." मैं जैनम के गले लगी।

"बाय अपेक्षा! हम कल मिलेंगें। सेफ जर्नी..."

मैं 9.00 बजे की लॉकल ट्रेन में B.K.C के लिए चर्चगेट से चढ़ी । लेडिझ कम्पार्टमेंट में जाकर मैं बैठ गयी। मेरा मोबाइल निकालकर दिनभर में आये हुए मेसेज देखने लगी। जैनम ने अपना एक बचपन का फोटो फेसबुक पर पोस्ट किया था। मैने उसे लाईक किया ।

आज मैं और जैनम एक स्पेश्यल कार्य के लिए चर्चगेट आये थे। कल मुझें वापस चर्चगेट जाना था। जैनम चर्चगेट अपनी मासी के घर रूकनेवाला था, इसलिए मैं आज अकेली ही थी। सुबह पप्पा से बात की थी। उन्हें अच्छा नही लगा था, फिर भी मेरी जिद्द के सामने "ट्रावेल सेफ" की शुभेच्छा देकर अंत में हमें अनुमति दी थी ।

ट्रेन के स्पीकार में "बान्द्रा" कहां और मेरा ध्यान मोबाइल से बाहर आया। मैं ट्रेन के दरवाजे पर आकर कान में हेडफोन लगाकर खड़ी थी। ***"थ्री इडियट्स"*** का ***"जाने नहीं देगें तुझे..."*** गीत बज रहा था।

स्टेशन आते ही मैं नीचे उतरी। स्टेशन पर भीड़ थी। मैं मेरा रास्ता बनाते-बनाते स्टेशन से बाहर आयी। मैने टेक्सी की राह देखी। मेरा घर स्टेशन से नजदीक होने के कारण कोई भी टेक्सी आने को तैयार नहीं थी। इसलिये मैंने चलकर घर पहुंचने का फैसला किया और मैं चलने लगी।

एक मिनट मैं चली और स्लम्स एरिया आया। वहां की स्ट्रीट

लाईट बंद-चालू हो रही थी। मुझे वहां से पसार होने में थोड़ा डर लगा, तो भी मेरी हिम्मत को एकजुट करके मैं चलने लगी। एक संकड़ी गली में मैं घूसी। मैं तेजी से चल रही थी।

पीछे से किसी ने सीटी बजाई। इस ऐरिया की रेप्युटेशन एकदम खराब थी। मैं सीटी को अनसुना करके आगे बढ़ी। फिर 2-3 सीटीयों की आवाजें आयी। मैने पीछे देखा। अलग-अलग जगहों से 5-6 मव्वाली लड़के बाहर आये और मेरी तरफ आगे बढ़ने लगे।

''आती है क्या 9 से 12...'' एक मुख्य लगते ऐसे गन्दे लड़के ने कहा।

''तमीज से बात कर...'' मैने कहा।

''ये आइटम हमको तमीज सीखायेंगी।'' उस लड़के ने कहा और सब हंसने लगे।

वो लड़का मेरे पास आया और मुझे हाथ लगाने गया। मैंने हाथ पीछे ले लिया। उसने खुद के दूसरे। हाथ से मेरा दूसरा हाथ पकड़ने मैं उसके हाथ को दबोचा। वो पागलों की तरह चिखने लगा ।

''साली ये कुत्ती है कुत्ती। कुत्ती को कुत्ती की औकात बतानी पड़ेगी।'' कहकर उसने मेरे गुप्तांग पर हाथ रखा। मैने जोर से उसके सेन्टर पॉइन्ट पर लात मारी। वो दर्द से तड़पता हुआ नीचे गिर गया और मैं वहां से भागने लगी।

उसके साथीदार मेरे पीछे लग गये। मुम्बई की गंदी गालियां बकते-बकते वे मेरे एकदम नजदीक आ गये। मैने पीछे घुमकर और एक व्यक्ति को लात मारने की ट्राई की। दूसरे ने मेरा पैर पकड़ लिया और मुझे नीचे गिरा दिया।

एकदम खतरनाक दिखते एक मव्वाली ने मेरे सामने बंदुक रखी।

''हेय लोंडी! ज्यादा नाटक मत करना। कराटे तेरे बाप के साथ खेलना, वरना तेरा भूर्ता बना दूंगा।'' मेरे अंदर भय ने प्रवेश कर लिया। जिंदगी में पहली बार मैने बन्दुक देखी थी।

''तुषार, अरबाझ! इस लोंडी को बांध दो.... आज हम इसकी टर्न बाय टर्न जोरदार मिजबानी उड़ायेगें...'' उसकी आंखों में हैवानियत दिखाई दे रही थी। मुझे दो व्यक्ति बांधने लगे। मैने नहीं बंधने का बहुत प्रयास

किया, लेकिन उन सब मव्वालियों के सामने मैं बेबस थी। बंधने से पहले मैने 100 नम्बर डायल कर दिया था।

दोनों मव्वाली ने मुझे खड़ा किया। खतरनाक मव्वाली मेरे पास आया। अपनी कमर में रही कटार उसने बाहर निकाली। मेरा टी-शर्ट बीच में से काटने का उसने प्रयास किया। मैने उसके मुंह पर लात मारी। उसने टाइम पर अपना मुंह हटा लिया और बंदुक से धड़ाम करके मेरे सिर पर वार किया।

मेरी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। पीछे से पुलिस की गाड़ी की सायरन सुनाई दी। मुझे कोई नीचे फैंककर दौड़ रहा है ऐसी पैरों की आवाज सुनाई दी। मेरे होश उड़ गये।

Chapter - 1

16/8/2009 **I.S.T. 22.00** Bhatia Hospital, Mumbai

सहानुभूति अति भयंकर होती है.....।

''सॉरी मिस्टर सक्सेना! हम आपकी बेटी अपेक्षा को कोमा में जाने से नही रोक सके। अब ये भगवान के हाथ में है। कोई चमत्कार ही उसे कोमा में से बाहर निकाल सकता है। घाव बहुत गहरा है, इसलिए कोमा में से बाहर आने के बाद भी कदाचित् पूरी जिन्दगी ये बेड में ही रहेगी।'' पप्पा और जैनम डॉक्टर की बातें सुनकर टूट गये। डॉक्टर चला गया।

''अंकल! मेरे पप्पा की पहुंच बहुत अच्छी है। मैं पप्पा के थ्रु वर्ल्ड के बेस्ट डॉक्टर्स को भी बुला लूंगा। आप अब उसकी चिंता छोड़ दो...''

''क्या बिगाड़ा था मेरी लड़की ने उस मव्वालियों का...'' 2 गाली के साथ मुझे मारनेवालों को पप्पा ने कोसा, ''सिर्फ अपेक्षा को ठीक होने दो, उनकी हवा टाईट न करूं तो देखना...''

जैनम को पप्पा के चेहरे पर एक भयानक गुस्सा दिखाई दिया। पप्पा आउट ऑफ कन्ट्रोल हो गये।

जैनम का फोन बजा। मोबाइल स्क्रीन पर 'पप्पा' फ्लेश हो रहा था।

''एक मिनट अंकल! मैं आता हूं। पप्पा का फोन है।'' कहकर जैनम हॉस्पीटल से बाहर आया।

''हेलो पप्पा !'' ग्रीन बटन दबाकर जैनम ने कहा।

''तूं कहां है? हम सब तेरी राह देख रहे है। आज तेरी बहन का बर्थ-डे है। तुम्हें पता नहीं? हेलो... तूं लाईन में है जैनम... तूं रो रहा है... क्या हुआ है?.... तूं क्यों रो रहा है, माय सन?'' जैनम के पप्पा चुप हो गये।

''पप्पा... पप्पा! अपेक्षा पर रेप का प्रयत्न हुआ है और वो सीरीयसली इन्जर्ड है। वो कोमा में है... मैं भाटिया हॉस्पीटल में हूं। पप्पा मुझे आपकी हेल्प चाहिए।'' मुश्किल से जैनम बोला।

''*OK* ! मैं आता हूं।'' फोन कट हो गया। जैनम ने राहत की सांस ली। जैनम के पप्पा बोम्बे के एक बड़े व्यापारी थे। उनकी सब तरह से बड़ी पहुंच थी।

जैनम हॉस्पीटल में जाकर मेरे पप्पा के पास बैठ गया। जैनम को एक ही दिन में पप्पा दस वर्ष वृद्ध हो गये है ऐसा अनुभव हुआ।

''अंकल !'' दुःखभरी आंखों से पप्पा ने ऊपर देखा। जीने की सब आशाऐं पूरी हो गयी हो ऐसी निराशा पप्पा की आंखों में थी।

''टेन्शन मत लो अंकल ! पप्पा आ रहे है।''

Chapter - 2

16/8/2009 **I.S.T. 23.30** Bhatia Hospital, Mumbai

पॉवर अति भयंकर होता है.....।

जैनम उसके पप्पा की राह देखता हॉस्पीटल के बाहर खड़ा था। *''इतना टाइम क्यों लगा?''* जैनम को पता नहीं चला। जैनम ने वापस पप्पा का मोबाइल ट्राय किया।

''आप जिस नंबर पर संपर्क करने का प्रयत्न कर रहे है, वो किसी अन्य नम्बर पर व्यस्त है, थोड़े समय बाद ट्राय करना।'' जैनम ने गुस्से से नंबर कट किया। ''व्यस्त...व्यस्त...व्यस्त..'' गुस्से से रास्ते पर पड़े पत्थर को जैनम ने लात मारी।

''डेढ़ घण्टा बीत गया। पप्पा है कहां?'' जैनम अपने आप से ही बात करने लगा। समाने हॉस्पीटल में से 10 टॉप डॉक्टरों की टीम बाहर निकली। सब परस्पर हंसी-मजाक कर रहे थे।

''पेशन्ट मर रहे है और ये डॉक्टर हंस रहे है?'' जैनम को सबको मारने की इच्छा हो गयी।

जैनम हॉस्पीटल के बाहर ही बैठ गया। 5 मिनट के बाद सामने से वापस वो ही डॉक्टरों की टीम दिखाई दी। बीच में सफारी सूट में चलता हुआ एक व्यक्ति दिखाई दिया। जैनम खड़ा हो गया।

सफारीवाला व्यक्ति पास आया।

''हाय जैनम बेटा! तूं कैसा दिख रहा है...तेरी हालत तो देख।''

सब डॉक्टर जैनम की ओर देखने लगे।

''अरे! ऐसे क्या देख रहे हो?'' डॉक्टरों की ओर देखकर सफारीवाले ने कहा। '' ये मेरा इकलौता बेटा है-जैनम।

जिस केस की मैने बात की है, वो जैनम की बेस्ट फ्रेंड है। आप अपना पूरा प्रयास लगा दो।'' सब डॉक्टरों ने अपना सिर हिलाया। अपने पप्पा की शक्ति और रेप्युटेशन देखकर जैनम दंग रह गया।

''अपेक्षा के पप्पा कहां है जैनम?'' सब डॉक्टरों के जाने के बाद जैनम के पप्पा ने जैनम से पूछा। जैनम ने हाथ में सिर झुकाकर बैठे हुए व्यक्ति की ओर अंगूली से इशारा किया। जैनम और उसके पप्पा, पप्पा के पास आये।

''मिस्टर सक्सेना!'' अपनी भारी आवाज में जैनम के पप्पा बोले। पप्पा ने ऊपर देखा। उनकी आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गयी।

''आप... आप तो NDTV में शेयर अपडेट्स में एक्सपर्ट के तौर पर आते हो ना?'' ''जैनम! ये तेरे पप्पा है...?'' जैनम ने ''हां'' में सिर हिलाया।

''ये सब बातें छोड़ो.... मेरे बेटे की बेस्टफ्रेंड वो मेरी बेटी से कम नहीं है और इसलिए उसे पुनर्जीवित करने के लिए मुझे अपनी सारी संपति भी न्यौछावर करनी पड़े तो मैं पीछे नहीं हटूंगा... आप फ्री हो जाईयें मिस्टर सक्सेना.... अब ये केस मेरा है।'' पप्पा को ये शब्द सुनकर आश्चर्य हुआ।

मिस्टर ओसवाल कितने पहुंचे हुए व्यक्ति थे, ये पप्पा को पता था। उनका मन थोड़ा आश्वस्त हुआ। उनकी आंखों में से आंसू छलकने लगे।

Chapter - 3

17/8/2010 I.S.T. 11.30 BSE, Fort

रिकवरी अति भयंकर होती है.....।

सामने 25-30 फ्लोर की बड़ी बिल्डिंग दिखाई दे रही थी। पप्पा मुझे मम्मी की देखरेख में छोड़कर टेक्सी पकड़कर बोम्बे स्टॉक एक्सचेंज के तरफ रवाना हो गये। टेक्सी B.S.E के सामने खड़ी रही। पप्पा ने ऊपर देखा। अलग-अगल शेयर्स के भाव दिखाई दे रहे थे।

''हेल्लो अंकल ! कैसा है अपेक्षा को?'' पप्पा के साथ हाथ मिलाकर जैनम ने पूछा। कल रात को जैनम अपने पप्पा के साथ घर गया था, उसे जाना पड़ा था । फिर सुबह पप्पा के फोन पर उसका फोन आया था।

''अंकल ! पप्पा ने अमेरिका के कोमा स्पेश्यलिस्ट मिस्टर ब्राउन के साथ 12.00 बजे अपॉइन्टमेंट नक्की किया है। आप आ सकेगें तो हम उनके साथ विडियो कॉन्फरेन्स में बात कर सकेगें...'' पप्पा ने 'हां' कहा। फिर मम्मी से बात करके पप्पा B.S.E जाने के लिए रवाना हो गए थे।

जैनम पप्पा को B.S.E में लेकर गया। उसके पप्पा की ऑफिस 10^{TH} FLOOR पर थी। दोनों लिफ्ट में चढ़कर 10^{TH} FLOOR पर आये।"OSWAL INVESTMENT" नाम के बोर्ड वाली ऑफिस में दोनों ने प्रवेश किया।

''वेलकम मास्टर जैनम।'' ऊपर स्पीकार में से कोई आवाज आयी। दरवाजा अपने आप खुल गया। जैनम और पप्पा ने अंदर प्रवेश किया।

पप्पा कॉर्पोरेट में ही काम करते होने से कॉर्पोरेट के रीति-रिवाज से परिचित ही थे।

''मिस्टर ओसवाल फ्री है?'' जैनम ने रिसेप्शन डेस्क पर बैठी हुई रिसेप्शनीस्ट को पूछा।

''हाँ, मास्टर ओसवाल! मिस्टर ओसवाल आपकी राह देख रहे है। ॲन्ड वेलकम मिस्टर सक्सेना !'' एकदम मेक-अप वाले चेहरे के साथ मधुर आवाज में रिसेप्शनीस्ट ने जवाब दिया। दोनों बहुत बड़ी ऑफीस के अंतिम रूम में गये। ये रूम जबरदस्त फर्नीश्ड थी । रूम का दरवाजा अपने आप खुल गया।

''वेलकम मिस्टर सक्सेना!'' कहते हुए ओसवाल अंकल खड़े हुये और पप्पा को चेयर पर बैठने के लिये कहा। ओसवाल अंकल के डेस्क पर एक बडा प्रोजेक्टर लगा हुआ था और उसमें से सफेद प्रकाश सामने रही हुयी *LED* स्क्रीन पर गिर रहा था।

पप्पा चेयर पर जाकर बैठे। जैनम भी एक चेयर पर कोर्नर में जाकर बैठ गया। ''तो आप जल्दी आ गये हो। ये अच्छा हैं। मुझे जो दूसरी बातें करनी है, वो पूरी हो जायेंगी और फिर डॉ. ब्राऊन के साथ बात कर सकेंगे।'' अपनी घड़ी देखते हुये ओसवाल अंकल ने कहां।

''मैंने न्यूरोस्पेशियालिस्ट डॉक्टर सिंघल के साथ बात की थी। उन्होंने पॉझिटीव और नेगेटिव दोनों बातें बताई हैं। जो हक़ीक़त है, वो हमें समझकर चलना पड़ेगा...'' *5* मिनट तक पप्पा सुनते रहें।

प्रोजेक्टर पर कॉललिस्ट साईन फ्लेश होने लगी और अंकल ने बटन दबाया। डॉ. ब्राउन को फोन लगा। डॉ. ब्राउन का अनुभवी चेहरा स्क्रीन पर दिखाई दिया 'सो मिस्टर ओसवाल हाऊ आर यू?' दोनों ने कुछ समय अंग्रेजी में पर्सनल बातें की। दोनों बहुत पुराने मित्र है, ये बात जैनम को भी पता नहीं थी।

'तो, मिस्टर ओसवाल! अब हम केस पर बात करते हैं। आपके भेजे हुये एक्स-रे, *MRI* रिपोर्ट्र्स वगैरे सब मैंने देखे। घाव बहुत गहरा है। ''मि. ब्राऊन का चेहरा गंभीर हो गया। 'लेकिन, हमें तो कोशिश करनी हैं। सबसे पहले मैं कोमा क्या चीज है.... उसके विषय में थोड़ा समझाता

हूँ....'' सब ध्यान से सुनने लगे।" कोमा के मुख्यतः *6* प्रकार होते हैं।

1- TOXIC METABOLIC ENCEPHALOPATHY

2- ANOXIC BRAIN INJURY

3- PERSISTENT VEGETATIVE STATE

4- LOCKED IN - SYNDROM

5-BRAIN DEATH

6- MEDICALLY INDUCED

इन **6** प्रकार के कोमा में से *6TH* कोमा मेडिकली करने में आता है। बाकी सब सिर में हुए कम-ज्यादा नुकसानों के कारण, प्राकृतिक रूप से होते हैं। उसमें भी ब्रेन डेथ और लॉक्ड इन - सिन्ड्रोम (*4TH* और *5TH*) ईरिवर्सेबल हैं। इसमें से व्यक्ति को वापस नोर्मल करना अशक्य-सा होता है।

जब मैंने पहली बार अपेक्षा के रिपोर्ट देखें तो मुझे ब्रेन डेथ कोमा के ही सब सिमटम्स दिखाई दिये...'' डॉ. ब्राऊन ने सिर पर आये हुये पसीने को पोछां...

''लेकिन ज्यादा डीप से स्टडी करने पर मुझे ऐसा लगता है कि ये कोमा ब्रेन को बिना ज्यादा नुकसान किये रिवर्सेबल है।''

''किस प्रकार डॉ. ब्राऊन?'' जैनम और पप्पा ने एकदम उत्कंठा से एक साथ पूछा। ''रुकों..रुकों। ज्यादा उतावले मत हो।'' हँसते - हँसते डॉ. ब्राऊन ने कहा।

''मेरे हिसाब से अपेक्षा कोमा के पहले प्रकार टोक्सीक मेटा-बोलिक में गयी हैं। क्योंकि ब्रेन सेल्स के रिपोर्ट अनुसार इसके सेल्स अभी भी अच्छे एक्टिव हैं। प्रे टू लोर्ड कि इतनी सीवियर ईजा होने के बाद भी इस लड़की की शक्ति अनोखी है कि ये इंजरी को सस्टेन कर सकती हैं। बाकी तो...'' डॉ. ब्राऊन ने तीनों के सामने दुःख से देखा।

''तो, अब सबसे पहले आपको अपेक्षा की तबियत सस्टेन

करानी पड़ेगी। कोमा में धीरे शरीर के सारे फंक्शंस कमजोर होते जाते हैं। ये न हो उसका खास ध्यान रखना। दूसरा जो वस्तु अपेक्षा को बहुत पसंद हो, ऐसी वस्तु उसे सुनाना। किसी भी तरह उसे इन वस्तुओं की असर हो जायें, तो ये कोमा के बाहर 100 % आ सकेंगी।''

Chapter - 4

20/8/2009 I.S.T. 11.00 Bhatia Hospital, Mumbai

मेमरी अति भयंकर होती है.....।

''अपेक्षा! आत्मा की शक्ति अचिंत्य है, अंदर जाकर देखो... जस्ट गो इनसाइड...''

कोई मेरे कान में बोल रहा है, ऐसा लगा। वाणी की मीठास मैने कहीं सुनी हुई है, ऐसा मुझे लगा, लेकिन कहां...? ये दिमाग में आया नहीं। मेरे दिमाग में एक खालीपन अनुभव हो रहा था। किसी ने मेरी जिन्दगी के 6-7 वर्ष डिलिट कर दिये हो ऐसा मुझे आभास हो रहा था।

मैने आंखें खोली, कोई अपना मुंह नीचे करके एकदम निराशा में बैठा हुआ था। मुझे उस अच्छे दिखते निराश व्यक्ति को सांत्वना देने की इच्छा हुई। मैने मेरा हाथ ऊपर करने की कोशिश की, लेकिन ''मेरा हाथ है...'' ऐसा मुझे अनुभव हुआ ही नहीं। सिर्फ थोड़ी अंगुलियां हिली।

अंगुलियों की हलचल देखकर वह व्यक्ति एकदम चौंक गया। उसकी आंखों में से आंसू निकलने लगे। *''ये क्यों रो रहे है?''* मुझे प्रश्न हुआ, लेकिन वह अंदर ही रहा, मैं कुछ भी पूछ सकी नहीं।

''नर्स...डॉक्टर!'' उस व्यक्ति ने आवाज दी। अचानक किसी ने मुझे इन सब में से कट ऑफ कर दिया हो, इस प्रकार मेरी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। मैं वापस मीठी गहरी नींद में सो गयी।

(I.S.T. 16.00)

''**अपेक्षा !** तूं किसी की नहीं... कोई तेरा नहीं... दुनियां में कोई किसी का नहीं।'' वापस वो ही मधुर आवाज! ***''क्या मीठास है...''*** मेरा मन खुश हो गया।

''लेकिन ये किसकी आवाज है? और ये क्यूं ऐसा बोल रही है?''

मैने मेरी आंखें खोली। वो ही व्यक्ति वहां बैठा हुआ था, लेकिन अब उसका ध्यान मेरी ओर ही था। वह सिर झुकाकर नही बैठा था।

''नर्स...डॉक्टर।'' वापस वो बुलाने लगा।

''ये कौन है? और इस तरह क्यों आवाज दे रहा है?' विचार कौंधा।

दूसरे ***2-3*** सफेद कपड़ोंवाले अंदर आये। एक सफेद वस्त्रवाले ने कुछ सूई जैसा तैयार किया। मुझे अकथ्य भय उत्पन्न हुआ। मेरे होश उड़ गये। अंधेरा छा गया।

(I.S.T. 22.00)

''**अपेक्षा!** तुम जिसके पीछे दौड़ रही हो, वो तुम्हें मिलनेवाला नहीं है, इसलिए दौड़ना छोड़ दे और दो क्षण के लिए स्थिर हो...''

''दौड़ने की शक्ति मेरे अंदर थी ही नहीं, तो मैं कहां दौड़ रही हूं...?'' मधुर आवाज पर मुझे शंका हुई। क्यों ये आवाज इस तरह बोल रही है।

मैने आंखे खोली। इस बार ***4-5*** व्यक्ति मेरे ऊपर खड़ें थे । एक व्यक्ति ऊपर नीचे होते ग्राफ को देख रहा था। कोई सुलगती सुई मेरे हाथ में डाल रहा हो, ऐसा अनुभव मुझे हाथ में हो रहा था। मैने हाथ को इस दर्द से दूर करना चाहा, लेकिन मेरा हाथ उठा नहीं।

मेरे पूरे शरीर में मुझे गर्मी-गर्मी अनुभव होने लगी। सामने रहे हुए सफेद कपड़ेंवाले व्यक्ति ने अपने हाथ में रही हुई सुई साईड में रखे डब्बे में रखी।

''ये सब कौन है?'' सतत प्रश्न मेरे दिमाग में स्फुरने लगे।

वापस किसी ने हाथ में दूसरी सुई घुसाई हो ऐसा मुझे लगा। दर्द असह्य बना। मेरी आंखों के सामने अंधेरा आने लगा। मैं मेडिकली ईनड्युस्ड बेहोशी में चली गयी। शांतता मुझे अनुभव हुई।

(21/8/2009) **(I.S.T. 2.00)**

''**अपेक्षा!** ये शरीर और आत्मा अलग है, ऐसा अनुभव जिस व्यक्ति को हो जाता है, वो योगी बनता है। स्पेशियल बनता है।'' मधुर आवाज मुझे सुहावनी लगती थी। पिछली बार मेरा प्रबोध इस सुहावनी आवाज से ही हुआ था। इसमें जादु था।

मेरी आंखें खुली। एक व्यक्ति सामने बैठा हुआ था। वो भी झोंका खा रहा था। ''अच्छी तरह सो जाओ।'' मेरे मुंह से शब्द निकले, लेकिन आवाज नहीं निकली। जैसे कोई चमत्कार देख रही हूं वैसे सामनेवाला व्यक्ति चेयर पर लेटकर सो गया। मेरे मन में बहुत आनन्द हुआ।

'क्षमा वीर का आभूषण है। गुस्सा करना सरल है।'' मधुर आवा-ज सुनाई दी।

''गुस्से की बात क्यों कर रहे है?'' मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ। बाकी की रात मधुर आवाज को सुनते-सुनते मैने बितायी।

Chapter - 5

30/8/2009 **I.S.T. 10.00**

Bhatia Hospital, Mumbai

स्मृति अति भयंकर होती है.....।

मेरे सामने **A FOR APPLE, B FOR BALL...** वगैरे स्लाइड्स सतत फ्लेश हो रही थी।

पिछले **10** दिनों से ये रोज का हो गया था। पहले **2** दिन सिर्फ **A.B.C.D** बतायें गये। फिर **3** दिन **"A FOR APPLE"** बताने में आया था। ये सब मुझे आता है, ऐसा बार-बार मुझे अनुभव होता, लेकिन कैसे आता है वो याद नहीं आता।

उस लड़के ने **2-3** बार मुझे पूछा था कि ''तूं मुझे पहचानती है?'' लेकिन मैने उसे 'नहीं' कहा था । 'वह मुझे बार-बार क्यों पूछता है' ये मुझे समझ में नहीं आया था। सफेद कपड़ोंवाले कि जो **"D FOR DOCTOR"** कहे जाते थे वो हरबार बड़ी सूई लेकर आते और मेरी अलग-अलग जगहों पर घुसाते थे। उसमें असहनीय दर्द होता, लेकिन अब ये रोज का हो गया था।

अब वो मधुर आवाज सुनाई नहीं देती थी। उसकी जगह पर मुझे हररोज **"A-B-C-D"** देखना पड़ता। पिछले **3** दिन से डॉक्टर मुझे अलग-अलग प्रकार के विडियो बता रहे थे। एक विडियो में बहुत सारे लोग इकट्ठा होकर एक लड़की को डरा रहे थे और फिर हेप्पी बर्थ-डे की ट्यून चालू हो गयी थी और सब हंस रहे थे। विडियो पूर्ण हुआ । ''तूं इस लड़की को पहचानती है?'' एक लम्बी हाइटवाले डॉक्टर ने स्क्रीन के

सामने आकर मुझसे पूछा।

''नहीं...'' मैनें कहा।

डॉक्टर ने एक कांच हाथ में लेकर मेरे सामने रखा। मुझे मेरा चेहरा उसमें दिखाई दिया। मैंने आंखें बंद कर ली। मुझे एक डायन का चेहरा उसमें दिखाई दिया हो ऐसा मुझे लगा। मैं धीरे-धीरे फ-फकर रोने लगी। गाल के ऊपर से आंसू नीचे टपकते गये।

जो चेहरा मैंने देखा था, उसके बाल नहीं थे। उसका मस्तक एकदम सफाचट था। *''किस प्रकार मेरी ये हालत हुई। यदि मैं और उस विडियो में रही हुई लड़की एक ही हो, तो मेरी ये अवदशा कैसे हुई?''*

''सॉरी अपेक्षा!'' डॉक्टर ने कहा।

''और सिर्फ एक सवाल?'' मेरे सामने करूणा के साथ डॉक्टर ने देखा। डॉक्टर ने अपने हाथ में रहा रिमोट का बटन दबाया, एक सुंदर चेहरा मेरे समक्ष आया। मैं उस चेहरे को जानती हूं, ऐसा मुझे लगा।

वापस डॉक्टर ने रिमोट का बटन दबाया। एक सफेद कपड़ोंवाली व्यक्ति ध्यान कर रही है, ऐसा मुझे दिखाई दिया।

मेरे दिमाग के ताले टूट रहे हो, ऐसा मुझे लगा। कुछ मेरे अंदर स्फुरण हुआ। मैने आंखें बंद कर ली। मुझे मावा दिखाई दिया.... बड़ी सभा दिखाई दी.... मिष्टान्न भण्डार दिखा... जाप में बैठे हुए सफेद कपड़ोंवाले... नहीं...उनका नाम... साध्वीजी दिखाई दिये...

मेरे जीवन के पिछले *15-15* सालों के प्रसंग वापस दिखने लगे। जैनम, मेथ्यू, सिस्टर, मम्मी-पप्पा, शासनद्रष्टा, फिर एक भयानक रात और सब ब्लेंक हो गया।

Chapter - 6

(30/9/2009)   I.S.T. 9.15   Bhatia Hospital, Mumbai

चमत्कार अति भयंकर होता है.....।

मेरे हाथ पर एक मसाज मशीन लगाने में आयी थी। उससे मेरे हाथ में खून का संचार करने में आता था। पिछले एक महिने से मेरी रिकवरी डॉक्टर की अपेक्षा से अतिविशिष्ट हुई थी।

''इस पेशन्ट के पास अनइमेजिनेबल हिलिंग शक्ति है।'' डॉ. सिंघल ने पप्पा से कहा था। मुझे अपने आप पर गर्व हुआ था।

मुझे सबकुछ याद आ जाने के बाद मैं दो दिन तक बेहोश रही थी। सभी डॉक्टर्स को ऐसा भय था कि मैं वापस कोमा में चली गई हूं।

लेकिन दो दिन के बाद मैंने आंखें फड़कायी थी। सब डॉक्टर एकदम खुश हो गये थे। उन्होंने बाहर जाकर मेरे मम्मी-पप्पा और जैनम को बधाई दी थी।

जैनम दौड़ा-दौड़ा अंदर आया था। वो बहुत खुश था।

''तूं मुझे पहचानती है...?'' एक आशा के साथ जैनम ने मुझे वापस पूछा था।

''प्लीझ, आप थोड़ा नजदीक आओगें? मुझे आपको कुछ कहना है।'' गुस्से के साथ मैने जैनम से कहा था। जैनम ने अपना कान मेरे नजदीक लाया था।

मैने उसके गाल पर किस किया था । वो आश्चर्य के साथ मेरे

सामने देखता रहा था। उसकी आंखों से अशक्य कार्य पूर्ण होने के आंसू निकलने लगे थे । फिर वह मुझे लिपट गया था । बाहर जाकर मेरे मम्मी-पप्पा को लेकर आया था। वे दोनों भी आश्चर्यचकित हो जाए इस प्रकार मैने उन्हें रिस्पोन्स दिया था। फिर थोड़े दिनों में मेरे सब शारीरिक फंक्शन नोर्मल हो गये थे। मुझे मेरे बालों पर विशेष राग था और वो सब चले जाने का दुःख मुझे सता रहा था।

मेरी ये बात जानकर जैनम ने मेरे लिए फिर से बाल फास्ट आ जाए उस प्रकार का मेडिकली सेफ **50,000** रूपयों का हेयर टॉनिक लाया था। पिछले **20** दिन में **1** इंच जितने बाल तो आ गये थे। वार्ड में आने के बाद के दिन शासनद्रष्टाश्रीजी की मधुर आवाज सुनते-सुनते अच्छी तरह से बीतें थे।

पैरों की आवाज सुनाई दी। मेरा ध्यान उस तरफ गया। सामने एक सूटबूट में सज्ज व्यक्ति के साथ डॉ. सिंघल खड़े थे। उस व्यक्ति ने आकर मुझे कमल का बूके दिया। एकदम सुगंधित फॉरेन के कमल लग रहे थे।

''तूं मुझे पहचानती है?'' हंसते-हंसते उस सूट-बूटवाले व्यक्ति ने मुझे पूछा। मैने नकार में सिर हिलाया। मैं सचमुच ही उन्हें जानती नहीं थी। ''ये मेरे पप्पा है अपेक्षा! इनके कारण ही आज तुम जिंदा हो।'' जैनम ने पप्पा के पास आकर कहा।

मेरे जीवित होने और जैनम के पप्पा के बीच क्या संबंध था ये मुझे समझ में आया नहीं, लेकिन मैंने उस समय कुछ पूछा नहीं। मुझे अलग-अलग मोटिवेशनल बातें करके जैनम के पप्पा डॉ. सिंघल के साथ चले गये। सचमुच ही जैनम के पप्पा का पॉवर मुझे गजब का लगा।

''जैनम! एक बात पूछूं?'' सबके जाने के बाद मैने जैनम से पूछा।

''हां! अब तूं कुछ भी पूछने के लिए फ्री है।''

''तुम्हारे पप्पा ने मुझे कैसे बचाया? ''जैनम की ओर मैने देखा। मानों कि घटना फिर से कहने में बहुत दुःख हो रहा हो, ऐसा भाव उसके चेहरे पर था।

''तेरा भाग्य अति बलवान और तेरी बुद्धि को तो लाखों सलाम।'' जैनम ने बोलना स्टार्ट किया।

''जिस समय तेरे पर अटेक हुआ, उसके पहले तुने पुलिस को फोन कर दिया था। उसके कारण तेरे और मव्वाली गुंडों के बीच हो रही बातचीत पर से पुलिस को पता चल गया कि तूं खतरे में है। पुलिस ने जी.पी.एस. ट्रेकर से तेरा फोन ट्रेस कर दिया और वहां पहुंच गये। उस वक्त तुम्हें मारकर मव्वाली भाग रहे थे। पुलिसवालों ने एम्बूलन्स बुलाकर जनरल वार्ड में तुम्हें भर्ती किया। तब तक तुम्हारे मम्मी-पप्पा को इस बात की खबर पुलिसवालों ने दे दी थी। तुम्हारे मम्मी-पप्पा हॉस्पीटल पहुंच गये, लेकिन हॉस्पीटल के डॉक्टर तुम्हारा केस लेने को तैयार नही थे।'' जैनम ने बीच में दुःख भरा श्वास लिया।

''फिर भाटिया हॉस्पीटल में तेरे पप्पा की पहचान से तूं एडमिट हुई। डॉक्टर ने कोमा में जाने के समाचार तेरे पप्पा को दिये। इतने में तो मैं भी पहुंच गया था। ये बात सुनकर तेरे साथ नहीं आने के लिए मैं अपने आप को कोस रहा था। वैसे भी मैं रात को घर लेट जाने वाला ही था, क्योंकि तेरे जाने के बाद मम्मी का फोन आ गया था कि मुझे मासी के घर रूकना नही है। उनके घर कोई फंक्शन था और इसलिए वहां मेहमान आये हुए थे।'' अभी भी जैनम के चेहरे पर खेद दिखाई दे रहा था।

''फिर मैने पप्पा से सब बातें की। डॉ. ब्राउन के साथ पप्पा की लिंक अच्छी होने के कारण हम तीनों ने उनके साथ केस डिस्कस किया। उन्होनें कहा कि ''अपेक्षा के दिमाग में फिर से केमिकल रिएक्शन करा-कर तरंगें खड़ी करके उसे होश में लाना पड़ेगा और इसलिए ही उसे ऐसी वस्तुओं का श्रवण कराना पड़ेगा कि जो उसे बहुत प्रिय हो।''

हम सब तुम्हें सबसे ज्यादा क्या प्रिय है ढूंढने लगे। **1-2** दिन तक तो कुछ भी हाथ नहीं आया। एक दिन पप्पा, मैं और तुम्हारे पप्पा कुछ बात कर रहे थे कि पप्पा एकदम शांत हो गए। मैने पहले भी इस प्रकार का बदलाव पप्पा में देखा हुआ था और ऐसे बदलाव के बाद सौ टका (**100%**) रिझल्ट आता ही।

''जैनम! अपेक्षा का मोबाइल कहां है?'' पप्पा ने अचानक मु-

झसे पूछा।

"मेरे पास नहीं है। शायद पुलिस कस्टडी में होगा।" मैंने कहा। तेरे पप्पा को भी तेरे मोबाइल का क्या हुआ ये पता नहीं था। पप्पा ने पुलिस सुपरिंटेंडेंट को फोन किया। "मुझे 15 मिनट में मोबाइल चाहिए।" कहकर पप्पा ने फोन कट कर दिया।

15 मिनट बाद एक पुलिस कॉन्सटेबल फोन लेकर आया। फोन एक पाउच में रखा हुआ था। उसके ऊपर फिंगरप्रिन्ट्स न लगे उसके लिए पप्पा ने ग्लब्ज पहनकर उसका कॉल लिस्ट चेक किया। अंत में पुलिस को लगाया हुआ कॉल दिखाई दिया।

"आपकी लड़की बहुत होशियार है। इतने में वो बच गयी" नहीं तो शायद।" आगे के शब्द पप्पा बोले नहीं और मोबाइल की स्क्रीन देखते रहे।

5 मिनट के बाद पप्पा ने अपेक्षा के मोबाइल में रिकॉर्डिंग चेक किया। मेरे साथ हुई बातें उसमें स्टोर थी। पप्पा मेरी ओर एक-एक रिकॉर्डिंग सुनकर देखते।

"तो तूं अपेक्षा को सबसे ज्यादा प्रिय था, हममममम..." कहकर पप्पा ने ये सब रिकॉर्डिंग अपने मोबाइल फोन में ट्रांसफर कर ली। पप्पा ने पुलिस कॉन्सटेबल को वापस मोबाइल पाउच में डालकर दे दिया। सलाम करके पुलिस चला गया।

"चलो हॉस्पीटल..." कहकर पप्पा अपनी BMW में हमारे साथ हॉस्पीटल आये। तुम्हारी मम्मी वहां रो रही थी। हमको देखकर तुम्हारी मम्मी को शांति हुई।

पप्पा सीधे I.C.U में गये और मेरी तुम्हारे साथ की रिकॉर्डिंग तुम्हें सुनायी। तुम्हारे अंदर कोई फर्क नहीं पड़ा। फिर पप्पा के ध्यान में से छूट गयी 2-3 घंटे की रिकॉर्डिंग पप्पा को दिखाई दी। उन्होनें रिकॉर्डिंग चालू की।

"अपेक्षा! संसार खारा जहर जैसा है। संसार में कोई सार नहीं है।" आवाज सुनायी दी। पप्पा शासनद्रष्टाजी की आवाज को पहचान गये।

तभी अचानक तुम्हारा हाथ हिला हो ऐसा पप्पा को लगा। फिर

पप्पा ने सतत ये रिकॉर्डिंग प्ले की। 20 तारीख को सुबह पप्पा की मेहनत सफल हुई और तुमने आंखें खोली।" जैनम शांत हो गया। उसकी आंखों में मुझे एक अजीब रौनक दिखाई दी।

"अपेक्षा! तूं एक मिरेकल गर्ल है।"

Chapter - 7

4/10/2009

I.S.T. 13.30

Bhatia Hospital, Mumbai

क्षमा अति भयंकर होती है.....।

फिजियों मेरे हाथ को ऊपर नीचे कर रही थी।

''मुझे कितने दिनों में अच्छा होगा?'' मैंने पूछा। जैनम पास में बैठकर मेरी ट्रेनिंग देख रहा था।

''ये तो तुम्हारे ऊपर है। तुम्हारी नसों में खून का प्रवाह जितना...'' नीचे पुलिस की गाड़ियों की सायरन सुनाई दी और फिजियों बोलते-बोलते रूककर खिड़की में से बाहर देखने गयी।

''पुलिस क्यों आई है?'' जैनम को मैंने पूछा।

जैनम पास आया।

''स्वीटहार्ट! तुम्हें इसका क्या टेन्शन है? तुम तुम्हारी तबीयत पर ध्यान दो।''

वो मुझे कोमा में घटित हुई विविध घटनाएँ सुनाने लगा।

5 मिनट के बाद भारी बूट की आवाज आयी। कोई मेरी तरफ आ रहा है ऐसा हमें लगा। जैनम बाहर देखने लगा।

''इन्सपेक्टर देशपांडे...'' आवाज सुनाई दी और एक 6 फुट लंबा पुलिस की वर्दी में सज्ज इन्सपेक्टर अंदर आया। उनके पीछे ''मैन इन ब्लैक'' कपड़ों में सज्ज जैनम के पप्पा ने प्रवेश किया। पप्पा भी साथ में दिखाई दिये।

''क्या हुआ?'' मैंने पप्पा से पूछा।

''कुछ नहीं बेटा! आज जजमेंट डे है।''

मुझे कुछ भी समझ नहीं आया। बाद में हथकड़ी पहने हुए 5-6 व्यक्तियों को अंदर लाया गया और मेरे सामने खड़ा करने में आया। जैनम के पप्पा के इशारे से फिजियों बाहर निकल गयी।

एक काले कोट में सज्ज वकील अंदर आया। उसकी स्टाइल से ही लग रहा था कि वह बहुत पहुंचा हुआ नामचीन वकील है। मैंने उसे एकबार टीवी में भी देखा था ।

उसने रूम की डीम लाइट के सिवाय सब लाइटें बंद कर दी।

''तो अपेक्षा...'' मेरे सामने देखकर वकील ने कहा, बाकी सबकों बैठने का इशारा किया। जैनम के पप्पा सहित सभी व्यक्ति बैठ गये।

''इन 6 व्यक्तियों पर तेरे ऊपर बलात्कार और मर्डर करने के प्रयास की चार्जशीट फाइल हुई है। तुम्हें सिर्फ एक ही काम करना है..'' वकील ने अपना कोट ठीक किया।

''इसमें से सबसे मुख्य अपराधी कौन है, ये बताना है और दूस-रा।'' दो पल के लिए वकील रूका। ''इन सबको क्या सजा देने जैसी है, ये भी कहना है। "YOU ASK AND IT SHALL BE GIVEN..." वकील ने बाइबल के शब्द बोले। उसका आत्मविश्वास जोरदार था।

मेरे शरीर में गुस्से की आग जलने लगी। मैं सबको पहचानती थी। इन लोगों ने ही मेरे ऊपर... मेरी आंखों में से आंसू टपकने लगे।

फिर पुलिस ने एक-एक करके सब गुनाहगारों को लाइन में खड़ा किया।

पहले गुनाहगार को डीम लाइट के सामने इन्सपेक्टर ने खड़ा किया।

''तुषार मालपांडे, अक्युज्ड नम्बर 104, 26 वर्ष, बान्द्रा झोंपड़पट्टी में रहनेवाला। इसके नाम 3 मर्डर केस के आरोप है... 3 बार जमानत पर ये बाहर आया है...'' वकील ने परिचय दिया।

इस व्यक्ति ने ही मेरा रेप हो सके उसके लिए मुझे पकड़ के रखा था।

''ये गुनाहगार है?'' इंस्पेक्टर ने मुझे पूछा।

मैंने ''हां'' में सिर हिलाया। इंस्पेक्टर ने उसे लात मारकर साइड में किया।

''अरबाझ कुरैशी, 27 वर्ष।'' वकील ने रूम में चक्कर मारते-मारते उसका परिचय दिया।

मैने सिर हिलाया। उसके ऊपर गुनाहगार का कलंक अंकित हुआ। मेरे हृदय में वैर की वसूली करने की अनोखी खुशी उत्पन्न हुई।

अंतिम दो बाकी रहे।

'एहसान फारूख, 28 वर्ष, ''चीकना'' के नाम से अंडरवर्ल्ड में प्रसिद्ध... 21 मर्डर, 9 रेप, 3 बार फरार, डेन्जरस गैंगस्टर, छोटे राजन का गनमेन...'' वकील विशेषणों के ढेर बोलकर थक गया।

मैंने आंखे बंद कर दी थी। इस व्यक्ति ने ही मुझे गन से सिर पर वार किया था। उस दिन का दृश्य मेरी आंखों के सामने उभर आया ।

''मेन गैंगस्टर, फांसी....'' मेरे मुंह से रोती हुई आवाज में निकला। एक अनोखी शांति मुझे अनुभव हुई। ''अपेक्षा सिर्फ आखरी... अब मैं तुम्हें ज्यादा टॉर्चर नहीं करूंगा।'' वकील ने कहा ।

इन्सपेक्टर ने एक व्यक्ति को लाइट के समक्ष लाया। उसके बाल बहुत बढ़े हुए थे। उसके चेहरे पर भयानक घबराहट दिखाई दे रही थी। उसकी आंखों में जीवन की भीख थी। मुझे उसे देखकर दया आयी।

''तेजस सोलंकी, 28 वर्ष... इसके नाम पर अपराध बहुत सारे है, लेकिन ये कभी भी रंगें हाथ पकड़ा नहीं गया। इस केस में भी ये सस्पेक्ट है। तुझे नक्की करना है, इसे छोड़ दिया जाये या मार दिया जाये।'' हंसते-हंसते वकील ने कहा।

''और हां, सीसीटीवी फुटेज में ये दिखाई नहीं दिया, क्योंकि ये पुलिस को जहां पड़ा हुआ मिला था, वहां अंधेरा था। किसी ने जोर से इसके मिडल पॉइन्ट पर लात मारी थी और ये दर्द से तड़प रहा था।'' वकील ने कहा।

''इस व्यक्ति को गुनाहगार साबित करने के लिए मेरे पास सिर्फ तुम्हारी जुबान ही है। दूसरा कुछ भी नहीं है। सो नाउ द गेम इझ योर्स...''

मेरी छेड़खानी करनेवाला सबसे पहला मेन यही था। इसने ही मेरे गुप्तांग पर हाथ रखा था। मैंने उसे आगे बुलाया।

मैंने उसे हाथ आगे करने के लिए कहा। इंस्पेक्टर ने उसका हाथ आगे किया। उसके ऊपर मेरे दांतों के निशान मुझे दिखाई दिये। मैंने उसकी आंखों में देखा। उसकी आंखों में आंसू थे, ऐसा मुझे लगा। वह अपने जीवन की भीख मांग रहा हो, ऐसा स्पष्ट मुझे लगा।

मैंने आंखें बंद कर दी। उसका चेहरा मेरी आंखों में उभर आया। उस रात की पूरी घटना फ्लेश होने लगी। मेरे चेहरे पर गुस्सा आया।

अचानक मुझे दूसरा चेहरा दिखाई दिया। एक गहरी आवाज मेरे हृदय में से आ रही हो, ऐसा मुझे लगा। वह मुझे कुछ कहना चाहती थी।

''ये निर्दोष है। इसे छोड़ दो।'' आश्चर्य के बीच मेरे मुंह से शब्द निकले। वहां बैठे हुए सभी को आश्चर्य हुआ।

''अपेक्षा! आर यू श्योर...'' वकील ने अपनी भौंहे ऊंची करके पूछा। पप्पा-जैनम खड़े हो गए।

'हां...' ना कहने की मेरी शक्ति ही किसी ने छीन ली थी, ऐसा मुझे लगा। निराशा के साथ वकील खड़ा हो गया। ''अपेक्षा! वापस एकबार विचार कर ले।'' जैनम ने पास आकर कहा। मैं गैंगस्टर तेजस की ओर देख रही थी। उसकी आंखों में से आंसूओं की धार चालू हो गयी थी। मैंने आंखें बंद कर ली। मुझे नींद आ गयी।

सबके चले जाने के बाद मेरी आंखें खुली। जैनम वहां ही बैठा हुआ था।

''अपेक्षा! तुने झूठ क्यों बोला? मुझे पता है कि ये...'' वह अपना वाक्य पूर्ण करे उससे पहले मैंने उसे मोबाइल देने का इशारा किया।

मेरा ये बर्ताव देखकर जैनम को अजीब लगा।

''मेरा प्रश्न टालो मत...'' मैंने एक रिकॉर्डिंग शुरू की। आवाज आयी।

''क्षमा ये वीरों का आभूषण है... गुस्सा करना सरल है।''

Chapter - 8

4/10/2009

I.S.T. 22.30

Bhatia Hospital, Mumbai

पश्चात्ताप अति भयंकर होता है.....।

LED का मंद-मंद प्रकाश मेरे *V.I.P* रूम में फैल रहा था। उस प्रकाश में मैं ***'गेम ऑफ थ्रोन्स'*** की नोवेल पढ़ रही थी।

वैसे तो मुझे पढ़ना अच्छा नहीं लगता, लेकिन पिछले थोड़े समय से स्वस्थता अच्छी होने से और दूसरा कोई टाईमपास का साधन नहीं होने से मैंने नोवेल पढ़ना शुरू किया था। उसमें भी पहले इन्टरस्ट नहीं आने के कारण जैनम ने ''गेम ऑफ थ्रोन्स'' की नोवेल लाकर दी थी। अब तो मम्मी-पप्पा को फोर्स करके मुझे नोवेल छुड़वानी पड़ती।

आधे घण्टे पहले ही पप्पा ने मेरे हाथ में से बुक ले ली थी, तब वाईपर और जायन्ट के युद्ध का रोमांचक वर्णन चल रहा था।

''प्लीझ पप्पा! दिजीए ना?'' मैंने नोवेल मांगते हुए कहा था।

''अपेक्षा! तूं तेरा बिल्कुल ख्याल नहीं रखती... डॉक्टर ने क्या कहा है?'' पप्पा ने बुक देने की मनाई कर दी थी। मैंने भी सोने का ढ़ोंग करके आंखे बंद कर दी थी। पप्पा ने मुझे सोयी जानकर बुक मेरे बेड के पास रख दी थी और लाइट बंद करके, वे भी रेस्ट करने के लिए बेड पर सो गए थे।

उनके नाक की आवाज सुनकर मैंने हल्के प्रकाश में पढ़ने की शुरूआत कर दी थी। युद्ध बंद हुआ। लेकिन मुझे अंत बिल्कुल पसंद नहीं

आया। जायन्ट जीत गया और टायरन के लिए लड़नेवाला वाईपर मर गया।

मैंने बुक बंद कर दी। आगे क्या होगा उसकी उत्कंठा तो थी, लेकिन हल्के प्रकाश में पढ़ने के कारण मेरी आंखें खींच रही थी। मैं आंखे मसलकर बंद ही कर रही थी कि आंखों के कोने से मेरी नजर किसी पर पड़ी। किसी की छाया लाइट के कारण रूम में पड़ रही थी।

मेरे अंदर भय ने प्रवेश किया। मेरे चेहरे पर पसीना छुटने लगा। जैसे कि बुक के अंदर से जायन्ट बाहर आ गया हो, ऐसा मुझे लगा। तभी मुझे छायावाली आकृति दिखाई दी।

बलात्कार की रात मुझे याद आ गयी। मैंने चिल्लाने का प्रयत्न किया, लेकिन मेरे मुंह में से आवाज नहीं निकली। ये आकृति मेरी ओर आगे-आगे बढ़ने लगी। फिर से मेरे साथ ये कुछ करेगा, ऐसा भय मेरे साढ़े तीन करोड़ रोमों में झनझन करने लगा। मैंने आंखें बंद कर ली।

''शांत हो जा! शांत हो जा!'' अंदर से आवाज आयी। मैं थोड़ी शांत हुई। कोई अदृश्य शक्ति मेरे साथ हो, ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

वो आकृति एकदम नजदीक आ गई। मैंने आंखें खोली। उस आकृति में मुझे बलात्कार वाली रात की हैवानियत नहीं दिखाई दी। उसमें अलग ही दुःख दिखाई दिया।

''अपेक्षा!'' इतना बोलकर वह आकृति मेरे सामने अपने घुटने टेककर बैठ गयी। उसकी आंखों में आंसू थे। ''अपेक्षा आई एम सॉरी...'' वो आकृति जोर-जोर से रोने लगी। अच्छे-अच्छे को कम्पायमान कर दे, ऐसा उसका विलाप था। पप्पा नींद से जाग गये।

''मुझे माफ कर दे अपेक्षा! तूं मेरे लिए आज से इस धरती की सर्वस्व है।'' वो आकृति बोली।

''आप जो दोगे, वो आपको मिलेगा, प्रेम दोगे, तो प्रेम मिलेगा, वैर दोगे, तो वैर मिलेगा...'' शासनद्रष्टाश्रीजी का ये वचन मेरे स्मरणपथ पर अवतरित हुआ।

पुलिस को चकमा देनेवाला एक भयानक गैंगस्टर आज मेरे सामने बालक बनकर रो रहा था।

''अपेक्षा! आज से मैं तेजस सोलंकी, तुम्हें बहन के रूप में स्था-

पित करता हूं... उससे भी ज्यादा तुम्हें मैं माँ के रूप में स्थापित करता हूं.... तुमने मुझे अच्छी दुनियां में आज जन्म दिया है।'' तेजस में आया हुआ परिवर्तन देखकर मैं चकित रह गई।

तेजस ने अपनी जेब से कटार निकाली। मुझे ये देखकर डर नहीं लगा। अपना अंगूठा कटार पर तेजस ने रखा। उसमें से खून गिरने लगा। उसने अपने खून से मेरे मस्तक पर तिलक किया।

''ये मेरी आज से तेरे साथ बोन्डिंग है। मेरी अपेक्षा बहन को जो कोई भी व्यक्ति खरोंच भी पहुंचायेगा, उसका अस्तित्व इस दुनिया में से मैं मिटा दूंगा, और दूसरा...'' अपने रूमाल पर अपना अंगूठा दबाते हुए तेजस ने कहा। खून बहुत बह रहा था।

''आज से मैं मेरे सब क्रिमिनल कार्य बंद करने की गिफ्ट तुम्हें देता हूं।''

फिर से अपना मुंह छुपाकर तेजस रोने लगा।

नीचे पुलिस की आवाज सुनाई दी। मुझे पता था कि पप्पा ने पुलिस को फोन कर दिया था। मुझे किसे जेल में डालना था। तेजस को?

तेजस का पश्चात्ताप देखकर मेरी आंखों में से आंसूओं की धार बहने लगी। रूम के बाहर पुलिस के भारी बूटों की आवाज मेरे कानों में कील की तरह चुभने लगी।

Chapter - 9

14/4/2010

I.S.T. 8.10

K2 Towers, BKC

सरप्राइज अति भयंकर होता है.....।

''होम...स्वीट...होम...'' आखिर दो दिन पहले ही हॉस्पीटल से डिस्चार्ज मिलने के कारण मैं घर आ गयी थी। 8 महिने तक हॉस्पीटल की खीचड़ी खाने के बाद घर का भोजन अमृत लगा था। मेरी बॉडी चेक-अप के बाद सब नोर्मल आने पर मुझे डॉ. सिंघल ने ''फीट'' का लेबल दे दिया था। मम्मी-पप्पा की एकाद सप्ताह हॉस्पीटल में और रखने की इच्छा होते हुए भी मेरी जिद्द के कारण उन्होनें डिस्चार्ज लेने का निर्णय ले लिया था।

मैं अपना काम अपने आप करने में समर्थ थी, लेकिन डॉक्टर का स्पष्ट सूचन था कि 'ज्यादा मानसिक-शारीरिक स्ट्रेस लेना नही, नहीं तो वापस नर्वस-ब्रेकडाउन होकर कोमा में जाने के चान्सेज बहुत थे।'

इसलिए मम्मी-पप्पा ने मुझे चलने-फिरने के लिए भी मना किया था। एक स्पेश्यल व्यक्ति मेरे सब कार्यों के लिए रखने में आयी थी। मुझे हररोज समय पर दवाई देने के उपरांत मेरे बहुत से काम वह करती थी। जिंदगी भर दवाई लेने की अब मजबूरी हो गयी थी।

अभी में हॉस्पीटल का बिल देख रही थी। 1 करोड़ 50 लाख का बिल बना था। पप्पा पिछले 8 महिनों से मुझे छोड़कर कहीं भी गये नहीं थे। उसके कारण उनकी जॉब छूट गयी थी। मेरे ठीक हो जाने के बाद मैने पप्पा से कहा था, लेकिन उनकी एक की एक रट बांधी हुई थी।

''मैं तुम्हें छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊंगा।''

टेन्शन से मेरा चेहरा गंभीर हो गया। पप्पा मेरे रूम में आये।

''अपेक्षा! तूं क्यों टेन्शन में लग रही है?...'' पप्पा मेरे मन की किताब पढ़ते हुए बोले।

''नहीं पप्पा ! कुछ भी नहीं...''

पप्पा ने हाथ में रहे बिल को देखा।

''तो...' पप्पा मेरे पास आये।

''तो तुम्हें इसका टेन्शन है... ये तो भर दिया गया है.....''

''लेकिन किसने भरा?'' मैनें एकदम दुःखी होकर पूछा।

पप्पा ने एक स्लिप बाहर निकाली । उसके ऊपर हॉस्पीटल का ठप्पा था। उसमें लिखा था कि....

''पेशन्ट अपेक्षा सक्सेना, उम्र 15 वर्ष का बिल भाटिया हॉस्पीटल ने अपेक्षा मिरेकल केस होने के कारण भरा है। कोमा में से बहुत कम व्यक्ति बाहर आते है और उसमें भी अपेक्षा का विलपॉवर देखकर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने ये ट्रीटमेंट फ्री करने का निर्णय किया है। बी सेफ, गुड हेल्थ।''

मुझे ये स्लिप देखकर आश्चर्य हुआ। जैनम के पप्पा का हाथ इसमें होगा, ऐसा मुझे लगा। जैनम को पूछने का मैंने नक्की किया।

''हेल्लो...'' मेरा ध्यान बोलनेवाले की तरफ गया।

तेजस सोलंकी मेरे रूम के दरवाजे पर खड़ा था।

''हेप्पी बर्थ-डे...' मेरे सोफे पर आकर बैठते हुए तेजस ने कहा और मेरे हाथ में एक गिफ्ट रखी।

एक समय का गैंगस्टर तेजस आज अपने पप्पा के ऑटोमोबाइल के धंधे को एक अलग स्तर पर लेकर जाने में सफल हुआ था। मेरे पास माफी मांगने के बाद एक भी दिन ऐसा नही गया था कि वो मुझसे मिलने नहीं आया हो। वह जब भी आऊट ऑफ स्टेशन जाता, तब भी विडियो कॉल करके बातें करने के बाद ही नाश्ता करता। उसकी आस्था जबरदस्त थी।

पिछले कितने ही समय से तेजस मुझे अपने मित्रों को मिलवाने

के लिए लेकर आता था। उसने अपनी गर्लफ्रेंड के साथ भी मुझे मिलवाया था, जो बोलीवुड की एक उभरती नयी हिरोइन थी। इस कारण तेजस के बोलीवुड में बहुत कॉन्टेक्ट थे।

''तुम्हारा फैवरेट हीरो कौन है?'' तेजस ने मुझे एकबार पूछा था।

''अक्षय...'' मैंने कहा था।

दूसरे दिन ही तेजस ने ''सरप्राइज'' कहकर अंदर प्रवेश किया था। उसके पीछे खड़े हुए व्यक्ति को देखकर मैं चौंक गयी थी। ''कैसा है सरप्राइज?'' अपनी भौंहें ऊपर-नीचे करते हुए तेजस ने मुझे पूछा था।

''अकल्पनीय...'' मेरे मुंह से शब्द निकले थे।

उसके बाद अक्षयकुमार की मेरे साथ आधे घण्टे तक मिटिंग चली थी और अक्षयकुमार ने मेरी पूरी स्टोरी पूछ ली थी।

''इसके ऊपर तो पिक्चर बनाने जैसा है।'' आखिर उठते-उठते अक्षय ने कहा था। जाते समय मैंने तेजस को टन बंध थैंक्स कहा था।

मैंने मेरे हाथ में रही तेजस की गिफ्ट खोली। तेजस गहरी नजरों से मुझे देख रहा था। एक के ऊपर एक ऐसे बहुत सारे गिफ्ट पेपर लपेटे हुए थे। *10* मिनट तक गिफ्ट पेपर मैंने निकाले। फिर एक छोटी सी डिब्बी मुझे दिखाई दी।

मैंने वो डिब्बी खोली। उसमें हृदय के आकार का लॉकेट था, लेकिन लॉकेट खोलने का कोई स्थान मुझे दिखाई नहीं दिया। मैंने आगे-पीछे लॉकेट को देखा। पीछे की तरफ एक पहेली लिखी हुई थी।

''सुनाई तो बहुत सारा देता है, लेकिन जीवन्तता तो इससे ही आती है। मैं कौन हूं? आपको देखने की शक्ति देती हूं।

ये लॉकेट खोलने के लिए मेरा नाम लो....''

दो क्षण के बाद लॉकेट के साइड का बटन मैंने दबाया और स्पीकर में ऊपर की पहेली सुनाई दी। ''अक्षय...''

''सॉरी, आप गलत ... हो... फिर से *TRY* करो...''

मैंने अलग-अलग शब्द ट्राय किये... लेकिन सब निष्फल गया...

मैंने विचार किया... मेरे मन में पहेली घुमने लगी और अचानक

अंदर से एक आवाज आयी....'' शासनद्रष्टा....''

ये शब्द मैंने लॉकेट के स्पीकर में बोले। लॉकेट खुलने लगा। लॉकेट बहुत ही सुंदर था। तेजस के चेहरे पर संतोष दिखाई दे रहा था।

लॉकेट नोर्मल लॉकेट नहीं था, लेकिन डिजिटल लॉकेट था। एक साइड मेरे बचपन से लगाकर अलग-अलग फोटो फ्लेश हो रहे थे और दूसरी साइड काउन्टडाउन चल रहा था। 10 मिनट बाकी थी।

''ये काउन्टडाउन क्यों लगाया है?'' मैंने सामने देखकर तेजस को पूछा।

''बस एन्जो कर अपेक्षा!'' उसने विशेष कुछ कहां नहीं।

5...4....3...2...1.... स्क्रीन ब्लेंक हो गयी। फिर एक आकृति उभरने लगी। आकृति की शुरूआत देखकर ही मुझे पता चल गया कि ये कौन है। आखिर शासनद्रष्टाश्रीजी का फोटो उभर आया।

मेरी आंखों में नमी आ गई।

''कैसा लगा अपेक्षा?'' तेजस ने मुझे पूछा।

''ऑसम....'' मैंने जवाब दिया। मेरी आंखों में तैरते पानी को देखकर तेजस ने कहां।

''अब क्यों आंसू... तेरी और कोई इच्छा हो तो बोल?''

मैंने दूसरी स्क्रीन की तरफ इशारा किया।

''मुझे इनसे मिलना है।''

''ग्रान्टेड...'' एक ही शब्द तेजस ने कहा। मुझे समझ में आया नहीं। मैंने दरवाजे की ओर देखा। मैं मेरा कंट्रोल खो बैठी। मैं दौड़कर दरवाजे पर खड़ी आकृति से लिपट पड़ी।

Chapter - 10

15/5/2010

I.S.T. 21.00

Grand Hayat, Mumbai

पार्टी अति भयंकर होती है.....।

''स्मेक डेट! ऑल ऑन द फ्लोर... स्मेक डेट... गीव मी सम मोर... स्मेक डेट...'' पार्टी हॉल में एक फेमस अंग्रेजी गीत चल रहा था। इंग्लिश गीतों में मेरा सबसे फेवरेट गीत ये ही था। जैनम ने 5 स्टार होटल हयात में चल रही पार्टी के डीजे को रिकवेस्ट की थी इस गीत के लिये। डीजे ने रिकवेस्ट को ध्यान में लेकर ही ये गीत चालू किया था।

2 दिन पहले ही मेरे सारे फ्रेंड ने मुझे सरप्राइज देने के लिए ये प्रोग्राम अरेंज किया था। मुंबई के फेमस डीजे ने ये पार्टी रखी थी, उसके 15 पास मेरे फ्रेंड लेकर आये थे।

पिछले दिनों में मेरी शारीरिक व मानसिक रिकवरी बहुत फास्ट हुई थी। मेरा पॉवर हाऊस मेरे पास था। 14TH अप्रेल को मिली शासनद्रष्टाजी की सरप्राइज ने गजब का कमाल किया था। डॉक्टर को थोड़ा-सा भी विश्वास नहीं हो रहा था।

हमेशा चेक-अप के लिए जाते, तब डॉक्टर के मुंह में से एक ही शब्द निकलते ''अशक्य।''

3 दिन पहले ही मेरी बॉडी रिपोर्ट करवाने के बाद सबकुछ एकदम फीट आया था और इसलिए ही बॉडी चेकअप के लिए साथ में आये हुए जैनम ने मुझे २ घण्टे के बाद ही मेसेज कर दिया था। **''3 दिन**

के बाद पार्टी के लिए तैयार रहना।''

मुझे कोई भी पार्टी में गये हुए बहुत समय बीत गया था, इसलिए मैंने मना नहीं किया था। मम्मी-पप्पा को पार्टी के बारे में कहा तो उन्होनें सहर्ष सहमति दे दी थी। सहमति देते समय उनके मुख से शब्द निकल पड़ें थे ''तूं इतनी जल्दी ठीक हो जायेगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं था, बेस्ट ऑफ लक...''

आज बहुत जल्दी सुबह अपार्टमेंट के नीचे आकर जैनम ने मुझे कॉल किया था। मैं सोयी हुई थी। फोन बजने से नींद में खलल पड़ी थी, लेकिन जैनम का कॉल देखकर मुझे आनंद हुआ था।

''हेल्लो डॉर्लिंग...'' जैनम की स्पष्ट मीठास भरपूर आवाज सुनाई दी थी।

''मैं नीचे खड़ा हूं... तूं दो मिनट के लिए आ सकती है?'' अचानक इस प्रकार आने का कारण मुझे समझ में नहीं आया था।

मैंने नाइट ड्रेस पहना था और मम्मी से कहकर मैं उसी ड्रेस में नीचे गयी थी।

जैनम नीचे रिसेप्शन डेस्क पर खड़ा था।

''क्या हुआ? टाईम दिखाई देता है।'' मैंने नाटकीय गुस्से में पूछा था।

''तूं सामने होती है तो मुझे कुछ भी दिखाई देता नहीं...'' उसने हंसते-हंसते कहा था।

फिर मुझे इशारा करके 'मेरी नयी गाड़ी देखने को चल।' इस प्रकार कहकर वह मुझे पार्किंग में लेकर गया था। वहां एक बड़ी काली गाड़ी खड़ी थी। उसके ऊपर **''लिमोझिन''** लिखा हुआ था। इतनी बड़ी गाड़ी मैंने जिन्दगी में पहली बार देखी थी।

''ये कब? कितने में?'' प्रश्नों की झड़ी मैंने जैनम पर बरसा दी थी।

उसने कोई भी जवाब दिये बिना गाड़ी का दरवाजा खोला था।

''प्लीझ एन्टर मिस अपेक्षा...'' गाड़ी में से आवाज आयी थी।

मैं अंदर बैठी थी। जैनम मेरे पास साइड में बैठा था । फिर गाड़ी चलने लगी थी।

जैनम ने किसी को फोन किया था। ''आंटी ! मैं अपेक्षा को लेकर जा रहा हूं।''

सामने से कुछ बोलने की आवाज आयी थी।

''आप उसका टेन्शन मत लो...'' कहकर जैनम ने फोन कट कर लिया था।

फिर जैनम ने एक व्रेप की हुई वस्तु मेरे हाथ में रखी थी।

मैंने वो लेकर खोली थी। उसमें शॉर्ट व टी-शर्ट था।

''ये किसके लिये?'' मैंने प्रश्न किया था।

''पहनने के लिए... नाईट ड्रेस में तुम अच्छी नहीं लगोगी ना...'' मेरे गाल पर स्पर्श करते हुए जैनम ने कहा था।

गाड़ी में ही मैंने ड्रेस चैंज कर लिया था। बड़ी-बड़ी हिरोइनों को टक्कर मारे, ऐसा मेरा रूप छलक रहा था।

फिर गाड़ी एक रिसोर्ट के बाहर जाकर खड़ी हुई थी। वहां मेरे दूसरे भी बहुत से दोस्त इकट्ठा हुए थे। उन सबके हाथ में एक बोर्ड था।

''वेलकम मिरेकल गर्ल....''

मैं खुशी से पागल हो गयी थी। जैनम मेरे सामने देखकर हंस रहा था।

फिर हमने रिसोर्ट में बहुत मजा-मस्ती की थी।

शाम को डिनर के समय जैनम ने मेरे हाथ में पास रखे थे।

''अभी हम सब *15* व्यक्ति यहां जायेंगें...'' जैनम को मेरे नाचने के शौक के बारे में पता था और इसलिए ही वह डीजे की टिकिट लेकर आया था।

स्मेक डेट गीत पूरा हुआ। मैं बहुत थक गयी थी, इसलिए एक टेबल पर जाकर बैठ गयी।

''तूं ठीक है ना...?'' जैनम ने टेबल पर आकर पूछा।

मैंने ''हां'' में सिर हिलाया। इतने में तो बाकी सब मित्र भी आ गये।

''एक स्कॉच.. एक ब्रेंडी...'' मेरे एक मित्र ने ऑर्डर दिया। जैनम

को अच्छा नहीं लगा। वेटर दारू लेकर आ गया। साथ में बर्फ की ट्रे भी थी।

मेरे एक फ्रेंड ने दारू को मिक्स करके सबके ग्लास भरें। मेरे फ्रेंड को पता था कि हम दोनों दारू नहीं पीते है, तो भी उसने हमारे लिए भी ग्लास भरें।

मैंने मना किया।

''देखो अपेक्षा! आज तुम्हें लेना ही पड़ेगा, ओर जैनम! तुम्हें भी आज लेना पड़ेगा और फोर्स भी करना पड़ेगा...नहीं तो....'' फ्रेंड का मुंह उतर गया।

उसे देखकर जैनम को दया आयी। उसने मेरी ओर देखा।

''चलो ज्यादा सोचो मत। आज पार्टी टाईम है।'' फ्रेंड ने एक ग्लास उठाकर जैनम को पिलाया। दूसरा ग्लास मेरे गले से नीचे उतारा। मेरा सिर घुमने लगा। पिछले कितने समय से मैंने एक भी नशा नहीं किया था।

डी.जे. ने प्यार के गीत बजाने चालू किए। जैनम मेरे साथ डान्स करने लगा। मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे। लेकिन डान्स का मजा ही कुछ और था।

कोई भी प्रेमी को बेबस कर दे, ऐसा गीत डी.जे. ने चालू किया। हम सब एक-दूसरें में खो गए। हमारा राग पराकाष्ठा पर पहुंच गया। जैनम ''हम दोनों आते है।'' ऐसा ईशारा करके मेरा हाथ पकड़कर मुझे हयात के डिलक्स रूम में लेकर गया। उसके पास उस रूम की चाबी तैयार थी। मैं उससे चिपक कर खड़ी थी। हमने रूम में प्रवेश किया। जैनम ने दरवाजा बंद कर दिया।

दारू के नशे में हम मानवीय सुखों में तल्लीन हो गयें। जिन्दगी में पहली बार मैंने मेरा कौमार्य खोया।

Chapter - 11

16/5/2010

I.S.T. 6.00

Grand Hayat, Mumbai

REALISATION अति भयंकर होता है.....।

मेरे सिर चकरा रहा था। मैंने आस-पास देखा। जैनम मेरे पास सोया हुआ था। मैने धीरे से उसका हाथ हटाया। वह थोड़ा हिला, लेकिन जागा नहीं।

''मैं कहा हूं?''

मैंने आस-पास देखा। सामने दिवार पर ''वेलकम टू ग्रेन्ड हयात'' लिखा हुआ था। मुझे कल की रात याद आयी।

''लेकिन मैं इस रूम में आयी कैसे?'' मैंने दिमाग कसा। कुछ भी याद नहीं आया। इतना पता था कि मैंने दारू पी थी। मैं बैठ गयी।

मुझे पहली बार एहसास हुआ कि मैं निर्वस्त्र हूं। मैं चिल्लाने वाली ही थी, लेकिन जैनम की नींद ने मुझे रोक लिया। मैं बेबस हो गयी। मैंने ब्लेंकेट दूर किया। मैंने मेरे पैर की तरफ देखा। फिर मुझे ख्याल आया कि क्या हुआ है?

मेरी आंखों में से आंसू टपकने लगे।

मैंने मेरा कौमोर्य खो दिया था । *''बाप रे! ये क्या हो गया? यदि मेरे पेट में गर्भ रह गया तो?''* विचारों के आवेग के कारण अब भय ने प्रवेश कर लिया।

मैंने लैंप चालू किया। साइड में एक फर्स्ट एड बॉक्स दिखाई

दिया। मैंने फटाफट बॉक्स खोला और बेड पर खाली कर दिया। उसमें मैं एक दवाई ढूंढने लगी। पास में रखे हुए पानी का ग्लास मैंने भरा। जैनम तो शांति से सो रहा था।

'इसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?'' मुझे अचानक गुस्सा आया।

''लेकिन तू भी इसमें साथ थी अपेक्षा ! जो कुछ हुआ वह अकेले से हो ऐसा नहीं है...'' अंदर से आवाज आयी। मुझे मर जाने की इच्छा हो गयी।

मुझे दवा मिल गयी। मेरे हाथ में रही दवाई मैंने पानी के साथ गटगटा ली। मुझे थोड़े वर्षों पहले की घटना याद आयी।

मेरी पहले की मम्मी और मेरे में मुझे समानता दिखाई दी।

मैंने अंतिम बार दवाई के पेपर को रोती हुई आंखों से देखा और उसे खिड़की से बाहर फैंक दिया। मेरे ऊपर आज दो बड़े कलंक लग गये थे... हत्यारी और व्यभिचारिणी...

मैंने बाहर फैंके हुए पेपर के 5 अक्षर बारबार मेरे सामने उभरने लगे....

I-PILL..

Chapter - 1

18/5/2010

I.S.T.10.30

Dadar, Mumbai

CONFESSION अति भयंकर होता है.....।

''प्लीझ म.सा.....प्लीझ...प्लीझ...मुझे बचा लो...'' जैन भवन भी गूंजने लगे इतने जोर-जोर से मैं रोने लगी। सभी साध्वीजी भगवंत मेरी तरफ देखने लगे।

शासनद्रष्टाश्रीजी वहां से उठे और मुझे एक रूम में लेकर गये। मेरा रोना सतत चालू ही था।

''शांत हो जा अपेक्षा! क्या हुआ?'' मेरे सिर पर हाथ फेरते-फेरते शासनद्रष्टाश्रीजी ने पूछा । अब मुझे कोई नहीं बचा सकता। मैं पहले ही मर गयी होती, तो अच्छा होता...'' और भी जोर-जोर से रोते-रोते मैंने कहा।

''लेकिन हुआ क्या है?'' दृढ़ता के साथ मेरी रिकवरी करानेवाले ने पूछा।

मैं थोड़ी शांत हुई। तीन दिन पहले घटी हुई पार्टी की पूरी घटना मैंने उन्हें सुनाई। उनके चेहरे के भाव पत्थर की तरह एकदम सपाट रहे। जब मेरी बड़ी भूल की बात आयी तो उन्होनें हल्का स्मित किया। मुझे स्मित देखकर आश्चर्य हुआ।

''क्या इनको कोई असर नहीं होता?'' मेरे मन में विचार स्फुरण हुआ। शायद ये ही विशेषता मुझे इनके प्रति आकर्षित करती थी। शासनद्रष्टाश्रीजी सामनेवाले को एकदम हल्का अनुभव कराते थे।

''पिछले दो दिनों से मैं सो नही सकी हूं, मेरी लाईफ!'' मैंने मेरी पूरी फाइल शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने खुली कर दी। **2** मिनट तक वे कुछ भी नहीं बोले।

''अपेक्षा! देखो... मिस्टेक्स तो जीवन में लगातार होती ही रहती है... लेकिन उसका पुनरावर्तन नहीं ही होना चाहिए... और अपने शास्त्रों में हर एक पाप को दूर करने का उपाय बताने में आया है। इसलिए तूं टेन्शन मत ले। लीव फ्री...'' मीठास से भरपूर शब्दों ने मेरे हृदय में अमृत का सिंचन किया। मेरा थोड़ा बोझ हल्का हो गया।

अचानक शासनद्रष्टाश्रीजी उठे और रूम के बाहर गये। मैं वहां ही बैठी-बैठी अपनी काली करतूतों का पश्चात्ताप कर रही थी।

मेरा फोन फ्लेश होने लगा। जैनम का फोन था। पिछले **2** दिनों से मैंने उसका एक भी फोन उठाया नहीं था। एक बार तो वह घर पर भी आया था, लेकिन कामवाली के थ्रु मैंने ''मैं घर पर नहीं हूं'' ऐसा कहलवा दिया था। उसके साथ फोन पर बात करने की इच्छा ही नहीं हो रही थी।

शासनद्रष्टाश्रीजी अंदर आये।

''अपेक्षा ये बुक ले... इसे पढ़ने से तुम्हें बहुत शांति मिलेगी.... और कभी भी तुम डिप्रेस हो जाओ तो आ जाना।'' प्रेमभरी दृष्टि से शासनद्रष्टाश्रीजी मुझे देखते रहे।

''ऐसा खराब काम करने पर भी आपको मेरे लिए कुछ भी खराब विचार नहीं आया?''

मेरे मन में उठ रहा प्रश्न आखिर मैंने पूछ ही लिया।

''अपेक्षा! एक बात ध्यान रखना। दुनियां इस ही तरह चलती है। हम दुनियां से अलग चलें, तो ही हम कुछ बन सकते है। भगवान ने मुझे तुम्हारें जैसे ही कितने जीवों को कुछ खास बनाने के लिए ही भेजा है। और मैं तो मेरे भगवान ने मुझे दिया हुआ टास्क पूर्ण करने का प्रयत्न कर रही हूं। मुझे आज की जनरेशन की प्रॉब्लम्स पता ही है। इसलिए मुझे इन वस्तुओं में कभी भी आश्चर्य नहीं होता।

और दूसरा हर एक आत्मा अपने-अपने कर्मों के वशीभूत होती

है। जैसे कि उस दिन तुम दारू के वश थी... इसलिए, ये मत सोचना कि लोग मेरे लिए क्या सोचते है, लेकिन ये सोचना कि ''मैं मेरे लिए क्या सोचती हूं।'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरे में वचनों से शक्तिपात किया।

मैं रिफ्रेश हो गयी ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

''और...'' रूम से बाहर निकलते-निकलते शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे कहा...

''ये बुक पढ़ना मत भूलना... ये खजाने से भी महान है...''

Chapter - 2

19/5/2010

I.S.T. 22.30

K2 Tower, BKC

अनुभूति अति भयंकर होती है.....।

मैंने कन्फेशन इंग्लिश बुक का 12 वां पेज पलटा। आधे घण्टे पहले ही मेरे मन को बहुत समझाकर और शासनद्रष्टाश्रीजी के वचन को याद करके मैंने ये बुक पढ़नी शुरू की थी। एक इन्टरस्टिंग स्टोरी चल रही थी।

''तेरे हाथ कटे हुए थे कि तूं इस छाब में पड़ा हुआ भोजन नहीं ले सका।'' मम्मी ने अपने बेटे से कहा। दोनों कन्फेशन किए बिना मर गए।

''अगले भव में...'' मेरा ध्यान बुक में से विचलित हुआ।

''अपेक्षा...'' मुझे आवाज सुनाई दी। कोई बुला रहा हो ऐसा मुझे लगा। मैं बुक बंद करके 5 मिनट वहां ही बैठी रही। वापस आवाज नहीं आयी। मैंने फिर से बुक खोली और पढ़ने लगी।

''ये माँ और बेटा अगले जन्म में पति-पत्नी बने।'' स्टोरी आगे बढ़ी। थोड़े बहुत पेज पढ़ने के बाद मैंने बुक बंद कर दी। मैंने घड़ी की तरफ देखा। रात के 11:30 बज गए थे। डेढ़ घण्टा कैसे व्यतीत हो गया ये ही मुझे पता नहीं चला।

मैंने मोबाइल की तरफ देखा। 25 मिस्ड कॉल्स उसमें दिखाई दे रहे थे। उसमें से 15 कॉल्स तो जैनम के थे और 5 कॉल्स पप्पा के थे, क्योंकि पप्पा को नयी जॉब मिल गयी थी और उस जॉब के नियमानुसार

उन्हें 15 दिन बाहर गांव मीटिंग के लिए जाना पड़ता था।

मैंने मेरा फेसबुक एकाउंट चैक किया। उसमें बहुत सारी पोस्ट्स आयी हुई थी। मैं स्क्रॉल करके देखने लगी । आज मेरी फ्रेन्ड नीशा का बर्थ-डे था, इसलिए मेरे सब फ्रेन्ड उसकी पार्टी में मुझे दारू की बोतल के साथ दिखाई दिए।

मैं उस पार्टी में नहीं गयी थी। और मुझे फोन भी नहीं आया था, क्योंकि मैंने जैनम के सिवाय मेरे सभी फ्रेन्डों के नम्बर ब्लॉक कर दिए थे। मुझसे सम्पर्क करने के लिए नीशा ने बहुत ट्राय की थी, लेकिन मैंने मेरे घर के नम्बर को भी एंगेज कर दिया था।

मुझे वापस उन पापी मित्रों से नहीं मिलना था।

मैंने दारू की बोतल के साथ मेरे फ्रेन्ड्स के फोटो को पोस्ट करनेवाले व्यक्ति का एकाउंट ब्लॉक कर दिया। मेरे फ्रेन्डलिस्ट में से मैंने उसे निकाल दिया। अब मुझे इन सब वस्तुओं से घृणा हो गयी थी।

मैंने आगे मेरे वॉल पेज को स्क्रॉल किया। स्क्रॉल करने पर एक नये ग्रुप की एडवरटाइझमेंट मुझे दिखाई दी । उसमें लिखा हुआ था।

"CONFESS... A WAY OUT OF THE MESS..."

मैंने इस एड में दिये हुए ''जॉइन ग्रुप'' के ऑप्शन पर क्लिक किया। इस पेज के एडमिन ने मुझे ग्रुप में एड कर दिया। पेज पर अलग-अलग व्यक्तियों के जीवन में आये हुए कन्फेशन के फायदें, अपने अनुभव लोगों ने लिखे थे।

मैं एक-एक वस्तु पढ़ती गयी और ''तेरे जैसे कितने ही जीवों को राह दिखाने के लिए..'' ये शासनद्रष्टाश्रीजी का वाक्य मेरी स्मृतिपटल पर आया।

इस ग्रुप में ड्रग्स एडिक्ट से लेकर खून करनेवालों की स्टोरी पोस्ट करने में आयी थी । एक व्यक्ति ने 7 मर्डर किये थे, लेकिन उन खूनों को साबित करने के लिए सबूत पुलिस के पास नहीं थे।

एकबार मर्डर करने के लिए जाते समय उस खूनी की पत्नी ने

उसे रोका। एक झटके के साथ खूनी ने अपनी पत्नी को साइड में कर दिया। पत्नी के सिर पर से खून निकलने लगा। तब उसकी पत्नी ने एक वाक्य उच्चार किया,

''आप जिसका खून करने जा रहे हो, उसकी पत्नी की जगह मैं होती तो आप क्या करते? आपके कारनामों से मैं हमेशा भयभीत ही रहती हूं।''

ये उसकी पत्नी का वाक्य उस खूनी को लोहे के घाव जैसा अनुभव होने लगा । उसके पैर वहां के वहां स्थिर हो गये। उसके बाद उसके जीवन में परिवर्तन आया और आज की तारीख में वो 'मुनि महाबलविजय जी म.सा.'' थे।

उनके नाम के साइड में उनका फोटो किसी ने पोस्ट किया था। मैं पढ़ती गई और रोती गई। मैं पेज के अंत में आयी। वहां एक पोस्टर पोस्ट करने में आया था। उसमें एक व्यक्ति की आंखों में से आसूंओं की धार निकलती हुई बताने में आयी थी और नीचे इंग्लिश में लिखा था...

'SINS ARE SINS, SINCE NOT CONFESSED, AFTER SINCE THEY ARE NOT SINS...'

नीचे सेमिनार जो तीन दिन के बाद होने वाला था, उसका एड्रेस, समय वगैरे लिखा हुआ था। उसके नीचे एक नाम लिखा था ओरेटर का। उस नाम को मैं 15 मिनट तक एकाग्रता से देखती रही। उस नाम में एक अकथ्य आकर्षण था। वह नाम था,

''भवनिस्तारक...''

Chapter - 3

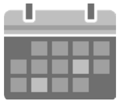

22/5/2010

I.S.T. 9.00

Birla Matushree Auditoriam, Mumbai

PRESENTATION अति भयंकर होता है.....।

भवनिस्तारक...!!!

एक सुदृढ़ 500 घोड़े की शक्ति जिसमें भरी हुई दिखाई दे ऐसे रूपवान, हेन्डसम व्यक्तित्ववाले पुरूष! सॉरी पुरूष नहीं, परंतु साधु ! 9 बजकर 05 मिनट मेरी रोलेक्स घड़ी में बजे थे।

उस दिन स्क्रॉल करते-करते मेरी आंखें इसी शब्द पर अटक गयी थी। ऐसा नाम मैंने पहली बार सुना था, लेकिन इस नाम में गजब का जादु था।

फिर मैंने यूट्यूब वगैरे सोशियल साईट्स पर ये नाम सर्च किया था। फेसबुक पर इस नाम का पेज थोड़ें लोगों ने मिलकर बनाया था। उसमें भवनिस्तारक के मोटीवेशनल सुवाक्य डालने में आये थे।

मैंने एक-एक सुवाक्य पढ़े। सभी वाक्य एकदम हार्टटचिंग थे। मैंने उनकी आवाज किसी जगह मिल जाए उसके लिए पूरा इन्टरनेट ढूंढ लिया था, लेकिन मुझे सफलता मिली नहीं थी।

ऐसे स्क्रॉल करते-करते 5 वर्ष पुरानी आउटडेटेड वेबसाइट पर मुझे कुछ मिल गया था। वहां प्ले के बटन पर मैंने क्लिक किया था और एक गजब की आकर्षक आवाज ने मेरे ऊपर पक्कड़ जमा ली थी। मैंने ये 10 मिनट की स्पीच 5 बार सुनी थी और नक्की कर लिया था।

''मुझे इनके सेमिनार में जाना है....''

मैंने वापस वो पोस्टरवाले पेज पर जाकर उसमें ऑनलाइन रजिस्टर कर लिया था। रजिस्ट्रेशन के लिए 50 रूपये भरने थे। मैंने बैंक एकांउट के नम्बर डालकर वो पैसे भर दिए थे।

मनी ट्रांसफर का ट्रांजेक्शन होने के बाद और भी एक भवनिस्तारक का सुवाक्य आया था **''जो वस्तु फ्री में होती है, उसकी कीमत भी फ्री जैसी ही होती है, इसलिए हर एक वस्तु के लिए पे करो।''**

मैं उनका प्रेझेन्टेशन देखकर चकित हो गयी थी। मेरे मोबाइल पर 5 मिनट के बाद ऑनलाइन पास आ गयी थी। उसमें स्थल ''बिरला मातुश्री हॉल'' लिखा हुआ था। और टाईम की जगह "9:00 A.M. A.T." लिखा हुआ था।

मुझे ।" A.T." का मतलब समझ में नहीं आया था इसलिए मैंने पोस्टर के पेज पर A.T." का अर्थ पूछा था। पलभर में ही जवाब आ गया था ''अमेरिकन टाईम थी...'' आगे स्माईल करती मिलीका पिक पोस्ट करने में आया था। मेरे मुंह पर हल्की मुस्कान आयी थी।

मैंने पहली बार किसी व्यक्ति का इतना सिस्टमेटिक अप्रोच देखा था। आगे के दिन बड़ी मुश्किल से मैंने बिताये थे। गले तक उत्कंठा भवनिस्तारक को देखने की हो गयी थी।

इन दिनों के दौरान मैं शासनद्रष्टाश्रीजी को भी मिलने गयी थी। बातों-बातों में बात निकलते मैंने भवनिस्तारक के विषय में बात की थी।

ये नाम सुनते ही उनके मुंह पर चमक आ गयी थी। जैसे कि वे स्वयं भवनिस्तारक के साथ किसी प्रकार जुड़े हुए हो, ऐसे भाव उनके चेहरे पर दिखाई दे रहे थे।

''आप उनको जानते हो?'' मैंने धीरे से पूछा था।

''हां...'' उनका उत्तर सुनाई दिया था।

''बट हाऊ?''

''वे हमारे ग्रुप के ही महात्मा है। वे यंग जनरेशन के लिए रोल मॉडल है, जहाज के लिए एन्कर जैसे है, लोस्ट के लिए लेम्प जैसे है। उनकी बातें तुम उनके मुख से सुनोगे तो ही ज्यादा मजा आयेगी और उससे

भी ज्यादा वे मेरे भी रोल मॉडल है।''

मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी की बातें सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ था। जिनको शासनद्रष्टाश्रीजी जैसी विभूति रोल मॉडल मानती हो, वो कैसे होगें?

उस दिन के बाद मेरी नींद उड़ गयी थी । हमेशा भवनिस्तारक की ही कल्पनाऐं दिमाग में चलती रहती थी। एक दिन पहले मेरे मोबाइल पर सुबह 9 बजे मेसेज आया था।

'GET READY FOR THE SESSION...24 HRS TO GO..."

मैं आज सुबह जल्दी उठ गयी थी... सॉरी मैं तो रात को सोयी ही नही थी। फिर मेरे आवश्यक कार्यों को निपटाकर आधे घण्टे पहले ही घर से मैं निकल गयी थी। किसी भी हिसाब से मुझे लेट होना नहीं था।

मैं आधे घण्टे पहले ही सेमिनार हॉल में पहुंच गयी थी। हॉल के बाहर एक बड़ा फ्लेक्स लगाने में आया था। उसके ऊपर सिर्फ 3 शब्द लिखने में आये थे।

STRESSED???
THEN ENTER... Enter ←

उनकी पेशकश ने फिर से एकबार मुझे चकित कर दिया था।
''ऐसे आइडियाझ कहां से आते होगें?'' मेरे मन में प्रश्न उठा था।

मैं गेट बंद होने के कारण 10 मिनट बाहर खड़ी रही थी। तब तक तो सफेद कपड़े पहने हुए बहुत सारे यंग लोग वहां आ गये थे। गेट खुलते ही मेनेजमेंट के लोग बाहर आये थे और सभी को प्रवेश करने के लिए कहा था।

कोई भी प्रकार की धक्का-मुक्की के बिना एक लाइन से सभी

एन्टर हुए थे। एक अलग ही डिसीप्लीन भवनिस्तारक ने इन युवानों में उत्पन्न किया था, जो इस एज ग्रुप के लिए अशक्य जैसा था।

''वेलकम सिस्टर अपेक्षा...'' एक मेनेजमेंट के व्यक्ति ने मेरा ऑनलाइन पास चैक करने के बाद मुझे कहा था। उसने मुझे मेरे सीट की तरफ इशारा किया था। मैं वहां जाकर बैठ गयी थी। । A.C चालू नही था। लेकिन उसकी ठंडक मुझे अनुभव हो रही थी। भवनिस्तारक A.C का उपयोग नहीं करते थे। उनके शब्द ही A.C थे ।

सम्पूर्ण हॉल में इतने सारे लोगों का आवागमन होते हुए भी पीन-ड्रोप-साइलेन्स था। सब प्रक्रियाऐं एकदम शांत थी । मैं जैसे कि कोई शांत दुनिया में पहुंच गयी हूं ऐसा मुझे लग रहा था ।

9 बजे बराबर भवनिस्तारक की एन्ट्री हुई थी। उनके साथ 36 एकदम हेंडसम यंग लड़कों की ''त्रिशलानंदन वीर की.... जय बोले महा-वीर की...'' आवाज से पूरा ऑडिटोरियम गूंज रहा था।

फिर एक बड़े स्टेंड पर भवनिस्तारक स्वयं बैठे थे। तब उनका व्यक्तित्व देखकर मैं एकदम चकित रह गयी थी। सभी ने एकसाथ मिलकर भवनिस्तारक को जैन स्टाइल में वंदन किया था। मुझे वंदन करना नहीं आता था, इसलिए मैं वैसे की वैसे ही खड़ी रही थी। मेरा लक्ष्य भवनिस्तारक के शरीर पर ही केन्द्रित था। बारबार मुझे एक ही प्रश्न मन में उठ रहा था।

''भवनिस्तारक ने जैन संन्यास (दीक्षा) क्यों स्वीकार किया?''

Chapter - 4

22/5/2010 | I.S.T. 9.10 | Birla Matushree, Auditoriam, Mumbai

TREASON अति भयंकर होता है.....।

''एक यंगमेन...'' भवनिस्तारक की माईक बिना की आवाज एकदम स्पष्ट 1200 लोगों के कानों में गूंज रही थी। पूरे ऑडिटोरियम में सम्पूर्ण शांति थी।

''उसका जन्म बहुत विचित्र परिस्थितियों में हुआ था... उसकी मम्मी मुसाफिरी कर रही थी। यंगमेन पेट में था। ट्रेन में उनकी मम्मी को प्रेशर स्टार्ट हो गया। वह भारतीय रेल्वे के बाथरूम में गई। गंदगी का कोई पार नहीं था। लेकिन दूसरा कोई विकल्प नहीं था। उसकी मम्मी इंडियन स्टाईल टॉयलेट में बैठी। गाड़ी चल रही थी। मम्मी ने प्रेशर देना चालू किया। भयंकर पीड़ा मम्मी को हो रही थी।'' दो पल के लिए भवनिस्तारक रूक गये।

''और वहां ही उसकी मम्मी उसको जन्म देकर बेहोश हो गयी 10 मिनट गुजर जाने पर भी यंगमेन की मम्मी बाहर नहीं आयी, तो उसके पप्पा को टेन्शन हुआ। वो बाथरूम के पास जाकर यंगमेन की मम्मी का नाम लेकर चिल्लाने लगे। कोई रिस्पोन्स नहीं ।

यंगमेन के पप्पा ने दरवाजा खटखटाया। कोई रिस्पोन्स नहीं। पप्पा से रहा नहीं गया, इसलिए उन्होनें बाथरूम का दरवाजा ही तोड़

दिया। वहां ही मम्मी बेहोश पड़ी हुई थी। उसके शरीर से खून बह रहा था।

पप्पा ने खून का कारण ढूंढा, तो पता चला कि मम्मी का अम्ब्रो-ईकल कोर्ड बाहर था और टूट गया था। पप्पा पर बिजली गिर गयी हो, उस तरह वो सन्न रह गये।

''मेरा बच्चा... मेरा बच्चा।'' कहकर वे बाथरूम में अपने वारिस-दार को ढूंढने लगे। उसका कहीं भी पता नहीं लगा। थोड़े खून के निशान कमोड पर दिखाई दिए।

यंगमेन के पप्पा फटाफट सब समझ गए। वे दौड़े और गाड़ी को रोकनेवाली इमरजंसी चैन खिंची। फुल स्पीड में चलती हुई ट्रेन एकदम रूक गयी।

यंगमेन के पप्पा बाथरूम की ओर भागे। वहां खड़े हुए लोगों की मदद से अपनी पत्नी को एक सीट पर सुला दिया।

1-2 वर्ष की जेल या 1500 रूपयों का दंड या दोनों को लेनेवाली पुलिस आ पहुंची। पुलिस कोई प्रश्न करें, उससे पहले ही यंगमेन के पप्पा ने पुलिस के सामने अपनी स्टोरी सुनानी स्टार्ट की।

''मेरा बच्चा इस ट्रेन के बाथरूम के कमोड में से ट्रेक पर नीचे गिर गया है, प्लीझ मुझे उसको ढूंढने में मदद करो।'' पप्पा ने विनंती की।

पुलिस इन्सपेक्टर का हृदय एकदम कोमल था, वो तैयार हो गया। रात को 10.00 बजे वे यंगमेन को ट्रेक पर ढूंढने लगे।

टोर्चलाईट के सहारे 20 कि.मी. दूर जाने पर कवर बिना का पार्सल जैसा छोटा, रोता लाल बालक उनको बहुत ढूंढने पर मिला। उसके पप्पा ने उसको हाथ में लिया। उसकी पीठ पूरी डेमेज हो गयी थी और उसमें गहरा घाव पड़ गया था...'' सब लोग सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ सुन रहे थे। भवनिस्तारक ने आगे कहना शुरू किया...

''वो बड़ा होता गया। उसके शरीर को ठीक करने के लिए पप्पा ने करोड़ों रूपयों का खर्चा कर लिया। यंगमेन के पप्पा के 10 भाई-बहनों की फेमिली में एक मात्र लड़का यंगमेन ही था। और ये भी 4 बहनों के बाद हुआ था, इसलिए 100 % सभी का प्यार उसके ऊपर ज्यादा बरसता था।

कोई भी वस्तु का अतिरेक जहां होता है, वहां वो वस्तु बिगड़ने

लगती है। जैसे-जैसे यंगमेन बड़ा होता गया, वैसे-वैसे उसकी हरेक इच्छा पूर्ण होती गई। अरे, कोई यंगमेन को कुछ कह भी देता, तो उस बेचारे की वाट लग जाती। इस कारण यंगमेन की उच्छृंखलता बढ़ती गयी...'' मुझे ''उच्छृंखलता'' शब्द का अर्थ समझ में नहीं आया।

''वो आऊट ऑफ कन्ट्रोल हो गया। कॉलेज में आया। हर दूसरे दिन पार्टी में जाने लगा। वहां दारू और ड्रग्स तो सामान्य हो गया था। इकलौता होने के कारण मम्मी-पप्पा उसे प्रेम से समझाते, लेकिन रिझल्ट शून्य!

कहते है कि **''लातों के भूत बातों से नहीं मानते।''** और एक दिन कुदरत ने यंगमेन को जोरदार लात मारी।''

पीछे इन्टरवेल की बेल बजी। मैंने घड़ी में देखा। एक घण्टा बीत गया था। सभी के मुंह में से ''ओहहह'' निकला। एकदम सस्पेंस स्पॉट पर बेल बजी थी। भवनिस्तारक की स्पीच की स्टाईल इतनी आकर्षक थी कि एक घण्टा कैसे निकल गया ये किसी को भी पता ही नही चला । 10 मिनट का इन्टरवल था, लेकिन एक भी व्यक्ति अपनी सीट से उठा ही नहीं।

भवनिस्तारक 10 मिनट के बाद वापस आये। सब उनकी एन्ट्री होते ही खड़े हो गये।

''तो, माय फ्रेन्ड्स! हम कहां थे? हां...''

''जो किसी से भी बदल नहीं सकता, उसे कुदरत बदलती है। एकबार यंगमेन खंडाला अपने घनिष्ठ मित्रों और गर्लफ्रेंड के साथ गया था। यंगमेन और उसकी गर्लफ्रेंड ने पिछले 2 वर्षों में कह न सके ऐसे और इस प्रकार के भोगसुख भोगे थे। पति-पत्नी से भी ज्यादा समीप वे थे। उन दोनों को अपनी हरकतें करने से कोई भी जगह या कोई भी अवसर रोक सकता नहीं था। वे दोनों एकदम बिन्दास्त थे।

एक दिन खंडाला जाते समय यंगमेन की गर्लफ्रेंड ने यंगमेन को एक बेग दिया। ''तुम इसे सही सलामत रखना। इसमें मेरी कीमती वस्तुऐं है।'' यंगमेन को अपनी गलफ्रेंड पर पूरा विश्वास था। उसने वह बेग ले लिया।

वे खंडाला पहुंचे। रात को पार्टी में यंगमेन और उसकी गर्लफ्रेंड

एकदम नजदीक होकर नाच रहे थे। गर्लफ्रेंड ने यंगमेन के बटक पॉकेट में हाथ डाला। दोनों इस प्रकार डाँस करने लगे। बाहर गनफायरिंग हुई हो, ऐसी आवाज सुनाई दी।

पार्टीवाले सब लोग पागलों की तरह यहां-वहां दौड़ने लगे। यंगमेन भी घबरा गया। लेकिन वह ज्यादा मजबूत स्टफ से बना हुआ था। सामने गेट में से पुलिस आती हुई दिखाई दी। उनके हाथ में पिस्तौल थी।

''ऐ टपोरी! तूं यहां क्या कर रहा है?'' यंगमेन से पुलिस ने पूछा।

''ऐ, मुंह संभालकर बात कर... नहीं तो इस गन की सब गोलियां तुम्हारे मुंह में दाग दूंगा....'' यंगमेन ने सामने तुरन्त जवाब दिया। उसके पास खड़े उसके सब मित्र एक-एक करके गायब हो गये।

''ऐ...'' इन्सपेक्टर जोर से चिल्लाया और यंगमेन को मारने आया। यंगमेन ने अपना कसा हुआ मुक्का इन्सपेक्टर के मुंह पर मारा। तभी उसकी पीठ में भयंकर जलन होने लगी। उसकी पीठ में किसी ने एसीड डाला हो ऐसा यंगमेन को लगा। वो जमीन पर फिसलकर गिर गया । उसकी आंखे बंद होने से पहले उसकी गर्लफ्रेंड उसको दिखाई दी और उसके हाथ में स्टनिंग गन थी...''

बोलते-बोलते भवनिस्तारक थोड़ा रूका । ''आपके दूसरे इन्ट-रवेल का टाइम हो गया है...''

''नहीं...नहीं...'' सभी की आवाज आयी... ''हमें इन्टरवेल नहीं चाहिए।''

"OK.... OK...." भवनिस्तारक ने स्टोरी कन्टीन्यू की...

उसे 10 दिन के बाद होश आया। उसे इलेक्ट्रीक चेयर पर बिठाया गया था। उसकी आंखे खुलते ही हाई-वोल्टेज का झटका चेयर में से उसके शरीर में पसार हुआ।

''आह...आह...'' वो जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

सामने इन्सपेक्टर दिखाई दिया।

''क्यों हरामी! बहुत बॉडी बिल्डर है ना तूं...'' गाली के साथ इन्सपेक्टर बोला ।

"हम पार्टी में रेड करने आये थे और तुमने हमारे काम में रूकावट डाली। तेरे पर ४ गुनाह लादने में आये है। 1. ड्रग्स डीलिंग का..."

यंगमेन को आश्चर्य हुआ। वो ड्रग्स लेता जरूर था, लेकिन डीलिंग कभी भी नहीं करता था। इन्सपेक्टर ने पाऊच में से छोटी थैली निकाली। "तेरे बटक पॉकेट में से हमें ये मिला है... और...." इन्सपेक्टर ने एक काली बेग खोली। उसकी गर्लफ्रेंड ने दी हुई बेग जैसी ही वह बेग थी।

काली बेग में से सफेद पाउडर से भरे हुई बहुत-से पैकेट बाहर पड़े "इसमें **25** कि.ग्रा. गांजा और हेरोइन है, जो कि तुम्हारे रूम में से हमें मिला था।"

"दूसरा गुनाह... तेरी पार्टी में प्रोस्टीट्यूशन का रेकेट भी पकड़ा गया है। उसमें मुख्य दोषी के रूप में तेरी गर्लफ्रेंड ने तेरा नाम दिया है।" इन्सपेक्टर हंसने लगा। यंगमेन की आंखों में पानी बहने लगा। वो मान-सिक रूप से एकदम टूट गया।

"तीसरा गुनाह... तुने..." इंस्पेक्टर बोलता गया । लेकिन यंग-मेन का दिमाग ब्लेंक हो गया था। सुनाई देते शब्द भी नहीं सुनाई दे रहे थे। उसने अपनी पूरी जिंदगी जिसके लिए कुर्बान कर दी थी, उस व्यक्ति ने ही उसे धोखा दिया था।

2 दिन के बाद यंगमेन कोर्ट में पेश किया गया। गवर्मेंट लॉयर ने यंगमेन पर फाइल की हुई चार्जशीट पढ़ी और एक-एक करके साक्षी को पेश करता गया।

सबसे पहले यंगमेन के बचपन के मित्र ने उसके विरूद्ध गवाही दी। बारी-बारी सब मित्र आते गये और यंगमेन का गुनाह साबित करते गए। सबसे अंत में उसकी गर्लफ्रेंड आयी। वो जब से आयी थी, तब से वो उसकी आंखों में देखता रहा। उसके सामने देखे बिना उसकी गर्लफ्रेंड ने सब गुनाह साबित कर दिये। यंगमेन का कम्पलीट ब्रेकडाउन हो गया।

कोर्ट में से बाहर जाते समय यंगमेन अपनी गर्लफ्रेंड को एक ही प्रश्न पूछता रहा। "क्यूं? लेकिन क्यूं?"

14 वर्ष की जेल सजा के रूप में मिली। पहले **6** महिने बहुत मुश्किल से बीते। वो दिनभर में एक शब्द भी नहीं बोलता था। एक गहरे

डिप्रेशन में वो चला गया हो ऐसा सबको लगता था।

7TH महिने में जेल में रहे हुए एक जैन व्यक्ति को सांत्वना देने के लिए उसके धर्मगुरू आये । इस यंगमेन की और जैन व्यक्ति की रूम पास-पास ही थी । जेलर उस धर्मगुरू को यंगमेन की रूम के पास लेकर आया।

"सर ! ये डिप्रेशन में है। इसे कुछ समझाइए। कुछ तो इसे असर होगी।"

"यंगमेन..यंगमेन..." एकदम मीठे शब्दों से धर्मगुरू ने उस यंगमेन को बुलाया। अपने लिए इतनी प्रेमभरी आवाज सुनकर यंगमेन ने ऊपर देखा।

"तुम सोच रहे होगें कि तुम्हारे साथ ही क्यूं ये धोखा हुआ? लेकिन सब व्यक्ति अपने भाग्य में लिखकर लाया होता है। मैं तुम्हें ज्यादा डिस्टर्ब नहीं करूंगा,। लेकिन मेरी एक सलाह है। ये बुक ..." एक बुक यंगमेन के हाथ में देते हुए धर्मगुरू ने कहा।

"तुम पढ़ लेना। तुम्हें तुम्हारे सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगें..." यंगमेन ने वो बुक ले ली। उसके ऊपर **"डेबिट-क्रेडिट"** नाम लिखा हुआ था।

धर्मगुरू के जाने के बाद यंगमेन ने वह बुक पढ़नी शुरू की। धर्मगुरू के कहे अनुसार सब समाधान उसे मिलते गये। वह एक सप्ताह में ही डिप्रेशन से बाहर आ गया। उसे अपनी जिन्दगी के इतने सारे वर्ष बर्बाद करने का दुःख अब सता रहा था।

वह **2** वर्ष के बाद ही जेल से बाहर आ गया, क्योंकि उसके जेल में जाने के बाद एक बड़ा ड्रग्स रेकेट पकड़ा गया था और उसमें उसकी गर्लफ्रेंड भी पकड़ी गयी थी और उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया था कि सबकुछ उसने ही किया है।

यंगमेन ने अपनी जिन्दगी को बोनस मानकर, अच्छे कार्य में लगाने का नक्की कर लिया था । एक पॉझिटिव बुक या व्यक्ति क्या काम कर सकती हैं, ये उसका एक जीता-जागता उदाहरण है। इसलिए मेरी आप सबसे विनंती है कि पॉझिटिव लोगों के पास जाओ, उनसे संपर्क

करो।'' भवनिस्तारक एक पल रूके। सेशन पूरा होने में 10 मिनट बाकी थे।

तभी वहीं एक व्यक्ति ने खड़े होकर पूछा।

''हमें स्टोरी तो समझ में आ गयी यंगमेन की... लेकिन वो यंग-मेन है कौन?''

भवनिस्तारक ने अपने कंधे पर से कपड़ा ऊपर किया। उनका कंधा पूरा टटूओं से भरा हुआ था। वहां एक टेटू था कि जो अंदर गया हुआ लग रहा था। भवनिस्तारक ने सबको अपना कंधा दिखाकर एक ही शब्द उच्चार किया...

''मैं...''

Chapter - 5

22/6/2010

I.S.T. 22.30

K2 Towers, BKC

अड़चनें अति भयंकर होती है.....।

मैं धीरे से पूरे घर में घूमकर आयी, सब सो रहे थे। अब मेरा काम आराम से हो सकता था।

मैं अपने रूम में गयी। मैंने दरवाजा बंद कर दिया। मैं पलंग पर जाकर बैठी। और पास पड़े हुए एप्पल के कम्प्युटर को मैंने स्टार्ट किया। भवनिस्तारक और शासनद्रष्टाश्रीजी का फोटोवाला डिस्प्ले आया। मैंने मेन होम पेज पर रहे माइक्रोसॉफ्ट वर्ड के आइकॉन पर क्लिक किया। फाइल खुली। वर्ड फाइल में सेव किया हुआ ''कन्फेशन'' डॉक्युमेंट खोला। उसका 62^ND^ पेज मेरे सामने आया। मैंने अंतिम लाइन पढ़ी।

''मेरे 13^TH^ बर्थ-डे पर मैं मित्रों के साथ में बार में पार्टी के लिए गयी थी और तब मैंने उस वक्त के बॉयफ्रेंड के होंठ पर किस भी किया था...''

मैंने आगे लिखना चालू किया। आधे घण्टे तक मैं लिखती रही। तभी मेरा ध्यान किसी आवाज पर गया।

आवाज का स्त्रोत पता चलते ही मैंने कम्प्युटर को ऑटो शटडाउन में डाल दिया। और फटाफट साइड के टेबल पर रखकर मैं चादर ओढ़कर सो गयी।

तभी बाहर से दरवाजा खुला। ''मैं पकड़ी गयी तो?'' मेरा दिल

जोर-जोर से धड़कने लगा। ''कम्प्युटर बंद नही हुआ होगा तो?'' अब इन सब विचारों का समय बीत गया था।

भारी स्लिपर्स की आवाज नजदीक आयी और मेरे पास से गुजरी। साइड के टेबल के पास जाकर वो स्लिपर्स की आवाज रूकी। मेरा मुंह टेबल की तरफ ही होने से वो क्या कर रहा है ये मुझे चद्दर में से दिख रहा था। उसने मेरा कम्प्युटर चालू किया। लेकिन वो पासवर्ड मांग रहा था।

ये देखकर उसे निराशा हुई हो, ऐसा लगा। उसने मेरा कम्प्युटर बंद किया और वहां से खड़ा हुआ।

वो दो मिनट वहां ही खड़ा रहा। अभी भी मेरा दिल वैसा का वैसा ही भय से धड़क रहा था। अचानक वह मेरी तरफ झूका। मुझे लगा कि वो मेरी चद्दर खींच लेगा और मेरा सारा भेद खुल जायेगा। मैं भय से जाम हो गयी। मैंने सब आशाऐं छोड़ दी।

लेकिन उसने मेरे चद्दर से निकले हुए हाथ पर किस किया और भीगी हुई आवाज में कहा। ''आई लव यू अपेक्षा! तूं हमसे दूर हो जाये ये मेरे से बिल्कुल सहन नहीं होगा।''

वो खड़ा हुआ और बाहर निकल गया। मैंने चादर मुंह पर से हटायी। । A.C चालू होने पर भी मेरा पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो गया था। मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुंचने के लिए बहुत मेहनत करनी बाकी थी। मुझे भवनिस्तारक के शब्द याद आयें।

''तुम सबकुछ छोड़ सकते हो, लेकिन स्नेह ऐसी वस्तु है कि जिसे छोड़ना बहुत कठिन है और उसमें भी माता-पिता का तो विशेष...''

''मुझे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए माता-पिता की स्नेहरूपी अड़चनों को दूर करना ही पड़ेगा।'' मेरे मन में मैंने निश्चय किया।

Chapter - 6

24/06/2010 I.S.T. 8.30 K2 Towers,BKC

माया अति भयंकर होती है.....।

''बाय मॉम! मैं क्लासेस जा रही हूं...'' मम्मी के गाल पर किस करके मैं स्लीपर्स पहनकर घर से बाहर निकली। आज मैंने शरीर प्रदर्शन करनेवाला टॉप और मिनी स्कर्ट पहना था।

लिफ्ट में खड़े 2-3 अंकल मुझे देखने के लिए मुझे ''हाय'' कर रहे थे । पागलों की दुनियां में से बाहर निकली हो, ऐसा मुझे लिफ्ट से बाहर निकलते समय अनुभव हुआ।

मेरी बुक की हुई OLA सामने ही खड़ी थी।

मैंने पीछे का दरवाजा खोला और OLA में जाकर बैठ गयी। OLA ड्राइवर ने एक्सीलेटर पर पैर रखकर गाड़ी दौड़ायी। मैंने मेरी बेग खोली। उसमें एक नम्बर पेड से लॉक किया हुआ एक बेग का खाना 000 डालकर मैंने खोला। उसमें से एक लंबा वनपीस जैसा पंजाबी ड्रेस बाहर निकाला।

OLA में ही मैंने ये वनपीस सिर से पहन लिया। ड्राइवर मेरी ओर ही आगे के कांच में से देख रहा था। उसके चेहरे पर अजीब भाव मेरी ये हरकत को देखकर था।

''तुम्हारी प्रतिक्रियाओं को देखकर लोगों के चेहरे अलग-अलग प्रकार से बदलेंगे। लेकिन एक बात याद रखना,

धम्मे माया...नो माया...''

'धम्मे माया... नो माया...'

शब्द बारबार मेरे कानों में गूंज रहे थे। बीते हुए पिछले 8 दिनों में न जाने कितनी बार मैंने इन शब्दों का आश्रय लिया था। एक-एक प्रसंग मेरे सामने आते गये।

मुझे घर बैठे-बैठे कंटाला आ रहा था। मेरी तबीयत भी अब ठीक थी। रविवार को सिर्फ भवनिस्तारक के लेक्चर्स सुनती, उसके सिवाय पूरा दिन घर पर...

''मम्मी! मुझे क्लासेस जॉइन करने है।'' एक विचार मैंने 7 दिन पहले मम्मी के सामने रखा था। ''किसके?'' मेरे सामने चश्मे में से देखते हुए मम्मी ने पूछा था।

''मुझे घर बैठे-बैठे बोर मारता है। कोई क्लास हो तो अच्छा होगा..'', मेरी हकीकत छिपाते हुए मैंने कहा था।

''तुम्हें कोई ध्यान में है?''

''हां, यहां से थोड़ा ही दूर है....'' मैंने इन्टरनेट पर देखा था...

''तो जॉइन कर लें।''

''थैंक्यू मम्मी...'' और फिर मैं क्लासेस करने के बदले OLA पकड़कर पहुंच जाती भवन में... 2 घण्टों का क्लास शासनद्रष्टाश्रीजी के पास होता...

मेरे में आये भवनिस्तारक के लेक्चर्स के बाद के बदलाव को देखकर मम्मी-पप्पा को डर बैठ गया था कि 'ये एक दिन हमको छोड़कर निकल जायेगी...''

और इसलिए रविवार के सिवाय मुझे मम्मी-पप्पा कहीं भी जाने नहीं देते थे। उसमें भी शासनद्रष्टाश्रीजी के पास तो खास। जैनम भी मुझे जाते देख नहीं सकता होने से वह मम्मी-पप्पा के सपोर्ट में था। अब हम दोनों ने अकेले मिलना छोड़ दिया था। पहले घटित घटना का पुनरावर्तन होने का डर मेरे मन में बैठ गया था।

जैनम भी अब मुझसे पूछकर ही किस वगैरे करता। मुझे ये सब अच्छा लगता, लेकिन साथ ही साथ एक अलग ही आकर्षण शासनद्रष्टा-श्रीजी और भवनिस्तारक के पास खींच जाता। उसका वर्णन करने में मैं

समर्थ नहीं थी।

तीन दिन पहले ही, पप्पा को मेरे कन्फेशन के लेखन के विषय में पता लगते ही वो रोने लग गये थे। ''प्लीझ। मुझे छोड़कर मत जाना।'' रोते समय उनकी एक ही प्रार्थना थी।

इसलिए उसके बाद मैंने मेरी प्रवृत्तियों के विषय में विशेष सावधानी बरती थी। मैं हरएक वस्तु बहुत विचार-विचार के करती। मैं जाऊँ या न जाऊँ, लेकिन उसके लिए मैं मम्मी-पप्पा को ज्यादा दुःख देना नहीं चाहती थी। एकबार मैंने भवनिस्तारक के पास सुना था कि,

''माता-पिता की सेवा माता-पिता के लिए नहीं, परंतु अपने लिए करनी है।'' हमारे गुरूवर कहते है कि ''माता-पिता के आशीर्वाद स्वस्थ तन-मन के लिए अत्यंत जरूरी है।''

OLA कैब खड़ी रहते ही मैं मेरे प्रसंग मंथन में से बाहर निकली। पैसा देकर कैब में से बाहर निकलकर मैंने मेरे मिनी स्कर्ट के ऊपर पहने हुए कपड़ें ठीकठाक किये। मेरे इस विचित्र नाटक को देखकर वापस मेरे मन में एक ही विचार स्पीन हुआ,

''धम्मे माया, नो माया...''

Chapter - 7

27/06/2010

I.S.T. 10.30

Jain Bhavan, Kurla

एक्सीडेंट अति भयंकर होता है.....।

''पृथ्वी का नक्शा जैसा जीयोग्राफी में बताया जाता है, वैसा नहीं है। आज के वैज्ञानिक मानते है कि पृथ्वी बॉल जैसी गोल है, जबकि फ्लेट अर्थ थ्यौरी, क्रिश्चन धर्म और जैन धर्म भी ऐसा ही मानते है कि पृथ्वी गोल है, लेकिन बॉल जैसी नहीं, परंतु बंगड़ी जैसी...'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरी तरफ देखा।

ये एकदम नयी बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। हमको तो अब तक जीयोग्राफी में ये ही समझाने में आया था कि पृथ्वी बॉल की तरह गोल है।

''हकीकत में तो जिसे हम पृथ्वी कहते है, वो तो सबसे छोटा टापू है। उसके बाद लवण नामक समुद्र है। इसलिए ही हमारे महासागर लवण-खारे है। उसके बाद वापस एक टापू, फिर ओशन, फिर आई...'' शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखें अचानक एक जगह पर अटक गयी। उनके मुंह में रहे शब्द अटक गये।

वे अचानक खड़े हो गये। मेरी आंखों ने उनके दृश्य को ट्रेस किया। मेरे मुख से भयानक चीख निकल गयी। हम दौड़कर भवन के दरवाजे पर पहुंचे। 2-3 व्यक्ति भी आ गये थे।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने दरवाजे पर आकर बेसुध पड़े हुए उनके दूसरे

साध्वीजी को हिलाया-ढंढोला। उनके मुंह से अविरत खून की धारा निकल रही थी। मैंने फटाफट 108 नम्बर डायल किए।

''हेलो...सर... एक इमरजंसी है... एम्बुलेन्स लानी पड़ेगी...'' मैंने एक श्वास में ही बोल दिया।

''क्या केस है?'' सामने से प्रश्न आया।

''सर ! अभी इमरजंसी है...कौन बनेगा करोड़पति नहीं।'' मैंने रिसीवर पर रहे हुए व्यक्ति को धमकाया। ''हां! हम पहुंच रहे है। प्लीझ, एड्रेस भेजो...''

''OK....'' मैंने फोन डिस्कनेक्ट किया। मैंने फटाफट टेक्स्ट मेसेज करके भेज दिया। सामने से दो ही मिनट में मेसेज आया।

''अराइविंग इन 10 मिनिट्स...'' मुझे राहत मिली।

मैं नीचे पड़े साध्वीजी के पास पहुंची। शासनद्रष्टाश्रीजी उनको एकदम मधुर आवाज में कुछ सुना रहे थे। उनके कपड़ें थोड़े ढीले किये गये थे। कपड़ों पर खून के लाल दाग लगे हुए थे। किसी ने खंजर से उन पर हमला किया हो ऐसा लग रहा था।

''क्या हुआ...?'' मैंने दबी आवाज में पूछा। और भी एक स्त्री के शोषण को देखकर मेरी आंखें बरसने लगी। *'क्यों ऐसा सब स्त्रियों के साथ ही होता है।'* मेरे मन में घमासान होने लगा।

साध्वीजी ने कुछ भी नहीं कहा।

''बोलो, बोलो किसने आपकी ये हालत की?'' मैंने वापस दबी आवाज में पूछा।

''एक्सीडेंट, खंजर...'' शब्द सुनाई दिए। मेरा सिर चकराने लगा।

''सभ्य मानवों ने सभी मर्यादायें तोड़ डाली है। अब संतो को भी यहां जीना मुश्किल हो गया है।'' मेरे दिमाग में विचार आते गये और जाते गये। बेसहाय ऐसी मैं कुछ भी नहीं कर सकी।

खून बहुत ज्यादा बह गया था। मैंने बेग में से कपड़ा निकालकर उससे खून को रोकने की कोशिश की, लेकिन...

साध्वीजी बेहोश हो गये । इतने समय से मैं शासनद्रष्टाश्रीजी को

ही देख रही थी। उनके चेहरे पर जैसे कि कुछ भी हुआ ही न हो ऐसी शांति दिखाई दे रही थी।

''युनिक है...'' अंतर बोला।

बाहर एम्बुलेन्स की आवाज सुनायी दी। मुझे भी शांति मिली।

Chapter - 8

27/06/2010

I.S.T. 12.00

Ambulance, Mumbai

इमरजंसी अति भयंकर होती है.....।

80-100 के बीच एम्बुलेंस का स्पीडोमीटर आगे-पीछे हो रहा था... शासनद्रष्टाश्रीजी और मैं एम्बुलेंस में बैठकर भाटीया हॉस्पीटल की तरफ जा रहे थे। शासनद्रष्टाश्रीजी अपनी आंख बंद करके कुछ बोल रहे थे। ये शब्द कोई अलग ग्रह के हो, ऐसा मुझे लग रहा था। लेकिन उसके कारण बेहोश हुए साध्वीजी पर कुछ असर हो रही थी, ऐसा मुझे और बाकी सबको भी लग रहा था। साथ में रही हुई नर्स को भी बहुत आश्चर्य हो रहा था।

दो मिनट पहले ही उसने मेरे नजदीक आकर मेरे कान में कहा था।

''ये सामने बैठी हुई व्यक्ति में एक अलग ही ऊर्जा है। बाकी ऐसी हालत में रहे हुए पेशन्टों को मेरी आंखों के सामने मरते हुए मैंने बहुत बार देखा है। आजकल ऐसे केस बहुत हो रहे है .....स्पेशियली स्त्री के साथ...'' अंतिम शब्दों ने मेरे घाव पर नमक छिड़कने का काम किया था। इसका बदला लेने की शपथ मैंने मेरे मन में उसी समय कर ली थी।

स्पीड में जाती हुई एम्बुलेंस के कारण सब गाड़ियां भी स्पीड में जाती दिखाई दे रही थी।

मेरा मोबाइल बजा। स्क्रीन पर फ्लेश होते नाम को देखा.. मम्मी.....

25 वी बार मम्मी ने मिस्डकॉल किया था। मुझे डर था कि क्लासेस के विषय में मेरा झूठ उनको मालूम हो जायेगा, इसलिए मैं उठा नहीं रही थी...

दो मिनट हुई... शासनद्रष्टाश्रीजी की नम आंखों में मुझे आंसू दिखाई दिए।

''क्यों रो रहे हो?'' मैंने पूछा।

''ओ वो दूसरे... मैं तो कन्फेशन कर रही हूं। वैसे तो साधुओं को गाड़ी में बैठना नहीं है, लेकिन परिस्थितियाँ...'' वे गाड़ी के बाहर देखने लगे।

''शासनद्रष्टाश्रीजी को अपने नियमों की कितनी संभाल है। गुरू हो तो ऐसे होने चाहिए।'' मेरा अंतर पुकार रहा था।

एम्बुलेंस अचानक रूक गयी। मैंने बाहर देखा। जहां मैंने न जाने कितने ही महिने गुजारे थे, वो जगह मुझे फिर से दिखाई दी। मैं फटाफट दरवाजा खोलकर बाहर गई। वहां *ICU* स्ट्रेचर तैयार ही था। नर्स की मदद से डॉक्टर ने बेहोश हुए साध्वीजी को स्ट्रेचर पर लिया और पीछे-पीछे दौड़ने लगे।

मैं भी उनके पीछे दौड़ने लगी।

''हाय अपेक्षा! तुम्हारा और इस हॉस्पीटल का नाता ही अलग है।'' हंसते-हंसते मेन डॉक्टर बोला।

''डॉक्टर साध्वीजी बच तो जायेगी ना?'' दयनीय आंखों से मैंनें डॉक्टर की ओर देखा।

''मैं मेरा श्रेष्ठ प्रयत्न करूंगा... सफलता तो भगवान के हाथ में है।'' एकदम संतोषपूर्ण जवाब डॉक्टर ने दिया। *ICU* आ गया। मैं दरवाजे के बाहर खड़ी रही। लाल लाईट चालू हुई। शासनद्रष्टाश्रीजी भी साइड में खड़ें थे। मैं रोने लगी।

''अपेक्षा!'' रोने की आवाज के बीच में एक मधुर आवाज सुनाई दी।

''अप एण्ड डाउन तो जिन्दगी के भाग है। व्यक्ति की परीक्षा इमरजंसी के समय में ही होती है... इसलिए, मजबूत बन जा...शांत हो जा...''

Chapter - 9

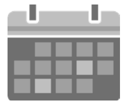

27/06/2010 **I.S.T. 15.00** Bhatia hospital, Mumbai

वसूलात अति भयंकर होती है.....।

50[TH] बार सेम नम्बर से मेरा फोन बजा...मम्मी।

''हेल्लो! हां मम्मी...'' मैंने फोन उठाया।

''तूं कहां है? मैंने तुझे कितनी बार फोन किया... क्यों उठाती नहीं...?''

मैंने पहली बार मम्मी को इतने गुस्से के साथ बोलते सुना। **5** मिनट तक फायरिंग चली।

''क्यूं कुछ बोल नहीं रही है?.... तुम्हें तुम्हारी मम्मी पर प्रेम नहीं है?...'' अंतिम बोले हुए शब्द नमी भरे थे ऐसा मुझे लगा। ''आई एम सॉरी मम्मी!'' मेरी आवाज में भी नमी आयी।

दो मिनट तक मम्मी फोन पर रोती रही।

''तुझे पता है कि मुझ तेरी चिंता होती है। प्लीझ! अब मुझे बता कि तूं कहां है?

मैं तुमसे वादा करती हूं कि मैं तुम्हें कुछ भी नहीं कहूंगी। तूं पार्टी में गयी है। पीछे से ऐसी आवाज सुनाई दे रही है।'' लगातार मम्मी बोलती रही।

''मम्मी! मैं जहां हूं, वहां सेफ हूं।''

''नहीं, लेकिन तूं कहां है?

''भाटिया हॉस्पीटल, मम्मी!''

''वॉट? क्या हुआ तुम्हें?'' मम्मी एकदम घबरा गई हो ऐसा लगा।

''नहीं... मम्मी फिक्र मत कर... मुझे कुछ भी नहीं हुआ...''

''तो किसलिए तूं हॉस्पीटल गई है?'' मम्मी का टोन शार्प हुआ।

''मम्मी! साध्वीजी म.सा. को किसी ने एक्सीडेंट में उड़ा दिया है और उनके शरीर पर गहरा घाव लगा है। बहुत घायल है, इसलिए...''

''क्यों? किस प्रकार तूं वहां पहुंची?''

''पर...'' मैंने फोन कट कर दिया। आगे के प्रश्नों के जवाब देने में मैं सक्षम नहीं थी। मैंने फोन साइलेंट कर दिया। वापस मोबाइल फ्लेश होने लगा। मैंने मम्मी का फोन उठाया नहीं। मैंने फोन को साइड में रख दिया।

मन थक जाने के कारण मुझे नींद आने लगी। शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ मैंने देखा। वे आंखे बंद करके ध्यान कर रहे थे।

मैंने भी आंखे बंद कर ली।

''अपेक्षा! अपेक्षा!'' *15* मिनट के बाद मुझे कोई बुला रहा हो ऐसा मुझे लगा। मैंने आंखें खोली। सामने तेजस खड़ा था।

''हाय, अपेक्षा! मैंने तुम्हें इतनी बार कॉल किया, तुमने उठाया क्यों नहीं? तुम्हें पता है कि तुम्हारे मम्मी-पप्पा कितने टेन्शन में है? तूं यहां कैसे आयी? ये कौन है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ इशारा करते हुए तेजस ने पूछा।

तेजस ने सिर्फ शासनद्रष्टाश्रीजी का चेहरा देखा था और अभी वो उल्टे बैठे हुए थे, इसलिए तेजस उन्हें पहचान नहीं सका।

मैं तेजस का हाथ पकड़कर उसे आगे लेकर गयी। उसे शासनद्रष्टाश्रीजी का कोमल चेहरा दिखाई दिया। उसने सिर हिलाया।

''लेकिन, यहां?'' वहीं बैठते हुए तेजस ने मुझे पूछा।

मैंने उसे पूरी घटना सुनायी।

''मुझे खोजना है कि ये किसने किया है तेजसभाई!'' एकदम भारपूर्वक ''भाई'' शब्द बोलते हुए मैंने उसकी तरफ देखा।

''तुमने मुझे कहा था ना कि मेरा कोई काम हो, तो मैं तुम्हें कहूं...

बस मुझे इसका गुनाहगार एक दिन में हाथ में चाहिए... जा... तेरी बहन को गिफ्ट देने का समय आ गया है।'' मैंने आग बरसती वाणी में अपना विचार रखा।

''अपेक्षा! इस भाई का वचन कभी भी निष्फल नहीं होता... बोल, उसे पकड़ने के बाद क्या करना है?'' मेरी तरफ बेधक दृष्टिसे देखते हुए तेजस ने पूछा।

''मार दिया जाये या छोड़ दिया जाये?'' तेजस ने अपने गले पर हाथ फिराया। मैं कुछ बोलूं, उससे पहले शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखे खुली। मेरी वाणी बंद हो गयी।

Chapter -10

27/06/2010 I.S.T. 15.30 Bhatia hospital, Mumbai

एक्शन-रिएक्शन अति भयंकर होता है.....।

''साध्वीजी! कब तक हम चुपचाप बैठेंगे? **मार्टिन लूथर किंग** ने भी कहा है ''एक जगह अत्याचार वो सिर्फ एक जगह के लिए ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा है।'' आप तो कहते हो कि कोई भी रिएक्शन देने की जरूरत नहीं। लेकिन न्यूटन का उदाहरण तो स्पष्ट कहता है कि,

'EVERY ACTION HAS A REACTION..'

प्लीझ, साध्वीजी भगवंत! मुझे मंजूरी दो... उस हरामी लूच्चे की बेंड बजा दूं।'' मैंने एकधार मेरा आक्रोश व्यक्त किया। शासनद्रष्टाश्रीजी को अच्छा उत्तर दिया हो ऐसा लगा।

हुआ ऐसा था कि हमारी बात सुनकर शासनद्रष्टाश्रीजी ध्यान में से बाहर आये थे। उन्होनें मेरे नजदीक आकर कहा था।

''अपेक्षा! साध्वीजी के लिए तुम्हारी हमदर्दी बहुत अच्छी है। लेकिन उसके लिए ऐसे रिएक्शन देने की जरूरत नहीं है। बी कूल...''

मेरा बॉइलर फटा था और मैं लगातार बोलती गयी थी...

शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरे सामने प्रेमभरी निगाहों से देखा। मुझे एकदम अजीब लगा।

''अपेक्षा! अब टाईम बदल गया है। पहले ऐसा होता कि राजा अपने वैर की वसूलात करते, लेकिन अब तुम लोग मॉर्डन हो गये हो, वि-चारक हो, हमें भगवान ने किसी को भी सजा देने का अधिकार नहीं दिया है... भगवान के कार्य में जब मनुष्य की दखलअन्दाजी होती है ना, तभी ही होनारत का सर्जन होता है। जो अपने आप को भगवान मानते है, उसे भगवान कभी भी छोड़ते नहीं है। जो कार्य जिसके लिए होता है, वो ही उस कार्य को करे तो ही फायदा है। समझी?'' मेरे सामने उसी शांत मुद्रा में ही शासनद्रष्टाश्रीजी ने देखा।

''लेकिन, ऐसा करने जायेंगें, तो ऐसे लोग निडर हो जायेगें, उनको सपोर्ट मिलेगा... आज एक साध्वीजी... कल, न जाने कितने...?'' तेजस बोला।

''तुम्हारी बात सच्ची है, तुम विश्वास रखो कि **''भगवान के घर देर है, पर अंधेर नहीं।''** और इस बात का अनुभव तुमने अपनी लाइफ में ही किया नहीं क्या?'' शासनद्रष्टाश्रीजी के तेज से तेजस को दूसरी तरफ देखना पड़ा।

हमारे मन में तूफान चलता रहा फिर भी हम शांत ही रहें।

फिर शासनद्रष्टाश्रीजी ने हमें, जिन्दगी में कभी नहीं भूल सके ऐसा पाठ दिया।

''इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति, किसी का कुछ भी बिगाड़ सकता नहीं है। हरएक एक्शन का रिएक्शन तो होता ही है, लेकिन ये एक्शन और रिएक्शन समान वस्तुओं में ही होता है।

जो बॉल ऊपर जाती है, वहीं बॉल नीचे आती है। इसी प्रकार लगी तो साध्वीजी को है, उसका रिएक्शन साध्वीजी के सिवाय आप दूसरों को दो, तो लॉ कैसे राइट होगा...

एक बात समझ लो, लॉ ऑफ न्यूटन कहता है कि...

'EVERY ACTION HAS A REACTION...'

लेकिन जैन शासन कहता है कि,

'EVERY ACTION HAS A REACTION, BUT IN THE SAME PERSON...'

इसलिए ही यदि हम उस मर्डरर-रेपिस्ट को सजा देने जायेंगें, तो हमारी सजा देने की एक्शन का रिएक्शन भी हमें ही भुगतना पड़ेगा... कुदरत का गणित अटल है... उसे कोई हिला नहीं सकता।''

ज्यादा बोलने के कारण जैसे कि थक गये हो, उस प्रकार उन्होनें आंखे बंद कर ली। उनके तेज से हम सपूर्णतया अंजित हो गया। तेजस जैसा एक समय का गुण्डा भी नम गया।

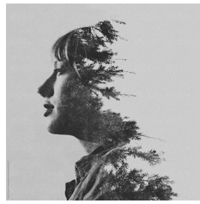

Chapter -11

28/06/2010 I.S.T. 5.30 Bhatia Hospital, Mumbai

कन्डीशन अति भयंकर होती है.....।

''ये मेरा दिल प्यार का...'' मैंने साइलेंट बटन दबाया और फोन में देखा। सुबह के 5.30 बजे थे.. अभी तेजस का फोन...

मुझे अजीब लगा। कभी भी तेजस मुझे इतनी सुबह फोन करता नहीं था।

''हेल्लो...'' मैनें फोन उठाया और धीरी आवाज में कहा। मैंने देखा कि शासनद्रष्टाश्रीजी खड़ें-खड़ें कुछ प्रार्थना कर रहे थे।

सामने से तेजस की आश्चर्य से भरपूर आवाज मुझे सुनायी दी। वो आज सुबह घटित घटना मुझे सुना रहा था। घटना सुनकर मुझे भी आश्चर्य हुआ।

''हां! मैं आ रही हूं...'' कहकर मैंने फोन कट किया।

तेजस ने सुनायी हुई घटना मेरे दिमाग में उतर नहीं रही थी। ''अशक्य।''

''म.सा.!'' मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी के पास जाकर धीरे से कहा। उन्होंने अपनी बंद आंखे खोली। ''हां! अपेक्षा...'' प्रेमपूर्वक शासनद्रष्टाश्री-जी ने मेरे सामने देखा।

''मैं सी-लिंक जा रही हूं... 7.30 बजे तक वापस आ जाऊंगी। आपको मेरा कोई काम हो, तो मैंने नम्बर लिखा है। आप वहां से देखकर

किसी के भी पास से मुझे कॉल करवा देना।''

"OK..." शासनद्रष्टाश्रीजी ने सिर समर्थन में हिलाया।

मैंने मेरा पर्स लिया। और पॅड शासनद्रष्टाश्रीजी के सामान के पास रखा।

मैं हॉस्पीटल के गेट से बाहर निकली। अभी भी आकाश में अंधेरा छाया हुआ था। चन्द्र भी अस्त होता, पीला दिखाई दे रहा था।

ये पीले चन्द्र जैसी पीली टेक्सी को मैंने रोका।

''वरली सी-लिंक भैया!''

टेक्सीवाले ने माथा हिलाया। टेक्सी के मीटर में 1.00 दिखाई दिया। टेक्सीवाले ने एक्सीलेटर पर पैर रखा। रोड़ खाली होने के कारण 60-80 की स्पीड में टेक्सी चल रही थी। मैंने बहुत समय के बाद टेक्सी की सवारी की थी।

लगभग मैं । A.C. वाली OLA में ही जाती। इतनी सुबह OLA वाले को परेशान करने की मेरी इच्छा कम थी। आधे घंटे में हम सी-लिंक के ब्रिज के पास पहुंचे।

''भैया! थोड़ा धीरे।'' टेक्सीवाले ने गाड़ी धीरे की। मैं आजु-बाजु में लिखे हुए दुकानों के नाम पढ़ती गयी। मुझे चाहिए थी वो दुकान का नाम दिखाई दे दिया।

''जम्बो वड़ापाव।'' वड़ापाव का एक बड़ा फोटो दुकान के बाहर लटकाने में आया था। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे। मुंह में पानी छूटने लगा। कितने ही वर्षों से जैसे बाहर का खाया न हो ऐसा लगने लगा।

मैं टेक्सीवाले को अच्छी स्पीड के लिए 50 रूपयों का बोनस देकर टेक्सी से बाहर उतरी।

''हेल्लो, अपेक्षा! माफ करना।'' 5 मिनट से वड़ापाव वालों की दुकान के नीचे खड़ी मुझे देखकर हंसते-हंसते तेजस बोला।

''तेरा मोबाइल नहीं उठाने के लिए सॉरी। मेरे पुराने मित्र रास्ते में मिलने से थोड़ा टाईम हो गया...'' मैंने मुंह मटकाया।

''अब कहां जाना है?'' मैंने गुस्सेवाली आवाज में पूछा।

तेजस ने मेरे सामने देखा। फिर हंसकर उसने कहा।

''तूं बहुत जल्दी नाराज हो जाती है... और तुझे हक भी है। क्योंकि तूं मेरी बहन है। चल, मुझे माफ कर।'' उसने अपने कान पकड़ें।

मैंने उसे हाथ पर घूसा मारा। मैं चलने लगी।

''मेडम.. ये साइड...'' मुझे तेजस ने रास्ता बताते हुए कहा।

सामने गली के ऊपर रहा हुआ बोर्ड मैंने पढ़ा।

''6, पोर्ट एरिया।'' उसके ऊपर लिखा हुआ था।

हम संकरी गली में चलते गये। तेजस मुझे उसके बिजनेस में हुई उथल-पुथल के विषय में बता रहा था। उसे उसके फ्रेंड के कारण भारी नुकसान सहन करना पड़ा था।

''बिचारे उसके फ्रेंड का क्या हुआ होगा?'' मैंने विचार किया।

''और मैंने मेरे फ्रेंड को माफ कर दिया। मैंने उसे नया बिजनेस स्टार्ट करने के लिए 15 लाख रूपये दिये।'' मैं तेजस के सामने देखती रही।

''मेरे लिए भी ये आश्चर्य है, लेकिन तुम्हें...'' फिर वो आगे बोल ही न सका। उसका गला भर आया। समुद्र की नमकीनी सुगंध आने लगी, सामने समुद्र दिखाई दे रहा था।

''अपेक्षा! ये पोर्ट ऑफिशियल्स के क्वार्टर्स है। वहां पुलिस के साथ ऑफिसर खड़ा है, जो हमें सी-लिंक के ब्रिज के नीचे ले जायेगा, चल...''

हम गेट के अंदर गये। वहां एक पुलिसवाला बैठा था। तेजस को देखते ही उसने खड़े होकर सलाम किया। सी-लिंक की तरह तेजस की लिंक बहुत बड़ी थी।

हम समुद्र के किनारे पर गये। विशाल समुद्र बायीं तरफ दिखाई दे रहा था। सामने मुम्बई का परा दिखाई दे रहा था। हमारे लिए एक पुलिस और एक ऑफिसर के साथ एक स्पीड बोट, जो कि पेट्रोलिंग के लिए उपयोग की जाती थी, वह खड़ी थी।

''हाय मास्टर तेजस!'' सामने रहे हुए ऑफिसर ने कहा।

''हाय ये अपेक्षा है।'' मेरे सामने देखते हुए तेजस बोला।

''गुड मॉर्निंग...'' ऑफिसर ने मुझे देखकर स्माईल दी।

मैंने स्माईल करके गुड मॉर्निंग रिटर्न किया। ''तो चलिए...''

अपनी बोट की ओर ऑफिसर ने इशारा किया। तेजस बोट में कुदकर पहुंच गया। बोट हिल रही थी, मुझे डर लग रहा था।

“कम-ऑन अपेक्षा! तुम अब बड़ी हो गयी हो।” तेजस हंसा। मैंने भी तेजस की तरह बोट में जम्प लगाया। मेरा पैर स्लीप हो गया, लेकिन तेजस ने मुझे पकड़ लिया। “थैंक्यू...” मेरे मुंह से निकला।

“वेलकम...मेंशन नॉट...”

बोट स्टार्ट हुई। 50 नोटीकल माईल्स की स्पीड बोट तेजी से अंतर काटती गयी। हम सी-लिंक के नीचे पहुंचे।

“कहां है?” मैंने तेजस से पूछा।

ऑफिसर ने बड़ी फोकस चालू की। उस फोकस की लाईट सी-लिंक के नीचे के पीलर पर पड़ी। मेरी आंखे वहां का दृश्य देखकर फटी की फटी रह गयी।

वहां एक व्यक्ति पीलर की रेलिंग पर उल्टा लटका हुआ था।

Chapter -12

28/06/2010 I.S.T. 6.30 Worli Sea-link, Mumbai

मिरेकल अति भयंकर होता है.....।

तेजस का फोन बजा। तेजस ने स्पीकर का बटन दबाया।

“हेलो...हेलो... मुझे बचाओ... मुझे बचाओ..” किसी के भी हृदय को पिघला दे, ऐसी करूण आवाज आयी। मैंने मोबाइल के पास मेरे कान लाये।

“क्या हुआ तुम्हें! कूल डाउन...” तेजस ने ऊपर लटके हुए व्यक्ति की तरफ देखकर कहा।

“नहीं...नहीं... मैं दुबारा नहीं करूंगा। आह...आह...”

हम सबने ऊपर लटके हुए व्यक्ति की ओर देखा। वह पागल की तरह रेलिंग पर हिल रहा था। वह अभी ही गिरकर पानी में डूब जायेगा, ऐसा स्पष्ट लग रहा था।

“क्या हुआ? कह तो सही।” तेजस ने गुस्से में कहा।

“कोई मुझे मार रहा है। उस व्यक्ति ने ही मुझे रेलिंग पर उल्टा लटकाया है। आप उस व्यक्ति से कहो कि मुझे छोड़ दे।” शब्द बोलते ही रेलिंग में व्यक्ति और नीचे सरक गया। अब सिर्फ उसके 2 पैर ही रेलिंग पर थे। वह पागलों की तरह चीख रहा था।

हम हमारी बोट, वो जहां लटक रहा था, वहां लेकर आये, शायद वह गिरे तो हम उसे बचा सके।

"लेकिन हमें तो वहां कोई भी दिखाई नहीं दे रहा है... तूं पागल तो नहीं हो गया ना..?" ऑफिसर ने गुस्से से भडास निकालते हुए फोन में कहा।

"मेरे ऊपर विश्वास करो। ये व्यक्ति ही कल रात को मुझे उठाकर यहां लाया था। वो कह रहा था कि किस प्रकार तुमने एक पवित्र साध्वीजी को हाथ लगाया? क्या समझता है खुद को...? बड़ा डॉन है...?

उसने मुझे गालियां दी। मैं उसकी पक्कड़ से छूटने के लिए मचल रहा था, लेकिन वह मुझे छोड़ने को तैयार ही नहीं था। वह बारबार और अभी भी ये ही कह रहा है कि "जा... तूं उस साध्वीजी से माफी मांगकर आ... नहीं तो तेरा कचूंबर बनाकर तेरी अस्थियां समुद्र में बहा दूंगा...." एक बड़ी चीख ऊपर से सुनाई दी।

हम सबने ऊपर देखा। वह रेलिंग की ही एक साईड से दूसरी साईड पर उल्टे पैरों से जा रहा था। मेरी आंखों पर मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था।

मुझे तेजस ने जो बात बतायी थी वह सच्ची थी। ये वो ही व्यक्ति था कि जिसने साध्वीजी को खंजर मारा था। *'बहुत अच्छा किया तुमने'*, जो कोई अदृश्य व्यक्ति उस मव्वाली को परेशान कर रहा था, उसकी मैंने मन से प्रशंसा की।

"मैं ऊपर आ रहा हूं। तूं ज्यादा हिलना मत..." तेजस ने फोन में कहा।

"नहीं...नहीं..." लटके हुए व्यक्ति ने बड़ी चीख लगायी। "ये मुझे नीचे फेंक देगा.... ये अभी कह रहा है कि "खेर नहीं किसी माई के लाल की। यदि कोई ऊपर आयेगा, तो मैं तेरी..." लटके हुए व्यक्ति के मुंह से गंदी गाली निकली। तेजस उस सायको को देखता ही रहा।

पुलिस ने हाथ में मोबाइल लिया।

"अे पागल! तेरा नाम क्या है?"

"मेरा नाम...मेरा... आह। बोलता हूं... बोलता हूं...फैजल।"

"तुमने क्या-क्या किया है अब तक? कितनी बार तूं पुलिस कस्टडी में आया है? तेरे नाम पर कोई केस है?" ऊपर से कुछ भी आवाज

आयी नहीं। यदि वो जवाब देता, तो उसे जेल में चक्की पीसनी पड़ेगी, ये बात पक्की थी। दो मिनट के बाद दुःख-दर्द से भरी हुई एकदम शार्प आवाज आयी।

"मैंने अब तक 21 रेप, 25 मर्डर, 50 चोरियां... बहुत-बहुत किया है। लेकिन पुलिस में मेरा रिकॉर्ड साफ है, क्योंकि मेरे भाई के पे-रोल पर पूरी मुम्बई की पुलिस है।"

"अे कौन है तेरा भाई?" तेजस ने पूछा।

"अमझद..."

नाम सुनकर तेजस की आंखे फट गयी। एक काली छाया उसके चेहरे पर छा गयी हो, ऐसा दिखाई दिया।

'कौन है ये अमझद, तेजस?" मैंने तेजस को झकझोरां।

"अमझद... बॉम्बे का, दाऊद का खास, मुख्य आदमी... वो बहुत खतरनाक है। उसके ऊपर एक प्लेट बिरीयानी में रहे हुए चावल के जितने केस है। उसके साथ पंगा लेना यानी मौत के साथ पंगा लेना... ये उसका भाई है, ये मुझे पता नही था..." तेजस ने ऊपर देखा।

दो मिनट तक हम सब उसने दी हुई जानकारी को पचाते रहे।

"तो..." पुलिसवाले ने बचकाते हुए कहा, "तुम तुम्हारे सारे गुनाह कबूल करते हो?"

"हां..." ऊपर से आवाज सुनाई दी, मोबाइल कट गया। हमारी बोट के आगे एप्पल का नया मोबाइल पानी में गिर गया। ऑफिसर उसे लेने गया, लेकिन वो समुद्र की गहराई में खो गया।

अब हमारा उसके साथ बात करने का एक का एक कनेक्शन भी टूट गया। हम ऊपर देखते रहे। वो झूल रहा हो, उस प्रकार रेलिंग पर आगे-पीछे हो रहा था। हमारा बोट पॉयलेट उसे ही देख रहा था।

10 मिनट बीत गये। ऊपर देख-देखकर मेरी गर्दन दुःखने लगी। धड़ाम से पानी में कुछ जोर से गिरा। सब पानी उछलकर हमारी बोट में आया।

"बचाओ...बचाओ..." की आवाजें बोट से 50 मीटर की दूरी से आने लगी। ऑफिसर फ्लोट लेकर स्वीमिंग सूट में नीचे पानी में कूदा।

मैंने मेरी आंखें बंद कर दी। मेरा सिर भयंकर तरीके से फूटनेवाला था।

मैं भगवान से फैजल का बचाने की प्रार्थना करने लगी। एक हत्यारे, रेपिस्ट व्यक्ति के लिए भी मुझे बहुत दया आयी। मेरी आंखों में से गर्म-गर्म आंसू बहने लगे। तेजस और पुलिस, पॉयलोट को ऑफिसर की तरफ बोट को ले जाने के लिए सूचनाएँ दे रहे थे।

''बूड...बूड...बूड..'' आवाज सुनाई दी। जैसे निश्चेष्ट हो गया हो, इस प्रकार फैजल का शरीर नीचे जाने लगा। ऑफिसर ने अपनी पूरी ताकत के साथ उसे बचाने का प्रयास किया।

ऑफिसर के हाथ में फैजल का टी-शर्ट आया। धीरे-धीरे ऑफिसर ने उसे बोट की तरफ खिंचा। उसका शरीर बहुत भारी हो गया हो ऐसा लग रहा था। बोट के रेलिंग पर ऑफिसर ने हाथ रखा। तेजस और पुलिसवाले ने, ऑफिसर और फैजल के शरीर को बोट में ले लिया।

फैजल का शरीर एकदम जकड़ गया था।

पुलिस ने फैजल का टी-शर्ट निकाला। उसकी छाती पर बड़ा सांप का टेटू था। उसके निप्पल पर सांप की दो आंखे थी।

मैंने आंखे बंद कर दी...

Chapter -13

28/06/2010 I.S.T. 10.30 Bhatia Hospital, Mumbai

PHOBIO अति भयंकर होता है.....।

तेजस आज का ''टाईम्स ऑफ इंडिया'' पढ़ रहा था। पूरा पेपर रेपादि के केसों से भरा हुआ था। लेकिन इन सब न्यूझ को ढ़क दे, ऐसी न्यूझ सुबह घटित घटना की थी। बोट में से निकलने के बाद मैंने एक शब्द तेजस या किसी और के साथ बोला नहीं था।

फैजल के भाई को फैजल की परिस्थिति बता दी गई थी। अमझद ने फटाफट फोन करके दुनियां के और इंडिया के टॉपमोस्ट डॉक्टरों को काम पर लगा दिया था। वह बोम्बे हॉस्पीटल में भर्ती था। तेजस के कहे अनुसार उसके बचने की शक्यता बहुत कम थी।

उसके मन पर पूरे प्रसंग की बहुत गहरी भयानक असर हुई थी और शायद बच भी जाए तो भी वह बेड में से कभी खड़ा नहीं हो सकेगा।

''अच्छा हुआ। थोड़े रेप तो कम होगें।'' मुझे विचार आया। मैं शासनद्रष्टाश्रीजी की राह देखती बाहर भाटिया हॉस्पीटल में चेयर पर बैठ गयी।

डॉक्टर आये हुए थे, इसलिए शासनद्रष्टाश्रीजी I.C.U में उनके साथ कोई बात में मग्न दिखाई दे रहे थे। डॉक्टर उनसे इम्प्रेस हुआ हो ऐसा स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

डॉक्टर और शासनद्रष्टाश्रीजी दोनों I.C.U में से बाहर आये।

"थोड़े दिनों में सब अच्छा हो जायेगा..." कहकर डॉक्टर मेरे सामने देखकर चला गया।

"तूं आ गयी अपेक्षा!" अपने सहज हंसते चेहरे से शासनद्रष्ट-श्रीजी ने मेरे सामने देखा। मेरे चेहरे की चिंता की रेखाएँ भी विलीन हो गयी।

"शासनद्रष्टाश्रीजी! ये किस प्रकार शक्य है?" न्यूझ पेपर साईड में रखकर मेरे और उसके दिमाग में खेलती विचित्र घटनाओं का समाधान तेजस ने पूछा।

"क्या कैसे शक्य है?" हंसते-हंसते ही शासनद्रष्टाश्रीजी ने हमारे सामने देखा।

फिर तेजस और मैंने पूरी घटना सिलसिलाबद्ध सुनायी। शासनद्रष्टाश्रीजी एकदम नकाबी चेहरे से सब सुनते गये। जहां उनको कुछ पूछने जैसे लगा, वहां उन्होनें पूछा।

"और अभी वह मानसिक शॉक में है और बॉम्बे हॉस्पीटल में भर्ती है।" तेजस ने अंतिम लाईन पूरी की। दो मिनट तक शासनद्रष्टाश्रीजी नीचे ही देखते रहे।

"शासनद्रष्टाश्रीजी! क्या सच में ही ऐसा कुछ एक्स्ट्रा ऑर्डीनरी तत्त्व है कि जो फैजल के पीछे पड़ा हो? ऐसा कुछ आपको लगता है?" तेजस ने मौन तोड़ते हुए कहा।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने और भी स्मित किया।

"तेजस! अपेक्षा!" हम दोनों की तरफ देखकर शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहा "फैजल के साथ जो हुआ वो बहुत बुरा हुआ। भगवान ने सबके साथ मैत्री करने को कहा है फिर वो दोस्त हो या दुश्मन!

जब साध्वीजी जैन भवन में आकर गिरे, तब मैं भगवान से ये ही प्रार्थना कर रही थी कि ये खराब वस्तु करनेवाला छूट जाये। उसे कुछ भी भयानक न हो, लेकिन तुमने जिस प्रकार से मुझे स्टोरी सुनायी, उसके अनुसार तो भगवान ने मेरी प्रार्थना सुनी नहीं।" शासनद्रष्टाश्रीजी के चेहरे पर उदासी स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

तेजस और मैंने एक-दूसरे के सामने देखा। "व्यक्ति ही अलग

है।"

"दूसरा"... धीरे-धीरे शासनद्रष्टाश्रीजी की आवाज तेज हुई, "ऐसा कहा जाता है कि "WORLD IS THE REFLECTION OF YOUR THOUGHTS" दुनिया आपके विचारों का प्रतिबिम्ब है। इसलिए ही जब फैजल ने साध्वीजी को मारने की कोशिश की, तब उसके अन्दर एक कोन्सीयस बाईट पैदा हुआ कि "मैंने कुछ गलत किया है।" बस फिर उसने अपने मित्रों से जैन साध्वीजी के बारे में पूछा होगा।

उसमें किसी ने कहां होगा कि "जैनों के धर्मगुरू बहुत पॉवरफूल होते है। उनकी सेवा में बहुत सारे देव और असुर होते है। जल्दी कुछ कर..."

और ये ही बात फैजल के दिमाग के अंदर फीट हो गयी होगी। सब जगह उसे देवों, असुरों-देवों -असुरों का प्रतिभास होने लगा होगा। उसे सपने में भी ये आये होंगें। फिर तो जब कोई भी विचार व्यक्ति के दिमाग में आता है और यदि वो उसे वश न करे, दबाये नहीं, तो वो विचार व्यक्ति को ही खा जाता है।

हमारे शास्त्रों में भी एक अच्छी कहानी इस विषय से रिलेटेड आती है। "शासनद्रष्टाश्रीजी दो मिनट के लिए रूके। मैं और तेजस अपनी जगह पर आराम से बैठे।

हमें पता था कि शासनद्रष्टाश्रीजी अब जो कहनेवाले है, वो हमें जिन्दगी में बहुत कम बार ही सुनने को मिलनेवाला था और ये एक मूल्यवान गिफ्ट थी।

"अपेक्षा! एक फिलोसोफर, दूसरे बड़े फिलोसोफर के पास जाता है। छोटे फिलोसोफर ने मेडिटेशन और ध्यान पर बहुत रिसर्च किया हुआ है, लेकिन उसे और भी गहरा ज्ञान पाने की इच्छा होती है।

वो बड़े फिलोसोफर को जाकर पूछता है कि "सर! मैं बहुत दूर से आपको मिलने के लिए आया हूं। मुझे आपको प्रश्न पूछने है।"

"पूछ।"

"सर! मुझे ध्यान, मेडिटेशन क्या है, ये बताईये ना?"

बड़ा फिलोसोफर हंसते है, "कल आना" दो ही शब्द बोलते है...

छोटे फिलोसोफर को ये बात अच्छी नहीं लगती और उसे विचार आता है कि ''मैं गलत जगह पर तो नहीं पहुंच गया ना?''

वो बाहर जाकर पूरे आश्रम को देखकर आता है और वहां रहनेवालें लोगों से भी बड़े फिलोसोफर के बारे में पूछता है। सब वो जहां से बाहर निकला वो ही जगह बताते है। उसे विश्वास हो जाता है कि 'बिग-बी' यही है।

सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर वह बिग बी के पास पहुंच जाता है।

बिग बी आंखें बंद करके पूर्व दिशा की तरफ वज्रासन में बैठे हुए है।

''आ जा....'' बंद आंखों से उदात्त घोष का उच्चारण बिग बी ने किया।

फिलोसोफर को अब बिग बी पर कुछ विश्वास बैठा।

छोटा फिलोसोफर कुछ बोलने जा रहा था, उसके पहले ही बिग बी ने कहा ''जा बाहर एक भैंस बांधी हुई है। उसकी ड्रॉइंग करके ला।'' छोटे फिलोसोफर को कुछ समझ में आया नहीं, फिर भी बिग बी के प्रभाव में रहा हुआ छोटा फिलोसोफर बाहर जाकर भैंस की ड्रॉइंग करने लगा।

दो घण्टों में ड्रॉइंग पूरा करके वह बिग बी को बताने आया।

बिग बी ने ड्रॉइंग देखा।

''हम्म... अभी बहुत कमियां है... फिर से बनाकर ला....''

छोटा फिलोसोफर फिर से ड्रॉइंग करने लगा। इस बार उसने बराबर एक-एक कर्व्ज ड्रॉ किये। 3 घण्टों के बाद ड्रॉइंग पूरा करके वह बिग बी के पास लेकर आया।

''वापस ध्यान से ड्रॉ कर... इसके कान बराबर नहीं बने...।''

वापस 9 घण्टे में उसने ड्रॉइंग पूरा किया और बिग बी के पास लेकर आया।

''इस बार भी बराबर आकार नहीं बना... वापस...''

सतत इस प्रकार 21 दिन तक चला।

''सर! सर! जरा बाहर आईयें ना... बाहर से आया हुआ

फिलोसोफर पागलों की तरह हरकतें कर रहा है....'' बिग बी के शिष्यों ने शिकायत की।

खड़े होकर बिग बी बाहर देखने गये। बाहर का दृश्य देखकर वो हंसे।

छोटा फिलोसोफर भैंस ही बन गया था। वह भी चार पैरों पर खड़ा था।

वो भैंस के पास गये तो भैंस उनको चाटने लगी। उस भैंस के पास में खड़ा छोटा फिलोसोफर भी उनको चाटने लगा।

फिर बिग बी ने छोटे फिलोसोफर को भैंस के ट्रान्स में से बाहर निकाला।

ट्रान्स में से बाहर आने के बाद हंसते-हंसते बिग-बी ने छोटे फिलोसोफर से कहा, ''ध्यान क्या होता है समझे?''

''अपेक्षा!'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरे सामने देखा।

''ये ही केस फैजल के साथ हुआ है। उसे फोबियो हो गया है। जब तक उसे ट्रान्स से बाहर निकालने वाला कोई नहीं मिलेगा, तब तक उसकी रिकवरी शक्य नहीं।

''भूलभूलैया'' पिक्चर की मोन्जोलिका तो याद है ना?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरे सामने प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

''हां।''

''तेजस! अभी तुम्हें मेरा फोर्म्युला समझ में आ गया ना...?

"EVERY ACTION HAS A REACTION..."

Chapter -1

07/07/2010 I.S.T. 10.00 Bombay Hospital, Mumbai

ACTION अति भयंकर होती है.....।

बोम्बे हॉस्पीटल !

बोम्बे की सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हॉस्पीटल!

5 मिनट से हम किसी की राह देख रहे थे। तेजस सतत किसी का मोबाइल ट्राय कर रहा था। ''द मोबाइल यू आर कॉलिंग इझ करन्टली बीझी...'' की आवाज सुनाई दे रही थी। मैंने, तेजस किसे ट्राय कर रहा था वो देखा।

''अमझद!''

ये नाम देखते ही मेरे दिमाग में घटनाओं की एक श्रृंखला चालू हो गयी।

2 दिन पहले...

''हेलो! अमझद भाई...''

''हां! कौन बोल रहा है...? फालतु बात की तो तेरी!'' खौफ तेजस के चेहरे पर शब्द सुनकर आया।

''मै तेजस....'' सामने से खामोशी सुनाई दी।

''क्या है... तू ही था ना उस दिन, जब फैजल ब्रिज से कूदा...'' खौफ भर दे ऐसी डॉन की आवाज सुनाई दी।

''हाँ...'' हिम्मत के साथ तेजस बोला।

''तो अब...! क्यूं फोन किया है, मरने के लिए?''

''नहीं भाई! मरते हुए को बचाने के लिए...''

पांच मिनट तक फोन पर अमझदभाई के निःश्वास ही सुनाई दी।

''कैसे?''

एक शाब्दिक प्रश्न आया।

तेजस ध्यान से धीरे-धीरे शासनद्रष्टाश्रीजी ने जो उसे समझाया था, वो बोलता गया। अमझदभाई ध्यान से सुनते गये। इतना टाइम अमझदभाई किसी को भी दे ये शक्य नहीं था।

''क्या लग रहा है भाई?'' तेजस ने आखिरी दांव रखा।

''सोचकर बोलूंगा। मैं सच्चा मुसलमान हूं। इसलिए मैं सोचकर बोलूंगा...अल्लाह की मेहरबानी होगी, तो सब अच्छा ही होगा...'' फोन कट हो गया।

मैं तेजस के सामने देख रही थी। उसके मुंह पर टेन्शन था।

''हम सेफ तो है ना?'' मैंने तेजस से पूछा।

''पता नहीं।'' वहां से उठकर वो चला गया।

1 दिन पहले...

तेजस के मोबाइल पर मेसेज की रिंगटोन बजी।

तेजस ने मेसेज देखा। लगभग तेजस मेसेज देखता नहीं था, क्योंकि दिन में हजारों मेसेज उसके मोबाइल पर आते, लेकिन अमझदभाई के साथ बात होने के बाद वह अपरिचित नम्बर से आया हुआ मेसेज भी पढ़ रहा था। उसे अमझदभाई की स्टाईल पता थी।

तेजस मेरे पास आया और मेसेज बताया।

''कल ठीक 10 बजे बोम्बे हॉस्पीटल के गेट के पास...और वो फरिश्ते को भी लेकर आना... वादा करता हूं कि किसी को कुछ भी नहीं होगा... मेरा आदमी अब्दुल तुमको रिसीव करेगा... अमझद....''

मैं तुरन्त ही शासनद्रष्टाश्रीजी के पास गयी । मैंने उनको मेसेज पढ़कर सुनाया। वे कोई भी प्रकार के इलेक्ट्रीक साधन वापरते भी नहीं थे और देखते भी नहीं थे।

''तेजस कौन है?'' मुझे वर्तमान में लेकर आनेवाली कोई आवाज सुनाई दी। सामने 6 फुट का मसल्स से भरपूर एक व्यक्ति खड़ा था।

''हां! मैं हूं... अब्दुल तुम हो क्या?'' अब्दुल ने सिर हिलाया।

''हां! वो फरिश्ते कहां है?'' अब्दुल ने सबको देखकर पूछा।

''मैं ये रही...'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने अपनी मधुर आवाज में कहा। अब्दुल ने अपनी आंखे बंद करके शासनद्रष्टाश्रीजी के प्रति आदर व्यक्त किया।

''चलो...14TH FLOOR पर जाना है...''

हम सब चलने लगे। हम बोम्बे हॉस्पीटल के रिसेप्शन में घुसे, वहां डॉन के बहुत लोग खड़े थे। सबकी नजर हमारे ऊपर गयी। उसमें भी शासनद्रष्टाश्रीजी को देखकर तो सबकी आंखों में कोई नयी वस्तु देखी हो ऐसी चमक आयी।

शासनद्रष्टाश्रीजी अपने चलने के रास्ते को देखते-देखते आगे बढ़े। अब्दुल ने लिफ्ट खोली।

''भाई! फरिश्ते किसी भी इलेक्ट्रीक चीजों का इस्तेमाल नहीं करते....'' तेजस ने कहा। अब्दुल के चेहरे पर आश्चर्य दिखाई दिया।

''तुम चले जाओ... मैं आ जाऊंगी।'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने अब्दुल से कहा।

''नहीं फरिश्ते! मैं भी साथ ही आ रहा हूं... खुदा ने मुझे अच्छी बॉडी दी है।'' अब्दुल ने लिफ्ट बंद की और फटाफट चढ़ने लगा।

बहुत टाइम के बाद इस प्रकार चढ़ने से मुझे बहुत थकान लगी। मैं 7TH FLOOR पर 5 मिनट के लिए बैठ गयी। अब्दुल की भी श्वास चढ़ रही थी। शासनद्रष्टाश्रीजी एकदम नोर्मल ही थे।

''फरिश्ते! आपको कुछ होता नहीं क्या?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने हल्की स्माईल दी।

वापस हम चढ़ने लगे। 14TH FLOOR आया। अब्दुल शायद जिन्दगी में पहली बार इस प्रकार चढ़ा होगा, इसलिए उसके मुंह में से शब्द निकले, ''मक्का याद आ गया...''

14TH FLOOR पर सब रूम खाली थे। पूरे एरिया को पुलिस की पट्टीओं से बंद करने में आया था। डॉन को पुलिस प्रोटेक्शन भी था।

अब्दुल ने अमझद के P.A. को फोन लगाया। कुछ बात हुई और अब्दुल ने हमें अंदर आने का इशारा किया। सामने से अमझद का कोई व्यक्ति दिखाई दिया।

''हेल्लो! मैं! तौफिक...अमझद का P.A." तेजस ने उसके साथ हाथ मिलाया।

''भाई आपकी राह देख रहे है फरिश्ता!'' शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने देखकर उसने कहा।

बोम्बे हॉस्पीटल की बड़ी लम्बी लॉबी पास करके हम आखरी रूम के दरवाजे के पास पहुंचे... उसके ऊपर ICU का बड़ा बोर्ड लगा हुआ था।

''आज भाई का रोजा है... नमाज पढ़ रहे है... 1 मिनट लगेगी।'' बाहर खड़े अमझद के बॉडीगार्ड ने कहा। तौफिक वहीं का वहीं खड़ा रहा।

दो मिनट के बाद ICU का दरवाजा खुला। एक मेरे जैसी लड़की बाहर आयी।

''अब्बा आ रहे है.... मैं सादिया।'' वह बोली। तेजस ने हाथ आगे किया, लेकिन उसे ठुकरा कर उसने मेरे साथ हाथ मिलाया। मैं कुछ भी बोली नहीं। ऐसे भी मैं अंजान लोगों के साथ अनईझी फील करती।

सादिया मेरे साथ जैसे कि मैं उसकी बेस्टफ्रेंड हूं, इस प्रकार बात करने लगी। मैं मौन ही रही। उसमें वह एक डॉन की लड़की है, ऐसा एक भी लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था। वो अभिमानरहित थी।

अमझदभाई को देखते ही उसने अपना बोलना बंद किया।

''सलामवालेकुम...'' शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने आकर डॉन ने आदाब किया। आप फरिश्ते होगें... ये नाचीज आदमी आपके पास कुछ मांगना चाहता है।'' जीवन में कभी भी कोई वस्तु किसी के भी पास नहीं मांगनेवाला डॉन आज भीख मांग रहा था।

''धर्मलाभ!'' शासनद्रष्टाश्रीजी गजब के हावभाव के साथ बोले। डॉन उनके चेहरे पर चमकते तेज को देखता ही रहा।

''बोलो अमझदभाई! आपको क्या गम है?''

''सबसे पहले तो मेरे...भाई ने आपके साथी पर किये हमले की माफी मांगता हूं। फैजल छोटा है और किसके साथ क्या करना, उसकी

समझ उसे नहीं है। अब वह मौत के कगार पर है। मैं आपसे जिन्दगी की भीख मांगता हूं इंशा अल्लाह, ये अमझद आपका कर्ज कभी नहीं भूलेगा...'' डॉन नीचे बैठ गया।

''अल्लाह की मरजी से ये बच तो गया, पर ये पिछले सात दिनों से होश में आया नही है... दुनिया के सभी डॉक्टर को मैंने बुला दिया है। लेकिन सबका एक ही कहना है ''ये हमारे हाथ के बाहर का केस है। अब टाइम-पास यह ही एक उपाय है...''

''मैं मेरा प्रयत्न करती हूं। आप भी खुदा से इसके लिए दुआ मांगो। जरूर कुछ न कुछ बदलेगा...'' संपूर्ण विश्वास के साथ शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहा।

अमझदभाई की आंखों में आशा की एक किरण दिखाई दी...

Chapter -2

7/7/2010 I.S.T. 11.00 Bombay Hospital, Mumbai

रिएक्शन अति भयंकर होता है.....।

हम सबने ग्रीन कलर के मास्क मुंह पर पहने।

अमझदभाई की इच्छा तेजस और मुझे अंदर आने देने की कम थी, लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी के कहने से हम दोनों को अमझदभाई ने अंदर आने दिया। फिर सादिया ने भी जिद्द पकड़ी और किसी के भी सामने सिर नहीं झुकानेवाले डॉन को बेटी की बात सुननी पड़ी।

अभी मैं शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे जो सूचना की थी उसका मन में विचार कर रही थी। उन्होनें क्यूं इस प्रकार मुझे कहा था, ये मुझे पता नहीं चला था।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने मास्क पहनने के लिए मना किया और अपने हाथ में रहे हुए कपड़े को अपने नाक पर लगाया। हड्डीयां कंपानेवाली ठंडी ICU में थी। हम थोड़े चले। लाईन में सब ICU के वार्ड एक के बाद एक अरेंज किए हुए थे। अभी सब खाली दिख रहे थे। शायद फैजल के लिए ही सब खाली करने में आए था।

हम कोरीडोर के अंतिम वार्ड में पहुंचे, वहां की लाल लाईट चालू थी। अंदर से किसी ने दरवाजा खोला। एक ठंडी हवा का ब्लास्ट बाहर आया। मैं तो ठण्ड से थरथर कांपने लगी। तेजस ने भी अपने शरीर को संकोच रखा।

शासनद्रष्टाश्रीजी कि जो पिछले 10 वर्षों में कभी भी A.C में नहीं गये थे बिना कोई भी कम्बल सिवाय के कपड़ों में आराम से खड़े थे। उनकी सहनशक्ति गजब की थी। एक अबाध्य शक्ति का प्रवाह उनके अंदर चलता रहता था, जिसके कारण उन्हें किसी भी परिस्थिति में एडजेस्ट होने का पॉवर मिलता था।

अंदर पूरे ICU में अंधेरा था। सिर्फ साईड की नियोन लाईट्स चालू थी।

''फैजल के शरीर के बहुत सारे फंक्शन बंद हो गये है। उसकी बॉडी को प्रिजर्व करने के लिए इतना लो टेम्परेचर रखने में आया है। और शक्ति को सोकनेवाली लाईट्स भी हटा दी गई है।'' अमझदभाई ने कहा।

हम बड़े ICU रूम के बीच में पहुंचे। वहां 5-6 डॉक्टर की टीम खड़ी थी। वे सब एक स्ट्रेचर को घेरकर खड़े थे, इसलिए हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

बूटों की आवाज सुनकर डॉक्टर ने पीछे देखा।

''इरफान! अल्लाह की दया से कुछ सुधार है क्या?'' एक डॉक्टर की ओर डॉन ने देखा। ''ईन्शा अल्लाह कुछ भी सुधार नहीं है। पर अल्लाह की दुआ रही तो शायद 2 दिन के बाद कुछ जान आ सकती है.... ग्रीन आंखोंवाले डॉक्टर ने हम सबको देखकर घबरा गया हो उस भाव से कहा।

''सर! उन्होनें मास्क नहीं पहना है। पेशन्ट को असर हो सकती है। ''शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने हाथ करके डॉक्टर इरफान ने डॉन के सामने देखा। डॉन दर्द के साथ हंसा।

''तुम निक्कमे असरकारक नहीं बन सके, इसलिए तो मैंने फरिश्ते को बुलाया है।'' डॉक्टर इरफान चुप हो गया। ''चलो, डॉक्टर! 5 मिनट के लिए सब बाहर चले जाओ... जब तक मैं बुलाऊं नहीं, तब तक वापस अंदर मत आना...नहीं तो माँ कसम... और तुम इरफान इधर ही रहो।'' डॉन का आदेश होते ही सब डॉक्टर बाहर चले गये।

डॉन शासनद्रष्टाश्रीजी की ओर मुड़ा।

''बोलो फरिश्ते! अब क्या करना है...?''

शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरी ओर देखा। मुझे उनकी सूचनायें याद आ गयी। मैंने मेरा मोबाइल निकाला। मैंने नेटवर्क के तरफ देखा। एक भी दंडी दिखायी नहीं दे रही थी। यहां जैमर लगाने में आया था।

मैंने गेलेरी में से एक होर ट्युन स्टार्ट की। अमझदभाई ने आंखें बंद कर दी। मैं इरफान डॉक्टर के पास गयी और मोबाइल को पेशन्ट के कान के पास रखने को कहा। डॉ. इरफान ने पेशन्ट के शरीर पर फोकस स्टार्ट की।

मैं फैजल का शरीर देखकर कांप गयी। एक छोटे बच्चे जितना शरीर फैजल का हो गया था ऐसा मुझे लगा। उसका सांप का टेटू नीला पड़ गया था। सादिया तो अपने चाचा को ऐसी हालत में देखकर रोने लगी। अमझद ने सादिया की ओर देखा, सादिया शांत हो गयी।

अगणित ट्यूब फैजल के पूरे शरीर पर लगी हुई थी। डॉक्टर ने फैजल के कान के पास फोन रखा। शासनद्रष्टाश्रीजी ने फैजल का पूरा शरीर आंखों से चैक किया। अलग-अलग मशीनों के अलग-अलग आंकड़े दिखाई दे रहे थे। हार्टबीट बहुत लो थी।

दो मिनट के बाद संगीत बदल गया। कोई किसी को मार रहा हो, ऐसा संगीत शुरू हुआ। दो-दो मिनट में अलग-अलग संगीत आता गया। शासनद्रष्टाश्रीजी सतत हार्ट-रेट के मोनिटर की तरफ देख रहे थे।

हार्ट-रेट बढ़ती हुई सबको दिखाई दी। 60, 65, 70, 75....

''फैजल....फैजल...'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने फैजल को बुलाया। कोई भी रिएक्शन आया नहीं।

मैं तुझे माफ करती हूं। फैजल! फैजल... तेरे पीछे लगे हुए इंसान को मैं वापस बुलाती हूं। मैं तुझे माफ करती हूं।'' एकदम धीरे से फैजल के कान के पास जाकर शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहा।

ऐसा ही रिपीटेशन शासनद्रष्टाश्रीजी धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा जोर से करते रहे। 10 मिनट तक कुछ भी नहीं हुआ। डॉन ने अपनी आंखे निराशा से बंद कर ली।

''बचाओ...बचाओ...'' की आवाज आयी।

''ये मुझे मार रहा है, बचाओ...बचाओ...'' फैजल अपनी पूरी

शक्ति से बेड पर उछलने लगा। उसके हाथ पैर बंधे हुए थे, इसलिए ज्यादा कुछ हुआ नहीं। मैं बहुत डर गयी। मैंने आंखे बंद कर ली। मशीनों में आंकड़े तेजी से घटने-बढ़ने लगे।

''डॉक्टर इरफान ! इसे कम वोल्टेज का शॉक दो...'' अचानक शासनद्रष्टाश्रीजी बोले।

''और इसकी छाती को पम्प करो...''

डॉ. इरफान ने फटाफट शॉक देने की सामग्री तैयार करके शॉक दिया।

''आह...आह...''

पूरे बिल्डिंग में फैजल की चीख गूंज उठी।

''बचाओ...बचाओ...मुझे मत मारो... मैं वापस नहीं करूंगा।'' डॉ. इरफान ने शॉक मशीन साइड में रखी और फैजल की छाती पर पम्प लगाया। उससे फैजल की छाती पर प्रेशर आया। फैजल ने आंखे खोली। शासनद्रष्टाश्रीजी उसके सामने खड़े थे।

''मैं तुझे माफ करती हूं।'' पांच शब्द शासनद्रष्टाश्रीजी बोले। लम्बी गहरी नींद बाकी हो इस तरह फैजल आंखें बंद करके सो गया।

Chapter -3

11/7/2010 **I.S.T. 9.15** Bhatia Hospital, Mumbai

कनेक्शन अति भयंकर होता है.....।

गरमागर्म कॉफी पीने से मेरी जीभ जल गयी थी। बाहर बारिश हो रही थी। इसलिए मेरे शरीर में आई जकड़न को दूर करने के लिए मैंने कॉफी का कप मंगाया था। दो दिन पहले किसी का फोन आते ही हॉस्पी-टल के बड़े से बड़े डॉक्टर्स हमसे मिलकर गये थे। और दो वार्डबॉय तो रात-दिन हमारे पास ही रहते थे।

अपना काम खुद ही करने की आदत होने से शासनद्रष्टाश्रीजी को ये नया बदलाव पसंद नही आया था।

''तुम चले जाओ...'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने वार्डबॉय को कहा था, लेकिन वे एक ही बात कहते ''सर का आदेश है, सर का हुक्म है...'' फिर शासनद्रष्टाश्रीजी भी उनसे युज टू हो गये थे।

साध्वीजी की ट्रीटमेंट अब जोर पकड़ रही थी और बहुत सारे घाव भरने लगे थे। अब वे थोड़े बोलते, बेड पर खड़े होते। इसके सिवाय उनके फंक्शन बिगड़े हुए थे। शासनद्रष्टाश्रीजी की एक ही इच्छा थी कि इस हॉस्पीटल में से, जिसे वे कत्लखाना मानते थे जल्दी से बाहर नीकलना। जैन साधुओं के नियम हॉस्पीटल के साथ मेल नहीं खाते थे।

मैंने कॉफी की दूसरी चुस्की मारी, लेकिन जीभ जलने के कारण टेस्ट नहीं आया। मेरे दूसरे हाथ में केले का समोसा भी था। वार्डबॉय ने जिद्द

करके, मेरी इच्छा न होते हुए भी जबरदस्ती समोसा लाकर दिया था।

तेजस के पप्पा ने उसे घर बुलाया था, इसलिए वो भी शास-नद्रष्टाश्रीजी को कहकर घर चला गया था। मुझे अकेलापन लगने लगा था। लेकिन मैंने भी पप्पा के पास मेरा लेपटॉप मंगवा लिया था और उसमें मेरा कन्फेशन का लेखन चालू हो गया था।

पापा की जिद्द घर आने की होते हुए भी और शासनद्रष्टाश्रीजी के कहने पर भी मैं साध्वीजी को जख्मी हालत में छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं थी। मेरा निर्णय स्पष्ट था कि *''जब तक साध्वीजी ठीक न हो जाये, तब तक मैं घर जानेवाली नहीं हूं।''*

साध्वीजी को जरूरी सब वस्तुएँ जो शासनद्रष्टाश्रीजी लाकर नहीं दे सकते थे, वो मैं लाकर देती थी। मेरी मदद देखकर बहुत बार साध्वीजी मुझे देखकर लाईटली हंसते। मेरे लिए ये स्मित बहुत संतोष देनेवाला था।

वार्ड का दरवाजा खुला। खिड़की से हटकर मेरी नजर दरवाजे पर गयी। दो बॉडी-बिल्डर व्यक्ति दरवाजा पकड़कर खड़े थे। मुझे मन में डर लगा। *''कुछ उल्टा तो नहीं हुआ ना?''*

मैं मेरी जगह से खड़ी हुई। मैंने खिड़की में से नीचे देखा, बहुत सारे लोग वहां बन्दुक लेकर खड़े थे। पुलिस की भी 10-15 गाड़ियां वहां खड़ी थी। शासनद्रष्टाश्रीजी अपनी बुक में संपूर्णतया डूबे हुए थे। वे बाहर की दुनिया से अलिप्त थे।

''सलामवालेकुम...'' शब्द सुनाई दिये। आवाज किसकी है ये मुझे पता चल गया। शासनद्रष्टाश्रीजी ने बुक में से उपर देखा। सामने डॉन अमझदभाई खड़ा था।

''बोलो, अमझदभाई....! कैसा है...?''

अमझदभाई एकदम शासनद्रष्टाश्रीजी के पास आ गये और उनके पैरों को छूने लगे।

''अमझदभाई!'' मैंने आवाज दी। अमझदभाई ने मेरी ओर देखा।

''आप हमारे गुरू को स्पर्श नहीं कर सकते। उन्होनें जिंदभीभर के लिए किसी भी पुरुष को नहीं छूने की प्रतिज्ञा ली है।'' अमझदभाई को आश्चर्य हुआ।

''आप सचमुच फरिश्ते हो। आप सचमुच....'' कहकर वो जमीन पर नमाज पढ़ने की अदा में बैठ गया और कुछ बड़बड़ाने लगा। शासनद्रष्टाश्रीजी उसे देखते रहे।

''आप क्या कर रहे हो?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने डॉन को पूछा।

''कुछ नहीं... सिर्फ मेहरबान अल्लाह के पास दुआ मांग रहा हूं कि आप जैसे फरिश्ते बहुत साल जीये और हम जैसे निकम्मों को राह दिखायें...''

''पर ऐसे अचानक यहां क्यूं आना हुआ?'' डॉक्टर इरफान और सादिया पीछे से आगे आये। सादिया मेरे पास आकर खड़ी रही और उसने मेरा हाथ दबाया।

''फरिश्तें!'' इरफान का चेहरा चमका, ''आप उस दिन जो प्रक्रिया कराकर गये, उस प्रक्रिया को ही हमने वापस की और इंशा अल्लाह आपकी और अल्लाह की दुआ फलित हुई। फैजल 75% रिकवर हो गया है और उसकी एबनोर्मल हरकतें बंद हो चुकी है, शुकरन अल्लाह।''

''तो अब क्यों आये?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने गंभीर हास्य किया।

''बस! आपका शुक्रिया अदा करने... अगर आप न होते, तो शायद फैजल...'' आगे के शब्द डॉन के मुंह में ही अटक गये।

''मैं अर्ज करता हूं...'' डॉन ने शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने देखा ''आपका दिल जो चाहे, वो आप मांग सकते है। और आज से मैं आपका बंदा बन रहा हूं... ये बंदा आपकी किसी भी मदद के लिए हमेशा हाजिर रहेगा। अब आप मांगीयें....''

शासनद्रष्टाश्रीजी दो क्षण हॉस्पीटल की टाइल्स को देखते रहे।

''तुम नहीं दे पाओगे भाई!'' दुःख से भरपूर शब्द शासनद्रष्टाश्रीजी के मुख से निकले।

''शायद आप मुझ जैसे बंदे को पहचानते नहीं है। अमझदभाई के लफ्ज पत्थर की लकीर से कम नहीं होते...'' अभिमान से डॉन गरजा।

''ठीक है तो...''

''बोलिये....बोलिये...घबराईये मत...''

''तुम मर्डर करना और करवाना बंद कर दो...'' शासनद्रष्टाश्रीजी

ने तीर छोड़ा। डॉन चमक गया। उसके चेहरे पर, उसके पास मांगी हुई वस्तु नहीं दे सकने की लाचारी अंधकार की तरह छा गयी। वह कुछ कहने गया। शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखों में मैंने पहली बार आंसू छलकते देखें।

''मुझे उस मरनेवाले से ज्यादा दया तुम पर आती है, अमझदभाई! वो मरनेवाला तो जहां जन्नत या जहन्नम में जाना हो, वहां जायेगा, पर तुम्हारा क्या होगा... अल्लाह तुम्हें माफ करेगा...?''

डॉन की आंखों में शायद पहली बार खौफ दिखाई दिया।

''मैं तो कहती हूं कि अल्लाह ने मुझे तुम्हें इस जहन्नम में से बाहर निकालने के लिए फरिश्ते के तौर पर भेजा है। तुम्हारा भाई फैजल तो सिर्फ एक मिडियेटर था। बोलो दे पाओगे तुम मुझे मेरा तौहफा?''

डॉन के सभी व्यक्ति शासनद्रष्टाश्रीजी को देख रहे थे। डॉन खुद अपना सिर नीचे झुकाकर खड़ा था। शायद जिन्दगी में पहलीबार उसे कोई इस प्रकार बोलने वाला मिला था।

''मैं शायद आपको आपने मांगा वो तौहफा दे पाऊं या नहीं, पर एक बात आज से तय है कि ये बंदा आज से आपकी बन्दगी जरूर करेगा... आप उसे स्वीकारो या नहीं।''

डॉन भारी कदमों से उठा। सादिया मेरी साइड में खड़ी थी। शायद उसकी भी इच्छा शासनद्रष्टाश्रीजी जैसी ही थी।

मैंने सच्चे हृदय से भगवान को प्रार्थना की।

''अमझदभाई को प्लीझ बात मनवाना...''

Chapter -4

12/07/2010 **I.S.T. 9.15** Bhatia Hospital, Mumbai

PUBLICITY अति भयंकर होती है.....।

मैंने बाथरूम में जाकर अपना मुंह साफ किया। मैंने मेरा चेहरा कांच में देखा। मेरी सुन्दरता वापस आ रही थी। मेरे बाल लगभग सब आ गये थे और नरीशर शेम्पू के कारण ग्रोथ भी अच्छा था। मेरे बाल कंधे तक झूल रहे थे। मैंने मेरे चेहरे को क्यूट बनाया। कोई भी मेरे पर फिदा हो जाये, ऐसा चेहरा था। मुझे जैनम याद आया।

बाहर से कॉफी आ जाने की सुगंध आयी। मैं कांच के सामने से हटकर बाहर गयी। डेस्क पर वार्डबॉय बिस्कीट के दो पैकेट और कॉफी की केटली रखकर गया था। साथ-साथ *10-15* न्यूझपेपर भी रखकर गया था। मैं हररोज एक ही न्यूझपेपर **"टाईम्स ऑफ इंडिया"** मंगाती।

मैंने कॉफी को ग्लास में भरते-भरते 'टाइम्स ऑफ इंडिया' हाथ में लिया। मेरी नजर उसके फ्रन्ट पेज पर पड़ी। हायुन्डाई I *10* का नया मॉडल पूरे पेज पर छपा हुआ था। मैंने पेज नम्बर *1* घुमाया। मेरी आंखे वहां की वहां ही अटक गयी।

मैंने पेज नम्बर **2** का कन्टेन्ट पढ़ा। उसमें शासनद्रष्टश्रीजी का नाम भी लिखने में आया था। उसमें जैन साधु किस प्रकार जीते है, उसका डीस्क्रीप्शन और डॉन की पहले की लाईफ लिखने में आयी थी। उसमें शासनद्रष्टश्रीजी और मेरा भी फोटो छापने में आया है।

मैं दो मिनट तक मेरे फोटो को ही देखती रही। इसका क्या रिएक्शन होने वाला है उसकी कल्पना मुझसे हो नहीं रही थी। मैंने *TOI* को रखकर दूसरा पेपर लिया।

HINDUSTAN TIMES

JAIN NUN (SADHVIJI SHASHANDRASHTA) CAPTURES THE INTELLECT OF THE KING OF THE DON'S

''हिन्दुस्तान टाईम्स'' में चार फोटो और अलग भाषा में विवेचन दिया हुआ था। उसमें शासनद्रष्टाश्रीजी ने फैजल को जिस प्रकार ठीक

किया था, उस बात का भी उल्लेख करने में आया था। इसमें मेरे आश्चर्य के बीच किस प्रकार अपेक्षा सक्सेना (यानी मैं) सिर्फ साध्वीजी की आवाज से कोमा में से बाहर आयी, ये घटना भी छपी हुई थी। साथ में मेरा फोटो भी छपा हुआ था। वो ग्रान्डहयात की पार्टी का फोटो था।

मुझे पता चल गया कि ये फोटो किसने दिया। मैंने मेरा मोबाइल देखा। उसके इनबॉक्स में मेसेजेस के ढेर दिखाई दे रहे थे। मैंने दूसरा पेपर उठाया।

DNA

HAVE YOU SEEN MIRACLES ? NO... READ THIS...

DNA ने भी TOI जैसी ही सब बातें लिखी हुई थी। इसमें ऐसा भी लिखा हुआ था कि शायद डॉन अपना स्मगलिंग, प्रोस्टीट्यूशन वगैरे धंधा छोड़ देगा। इसमें शासनद्रष्टाश्रीजी का बड़ा, संन्यास के पहले का फोटो छापने में आया था और उन्होनें संन्यास किस प्रकार स्वीकारा, ये विषय में लिखा था। और भी 5-6 THE HINDU, INDIAN EXPRESS, MIDDAY आदि इंग्लिश पेपरों में ये ही न्यूझ फर्स्ट पेज पर प्रिन्ट करने में आयी थी।

फिर हिन्दी पेपर का एक बंडल था। मुझे हिन्दी कम पढ़नी आती थी, तो भी मैंने ''राजस्थान पत्रिका'' पेपर हाथ में लिया।

राजस्थान पत्रिका

शेर आया संत के शरण में... हो गया जीवनपरिवर्तन...

थोड़ा-थोड़ा समझते हुए पता चला कि राजस्थान पत्रिका ने जैन समाज के लोगों की अब उन्नति होगी ऐसा लिखा था। पत्रिका में लिखा

था कि अब जैनों के काम सरलता से हो जायेगें, क्योंकि उनको डॉन का सपोर्ट है ।

मैंने दूसरे हिन्दी पेपर्स देखे । ''नवभारत टाइम्स'' से लेकर सभी पेपरों में बहुत विस्तार से ये घटना आलेखन करने में आयी थी। गुजराती पेपर्स भी थे। लेकिन मुझे गुजराती आती नहीं थी, इसलिए ये मेरे लिए ''काला अक्षर भैंस बराबर'' थी।

मराठी पेपर्स ''सांयकाल'', ''लोकमत'', ''लोकसत्ता'', वगैरे में अलग-अलग आकर्षक हेडिंग के साथ मेटर लिखने में आया था। एक पेपर में तो कल्पना करने में आयी थी कि यदि संत शक्ति और डॉन शक्ति का समन्वय हो जाये, तो क्या हो सकता है।

मेरा सिर न्यूझ से फटने लगा। मैंने सब पेपर उठाये और चलने के लिए उठी कि मेरा फोन बजा। मैंने देखा तो घर से फोन था।

''हेलो...''

''कॉन्ग्रेच्युलेशन डार्लिंग! तेरा फोटो देखा.... अपेक्षा! तूं तो...'' मम्मी की एकदम बिना कन्ट्रोल की खुशीवाली आवाज सुनाई दे रही थी।

''अब तो तेरा ऑटोग्राफ लोग लेंगे... खड़ी रह, खड़ी रह, मैं फोन पप्पा को देती हूं।''

''हेलो...'' पप्पा की मधुर आवाज सुनाई दी।

''क्या, तू वही ही थी? मुझे तो विश्वास ही नही होता...'' मैं कुछ बोलूं या जवाब दूं, उससे पहले ही पप्पा दूसरी बात चालू कर रहे थे। मैं शांति से सुनती रही।

''आज मैं तुझे मिलने आऊंगा। अभी ऑफिस में लेट हो रहा है... बाय।'' पप्पा ने फोन रख दिया। मुझे क्या कहना या करना ये पता ही नहीं चल रहा था।

मैंने फोन नीचे रखा और वापस पेपर उठाया। अभी तो चलने जा रही थी कि वापस फोन बजा। मैंने स्क्रीन की तरफ देखा- जैनम....

''हेलो'' मैं बोली! दो मिनट तक रिस्पोन्स ही नही आया।

''हेलो...हेलो...कौन है?'' मैंने लाल बटन पर हाथ रखा।

''स्वीटहार्ट! मैं जैनम! मुझे भूल गयी क्या?'' मुझे गुस्सा आया।

मैंने फोन कट कर लिया। फिर से फोन बजा। मैंने उठाया।

"मैं सिर्फ जोक कर रहा था। माय लव! तेरे फोटो बहुत रोमान्टिक आए है। तुझे पता है कि किसने दिया है?" जैनम शांत हुआ।

"ये ही मैं पूछनेवाली थी। मुझे पता है कि ये तेरे ही कारनामे है।"

"तो तुझे पता है? किस प्रकार मेरी जान?" मैंने उसके बाद **25** मिनट तक उसके साथ बात की। हर बार वह मेरे लिए नया-नया शब्द बोलता गया। हमारी बातों के बीच में बहुत सारे दूसरे कॉल्स आते रहे, लेकिन मैंने नहीं उठाये।

मैंने फोन कट किया। फिर से फोन बजा। नताशा...फोन... तेजस...फोन...गौतम सर....फोन...नानाजी....फोन...सुरेश अंकल...

मेरे कान बातें सुन-सुनकर दर्द करने लगे थे। मैंने फोन को फ्लाइट मोड पर रख दिया। जिन्दगी में पहलीबार मुझे पता चला कि फेम और पब्लिसिटी किसे कहते है...

Chapter -5

12/07/2010 I.S.T. 14.00 Bhatia Hospital, Mumbai

INTERACTION अति भयंकर होता है.....।

"और आप *NDTV LIVE* के साथ में रिपोर्टिंग देख रहे हो। यहां भाटिया हॉस्पीटल में *NDTV* और उसकी टीम डॉन अमझद खान ने जिसको फरिश्ते का बिरूद दिया है, वैसे साध्वी शासनद्रष्टाश्रीजी के लाईव इन्टरव्यू के कवरेज के लिए पहुंचे है। लेकिन...." न्यूझ रिपोर्टर दो मिनट के लिए अटकी, "जैन साधु-साध्वी माइक में बोलकर इन्टरव्यू नहीं देते है और इसलिए शासनद्रष्टाश्रीजी के अपने प्रतिनिधि के रूप में रखे अपेक्षा सक्सेना जो कि जैन नहीं है, उसके साथ हम इस विषय पर चर्चा करेगें... तो।" रिपोर्टर मेरी तरफ आयी। उसने मेरे सामने माईक रखा। उस माईक के बॉक्स पर *NDTV* लिखा हुआ था। दूसरे भी केमेरामैन और माईकवाले मेरे आस-पास आकर खड़े हो गये।

"आजतक", "जी न्यूझ", "इंडिया *TV*", "स्टार न्यूझ" सब न्यूझ चैनल इस प्रेसमिट में हाजिर थे।" तो अपेक्षा! "*NDTV* के रिपोर्टर ने चालू किया। "आप शासनद्रष्टाश्रीजी को कितने सालों से जानते हो और किस तरह?"

"पिछले एक-डेढ़ सालों से मैं शासनद्रष्टाश्रीजी को जानती हूं और मेरा उनके साथ सम्पर्क जैनम...." मैंने पूरी स्टोरी रिपीट की।

"अमझदभाई कैसे शासनद्रष्टाश्रीजी के सम्पर्क में आये?" आ-

जतक के रिपोर्टर ने पूछा। मैंने फैजल की बहुत सारी बातें छिपाकर मेन-मेन बातें कह दी।

''क्या आपको लगता है कि जैसे DNA वालों ने क्लेम किया है, वैसे शासनद्रष्टाश्रीजी के पास किसी प्रकार का कोई जादू है?'' बहुत सारे रिपोर्टर ने इसमें सुर मिलाये। मैं दो मिनट तक कुछ भी नही बोली। सब रिपोर्टर्स और मुम्बई-इन्डिया की करोड़ों की पब्लिक मुझे ही देखती रही।

''नहीं! साध्वीजी के पास कोई चमत्कार नही है। उनके पास जो है वो बड़े-बड़े जादुगरों के पास भी नहीं होता...'' सभी को मेरे शब्द सुनकर आश्चर्य हुआ।

''ये कौन-सी वस्तु है अपेक्षा?''

एकदम उभरते हुए इमोशन्स के साथ मैंने कहा।

''उनके पास प्रेम है कि जो भलेभले खतरनाक व्यक्तियों को भी शांत और ठंडा कर सकता है। उनके पास अच्छे विचारों की ऊर्जा है जो कि डिप्रेस्ड व्यक्ति को भी डिप्रेशन में से बाहर ला देती है। ...देखो...'' मैंने बंद रूम के अंदर रहे हुए शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ इशारा किया।

सब केमेरे उस ओर मुड़े।

''अभी भी मेरे गुरू, मेरे हेल्पर, मेरे सेवर अपने ध्यान में, कोई न कोई उलझे हुए व्यक्ति की उलझन को सुलझाने में ही व्यस्त है। आज, मैं पूरे वर्ल्ड को और इनको देखने वाले करोड़ों लोगों को एक ही बात कहना चाहती हूं कि यदि आपके पास प्रेम की शक्ति हो, अच्छे विचारों की शक्ति हो, अच्छे हृदय की शक्ति हो, तो तुम सिंह को भी शांत कर सकते हो।

नेक्स्ट टाइम जब आप कभी हिमालय पर जाओ, तो वहां बैठे हुए योगीओं को देखना मत भूलना। उनके आश्रय में आपको चीता, बाघ, रींछ बैठे हुए मिलेंगें। इसे कहते है ''ध पॉवर ऑफ पीस...'' मैं बोल-ते-बोलते रूकी। सब रिपोर्टर्स स्तब्ध रह गये हो, इस प्रकार खड़े थे।

''लास्ट प्रश्न मेडम!'' एक यंग रिपोर्टर ने मुझसे पूछा।

''क्या आप भी शासनद्रष्टाश्रीजी जैसे बनना चाहते हो?''

''माय फ्रेन्ड! ये बहुत भारी प्रश्न है। जैन साधु-साध्वी बनना सरल नहीं है। जैनीज्म के नियम सिर्फ प्रेक्टीकली ही कठिन है, ऐसा नहीं,

लेकिन मेन्टली भी बहुत कठिन है। मेन्टली जो व्यक्ति एकदम मजबूत होते है, वे ही ये जैनीज्म को स्वीकार सकते है। भगवान से आप सब प्रार्थना करना कि मैं भी जैनीज्म स्वीकार सकूं....''

''तो इस तरह एक रिफ्रेशींग इन्टरव्यू अपेक्षा सक्सेना का पूरा हुआ। और भी ताजा खबरें जानने के लिए, देखते रहिए NDTV न्यूझ।'' न्यूझ रिपोर्टर ने केमेरा ऑफ करवाया।

''यू वर एक्सीलेंट अपेक्षा!'' न्यूझ रिपोर्टर ने मेरे नजदीक आ-कर मेरी प्रशंसा की। मैंने खाली स्माइल दी। मेरा फोन बजा। ''जैनम...''

''बोल जैनम!'' मैंने हेलो किये बिना डायरेक्ट पूछा।

''बस मैंने तो ऐसे ही फोन किया था। सबसे पहले इतनी अच्छी तरह से अपना मेसेज लोगों तक पहुंचाने के लिए थेंक्यूं... दूसरा....'' उसकी आवाज फोन पर भारी हो गयी और अभी ही वह रो पड़ेगा, ऐसा मुझे लगा।

''मैं तेरे बिना जी नहीं सकता, अपेक्षा! प्लीझ तूं मुझे छोड़कर मत जाना...प्लीझ..''

Chapter -6

13/7/2010 I.S.T. 10.00 Bhatia Hospital, Mumbai

अलिप्तता अति भयंकर होती है.....।

''म.सा.! मैं अंदर आ सकती हूं?'' मेडिटेशन में तल्लीन शासनद्रष्टाश्रीजी को मैंने बाहर से पूछा। शासनद्रष्टाश्रीजी ने अपने चेहरे के हावभाव से ईशारा करके मुझे हां कहा। जब शासनद्रष्टाश्रीजी मेडिटेशन करते तब उनको डिस्टर्ब करना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था, लेकिन पिछले तीन दिनों में ऐसी-ऐसी वस्तुऐं बनी थी कि उसका निर्णय लेने में मैं समर्थ नहीं थी। और अभी भी ऐसा ही एक फोन आया था।

इतना सबकुछ हो जाने पर भी शासनद्रष्टाश्रीजी को बाहर के ग्लेमर में बिल्कुल भी इन्टरस्ट नहीं था। वे न्यूझ रिपोर्टर्स से दूर भागते थे।

आज सुबह 5 बजे किसी काम से शासनद्रष्टाश्रीजी हॉस्पीटल से नीचे उतरे थे, तब भी अचानक कहीं से कोई रिपोर्टर आ पहुंचा था। उसने वहीं शासनद्रष्टाश्रीजी पर प्रश्नों की बौछार कर दी थी। लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी बिना गुस्सा किये, उनको सुबह २ घण्टे तक मौन रहने का नियम है, ये ईशारे से समझाकर, अपना काम खत्म करके वापस ऊपर आ गये थे।

ये सब वस्तुयें देखकर मुझे एक ही विचार आता कि

"HOW CAN A PERSON REMAIN LIKE THIS?"

लेकिन उसका समाधान पिछले तीन दिनों से मैं बिझी होने के कारण पूछ नहीं सकी थी। जैसे-जैसे शासनद्रष्टाश्रीजी की ख्याति बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे उनके ध्यान के घण्टें बढ़ते जा रहे थे।

शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने मैं बैठ गयी। उनकी ओरा में एक अकल्पनीय शक्ति मुझे अनुभव हुई।

मेरे मन के सब विकल्प शांत हो गये।

दो मिनट के बाद उन्होनें अपनी आंखें खोली। उनकी आंखों में से एक गजब की शक्ति बह रही थी।

''क्या हुआ अपेक्षा?'' शांति मिले ऐसे शब्द शासनद्रष्टाश्रीजी ने उच्चारे।

''CM आपसे मिलना चाहते है। उनके P.A का फोन आया था। आपने कहा है कि सभी से मुझे ही मिलना है, लेकिन ये तो कह रहे है कि उनको आपसे डायरेक्ट मिलना है... वो आते ही होगें....'' मैंने मेरी दुविधा शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने रखी।

''बस इतनी सी बात ही थी। इतनी छोटी-सी बात के लिए इतना टेन्शन लेने की जरूरत नहीं है। सारे दुनियां के बड़े व्यक्ति और दूसरे सामान्य व्यक्ति में फर्क क्या है....?

ये भी मनुष्य है और वह भी मनुष्य है, सब एक ही जैसे है। आगे से एक बात याद रखना, इस दुनिया में जो भी व्यक्ति महान बनता है, वो ''सब व्यक्ति महान है'' ये मानकर ही बनता है। उनका एक ही सिद्धान्त होता है।

'EVERYTHING IS EQUAL AND EVERYONE IS EQUAL...'

फिर वो C.M. हो या P.M. हो, महान व्यक्तियों को सब समान है। इसलिए ही एक वस्तु खास समझने जैसी है। जिस वस्तु के पीछे तुम भागते हो, वो वस्तु तुमसे दूर भागेगी। तुम प्रसिद्ध होने के लिए दौड़ोगे

तो प्रसिद्धि तुमको छोड़कर दौड़ेगी। जो वस्तु तुम छोड देते हो वो वस्तु सामने से आती है। तुम्हें हररोज ये ही प्रार्थना करनी है, प्रभु से, कि जो मुझे मिलनेवाला हो, वो मेरे से ज्यादा जरूरतमंद को मिले। इससे तुम्हें भी मिलेगा और दूसरों को भी मिलेगा।

और हां....'' शासनद्रष्टाश्रीजी दो मिनट के लिए रूके।

उन्होनें ड्रावर में से दो टीश्यू पेपर निकाले। उनके बर्तन में रहे हुए पानी में एक टीश्यू पेपर को भिगोया। दूसरे पेपर को वैसे का वैसे ही रहने दिया।

फिर एक टेबल पर दोनों पेपर को रखकर, उन्होनें भाटिया हॉस्पीटल के वार्ड की खिड़की खोली। हवा का झोंका एक साथ अंदर आया। मेरे बाल उडने लगे। टेबल पर पड़ा ड्राय टीश्यूं उड़ गया। भीगा हुआ टीश्यू वहां का वहां ही रहा। उन्होनें खिड़की बंद कर दी।

''समझी....?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे पूछा।

मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, इसलिए मैने सिर ''नहीं '' में हिलाया।

''यहां जो ये भीगा हुआ टीश्यू पेपर था, वो बाहर से हवा आने पर भी उड़ा नहीं और अपनी जगह पर ही रहा। जबकि जो ड्राय टीश्यू पेपर था, वो उड़ गया और कहीं फेंका गया।''

''तो? ये तो मैंने भी देखा.................'' मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ देखा।

'' तो... ये ही कि जो व्यक्ति ज्ञान, अलिप्तता रूपी पानी से भरा होते है, वो पब्लिसिटी की हवा में उड़ता नहीं है। अपनी जगह पर ही रहता है। अपनी आत्मा का स्थान पकड़ के रखता है।

जब व्यक्ति ज्ञान बिना का, सब वस्तुओं के साथ जकड़ा हुए होता है, वो ऐसी पब्लिसिटी के झोंकों में उड़ जाते है और इस प्रकार फेंकें जाते है कि दुबारा कभी दिखते ही नहीं। अब समझी ?'' एकदम प्रेमपूर्वक मेरे सामने देखकर शासनद्रष्टाश्रीजी रूके। उनकी दृष्टिएकदम वेधक थी।

मुझे इनका मेसेज समझमें आ गया। शासनद्रष्टाश्रीजी मेसेन्जर ऑफ पीस क्यों थे, ये समझ में आ गया। मेरा सिर नम गया। अलिप्तता

यानी डिटेचमेंट किसे कहते है, ये समझ में आ गया।

Chapter -7

14/7/2010 I.S.T. 9.30 Bhatia Hospital, Mumbai

ADVERTISEMENT अति भयंकर होती है.....।

''OK मम्मी! चिल्लाओ मत। मैं कल आ जाऊंगी...'' मैंने फोन कट किया। मम्मी से दूर होकर बहुत दिन हो गये थे, इसलिए मम्मी को मेरी याद आने से, मम्मी मुझ पर चिल्ला रही थी, और फोन पर रो रही थी।

''क्या करूं मैं? मैं साध्वीजी को छोड़ नहीं सकती थी।'' मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी की ओर देखा। वे इजाग्रस्त म.सा. को कुछ कहकर हंसा रहे थे। मैंने पहली बार शासनद्रष्टाश्रीजी को खुल्ले मन से हंसते हुए देखा था। मैंने बिना आवाज से उनका फोटो ले लिया। एकदम जोरदार फोटो आया। मैं उस फोटो को देखती रही।

मेरा फोन बजा। 9000000123 युनिक नम्बर से कॉल आया। फास्ट हुई पब्लिसिटी के कारण कितनी सारी ऑफर्स और ऑप्शन्स मुझे पिछले 3-4 दिन में आ गये थे। मैंने सबको मना ही किया क्योंकि अभी मेरा पहला कार्य साध्वीजी के प्रति का था।

मैंने मोबाइल का ग्रीन कलर का बटन क्लिक किया।

''हेलो, अपेक्षा सक्सेना...हाय! मैं बोलिवुड के मशहूर डायरेक्टर जाविद अख्तर का P.A बोल रहा हूं। तुम्हारा प्रेझेन्टेशन हमने इन्टरव्यू में देखा और जाविद सर को एक मुवी में तुमको न्यू एक्ट्रेस के रूप में लेने की इच्छा है। बोलो... आर यू... रेडी...'' अंतिम शब्द को खींचते हुए P.A ने कहा।

''सॉरी.... अभी मेरे पास बहुत सारे काम है और मैं बोलिवुड में परफॉर्म कर सकूं इतना मेरा टेलेन्ट भी नहीं है... इसलिए ना।''

''बट...बट...बट... सर की इच्छा है कि वो तुमको तैयार करके एक नया चेहरे के रूप में बाहर लाये...'' विनंती करते हुए P.A की आवाज सुनाई दी।

''OK... मैं आपको बाद में कॉल करूंगी विचार करके।'' बात खत्म करने के लिए मैंने कहा।

''प्लीझ! थींक फास्ट...'' मैंने फोन कट कर लिया।

शासनद्रष्टाश्रीजी की बात मुझे सच लगी।

''पब्लिसिटी बवंडर यानी हवा का झोंका है।''

वापस फोन की परेशान करनेवाली रिंगटोन सुनाई दी। मैंने उठाया।

''हेलो.. अपेक्षा सक्सेना.....!''

''हां!'' 500 वी बार मैंने ये शब्द कहा।

''मै फेमस एड कम्पनी में से बोल रहा हूं।'' उत्साह भरपूर आवाज सुनाई दी।

''हां...''

''मेडम! हम अनाथ बच्चों की पढ़ाई के प्रमोशन के लिए एक एड बनाना चाहते है। उसमें हमारी इच्छा ये है कि तुम लीड रोल करो और तुम्हारी जो पब्लिसिटी...'' मैंने फोन स्पीकर पर रख दिया। मेरी प्रशंसा सुन-सुनकर मैं बहुत फूल गयी थी। अब ज्यादा सुनुंगी तो फट जाऊंगी, ऐसा मुझे लगा।

''मेडम! आर यू धेर।''

''हा...''

''तो क्या आप तैयार हो? काम अच्छा है... आप समझ सकते हो ना... लाखों बच्चों को पढ़ने में सहायक बनने का लाभ आपको मिलेगा...'' बात तो सच्ची लगी। *''बच्चों के लिए?''* मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी को पूछने का नक्की किया।

''OK... मैं विचार करके आज रात तक जवाब दूंगी।'' मैंने फोन नीचे रखा। दरवाजा खोलकर मैं लॉबी में से रूम में गयी। शासनद्रष्टाश्रीजी लाल कलर की बुक में कुछ लिख रहे थे।

''म.सा.! सॉरी टू डिस्टर्ब यू... लेकिन मुझे एक बात पूछनी है।'' शासनद्रष्टाश्रीजी के रिएक्शन को मैं देखती रही। उन्होंनें तुरन्त ही अपनी बुक बंद कर दी।

''हां, पूछ अपेक्षा!'' मेरे सामने शासनद्रष्टाश्रीजी देखते रहे।

''म.सा.! मुझे अभी एक फोन आया था एक एड में काम करने के लिए... अनाथ बच्चों को ज्ञान मिले उसके लिए एड करनी है... तो मैं ये करूं या नहीं?'' प्रत्युत्तर के लिए मैंने उनकी ओर देखा।

''अपेक्षा! तुम्हारी मर्जी... ऐसे देखा जाये तो काम बहुत अच्छा है, लेकिन साथ-साथ में बहुत सारी वस्तुओं का ध्यान भी रखने जैसा है।'' मुझे कुछ बताने की इच्छा से शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहा।

''कौन-कौनसी...?''

''पहली बात ये कि इस दुनिया में सब लोग अपना-अपना फायदा देखनेवाले ही होते है। इसलिए तुम्हें सबसे पहले ये चैक कर लेना है कि एड कम्पनी सच्ची है या नहीं...

दूसरी बात! सच्ची हो तो भी उस एड की स्कोप और रीच कितनी है और उसमें तेरा रोल क्या है और तुझे क्या फायदा है...

तीसरी बात ये है कि जो मैंने तुम्हें कल कही थी... ''जमीन पर पैर रखने की शक्ति हो तो ही हवा में उड़ने के सपने देखना... नहीं तो।'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने आंखें बंद कर ली।

मुझे साध्वीजी क्या कहना चाहते थे, वो बात मैं समझ गयी । मेरा फोन बजा।

Chapter -8

16/7/2010 I.S.T. 14.00 Film city, Goregaon

एक्टिंग अति भयंकर होती है.....।

''एक्टर्स रेडी... केमेरामेन रेडी। रोल, केमेरा, एक्शन।'' प्रोड्यु-सर ने एड चालू करने का आदेश किया।

मैंने बाईक चालू की। मैंने फुलस्पीड में बाईक ले जाकर सामने रही हुई लड़की को ठोक दिया। मेरा बेलेन्स ऐसे-वैसे हुआ, लेकिन बाईक बेलेन्स में लाकर मैं वहां से निकल गयी।

''सीन ओवर...'' माइक्रोफोन में प्रोड्यूसर बोले, ''वेल डन अपे-क्षा! तुम थोड़े ही टाइम में बहुत अच्छी एक्टिंग सीख गयी हो।'' मैंने मेरा हेलमेट निकालकर बालों को बिखेरा। प्रोड्यूसर मेरे पास आया।

पहले एड करने का तय करने के बाद दो दिन प्रोड्यूसर ने मुझे फिल्म सिटी में प्रैक्टीस करवायी थी। मेरी एक्टिंग देखकर उन्हें संतोष हो गया था। शासनद्रष्टाश्रीजी के कहे अनुसार सब सच निकला था।

एड फर्म *NGO* कम एड फर्म थी। ये प्रोजेक्ट उनके *NGO* के लिए था। मुझे प्रोड्यूसर ने पेमेंन्ट का पूछा था। लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी म.सा. के ना कहने से मैंने ना कहा था।

''चेरिटेबल *NGO* को चेरिटी के लिए पैसे भरने पड़े, इससे बड़ी मानवता की कमनसीबी क्या हो सकती है?'' मैंने प्रोड्यूसर के दिमाग में बात फीट की थी। वो मेरी यानी शासनद्रष्टाश्रीजी की विचारधारा जानकर

एकदम खुश हो गया था।

फिर उसने मुझे एड के विषय में सब समझाया था। वो समझकर मैंने थोड़े स्टन्ट्स ट्राय किये थे। मुझे आत्मविश्वास आने के बाद मैंने एक्टिंग के लिए हां कहा था और मैंने मेरा पहला सीन पूरा किया।

''तो आराम करना है या दूसरे सीन पर जायें....?'' अपनी छटादार पलकों से प्रोड्युसर ने मेरी तरफ देखा।

''नहीं...आराम की जरूरत नहीं। मुझे वापस समयसर हॉस्पीटल पहुंचना है। साध्वीजी...'' ये शब्द सुनते ही प्रोड्यूसर के चेहरे पर एक चमक आयी। मैं बोलते हुए अटक गयी।

''क्या हुआ? क्यों आप इस तरह से खुश हो रहे हो...?'' मेरे मुंह में से जिज्ञासा निकली।

''नहीं... ये ही नाम मेरे लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत है...''

''किस प्रकार?'' मैंने प्रोड्यूसर की तरफ देखा। उसके चेहरे पर अजब-गजब के भाव दिखाई दे रहे थे।

''पिछले सप्ताह मेरे जीवन में बहुत अप एण्ड डाउन्स हुए थे। और अभी मैं तुम्हारे सामने जो खड़ा हूं, तो वह साध्वीजी के कारण...'' थोड़ी हिचकिचाहट हो रही हो ऐसा मुझे लगा। लेकिन दूसरे ही क्षण वो हिचकिचाहट बिना फटाफट बोलने लगा।

''अपेक्षा! 10 दिन पहले मैं मरने का विचार कर रहा था। मैंने उसके लिए जहर की गोली भी तैयार रखी थी। हकीकत में मेरे ऊपर 10 दिन पहले ही अब्दुल, डॉन के राइट हेन्ड का फोन आया था। ''तेरे को मालूम है कि कमल क्या करता है?'' मुझे प्रश्न समझ में नहीं आया था।

''तूं क्या बोल रहा है। मुझे समझ में नहीं आ रहा है।'' मैंने निःसहाय भाव से कहा था।

''मेरे दादा मेरे को बोलते थे कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते... तूं भी शायद उसमें से ही एक है.... मैंने सुना है कि ड्रग्स नहीं लेना चाहिए, इसलिए तूं कोई एड बना रहा है। अगर वो एड रिलीझ हुई और मेरा धंधा कम हुआ तो तुझे और उसमें काम करने वाले सभी कमलों को मैं वापस कीचड़ में मिला दूंगा... समझा क्या कमल का अर्थ....?'' मैं

कुछ भी बोल नही सका था।

''क्या बे! मुंह को किसी ने सिल दिया है क्या?''

''हां भाई! सोचूंगा।'' कहकर मैंने फोन कट कर लिया था।

उसका फिर से फोन आया था । मैंने उठाया नहीं था, मैंने मेरा फोन लॉकर में बंद कर दिया था, ताकि नेटवर्क पकड़ में ना आये। बैक-अप के लिए मेरे पास दूसरा नम्बर था।

दो घण्टे बीते होंगें... मेरे साथ काम करनेवाले को-प्रोड्यूसर के फोन पर किसी का कॉल आया था... को-प्रोड्यूसर के हाव-भाव से लग रहा था कि कोई बहुत बुरे समाचार है। जैसे कि समाचार स्वीकार करने के लिए तैयार ही न हो, इस तरह उसने फोन कट किया था।

'शुभांशु! क्या हुआ?'' मैंने उसको उस सदमे से बाहर निकाला था।

''सर, सर! सब खत्म हो गया।''

''यानी?'' शुभांशु ने मेरे सामने देखा था।

''सर! एड फाइल्स डिलिट कर दी गयी है...'' और वह बोलते-बोलते अटक गया था।

''और क्या...'' गुस्से से मैं चिल्लाया था।

''सर! स्टुडियो अब्दुल के गुण्डों ने तोड़ दिया... एक भी कांच, एक भी फ्रेम नहीं बचा... वॉचमेन का फोन था। वो बहुत ही...'' मैं धड़ाम से नीचे गिर गया था। मेरे जीवन की पूरी इन्कम मैंने इस स्टूडियो में लगाई थी।

''पैक-अप...'' मैं एक ही शब्द बोलने के लिए समर्थ था। सब लोग धीरे-धीरे वहां से निकल गये थे। को-प्रोड्युसर खुद भी बहुत हैरान था।

''तुझे मैंने पहले ही कहा था कमल! कि प्लीझ डॉन के सामने मत आना, लेकिन...'' वो रोने लगा था। उसका भी हिस्सा स्टुडियो में था।

''तेरे जैसे पागल व्यक्ति के साथ काम करनेवालों का ऐसा ही हाल होता है। मेरी ही भूल थी कि मैंने एक पागल के साथ पार्टनरशिप की। अब तुझे या मुझे कोई भी...'' रोते-रोते वह धम-धम वहां से निकल गया

था।

मेरा मन एकदम डिप्रेस्ड हो गया था। मैंने मेरा फोन लॉकर से बाहर निकालकर अब्दुल को फोन लगाया था।

''द नम्बर यु आर ट्राईंग टू रीचइझ आउट ऑफ कवरेज एरिया...'' बारबार फोन करने पर भी ये ही रिंगटोन सुनायी दी थी। मैं लड़खड़ाते पैरों से मेरे स्टुडियो में पहुंचा था।

ये मेरा स्टुडियो है, इस प्रकार पहचान सके, ऐसी एक भी निशानी अब्दुल ने छोड़ी नहीं थी। मैंने जोर से नीचे गिरे हुए प्रोप्स का लात मारी थी। मेरे ही पैरों में भयंकर वेदना हुई थी। मेरे आंखों में से आंसूओं का धोध बहने लगा था। मेरे रोने की आवाज पूरे स्टुडियो में गूंजने लगी थी। वॉचमेन आया, लेकिन वह बेचारा क्या कर सकता था।

मुझे एक घण्टे बाद फोन आया था। ''अब्दुल...''

मैंने फोन उठाया था।

''कैसा लगा?'' सामने से हंसने की आवाज सुनाई दी थी।

'तेरी मां...'' मुझे जितनी गालियां आती थी वो सब मैंने मशीन-गन की तरह खाली की थी।

''अभी भी तूं सुधरा नहीं है। लगता है तेरी मां-बहन को भी...''

''प्लीझ नहीं। मैं माफी मांगता हूं भाई! ध्यान रखूंगा अगली बार से...'' मैंने गुस्सा होते हुए भी विनंती की थी। मेरे परिवार का कुछ गलत हो जाये, ये मुझसे बिल्कुल भी सहन हो, ऐसा नहीं था।

''अभी आया कुत्ता लाईन पे। अब सुन...'' अब्दुल ने घाव पर नमक छिड़के ऐसी बात की थी। मुझे उसे 50 लाख रूपये देने थे। मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी।

''मुझे ये सब मालूम नहीं। अमझदभाई को पैसा चाहिए...'' उसने फोन कट कर दिया था।

मैं एक भयंकर सदमे में घर पहुंचा था। पत्नी मुझे देखकर एकदम घबरा गयी थी। ''तुम 20 साल बड़े हो गये हो, ऐसा लग रहा है, क्या हुआ?''

मैंने उसे सबकुछ कह दिया था। उसे भी झटका लगा था। वह

कुछ भी नही बोल सकी थी। मैं बाथरूम में गया था। मैंने रास्ते में आते समय केमिस्ट के पास से जहर की गोली खरीद ली थी। मैंने बोटल का ढक्कन खोलकर गोली गटकने की ट्राय की थी, लेकिन हाथ उठ ही नहीं रहे थे। मरने की इच्छा ही मर गयी थी। मैं बाथरूम से बाहर आकर सो गया था। दोपहर के 2 बजे फोन आया था, नींद में होने के कारण मैंने फोन उठाया नहीं था। बहुत बजने के बाद मैंने फोन उठाया था।

''हेलो...'' मैं एकदम उठकर बैठ गया था आवाज सुनकर।

''हां भाई...'' कांपते हाथों से मैं फोन पर बात कर रहा था।

''भाई ने तुम्हें माफ कर दिया है, फैजल के ठीक होने की खुशी में! फैजल के लिए अब तूं दुआ मांगना कि वह जल्दी ठीक हो जाये और यदि तूं सीधा रहेगा तो शायद... ''आगे का शब्द वह बोला नहीं था, लेकिन ''शायद'' का अर्थ मुझे समझ में आ गया था।

जीने की थोड़ी आशा का मेरे अंदर संचार हुआ था। मुझे ये बात सुनकर आश्चर्य हुआ था, इसलिए मैंने बॉम्बे हॉस्पीटल में काम करनेवाले मेरे सम्पर्क के व्यक्ति को फोन किया था।

''फैजल को क्या हुआ?'' मैंने उसे पूछा। उसने मुझे जैन साध्वी की पूरी स्टोरी कहीं थी। कहां डॉन और कहां साध्वीजी।

फिर मैंने आगे की गतिविधियों पर ध्यान रखा था। शासनद्रष्ठ-श्रीजी मेरे मानसपटल पर छा गये थे। एक गजब के आकर्षण ने मेरे ऊपर पकड़ जमा दी थी। मेरे मरने की इच्छा मर गयी थी।

मेरे में फीनीक्स पंछी की तरह मिट्टी में से खड़े होने का निर्धार उग निकल आया। और मैंने वापस एड का काम चालू किया। शासनद्र-ष्ठाश्रीजी मेरी दूसरी माता है। उन्होनें मुझे सिर्फ जन्म ही नहीं दिया, बल्कि साथ में जान भी दी है। '' भावविभोर होकर प्रोड्यूसर कमल बोला।

मैं चकित रह गयी, ''ऐसी न जाने कितनी जिन्दगियों को शासनद्रष्ठश्रीजी ने संवारी होगी...'' मुझे विचार आया। शासनद्रष्ठश्रीजी के ऊपर एक एड बनानी चाहिए, पिक्चर बनानी चाहिए, ऐसी मेरी दृढ़ इच्छा हुई।

Chapter - 9

20/07/2010 I.S.T.8.30 Bhatia Hospital, Mumbai

वोमिट अति भयंकर होती है.....।

''शासनद्रष्टाश्रीजी आप नहीं होते तो...'' प्रोड्यूसर कमल के मुख में रेडियो आ गया हो, ऐसा मुझे लगा। वे सतत बोल ही रहे थे।

प्रोड्यूसर ने मुझे पूरी एड खत्म करने के बाद साईड में बुलाया था। मुझे लगा कि वह मेरे साथ कुछ खराब करना चाहता होगा।

''अपेक्षा! तू मुझे एकबार मेरे लाईफ-सेवर से मिलायेगी।'' इतना बड़ा एड प्राड्यूसर मेरे पास एक साध्वीजी से मिलने के लिए भीख मांगें ये देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था। मेरे साथ खराब करने का मुझे आया हुआ विचार उड़ गया था।

''हां! लेकिन वो इस समय लगभग मेडिटेशन में ही होते है इसलिए...'' प्रोड्यूसर का चेहरा उतर गया था। मुझे दया आयी थी।

''OK चलो आप 20TH को मुझे सुबह 8.00 बजे भाटिया हॉस्पीटल में मिलना। वहां आपकी और मेरी L.S. (लाईफ-सेवर) की मिटिंग मैं करा दूंगी।'' वे मुझसे गले लग गये थे। ये ही बोलिवुड और मिडिया में अपनी खुशी जाहिर करने की स्टाईल थी।

फिर आज सुबह 8.00 बजे वे पहुंच गये थे।

मैं घायल साध्वीजी के पास जाकर बैठ गयी। वे कोई बुक पढ़

रहे थे।

''अब आपको कैसा है?'' मैंने उनके हाथ के ऊपर हाथ रखा। उन्होनें मेरी तरफ देखा। उनकी आंखों में एकदम गहरे समुद्र जैसी गंभीरता और स्वच्छता दिखाई दे रही थी।

''किस तरह इतने दर्द में भी ये साध्वीजी इस प्रकार रह सकते है?'' विचार आया। मेरी नजर उनके चेहरे पर ही थी।

अचानक उनके हावभाव बदले, उसमें वेदना दिखाई दी। वे खड़े होने की कोशिश करने लगे। शासनद्रष्टाश्रीजी ने साध्वीजी की तरफ देखा। वे तुरंत ही खड़े हो गये।

''अपेक्षा! प्लीझ एक टब लाओ...'' अचानक हुए बदलाव से प्रोड्यूसर आश्चर्यचकित हो गया। मैं टब लाने के लिए बाथरूम की तरफ दौड़ी। वहां पानी बिना का सूखा एक टब पड़ा था।

मैं टब लेकर बाहर आयी।

मैं टब लेकर पहुंचु उससे पहले तो साध्वीजी को वोमिट हो गई। शासनद्रष्टाश्रीजी ने अपने हाथ वोमिट लेने के लिए आगे पसार दिये। पी-ली-लाल वोमिट शासनद्रष्टाश्रीजी के हाथों में गिरी।

''यक्स....'' मेरे मुंह में से शब्द निकल पड़े। मेरा पेट रम्बल करने लगा। मैंने टब शासनद्रष्टाश्रीजी के हाथों के नीचे रखा। उन्होनें वह वोमिट टब में डाली। मैंने उनके चेहरे की तरफ देखा। उनका चेहरा वोमिट के साथ भी वैसे का वैसा ही था।

साध्वीजी वोमिट करते रहे, आधा टब भर गया। उसमें खून बहुत निकला। नर्स दौड़ती-दौड़ती आयी। उसने ग्लब्स पहनकर वोमिट का एक सेम्पल लिया।

''शासनद्रष्टाश्रीजी! वोमिट को इस तरह हाथ में लेने से आपको बीमारी हो जायेगी। प्लीझ! आप ग्लब्ज वापरो। ये बीमारी फैल जाये ऐसी है...'' नर्स ने अच्छे भाव से कहा। शासनद्रष्टाश्रीजी नर्स को देखकर हंसे।

''OK... मैं ध्यान रखूंगी...'' नर्स वहां से निकल गयी।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने टब में ही हाथ धोये। मैं डेटोल लेकर आयी। मेरा मन दुःखे नहीं, इसलिए उन्होनें डेटोल से भी हाथ धोये।

पेशन्ट साध्वीजी को मैंने पानी दिया। साध्वीजी ने ईशारे से ना कहां और मुझे एक ग्लास बताया। शासनद्रष्टाश्रीजी ने पहले से ही उनके लिए पानी का ग्लास रख दिया था।

मैं प्रोड्यूसर के पास, शासनद्रष्टाश्रीजी के सामने जाकर बैठ गयी। दो मिनट तक तो प्रोड्यूसर के रेडिया में फ्रीक्वंसी पकड़ती न हो ऐसा लगा।

''यस... तो आप क्या कह रहे थे...?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने जैसे कि सब नोर्मल हो, इस प्रकार प्रोड्यूसर को अपनी बात चालू करने का कहां।

प्रोड्यूसर शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ ही देखता हुआ जड़ की तरह बैठा रहा। मैंने प्रोड्यूसर को कोहनी से घूंसा मारा।

''हमममममम....'' वो कुछ बोलने लगा। प्रोड्यूसर के मन के विचार बहुत ही तेजगति से चल रहे होने से, वो शब्दों को बोलने के लिए विचारों को एकत्र न कर सका।

''बट...बट...आप ये किस तरह कर सकते हो....?'' लास्ट में प्रोड्यूसर ने अपने मन में चल रही बात रख ही दी। शासनद्रष्टाश्रीजी ने स्मित किया।

''आपकी मम्मी का नाम क्या है? और वे अभी है?'' बुक के बाहर का प्रश्न प्रोड्यूसर के सामने शासनद्रष्टाश्रीजी ने किया।

''हां... उनका नाम पार्वती है।''

''आपके बच्चे है...?''

प्रोड्यूसर ने हां में सिर हिलाया।

''कितने वर्ष के है?''

''एक पांच वर्ष का और दूसरी तीन वर्ष की...''

''आपको उनके प्रति लगाव है...?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने प्रोड्यू-सर की आंखों में देखा।

''अफकोर्स! उसमें पूछने की क्या बात है? मैं तो उनके लिए मरने के लिए भी तैयार हूं।'' प्रोड्युसर में अटूट आत्मविश्वास दिखाई दिया।

''अब आपको समझ में आया द फोर्म्युला ऑफ वॉमिट...?''

शासनद्रष्टाश्रीजी ने लक्ष्य साध दिया। प्रोड्युसर की आंखे नम गयी।

Chapter - 10

30/07/2010 | I.S.T. 16.00 | Bhatia Hospital, Mumbai

FANS अति भयंकर होते है.....।

शासनद्रष्टाश्रीजी हॉस्पीटल में से अपना सामान पैक कर रहे थे। आज *4.15* बजे को डिस्चार्ज देने का डॉक्टर ने कह दिया था।

वोमिट में पड़े खून के टेस्ट में सब नोर्मल आया था और पिछले दस दिनों में रिकवरी एमदम फास्ट हो गयी थी। अब साध्वीजी अपना काम स्वयं कर सके इतनी शक्ति शासनद्रष्टाश्रीजी और डॉक्टर्स ने उनके अंदर भर दी थी।

कुछ लोग आ रहे हो, इस प्रकार पैरों की आवाज सुनाई दी। मैं वार्ड से बाहर देखने गयी। शायद जैनम आया हो। उसे मिले मुझे *15* दिन से ऊपर हो गये थे। *15*TH को वो गोरेगांव से मिलने आया था। रात को बातें तो हर रोज होती ही थी। जैनम ने मुझे कल मेसेज किया था कि डिस्चार्ज होने के समय वो हॉस्पीटल में आ जायेगा।

वार्ड के बाहर मुझे *10* लोगों का ग्रुप आते हुए दिखाई दिया। सब ने एक समान कपड़ें पहने हुए थे-ब्लेक जिन्स और व्हाइट टी-शर्ट। टी-शर्ट के ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था- **I AM A SD FAN.**

नजदीक आने पर पता चला कि *10* व्यक्ति कौन थे। अब्दुल डॉन, प्रोड्यूसर, डीजीपी... बाकी सबको मैं नहीं जानती थी। सबसे पीछे मुझे जैनम दिखायी दिया। वो भी ऐसे ही ड्रेस में तैयार होकर आया था। मेरे मन

में ये ही वाक्य घूमने लगा - **I AM A SD FAN**

मैं अंदर गयी। शासनद्रष्टाश्रीजी अपनी तैयारी करने के बाद रूम साफ कर रहे थे। एक्स्ट्रा सब वस्तुओं को स्वच्छ करके रख रहे थे।

''मैं कर लूंगी म.सा.! आप रहने दो।'' कहकर मैंने उनके हाथ में से कपड़ा ले लिया और दागवाली जगह साफ करने लगी।

''मुझे इस प्रकार जैनम देखेगा तो क्या कहेगा?'' जैनम का हंसता पिक्चर मेरे सामने उभर आया तो भी शर्म के कारण मैंने कपड़ा छोड़ा नहीं, *'' शासनद्रष्टाश्रीजी को शर्म नहीं आती तो मुझे कैसी शर्म?''*

शासनद्रष्टाश्रीजी साध्वीजी को तैयार करने गये। साध्वीजी वैसे तो सब काम अपने आप कर लेते थे, लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी उनको कभी भी अकेले रखते नहीं थे। सतत उनकी नजर साध्वीजी पर ही रहती। एक मां जिस तरह अपने बालक को संभालती है, उससे भी ज्यादा वे साध्वीजी की संभाल करते और इसलिए ही शायद वो मुझे पसंद थे। मुझे अच्छे लगते थे।

रूम के बाहर *10* लोग आ गये थे। शासनद्रष्टाश्रीजी ने ऊपर देखा। डॉन, अब्दुल, जैनम दिखाई दिये। ''क्यों आये हो?'' शासनद्रष्टाश्री-जी ने सबको देखा।

''मैंने अमझदभाई से कहा... ''जैनम आगे आया, ''कि हमारे साधु पैरों से चलकर ही सब जगह जाते है। उनको आश्चर्य हुआ। उनको अनुभव करने की इच्छा हुई, इसलिए वे आये है।''

''और बाकी इतने सारे लोग...'' अमझदभाई के साथ दिखते व्यक्तियों को देखकर शासनद्रष्टाश्रीजी ने पूछा।

''ये भाई की सुरक्षा के लिए...भाई पर अभी *100* केस चल रहे है...'' अमझदभाई हंसे। उनके सोने के दांत चमके।

''जैनम! यहां का बिल भर दिया गया है? उसके बिना मैं यहां से निकलूंगी नहीं। पीछे से यहां के लोग ऐसा न बोले कि ''जैन लोग बिल भरते नहीं...'' मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी की नीतिमत्ता देखकर आनंद हुआ।

जैनम ने आगे आकर बिल बताया। टोटल *75* लाख का बिल था। नीचे बिल भरनेवाले की साईन थी।

''ये साईन किसकी है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने ईशारे से पूछा। जैनम दो मिनट तक कुछ भी नहीं बोला।

''क्या हुआ जैनम? बोल...''

जैनम ने डॉन की तरफ इशारा किया। शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखे ऊँची हो गयी।

''शासनद्रष्टाश्रीजी! मैंने मेरी जिन्दगी में पहलीबार मेरे वाइट अकाउंट में से चेक में बिल भरा है। प्लीझ! आप मना मत करना... ''अम झदभाई हृदय से बोल रहे है ऐसा लगा।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने बिल को जैनम को देकर बाकी की तैयारी कर ली। मैं भी तैयार हो गयी। जैनम ने मुझे देखकर फ्लाइंग किस की। मैंने भी उसे रिटर्न की। वो खुश हो गया। मैंने मेरी बेग पैक की।

इजाग्रस्त साध्वीजी में इतनी ताकत नहीं थी कि इतने सारे फ्ल-ोर से नीचे उतर सके। इसलिए मैंने और शासनद्रष्टाश्रीजी ने उनको स्ट्रेचर के ऊपर उठाने का निर्णय किया था।

शासनद्रष्टाश्रीजी और हॉस्पीटल की व्हीलचेयर पर बैठे हुए जख्मी साध्वी ने आंखे बंद की और कुछ बोलने लगे। कोई मंत्र (शायद नवकार मंत्र) बोल रहे हो ऐसा लगा।

मैंने भी मुझे वापस इस हॉस्पीटल में पैर रखना ना पड़े, इसके लिए प्रभु से प्रार्थना की। शासनद्रष्टाश्रीजी ने साध्वीजी की व्हीलचेयर को गतिमान किया और सब चलने लगे। 10 व्यक्ति के टी-शर्ट पर लिखे उनके नाम और कम्पनी का लोगो दिखाई दे रहा था । ADIDAS

हम लिफ्ट के वहां पहुंचे। अमझदभाई ने बटन दबाया।

''अमझदभाई! संत फरिश्ते सीडी उतर के ही जायेगें।''

''ओह! पर ये संत तो चल नहीं सकते... फिर।'' जख्मी साध्वीजी के सामने देखते हुए उसने कहां। शासनद्रष्टाश्रीजी ने ''DON'T TAKE TENSION'' को व्यक्त करती साईन की। शासनद्रष्टाश्रीजी और मैंने साईड में पड़े हुए स्ट्रेचर पर साध्वीजी को सुलाया। अमझदभाई स्ट्रेचर उठाने के लिए आये।

''सॉरी, जेन्ट्स इनको टच नहीं कर सकते...'' मैंने कहा। डॉन

रुक गया। लिफ्ट में से सादिया बाहर आयी। उसने भी सेम टी-शर्ट पहना हुआ था। साथ में उसने टाईट जीन्स पहना हुआ था।

सादिया ने शासनद्रष्टाश्रीजी को स्ट्रेचर उठाते हुए देखा।

"WAIT...WAIT...WAIT..." सादिया शासनद्रष्टाश्रीजी के पास आयी, ''मैं तो उठा सकती हूं ना?'' शासनद्रष्टाश्रीजी के मुख पर स्माईल आयी। उन्होनें सादिया को स्ट्रेचर दे दिया।

डॉन अमझदभाई की आंखें ये नजारा देखकर पानी से भर गयी।

Chapter - 11

30/07/2010 I.S.T. 16.45 Bhatia Hospital, Mumbai

FAN FOLLOWING अति भयंकर होती है.....।

हांफते-हांफते मैं और सादिया साध्वीजी को स्ट्रेचर में ग्राउण्ड फ्लोर पर लेकर आये। **K2 TOWER** में मैं कभी भी सीढ़ियों से उतरी नहीं थी।

''तू ठीक है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे स्माईल के साथ पूछा। मैंने सिर हिलाया। इतना श्रम कोमा में से बाहर आने के बाद मुझे शायद पहलीबार ही करना पड़ा था।

स्ट्रेचर पर सोये हुए साध्वीजी को भी थकान लगी हो ऐसा लगा। शासनद्रष्टाश्रीजी ने उनको चेयर पर बिठाया। सादिया ''मैं व्हीलचेयर लेकर आती हूं...'' कहकर दौड़ी। शासनद्रष्टाश्रीजी ने अपने कपड़ों से साध्वीजी के माथे पर आये हुए पसीने को साफ किया।

''शासन...'' शासनद्रष्टाश्रीजी को उनके नाम से बुलानेवाले व्यक्ति को देखने के लिए मैं पीछे मुड़ी। शासनद्रष्टाश्रीजी भी पीछे मुड़े। उस व्यक्ति को देखते ही कभी भी नहीं रोनेवाले शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखों में से मोती जैसी बूंदे गिरने लगी।

उन्होनें तुरन्त ही सामनेवाले व्यक्ति के पैरों में अपना मस्तक रख दिया। सामनेवाले व्यक्ति भी एकदम प्रेम से शासनद्रष्टाश्रीजी की पीठ पर हाथ फेरते रहे।

''शासन...! शासन...! चल उठ! तुमने जबरदस्त वैयावच्च कर ली है। ये तो तुमको सरप्राइज देने के लिए मैं यहां आयी हूं।'' शासनद्रष्टा-श्रीजी नीचे झुककर रोते ही रहे। व्हीलचेयरवाले साध्वीजी भी चेयर से हिलने लगे। उनको भी उस व्यक्ति ने प्रेम दिया।

''गुरूजी! आप शाता में हो?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहा हुआ पहला शब्द मुझे समझ में आया, लेकिन आगे का ''शाता'' शब्द समझ में आया नहीं। सामने खड़े व्यक्ति फरिश्ते के गुरूजी थे।

''आप इतना झड़प से विहार करके क्यों आये?'' गुरूजी ने शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ देखा। ''ये तुम्हें थोड़े समय में ही पता चल जायेगा...'' शासनद्रष्टाश्रीजी पहली बार दुविधा में लगे।

सामने से जैनम के पप्पा आये। मैंने उनको ''हाय अंकल'' कहा।

''मत्थऐण वंदामि...'' ऐसा कुछ शासनद्रष्टाश्रीजी के पास जाकर जैनम के पप्पा ने कहा। मुझे इसका अर्थ समझ में नहीं आया। मैंने जैनम की तरफ देखा।

''पप्पा बोले है कि मैं आपको मस्तक झुकाकर नमन करता हूं।'' मेरे मन की शंका को पकड़कर जैनम ने समाधान दिया। ''ये जैनीज्म का शब्द है...''

'मत्थऐण वंदामि...' मेरे दिमाग में ये विचित्र शब्द फीट हुआ...

जैनम के पप्पा ने भी गोल्ड कॉलर वाला टी-शर्ट पहना था, जिसके ऊपर ये ही सेम वाक्य लिखा हुआ था।

मैंने पास में खडी हुई सादिया की तरफ देखकर शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ इशारा किया ''ये क्या है?'' सादिया हंसी।

''तुम्हें मालूम नहीं है। **SD** मिन्स शासनद्रष्टा।'' इतनी सरल वस्तु नहीं पकड़ सकने के कारण मुझे शर्म आयी।

''जैनम! तुमने मेरे लिए ऐसी टी-शर्ट...'' मैं वाक्य पूरा करूं उससे पहले उसने अपने बेग में से एक टी-शर्ट निकाला... मैंने वो टी-शर्ट लिया। आगे ये ही वाक्य लिखा हुआ था, लेकिन पीछे मेरा और शासनद्रष्टाश्रीजी का स्कैच था। और उसके नीचे **'VIP THE MIRACLE GIRL'** लिखा हुआ था।

''इतनी देर से दिया क्यों नहीं?'' मैंने जैनम को मस्ती में मुंह पर ये ही टी-शर्ट से मारा। वो हंसने लगा। मैंने टी-शर्ट पहन लिया। इसमें विशिष्ट सुगंध डाली हुई थी। मेरे ज्ञानतंतु खुल गये। साध्वीजी की व्हील-चेयर आ गयी थी। मैंने और सादिया ने साध्वीजी को उठाकर व्हीलचेयर में बिठाया।

''तुने ये क्या पहना है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे आकर पूछा।

''शासन! रहने दे। मैंने ही जैनम को इसके लिए बनवाने को कहा था।'' शासनद्रष्टाश्रीजी को अपनी गुरूजी के शब्दों को सुनकर आश्चर्य हुआ।

''चल अब हम बाहर चलते है... तुम्हें जैन भवन पहुंचाने के लिए बहुत सारे लोग आये है।'' हम सब भाटिया हॉस्पीटल के एक्झीट की तरफ जाने लगे।

हम भाटिया हॉस्पीटल के एक्झीट तक पहुंचे ही थे कि ''स्टॉप'' ऐसी जोर से आवाज आयी, सब रूक गये। शासनद्रष्टाश्रीजी ये किसी आवाज थी ये देखने के लिए बाहर गये। मैं उनके पीछे-पीछे गयी। बाहर का दृश्य देखकर मैं चकित रह गयी। हॉस्पीटल का पूरा रोड़ ब्लॉक कर दिया गया था। रोड़ के दोनों साईड पर मुम्बई पुलिस की दो गाड़ियां खड़ी थी। बीचोबीच एक बड़ा स्टेज बांधा हुआ था।

उस स्टेज पर शासनद्रष्टाश्रीजी का बड़ा फोटो लगाया हुआ था। उसके नीचे स्टाईलीस्ट अक्षरों में लिखा हुआ था।

'I AM A S.D. (SHASANDRASHTA) FAN..'

स्टेज पर एक बड़ा टेबल और डायस था। उसके ऊपर एक बड़ी चेयर थी जिसके ऊपर मेरे आश्चर्य के बीच भवनिस्तारक बैठे हुए थे। उनके आस-पास उनके जैसे ही बहुत से जैन साधु थे।

स्टेज की राईट साइड पर एक बड़ा दूसरा डायस था। उसके ऊपर एक बड़ी चेयर थी जिसके ऊपर भी दो व्यक्ति बैठे सके। वो अभी खाली थी।

स्टेज के लेफ्ट साईड पर और भी एक डायस था, जिसके ऊपर

VIP सीटें थी। उसमें बीच वाली सीट के सिवाय सब सीटें फुल थी। बॉम्बे कमीश्नर, चीफ मिनीस्टर, होम मिनीस्टर, लोकल M.L.A, सब हाई लेवल के बिजनेसमेन वहां बैठे हुए थे। मैंने तेजस को भी वहां लोकल M.L.A, के पास बैठा हुआ देखा।

उसी जगह एक बड़ा डी.जे. सेट लगाया हुआ था जिसमें से स्टॉप आवाज आयी थी। शासनद्रष्टाश्रीजी बाहर देखने निकले कि जैसे सचिन तेंडुलकर को ''सचीननननननन...सचीन....'' की चीअर करते है, वैसे ही "SDDDDDD....SDDDDD....." की चीयरिंग चालू हो गयी। लगभग 20-30,000 लोग इकट्ठा हुए थे। सभी ने "SDDDDDD.... SDDDDD....." की चीयरिंग चालू की। शासनद्रष्टाश्रीजी वापस पीछे आ गये। उनके चेहरे पर ''ये सब क्या है?'' के भाव दिखाई दे रहे थे।

''थोड़ी वस्तुऐं शासनप्रभावना के लिए महत्त्व की होती है। बस इस तरह विचार कर।'' शासनद्रष्टाश्रीजी को गुरूणीजी ने कहा। गुरूणीजी ने शासनद्रष्टाश्रीजी का हाथ पकड़ा और स्वयं उन्हें बाहर लेकर गये। चीयरिंग बढ़ता गया। स्टेज के ऊपर जाने के लिए रेम्प बनाने में आया था। जिस टाईम पर शासनद्रष्टाश्रीजी ने रेम्प पर पैर रखा, उस टाईम ''जोधा-अकबर'' की ट्यून चालू हो गई। ''अजीनोशान शहेनशाह'' गीत बजने लगा।

मुझे भी स्टेज पर जाना है या नही, इस बात की दुविधा में मैं थी। जैनम ने मुझे स्टेज पर मेरी सीट बतायी। उसके आगे के टेबल पर मेरा नाम **'मिरेकल गर्ल'** लिखा हुआ था।

चारों तरफ लोग हाथ में प्ले-कार्ड्स लेकर खड़ें थे।

'YOU ARE MY SAVER...'

'MAY GOD KEEP YOU AWAY FROM HOSPI-TALS, BUT NEAR ME...'

'IF YOU WOULD NOT BE IN THE WORLD,

WHAT THE WORLD WOULD BE...'

'WE HAVE NOT SEEN MIRACLES, BUT WE HAVE SEEN YOU, YOU ARE A SOURCE OF POWER FOR THE UNPOWERED...'

'MAY YOUR GRACE FALL UPON US.."

जैसे अनगिनत मेसेज प्लेकार्ड्र्स पर लिखे हुए थे।

रेम्प के दोनों ओर क्राउड-कन्ट्रोल के लिए मुम्बई पुलिस खड़ी थी। मैंने आंखे बंद करके वातावरण की अनुभूति ली। वातावरण बहुत एनर्जीटिक था। एक सकारात्मक अभिगम सब लोगों में फैला हुआ था।

किसी-किसी जगह से ''अपेक्षा मिरेकल गर्ल'' की आवाजें सुनाई दे रही थी। मैं एड के बाद फेमस हो गयी थी। उस एड के कारण NGO को दस करोड़ रूपये का डॉनेशन अबतक आ गया था। अब प्रोड्युसर ने शासनद्रष्टाश्रीजी को मुझे एक और एड करने के लिए अनुज्ञा देने को कहा था, लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी ने तब कोई प्रतिभाव नही दिया था।

केमेरे के हजारों फ्लेश पड़ रह रहे थे। बोलीवुड में पिक्चर में देखी हुई ऐक्टर की एन्ट्री से भी ज्यादा जोरदार एन्ट्री हमारी थी। हम डायस पर पहुंचे।

मैनेजमेंट वाले लोगों ने मुझे बुके देकर मेरी सीट पर बिठाया। मेरे आगे एक केक और चॉकलेट का बॉक्स रखा हुआ था। मेरे पास की सीट पर जैनम के पप्पा आकर बैठे। वे भी आमंत्रित मेहमान थे। उन्होनें मेरे सामने देखकर पलके झपकायी।

शासनद्रष्टाश्रीजी को राईट साइड के डायस पर रखी हुई बड़ी चेयर पर उनके गुरूजी के साथ बैठने के लिए सभी आग्रह कर रहे थे। लेकिन वे इसमें कम्फर्टेबल नहीं थे। वे कभी भी अपने गुरूजी के साथ एक ही चेयर पर नहीं बैठे थे। गुरू के आग्रह से वे चेयर पर बैठे, लेकिन अस्वस्थता एकदम स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

मैं मेरी सीट में अलग-अलग लोगों का रिएक्शन देखते हुए बैठी रही। एकदम मधुर गीत जो कि शासनद्रष्टाश्रीजी के ऊपर बनाया गया था, वो बजाने में आया। लोग एकदम शांत हो गये। म्युझिक बहुत भाववाही था।

गीत पूरा हुआ और अमझदभाई डॉन माईक के पास पहुंचा। बोलीवुड के फेमस एक्टर ने माईक डॉन के हाथ में दिया।

''मेरे भाईयों...और बहनों...!'' डॉन की तरफ सब के चेहरे मुड़े। बॉम्बे में डॉन बहुत प्रसिद्ध था। इसलिए उसके सामने सम्पूर्ण एकाग्रता की आदत सबको पड़ी हुई ही थी।

''टूडे...'' युथ को डॉन के मुख में से इंग्लिश शब्द सुनकर आश्चर्य हुआ। ''हम सब एक नेक काम के लिए इकट्ठा हुए है। मैं पिछले 40 साल से अन्डरवर्ल्ड के साथ जुड़ा हुआ था। जब मैं छोटा था, तब मेरी अम्मा कहती थी कि तूं बड़ा होकर एक नेक आदमी बनना... पर अफसोस.....'' डॉन के चेहरे पर एक रंज दिखाई दिया।

''मेरी अम्मा इस दुनिया से अल्लाह के पास चली गई... और मैं उनके लफ्जों को पूरा नहीं कर सका... लेकिन शायद अब अम्मा ऊपर से देखती हो तो...'' डॉन ने आकाश की ओर देखा। सूर्य अस्त होने जा रहा था।

''तो वो आज बहुत खुश होती....क्योकि आज मैं मेरी दूसरी माँ...'' डॉन ने शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ अपनी अंगुली से ईशारा किया। शासनद्रष्टाश्रीजी की आंखों में से दो बूंद पानी टपका, ऐसा मुझे दिखाई दे रहा था।

''फरिश्ते की इच्छा के अनुसार मैं अपने सारे गैरकानूनी कारोबार बंद करने जा रहा हूं।'' शब्द तालियों की गड़गड़ाहट में डूब गये।

''और आज...'' सब शांत हो गये। ''और, आज.... मैं शासनद्रष्टाश्रीजी को ऑफिशियली C.M. कमीश्नर और उपस्थित V.I.P.S के सामने एक पद देना चाहता हूं....

''फरिश्ता....''

Chapter - 12

15/08/2010 I.S.T 9.30 August Kranti Ground, Mumbai

INDEPENDENCE अति भयंकर होती है.....।

15वी अगस्त! भारत का 63 वां स्वातंत्र्य दिवस!

अगस्त क्रांति मैदान चारों ओर से पब्लिक से पैक था। SD FAN ग्रुप ने वहां जो प्रोग्राम अरेंज किया था, उसमें मुझे भी स्पीच देनी थी। वैसे तो मेरी स्पीच देने की शक्ति कम थी, फिर भी पिछले एक महिने में हुए सेमिनार, न्यूझ में स्पीच देने के कारण अब धीरे-धीरे स्पीच पर प्रभुत्व आ रहा था।

शासनद्रष्टाश्रीजी ग्वालियर टैंक ही ठहरे हुए थे और इसलिए ही SD फेन्सवालों ने प्रोग्राम अगस्त क्रांति में रखा था। एक बहुत बड़ा स्टेज बनाने में आया था, जो तिरंगें झंडे के कलर के कॉन्सेप्ट में सजाया हुआ था।

मैं मेरी 1ST रो में रही हुई चेयर पर जाकर बैठी । मेरे मोबाइल में मैं मेरी तैयार की स्पीच को पढ़ रही थी।

''हाय!'' जैनम पास में आकर बैठा।

''ओ, तुम्हारी सीट कहां है?'' मैंने मजाक में पूछा।

''मेरी सीट किसी भी जगह पर तेरे पास ही होगी... तूं जहां है, मैं वहां बायडि... फॉल्ट...'' उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैं हंसी।

''क्या चल रहा है?'' पिछले 15 दिनों से मैं फेन्स के फोनों के

कारण जैनम से बात ही नही कर सकी थी। दो दिन पहले भी बात हुई थी, लेकिन एकदम ऊपर-ऊपर से।

हर रोज मैं ''सॉरी'' मेसेज भेजती थी। मुझे इतने समय से शासनद्रष्टाश्रीजी के साथ रहते हुए भी जैनम का आकर्षण रहता था, इसलिए मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि ''जैनम में ऐसा क्या है?''

शासनद्रष्टाश्रीजी स्टेज पर आये। भवनिस्तारक भी इस प्रोग्राम में आनेवाले थे, लेकिन वो अभी तक आये नहीं थे।

सब फेन्स खडें हो गये। ये एक फेन्स कोड बन गया था कि जब S.D आये तब सभी को कम्पलसरी खड़ा होना। ये कोड का प्रस्ताव डॉन ने रखा था, इसलिए इसे कोई भी ठुकराये ऐसा नहीं था। शासनद्रष्टाश्रीजी ने ईशारा किया और सब अपनी-अपनी सीट पर बैठ गये। एक SD फेन कि जो स्वयं ही बड़ा वक्ता था और दूसरा एक SD फेन जो कि बड़ा सिंगर था, उनकी जोड़ी स्टेज पर खड़ी थी।

सिंगर ने ''वंदे मातरम' गीत गाया। सब उसके साथ जुड़े। जैसे कि लाईव कोन्सर्ट में बैठे हो, ऐसा अनुभव हो रहा था। मेरे हृदय में देश के लिए कुछ करने की इच्छा, इस गीत को सुनकर हुई।

फिर एन्कर ने 1ST लाईन में बैठे हुए चीफ गेस्ट डॉक्टर मनमोहन का जो कि इन्डियन ब्यूरोकेसी में बहुत बड़ी पोझिशन में थे, उनका परिचय दिया। फिर दूसरों का भी परिचय देते-देते वो मेरी तरफ आया ''दी मिरेकल गर्ल और शायद SD की सबसे नजदीक की व्यक्ति।''

मुझे ये शब्द लग गये। *''क्या मैं SD की सबसे नजदीक थी?''*

तिरंगा लहराने में आया। शासनद्रष्टाश्रीजी भी राष्ट्रगीत ''जन-गन-मन'' के समय खड़े हुए थे। भवनिस्तारक भी आ गये होने से, उन्होनें एक प्रास्ताविक स्पीच दी और फिर उनके लिए बनाये गये तीन कलर के स्टॅण्ड पर जाकर बैठ गये। वे वैसे के वैसे ही ऊर्जाशाली और प्रभुत्ववाले लग रहे थे। सब सेटल हो गये।

''एण्ड नाऊ वी कॉल द स्टार ऑफ आर हार्ट्‌र्स फरिश्ता शासनद्रष्टाश्रीजी टू स्पीक अपॉन इन्डिपेन्डन्स...'' तीन मिनट तक लगातार तालियां बजी।

शासनद्रष्टाश्रीजी उनके लिए SD फेन्स ने खास तैयार की हुई तीन कलर की केबिन में जाकर बैठ गये। ये केबिन खास उनकी आवाज को 30-40000 लोगों तक पहुंचाने के लिए टॉप इंजीनियर्स जो कि SD फेन्स के मेम्बर्स थे, उन्होनें बनायी थी। इसमें इलेक्ट्रीक का प्रयोग बिल्कुल भी करने में नहीं आया था। मैं शासनद्रष्टाश्रीजी को सुनने के लिए अपनी सीट पर एकदम सीधे होकर बैठ गयी। बाकी सबका भी ध्यान केबिन में बैठे हुए शासनद्रष्टाश्रीजी (SD) पर था।

''क्या हम स्वतंत्र है?'' संवेदना से भरी आवाज सुनायी दी। मैंने नोर्मली जो SD की आवाज सुनी थी उससे भी ज्यादा मीठी आवाज केबिन में से आ रही थी। ग्राउण्ड में नीतान्त शांति छा गयी थी और ये प्रश्न सुनकर ज्यादा सन्नाटा छा गया।

''आप कहते हो कि गांधीजी की मेहनत से 15 अगस्त 1947 के दिन हमें स्वतंत्रता मिली, बट आई वील लाईक टू आस्क यू ए क्वेस्चन... आर वी फ्रीड?'' बीच में SD में ने श्वास लिया।

''पहली वस्तु ये है कि आप स्वतंत्रता को क्या समझते हो? स्वतंत्रता वो वस्तु है, जिसमें आप किसी के ऊपर भी परतंत्र न रहो।'' सभी ने सिर हिलाया।

''लेकिन मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि आप किसी वस्तु पर परतंत्र हो या नहीं?'' शासनद्रष्टाश्रीजी रूके।

''जब तक आपकी नीड और ग्रीड खड़ी है, तब तक आप फ्रीड कैसे कहलाओगे? आप कहते हो कि मैं A.C. के बिना नहीं जी सकता हूं, मैं वाईफ के बिना नहीं जी सकता हूं, मैं SD के बिना नहीं जी सकता हूं, तो आप उन-उन वस्तुओं पर निर्भर होने से फ्रीड हो कि अनफ्रीड हो?''

''एक वस्तु समझ लो, जब तक आप किसी दूसरी वस्तु के साथ हो, तो आप फ्रीड नहीं, फिर वो मम्मी हो, नौकरी हो, गर्लफ्रेंड हो या मैं होऊं। जब आप अकेले हो तब ही आप स्वतंत्र हो।

हम हर वर्ष देश की आझादी का गीत गाते है, लेकिन हम कब अपनी आझादी का गीत गायेगें? क्या आपने कभी इस बारे में विचार किया है?''

ऐसी फायरिंग सतत 15 मिनट तक चली। सभी अंदर तक हिल गये। मैंने पहली बार शासनद्रष्टाश्रीजी को इतने अटेक मोड में देखा था।

SD अपनी केबिन से बाहर निकले। 10 मिनट तक पूरी सभा तालियों से गूंजती रही। मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी ने मेरा रास्ता बता दिया था। मैंने मेरी भीगी आंखें बंद की।

''परतंत्रता, परतंत्रता....''

Chapter - 1

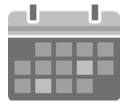

18/08/2010 I.S.T 21.00 Gwalior Tank, Mumbai

REASON अति भयंकर होता है.....।

मैं लेपटॉप पर एक रूम में बैठकर फेन्स की आयी हुई शंकाओं का उत्तर दे रही थी। आज की रात मैंने SD के साथ ही गुजारने की नक्की की थी।

पहले तो मम्मी-पप्पा तैयार ही नहीं हुए थे, लेकिन मेरे आंसूओं को देखकर उन्होनें अनुमति दे दी थी। हॉस्पीटल से घर आने के बाद पूरे K2 टावर्स में मेरा स्टेटस बदल गया था। सब मुझे एक रोल मॉडल की तरह देखते और मेरे पास अपनी प्रोब्लम्स शेयर करते । जो प्रोब्लम्स ज्यादा कठिन होती उसका समाधान मैं SD के पास से लेती। SD को अकेले रहना बहुत अच्छा लगता था, इसलिए SD फेन्स को मेसेज पहुंचा दिया था कि SD को डायरेक्ट डिस्टर्ब नहीं करे। जो भी शंका हो वो फेसबुक पेज या वेबसाइट पर पूछना।

को-ऑर्डिनेटर के रूप में मुझे रखा गया था, क्योंकि मेरा और SD का तालमेल बहुत अच्छा था।

आज पूरे दिन में मैं SD से नहीं मिल सकी थी, क्योंकि वे आज बहुत व्यस्त थे। आज सभी साध्वीयों का सम्मेलन था। जिसमें SD को विशेष स्थान मिला था और इसलिए ही वे तो पूरे दिन साध्वीजी के साथ ही थे। उनके परिवार को मेरे फेन्स के छोटे प्रॉबलेम्स के लिए डिस्टर्ब करना

मुझे योग्य नहीं लगता था।

"हे अपेक्षा! यहां आ।" SD के गुरूणी ने मुझे बुलाया। मुझे आश्चर्य हुआ। दस दिन में पहली बार उन्होनें मुझे बुलाया था। बाकी तो वे दूसरे साध्वीजी भगवंत के साथ ही उनको पढ़ाने में व्यस्त रहते थे। उन्हें पढ़ने और पढ़ाने का हद से ज्यादा शौक था।।

मैं मेरे लेपटॉप की स्क्रीन नीचे करके उनके पास गयी। वे एक कोने में बैठे हुए थे।

"हां क्या हुआ?" मैंने उनकी तरफ देखा। उनके चेहरे पर SD से भी ज्यादा शांति छायी हुई थी।

"नहीं... ये तो यूं ही तुझे बुलाया। मुझे मेरी SD ...." गुरूणी ने मजाक में कहा, "जिसके लिए" गुरूणी रूक गये। मुझे बड़ा विचित्र लगा।

"मेरे लिए क्या....?" विचार ने पीछा छोड़ा नहीं। मेरे मन में ये प्रश्न बहुत भारी हो गया।

"आप क्यों रूक गये...? प्लीझ! कहिए ना? आप यदि अब नही कहोगे तो मैं रात को सो नहीं सकूंगी।" मैंने फटाफट बोल दिया। मुझे गुरूणी प्रसन्नता के साथ देखते रहे।

"तू सचमुच ही विशिष्ट है।" मुझे कुछ भी उनका कहा समझ में नही आया।

"प्लीझ! मुझे कहो!" मैंने विनंती की..."

"द स्टोरी इझ लोंग..." हंसते-हंसते गुरूणी ने अपनी तू-टी-फूटी इंग्लिश में कहा।

"मैं पूरी स्टोरी सुनुंगी। वैसे भी आज मैं यहां ही नाईट-आउट करनेवाली हूं।" गुरूणी ने मुझे अपनी वेधक दृष्टि से देखा।

"तो शायद मैं पूरी स्टोरी कहूंगी।" गुरूणी कुछ विचार कर रहे हो ऐसा मुझे लगा।

"मैं सब अच्छा और बुरा सुनने के लिए तैयार हूं। आप संकोच न करो।" गुरूणी हंसे। उन्होनें मेरे सिर पर हाथ रखा।

"तो, कहां से स्टार्ट करूं। हममममममम....

हमारा पाली में चौमासा था, ये तो तुझे पता ही है। तूं जब वहां

हमें मिलने आयी थी, तब SD जो कि एक बहुत होशियार साईकोलॉजी रीडर है, उसे तेरे अंदर एक विशिष्ट टेलेन्ट छुपी नजर आई।

तेरी ड्रेसिंग सेन्स मॉर्डन है और पहले भी थी, लेकिन उस ड्रेसिंग में भी SD की अंदर देखने की शक्ति अकल्पनीय है। उसने तेरा रीडिंग कर लिया।

फिर 4 महिने के बीच में ही जैनम के द्वारा हमें तुम्हारी कमनसीब घटना के समाचार मिलें। मैंने शासन को पहली बार थोड़ा तनाव में देखा। उसने तेरे लिए मंदिर में डायरेक्ट प्रार्थना चालू कर दी।"

मुझे आश्चर्य हुआ, *"मेरे लिए प्रार्थना?"*

गुरूणी आगे बढ़े...

" चार महिने हो जाने के बाद एक दिन शासन मेरे पास आयी और कहा कि "गुरूजी! एक पवित्र आत्मा को मेरी अभी जरूरत है.... यदि आप मुझे अनुमति देते हो तो मैं फटाफट विहार करके बोम्बे पहुंचना चाहती हूं।

शासन ने पहली बार मुझसे कुछ मांगा था। 15^{TH} के दिन स्व-तंत्रता पर शासन ने जो स्पीच दी थी, वो उसकी संपूर्ण लाईफ में सचमुच ही घटित है। वो खुद के सिवाय दूसरे किसी के पास कभी भी कुछ भी मांगती नहीं है, परतंत्र रहती नहीं है।

मैं उसे "ना" नहीं कह सकी, क्योंकि वो जो भी करती है, बहुत सोच-समझकर ही करती है। उसका निर्णय हमेशा सही साबित होता है। उसकी कोई शिष्या नहीं होने के कारण मैंने उसे मेरी मेरी 5 शिष्या दी।

शासन ने "ना" कहा कि "मुझे इन सबकी जरूरत नहीं है", लेकिन मुझे पता था कि ये सबको संभालने में सक्षम है।

मुम्बई के लिए निकलते समय उसकी आंखों में आंसू थे। कभी भी इतने वर्षो में वो मुझसे अलग नही हुई थी। वो मुझे भगवान से भी ज्यादा मानती है।" संवेदनाओं से भर जाने के कारण दो मिनट तक मौन छाया रहा।

"फिर उसने विहार किया।" नॉर्मल होकर गुरूणी ने चालू किया। "वह हर 7 दिन में एक बार मुझे पत्र लिखती। बीच में उसे एक बार बुखार

आ गया था, तब मुझे बहुत टेन्शन हो गया था। लेकिन अगले पत्र में तबीयत अच्छी होने की बात सुनकर मुझे आनंद हुआ। पाली में प्रतिष्ठा-नया मंदिर बन रहा था, इसलिए हमारा वहां रहना जरूरी था।

फिर तो फास्ट विहार करके मैं बोम्बे पहुंच गयी। इसने मुझे एक पत्र में तेरे कोमा की बात, उसमें से तू बाहर कैसे आयी उसकी स्टोरी लिखी थी। मुझे ये सब जानकर आश्चर्य हुआ, अशक्य जैसा लगा।

तेरे भाग्य और शासन की शक्ति पर मुझे नाझ हुआ। भगवान ने शासन की प्रार्थना सुन ली। तू बच गयी। फिर मैंने भी प्रोग्राम पूरा होने के बाद पाली से बोम्बे विहार चालू कर दिया। और ये मैं तेरे सामने बैठी हूं... तुम्हें कुछ समझ में आया...?'' गुरूणी ने मेरी ओर देखा।

मेरी आंखें पानी से भीगी हुई थी। मुझे पता था कि SD बोम्बे आनेवाले है, लेकिन वो मेरे लिए आनेवाले थे, ये मुझे पता नही था।

''मेरे अंदर क्या टेलेन्ट है?'' मुझे इस विचार ने अंदर से हिला दिया।'' *''मेरे पास कोई टेलेन्ट नही है और तो भी SD मेरे लिए आये... मैं किस तरह इनकी इच्छा को...विश को पूरा करूंगी?''* मेरी आंखों से आंसू निकलने लगे।

गुरूणी ने मेरे सिर पर हाथ रखा। ''तू एक चीज समझ ले कि जब शासन ने तुम्हारे अंदर टेलेन्ट देखा है, तो वो नहीं हो ना, तो भी वो आ जायेगा... उसे ये ला भी सकती है और प्रकट भी कर सकती है... और भी एक वस्तु....'' अपनी जगह से उठते हुए गुरूणी ने कहा। स्टोरी अपने हेप्पी (!) एन्डिंग पर आ गई थी।

''मैं अपेक्षा रखती हूं, कि तू अपेक्षा, शासन की अपेक्षा को तोड़ेगी नही... बेस्ट ऑफ लक....''

Chapter - 2

19/08/2010 | I.S.T 8.00 | Gwalior Tank, Mumbai

समझाना अति भयंकर होता है.....।

मैं कांच में देखकर अपने बाल संवार रही थी। जिस रूम में मैं ठहरी थी, वो साधु-साध्वी के लिए नही था। 10 मिनट पहले ही मैं उठी थी। गुरूणी के वाक्य सुनने के बाद मुझे नींद ही नही आयी थी।

रात को जैनम को फोन करने की इच्छा हुई थी, लेकिन यदि मैं ये सब उसे कह देती, तो वह टेन्शन में आ जाता और यदि मेरे मम्मी-पप्पा को ये सब पता चलता तो... मैं ये बात सोचने के लिए तैयार ही नहीं थी।

सुबह 5 मिनट पहले ही मैंने मम्मी को मेसेज किया था कि *'15 दिन मैं यहां ही रहनेवाली हूं।'* मम्मी का तुरन्त ही *'क्यों'* मेसेज आया था।

मैंने साध्वीजी की तबीयत खराब है, ऐसा झूठ लिखा था । मम्मी को संतोष नही हुआ था और उसने विडियो कॉल किया था। मेरे पास दूसरा कोई उपाय नहीं होने से मैंने कॉल उठाया था।

''अपेक्षा! तूं कितनी फिक्की लग रही है।'' मुझे देखते ही पहली कमेन्ट मम्मी ने की थी।

''मैं अभी ही उठी हूं... मम्मी! मैं यहां ही रहनेवाली हूं, ये OK है ना?'' मैंने एकदम दीनता चेहरे पर लाकर पूछा था।

''हां, लेकिन अब कितने ही दिनों से तू हमारे साथ रही ही नही

है। हम अभी आगे के 10 दिनों की ट्रीप प्लान कर रहे थे शांघाई, लेकिन तूं तो...'' मम्मी के चेहरे पर उदासी दिखाई दे रही थी।

''मैं इसके बारे में विचार करूंगी और एक बार S.D. को पूछ लूंगी... लेकिन अभी तो मेरी इच्छा...'' बैटरी लो हो जाने से मोबाइल बंद हो गया था। मैंने मोबाइल चार्जिंग में रखा था। फिर बाद में मेसेज आया था ''OK।''

कोई रूम में आया हो, ऐसा लगा। मैं अपने खुले बालों के साथ पीछे मुड़ी। S.D. खड़े थे। ''तू गयी नही अपेक्षा?'' आश्चर्य भाव के साथ S.D. ने पूछा।

''नहीं....'' मैंने नीचे धरती को देखते हुए उत्तर दिया।

''आज तू दुःखी दिख रही है... क्या हुआ? मैंने देखा था कि तू गुरूणी के साथ कल बैठी हुई थी। सब ठीक है ना?'' मेरी आंखो में आंसू आ गये। अब मैं अपने आपको संभाल नहीं सकी।

मैंने S.D. को देखकर डायरेक्ट हग किया और जोर-जोर से रोने लगी। S.D. ने अपना जादुई हाथ मेरे सिर पर घुमाया।

''क्या हुआ अपेक्षा?'' S.D. ने पूछा। मैं रोती रही। एक मां के प्रेम को भी फीका कर दे ऐसे प्रेम को मैं पीती रही। S.D. के गुरूणी अंदर आये। वे हमारा दृश्य को देखकर आनंदित हुए।

''शासनद्रष्टा! कल रात को मैंने इसे तेरे यहां आने का कारण... कह दिया। इसलिए... 'S.D. ने मेरी ओर देखा। मैंने सिर ''हां'' में हिला-या।

''चल! अब शांत हो जा... बहुत हो गया।'' मैंने रोना बंद किया और जमीन पर S.D. के पैरों के पास बैठ गयी। शासनद्रष्टाश्रीजी भी नीचे बैठ गये।

''शासनद्रष्टाश्रीजी! आपको मेरे में क्या दिखाई देता है कि जिसके कारण...'' मैं आगे बोल ही नहीं सकी। S.D. ने मेरे ऊपर किया हुआ उपकार मुझ पर हावी हो गया।

''SHHHHH.... इस दुनिया में हरएक व्यक्ति एक खास क्षमता लेकर आता है। और उस क्षमता को बाहर निकालने के लिए उसे किसी का सपोर्ट चाहिए। बस ये सपोर्टर के रूप में मैं हूं।'' मुझे थोड़ी राहत मिली। लेकिन ये *''क्षमता क्या थी?''* ये प्रश्न अभी भी मेरे मन में चल ही रहा था।

''अब, तूं अपेक्षा! तेरे घर जा...'' S.D. ने उठते हुए कहा।

''लेकिन, मैंने अभी मम्मी को कह दिया है कि मैं 15 दिन तक आनेवाली नहीं हूँ। उन्होंने शांघाई जाने की बात भी की थी, लेकिन मैंने मना कर दिया...''

''तो क्या हुआ? अब मेसेज कर दे मैं आ रही हूं... हमेशा एक बात अपनी लाईफ में याद रखना, ''कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है।'' यदि तुम्हें हमारे साथ रहना है तो तुम्हें दूसरों को संतोष देना पड़ेगा, नहीं तो वे तुझे तेरे रास्ते पर सरलता से जाने नहीं देगें, और इसलिए ही...'' मैंने S.D. के सामने देखा।

''तू शांघाई देखकर और जाकर आना। तू जब दुनिया को देखेगी ना, तब ही तुझे पता चलेगा कि सच्चा क्या है और गलत क्या है... हेप्पी जर्नी....''

Chapter - 3

1/9/2010

I.S.T. 10.00

Shanghai, China

JOURNEY अति भयंकर होती है.....।

गगनचुंबी बड़ी-बड़ी बिल्डिंगों से हम चारों ओर से घिरे हुए थे। सीटी का इन्फ्रास्ट्रक्चर दिमाग के बाहर का था। मैंने पहली बार इतना कोन्क्रीट वर्ल्ड देखा था। मुम्बई को शांघाई तक पहुंचने में वर्षों निकल जाये, इतना इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्लानिंग हरएक वस्तु में दिखाई दे रहा था।

मैंने मेरे DSLR केमेरे से आसपास के रमणीय जगहों के फोटो खिंचे। एक ब्रिज के नीचे खड़े रहकर मैंने मेरे परिवार के साथ, हमारे गाइड को केमेरा देकर फोटो खिंचवाया। फिर हमने इंडिया के मॉल्स से कम से कम पांच गुणा बड़े मॉल में एन्ट्री की। रोशनी की विविधता देखकर मेरा मुंह खुला ही रह गया। एक कम्पलीट अलग दुनिया में ही आ गयी हूं, ऐसा मुझे लगा। दो मिनट तक हम हमारे सामने दिखती सभी वस्तुओं को घूरते रहे।

''आप इस तरह हरएक जगह पर खड़े रहोगे, तो हम शांघाई का 1% भी नहीं देख सकेंगें...'' गाईड ने कहा। तब हम कुछ उस चकाचौंध की दुनिया में से बाहर आये। हम पहले ग्राउण्ड फ्लोर पर रही हुई कपड़े की दुकान में गये। अकल्प्य ट्रेन्डवाली वस्तुऐं वहां देखने को मिली। वहां मैंने एक ड्रेस देखा, जो कि पिंक कलर का था। उसके ऊपर सिल्वर लेस लगायी हुई थी। मैं उसे स्पर्श करने गयी। वहां ही पप्पा ने मेरा हाथ पकड़ा और नीचे लिखी हुई वस्तु पढ़ने के लिए कहा। मैंने टैग देखा।

"MADE FROM PIGS MEAT....."

अभी उल्टी हो जायेगी, ऐसा मुझे लगा। मेरा मन अपसेट हो गया। ऐसा इस चाइना में कितना दिखाई देगा ये ही मैं सोचती रही। हम वो दुकान छोड़कर दूसरी दुकान में गये। एक ही मॉल में लाईन से 100-200 दुकानें थी। जैसे कि बड़ा मेला ही देख लो।

पप्पा ने मुझे आगे की दुकान में से खरीदने के लिए ड्रेस नक्की करने को कहा। ये दुकान प्योर वेज थी। यानी कि यहां लेदर की कोई वस्तु नहीं थी। मैंने वुल में से बनाया हुआ टॉप देखा। वह ब्राउन कलर का था और उसमें वुल बाहर लटक रहा था।

''मुझे ये लेना है पप्पा...'' मैंने टॉप पर लगी हुई कीमत देखी। 199 RMB - 2000 रूपये के आसपास का वह टॉप था। ''तू एक बार ट्राय कर ले, फिर हम ले लेंगें।'' मम्मी ने मुझे ट्रायल रूम की तरफ इशारा किया। मैं और मम्मी वहां गये। मम्मी ने भी कुछ ड्रेस लिए। हम दोनों ने ट्रायल करके देखा।

मैं जैसे कि कार्टुन में से निकली हुई स्नो वाइट न हूं, ऐसी दिखाई दे रही थी। मैं बाहर आयी। मम्मी को एक भी ड्रेस सूट नहीं हुई। मेरे ड्रेस की कीमत चुकाकर हम आगे बढ़े।

''मुझे अब भूख लगी है। प्लीझ! हम कुछ खाते है...'' पप्पा से मैंने कहां। पप्पा ने अपनी घड़ी देखी। 12.30 बजे थे।

''या... इट्स लंच टाईम...'' पप्पा ने गाइड को बुलाकर मोबाइल में चाईना की भाषा में हमें भूख लगी है ऐसा सुनाया।

''वेज या नॉनवेज...? उसने पूछा।

''वेज...'' हम तीनों एक साथ में बोले। वो हमें मॉल के 13^{TH} फ्लोर पर लेकर गया। वहां सभी काउंटर खाने के ही थे। पूरे फ्लोर में एक ही हॉटल में प्योर वेज मिलता था- UDIPI...

हमने गर्म-गर्म इटली-सांभर-वड़ा खाया। टेस्ट बोम्बे जैसा नही था, लेकिन जब भूख लगी हो तब सब चल जाता है। हम उस होटल से बाहर निकले।

''चलो, अब गेम्स और राईड के विभाग में जाते है।'' हम दुकान

से राइट साइड में मुडे और सीधे चलते गये। रास्ते में तरह-तरह की खाने-पीने की नॉनवेज दुकानें आई। मैं नीचे देखकर चलती गयी। रास्ते में एक सॉफ्ट ड्रींक की दुकान आयी। हम वहां खड़े रहे।

उसके पास में ही मुझे एक बेल्ट की दुकान दिखाई दी। तरह-तरह के बेल्ट बाहर लटक रहे थे। मैं वहां जाकर खड़ी रही।

बेल्ट की पेटर्न बहुत आकर्षक थी।

''तुम्हें इंग्लिश आती है?'' मैंने दुकानदार से पूछा। उसने चाईनीज भाषा में कुछ कहा। मुझे उसने इशारा करके पूछा कि ''तुम्हें क्या चाहिए?''

मैने बाहर लटके हुए एक बेल्ट की तरफ इशारा किया। उसने आवाज देकर अपनी दुकान पर काम करनेवाले से कुछ कहा। दुकानवाले ने अपने पास रखी गरम तेल की कढ़ाई चालू की। मुझे कुछ समझ में नही आया। *''बेल्ट के लिए तेल गर्म करने की क्या जरूरत है?''* मैंने बाहर बेल्ट की तरफ देखा।

अंदर से वो व्यक्ति हाथ में कुछ लेकर आया। उसका एक भाग चिमटे में पकड़ा हुआ था। मैंने देखा कि एक जिंदा सांप उसके हाथों में था। उसकी आंखें फरारी जैसी लग रही थी।

मैं कुछ बोलूं उससे पहले तो उसने वो सांप गर्मागर्म तेल में डाल दिया। वो भयंकर रूप से तड़पने लगा। मेरे खाये हुए इटली-सांभर-वड़ा सब बाहर आने लगे, मैंने वहां ही वोमिट कर दी। मेरी आंखों से पानी बहने लगा। मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी की पढ़ाते समय कही हुई एक बात याद आयी।

''यदि हम मरके पशु (तिर्यंच) बने, तो हमें वहां बचाने कौन आयेगा? पशु नही बनना हो तो पशु से अच्छी लाईफ जीओ...''

मैं जिन्दगी में पहली बार इन शब्दों का अर्थ समझी।

Chapter - 4

10/9/2010 | I.S.T.. 9.56 | K2 Tower, BKC

क्रॉसरोड्स अति भयंकर होता है.....!

मैं S.D. फेन्स पेज पर आयी हुई कमेन्ट चैक कर रही थी। वैसे तो चाईना-इन्डोनेशिया घूमकर मैं कल ही आयी थी, लेकिन मुझे S.D.से मिलने की बहुत इच्छा हो रही थी। 11 दिन तक मैंने मेरा मोबाइल या लेपटॉप यूझ नहीं किया था, क्योंकि मम्मी-पप्पा को ये कम पसंद था।

''तुम्हें तुम्हारा लेपटॉप यहां ही छोड़कर आना होगा। मोबाइल में भी बहुत महत्त्व के कॉल्स ही उठाने होगें...'' यहां से निकलते समय ही पप्पा ने मुझे कह दिया था। बहुत सारे मेसेज मेरे जीमेल के इनबॉक्स में दिखाई दे रहे थे। मैंने S.D. का करन्ट स्टेटस चैक किया। वे ग्वालियर टैंक में ही थे।

उनकी कही हुई बातें सच निकली थी। मुझे पिछले 11 दिनों में बहुत सारा अच्छा और बहुत सारा खराब देखने को मिला था। सांप की घटना के बाद तो मुझे बहुत डर लगता था। *''यदि मैं इस तरह सांप बनी तो?''* ये विचार ही बारबार मन में उठ आता था।

मैंने S.D. के पास रहने का नक्की तब ही कर लिया था। मैं ऐसी खतरनाक दुःखभरी दुनिया में नही जाऊं, उसके लिए मुझे मार्गदर्शन चाहिए था।

''अपेक्षा! चल लेपटॉप छोड़ और नाश्ते के लिए आ जा। आज तुम ऐसे भी बहुत लेट उठी हो। देखो... पप्पा भी नाश्ते के लिए आ गये है।'' मैंने लेपटॉप शट डाउन किया और टी-टेबल पर पहुंच गयी। मुझे आज एक महत्त्व का काम पूरा करना था।

मेरे सामने ब्रेड और जाम पड़े थे। मैंने जाम लेकर ब्रेड पर लगाया और मेरे लिए खास उबाली हुई कॉफी की चुस्की ली। पप्पा ने न्यूझपेपर से ऊपर देखा और मम्मी भी नाश्ते की आईटम लेकर नाश्ते के लिए बैठ गयी।

''अपेक्षा! तुम्हारा अब आगे क्या करने का विचार है?'' अपनी डबल मसालेवाली चाय को पीते-पीते मेरे सामने पप्पा ने देखा। जो विषय मैं चाहती थी, वो ही निकला।

''पोप्स! देखो...'' मम्मी ने अपनी आईटम से ऊपर देखा। ''मुझे कुछ स्पेशियल बनना है...'' मैं अटकी।

''लेकिन क्या? और हम उसके लिए क्या कर सकते है? तुम पहले से ही S.D. के कारण बहुत फेमस हो गयी हो.... अब मुझे नहीं लगता है कि कोई भी प्रकार के प्रॉब्लम का फ्यूचर में तुम्हें सामना करना पड़ेगा... क्यों सही बात है ना? ''मम्मी की तरफ देखकर पप्पा ने पूछा। मम्मी ने अपने चम्मच से प्लेट में राईट किया।

''मोम और डेड! सच कहुं तो मैं अभी दुविधा में हूं। मुझे जो कुछ भी आज मिला है या आज मैं जो कुछ भी हूं उसका एकमात्र कारण आप सब जानते ही हो।'' मम्मी-पप्पा मेरी बात समझ रहे हो ऐसा लगा।

''यानी मेरी दूसरी मिली हुई लाइफ को मुझे बिगाड़नी नहीं है। एक तरफ जैनम है और एक तरफ S.D. है... बस, अब मुझे नक्की करना है।'' मैंने बोलना बंद कर दिया।

मम्मी-पप्पा कुछ विचार कर रहे है, ऐसा मुझे लगा। पप्पा बोले,

''अपेक्षा! जिस दिन से तुम हमारी लाइफ में आई हो, उस दिन से हमारी लाइफ एक नये स्तर के आनंद को पा सकी है। तेरे बिना हम माइनस में थे और अब हम मल्टीप्लाय हो रहे है। ऐसे टाईम पर तू हमको छोड़कर...'' पप्पा का गला भर गया।

''अपेक्षा! हम तुम्हारे बिना नहीं जी..'' पप्पा छोटे बच्चे की तरह

रोने लगे। मम्मी के चेहरे पर भी गहरा दुःख छा गया।

मेरे मन में 4 चेहरे घूमने लगे। उसमें मुझे एक आनंदित और तीन दुःखी दिखाई दिए। मेरी लाइफ क्रोसरोड्स पर आकर खड़ी रही। कन्फ्युझ्ड!!!

Chapter - 5

15/9/2010 I.S.T..15.00 Inorbit Mall, Mumbai

थींकिंग अति भयंकर होती है.....।

बहुत प्रयत्न करने पर भी मुझे एक भी कुर्ती पसन्द नही आ रही थी। पिछले एक घंटे से हम ईनोरबीट मॉल के चक्कर काट रहे थे।

मुझे मेरी लाइफ का लक्ष्य पिछले 5 दिनों में मम्मी-पप्पा और S.D. के गाइडन्स से मिल गया था। मुझे 15 दिन के लिए S.D. के पास भेजने के लिए मम्मी-पप्पा तैयार हो गये थे। एक शर्त पर कि मैं वहां जैनिझम के अभ्यास के लिए जाऊँ। पहले मैं उसे समझुं और फिर विचार करूं।

जैन साधु बनने का तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था' क्योंकि जैन साधु बनना कितना कठिन है ये मुझे पता था। जितना जैनम ने बताया था उसके हिसाब से जैन साधु की सबसे कठिन वस्तु है इलेक्ट्रीसीटी के बिना जीना।

मुझे लेपटॉप और मोबाइल के बिना एक सैकेण्ड भी चलता नही था। मेरे बचपन के दिन भूल जाऊँ तो उसके बाद के वर्षों में, उसमें भी पिछले दो वर्षों से तो मैं A.C. के बिना भी रही नहीं थी।

जैनम ने तो स्पष्ट कह दिया था, ''तुझे मेरे पास आने के सिवाय दूसरा कोई ऑप्शन नही है।'' मैं हंसी थी। 80% उसकी बात सच थी। 20% मैं कन्फ्युझन में थी। जैनम एक प्रेमल पति बन सके ऐसा था, लेकिन

होटल ग्रांड हयात! वो रात मुझे याद आ जाती और 100% में से 20% कम हो जाता।

बस ये एक पॉइन्ट के कारण मुझे शारीरिक सुखों के प्रति थोड़ी चीड़ हो गयी थी। मुझे सब लोगों से कुछ अलग करना था।

''ये देखो...'' मम्मी ने मुझे एक दुकान की ओर इशारा किया। दुकान के डिस्प-ले पर "I AM A S.D. FAN" की कुर्ती लटक रही थी। मैंने ऊपर देखा **''अंखड क्रियेशन्स''** उस दुकान का नाम लिखा हुआ था। मैं और मम्मी उस दुकान के अंदर गये।

''वेलकम...वेलकम...'' दुकान के 35 वर्ष के आसपास की उम्रवाले व्यक्ति ने हमारा वेलकम किया। ''आपको क्या चाहिए?'' मम्मी के सामने देखकर मालिक ने पूछा। मम्मी ने मेरी ओर अंगुली से इशारा किया, ''इसके साईझ की कुर्ती चाहिए।''

मालिक ने मेरी ओर देख। उसने मुझे कही देखा हो ऐसा उसे लगा।

''तो... एक बार मैं अंदर जाकर आता हूं और आपको सूट हो ऐसी कुर्तियां लेकर आता हूं.... मुझे लगता है कि शायद लाइफ मैं पहली बार ही ये लड़की कुर्ती पहनती होगी...'' मम्मी उसके 100% सच्चे शब्द सुनकर हंसी। मुझे आश्चर्य हुआ, उसकी सोचने की शक्ति लाजवाब थी।

वह 5 मिनट के बाद 20 बॉक्स में अलग-अलग कुर्ती लेकर आया। मैं उसकी दुकान का केटलॉग पढ़ रही थी। 50 वर्षो से उसका परिवार इस फिल्ड में था और वह जैन था। मेहता उसकी सरनेम थी। मुम्बई के बड़े-बड़े शोरूमों में उसकी डिझाइन्स जाती और अब उसने पहली बार अपना आउटलेट खोला था। आखिर में " POWERED BY S.D." लिखा हुआ था। ये अंतिम लाईन पढ़कर मेरे चेहरे पर स्मित आया।

''देखो गर्ल! ये सब कुर्ती मैं तुम्हें बताता हूं... तुम्हें जो अच्छी लगे-पसंद आये वो कहना। उसे मैं साईड में रख दूंगा और फिर तू उसे ट्राय कर सकती है।''

मम्मी और मैं अलग-अलग कुर्तियां देखने लगे। सब कुर्तियां सफेद बेस की थी और एकदम अच्छी डिझाइन्ड थी। मुझे सब पसंद आती

गयी और मैने सब साइड में रखवा दी। सब खत्म हो जाने के बाद मालिक मेरे सामने देखकर हंसा।

''इसे कहते है कस्टमर का दिमाग पढ़ना...''

मैं और मम्मी ड्रेसिंग रूम में चेन्ज करने गये। अलग-अलग कुर्तियां हमने ट्राय की। सब की सब मेरे लिये ही बनी हो ऐसी लग रही थी। मुझे मालिक के दिमाग पर नाझ हुआ।

मम्मी ने एक कुर्ती का टैग देखा, उस पर 5699 रू. रेट लिखी हुई थी, यदि मैं 10 कुर्ती लेती तो 56990 का बिल बननेवाला था जो कि मम्मी तो भर देती, लेकिन मैंने कभी भी इतना ज्यादा खर्चा पप्पा को अपने लिए नही कराया था।

मैं कुर्ती लेकर बाहर गयी।

''मुझे सब कुर्तियां एकदम अच्छी तरह से फीट हुई है, लेकिन मैं...'' मैं कुछ कहुं उससे पहले सब बीस की बीस कुर्तियां उसने बॉक्स में पैक कर दी। हमारे लायी हुई मॉल की केरी ट्रे में सब थेली उसने रख दी।

''सर...मुझे सिर्फ दो ही लेनी है। ये तो 20 है।'' मालिक ने जैसे कि सुना ही न हो उस तरह एक बिल निकालकर मम्मी के हाथ में दे दिया। मम्मी ने बिल देखा। मम्मी का चेहरा बदल गया।

मैंने बिल मेरे हाथ में लिया। टोटल के बॉक्स पर मेरी नजर गयी। 1,13,980 रूपये का बिल था। उसमें 1,10,980 रू. माइनस किया हुआ था और उसके पास में पेड लिखा हुआ था। हमें 3000 रू. ही देने थे।

''किसने भरा है?'' मैं ये पूछने गयी। उससे पहले ही मालिक आकर मेरे सामने अपने घुटनों के बल बैठ गया।

''भगवान!'' पहला शब्द सुनकर ही मुझे आश्चर्य हुआ। वो मुझे ''भगवान'' कह रहा था। ''प्लीझ इस बिल के लिए मेरे साथ झघड़ा मत करना। मैं दानव से मानव आपके कारण ही बना हूं। मैं तेजस का पार्टनर हूं। आज आपको मेरे डिस्प्ले की ओर देखते हुए देखकर मुझे बहुत खुशी हुयी। मेरी दुकान पवित्र हो गयी।

मैंने 3000 रूपये इसलिए ही लिए है कि आपकी कुछ प्रसादी मेरी दुकान में रहे, नहीं तो....'' उसकी आंखें आंसूओं से भर गयी।

मेरे लिए लोगों की भावना और आदर देखकर एक अनदेखा प्रेशर मुझ पर मुझे अनुभव हुआ।

Chapter - 6

18/09/2010

I.S.T..21.00

K2 Tower, BKC, Mumbai

सेपरेशन अति भयंकर होता है.....।

"अपेक्षा! तुने तेरे गोगल्स ले लिये? ये तो तेरे फेवरेट है ना? तू कभी भी छोड़कर जाती नहीं है..." मम्मी ने मेरे सामने देखा। मैं 15 दिनों के लिए शासनद्रष्टाश्रीजी के पास रहने जाने के लिए अपना बेग पैक कर रही थी।

मैंने 15 दिनों के लिए सफेद इनोरबीट ड्रेसेस लिए थे। मेरे कबोर्ड में से मैं कोई भी ड्रेस 10 बार से ज्यादा पहनती नही थी। मेरे पास 30 तो नाइट ड्रेस थे। महिने में एक बार ही एक नाइट ड्रेस का चान्स आता। ये नाइट ड्रेसेस भी सब ब्रांडेड ही थे।

मैंने कबोर्ड में मेरे इस घर में आने के बाद लगभग 100 ड्रेसेस नये एड किए थे। उसके अलावा उसके साथ पहनने के लिए हेयर-बेन्ड, क्लिप्स, बेंगल्स, लोकेट्स अलग! मेरे पास 50 प्रकार के गोगल्स थे। उसमें 20 सन-ग्लासेस थे और बाकी नॉर्मल! रेनबेन कंपनी के ही 15 थे।

"नहीं...मम्मी! मुझे गोगल्स वहां नहीं लेने है। लगभग बाहर जाने का होगा ही नहीं।" मैंने गोगल्स को साइड में मेरे लेपटॉप के पास में रखा। लेपटॉप बेग भी पास में पड़ा था। मम्मी ने इसे बराबर तैयार करके रखा था। उसके ऊपर कुछ चिपका हुआ हो ऐसा मुझे लगा।

"मैं आती हूं।" कहकर मम्मी रूम में से कुछ काम के लिए बाहर

गयी। मैं खड़ी हो गयी और लेपटॉप के ऊपर लगी उस वस्तु को मैंने देखा। एक ऐनवलप वहां पड़ा हुआ था। मैंने ऐनवलप उठाया और बेड पर बैठी।

मैंने ऐनवलप खोला। ऐनवलप बंद करने के पेपर पर एक पोयम लिखी हुई थी।

TODAY I WISH TO SAY AT BREW...
WITHOUT YOU WE ARE VERY FEW...
WITHOUT YOU I FEEL VERY NEW...
SOME DAY I WOULD LIKE A VIEW...
WITH YOU... WITH YOU... WITH YOU...
WITH YOU...

मुझे पोयम बहुत पसंद आयी। मैंने ऐनवलप खोला। उसमें मेरे और मम्मी के साथ बिताये हुए क्षणों के फोटोझ थे। उसमें बिकीनी में इन्डोनेशिया बीच के फोटो, चाईना में अलग-अलग जगहों के हमारे फोटो, दुबई घूमने के फोटो, मेरे इस घर में 1^{ST} बर्थ-डे के फोटो...

एक-एक फोटो देखकर मेरी मेमरी रीफ्रेश हो रही थी... मेरी बीते हुए सुखद क्षण मुझे याद आ रहे थे। फिर मेरे व्यसन मुक्ति केन्द्र के फोटो भी थे। उससे पहले की मेमरी तो मेरे सिवाय किसी दूसरे के पास नहीं थी। सुपरिटेन्डेन्ट, जो कि मेरे जीवनदाता थे, उनके दिए हुए नेकलेस के फोटो भी किसी ने निकाले थे। ये फोटो देखकर मुझे आंसू आये। *"ये न होते तो?"*

फिर एक कलरफूल ग्रीटिंग कार्ड था। उसमें *"बेस्ट ऑफ लक..."* लिखा हुआ था। फिर साईन की हुई थी और कमेन्ट्स लिखी हुई थी।

POP

मुझे पता नहीं है कि मैं तेरे पिता के स्थान के लिये सक्षम हूँ या नहीं? लेकिन, आज मेरे हृदय के अंतर से, मैं तुझे एक बात कहना चाहता हूँ कि तेरे जैसी बेटी को पाकर मैं संपूर्णता का अनुभव करता हूँ। ''आई लवयु डॉटर....'' सेफ जर्नी। तेरे पप्पा हमेशा तेरे साथ ही है। फोर - अेवर।

मेरी आंखों में ईमोशन्स उभर आये। मुझे मेरे मम्मी-पप्पा कितना प्रेम करते हैं. वह मुझे आज ही पता चला। मैंने आगे पढ़ा।

MOM

''**तमसोर्मा ज्योतिर्गमय...**'' मैं अंधकार में थी. तुने मुझे प्रकाश में लाया... मैं डूब रही थी...

तुं बचानेवाली बनकर आयी.... मैं गिर रही थी... तुने मुझे हाथ दिया.... मैं क्या कहूँ ?

WITHOUT YOU I WAS NOTHING...

YOU CAME, I BECAME SOMETHING...

NOW, YOU ARE GOING...

I AM NOTHING...?

मेरा हृदय भर गया। ईमोशन्स को कंट्रोल करना मुश्किल हो गया।

उसके नीचे जैनम का कॉलम था। लेकिन उसमें सिर्फ P.T.O लिखा हुआ था। मैंने ग्रीटींग कार्ड घुमाया। पीछे और भी एक एनवलप था। मैंने एनवलप खोला। उसमें सिर्फ अलग-अलग पोझ में मेरे फोटो थे। धीरे- धीरे जैसे मैं फोटोझ घुमाती गयी, वैसे-वैसे जैनम पार्ट बाय पार्ट उसमें आता गया। पहले उसका हाथ दिखाई दिया... फिर वो आधा दिखाई दिया। बीच के फोटो में वो मेरे कंधों पर हाथ रखकर खड़ा था। उसके आगे के फोटो में हम दोनों किस कर रहे थे, वह फोटो था। फिर आगे के फोटो में

वह लेफ्ट साइड से बाहर निकल रहा था। आखरी फोटो में मैं वापस अकेली ही दिखाई दी।

मेरी आंखों में से एक बूंद फोटो पर गिरी। सब ऐसा ही सोच रहे थे कि मैं इन सबको छोड़कर कोई अन्जान जगह पर जा रही थी....

फोटोझ के बाद एक कोरे पेज पर करके लिखा हुआ था।

'WITHOUT YOU, I AM NOT...
WITHOUT ME, YOU ARE NOT...
WITH US BOTH, FAILURE IS NOT...
MAY BE YOU WILL FORGET ME, BUT I CANNOT FORGET YOU.
WHAT CAN I DO FOR GETTING YOU... PLEASE SMILE...!"

मैं टूट गयी। मुझे S.D के पास जाने की इच्छा ही टूट गयी। तभी मुझे S.D की कही हुई एक बात याद आ गयी।

'FOR GETTING SOMETHING, YOU HAVE TO FORGET SOMETHING...
WITHOUT FORGETTING SOMETHING, YOU CAN FORGET GETTING SOMETHING...'

Chapter - 7

19/9/2010 I.S.T. 6.20 Train, Mumbai

लॅसन अति भयंकर होती है.....।

आज सुबह मैं जल्दी उठ गयी थी **4.45 CLOCK** वैसे भी रात को दो बजे तक मम्मी-पापा और मैंने बातें की थी। वैसे भी मुझे रात को सोने की इच्छा नहीं थी। अभी तक मुझे जैनम के साथ बाते करनी बाकी थी। और वो मेरे लिये जाग रहा था। उसने मुझे उबासी खाते स्माईली का फोटो भेजा था। 🥱

मैंने फिर सोने की बात की थी और मम्मी-पप्पा मुझे माथे पर किस करके अपने रूम में सोने के लिये चले गये थे। फिर मैंने वायरलेस हेडफोन्स को कान में रखकर बात चालू की थी। तीन बजे तक बातें करने के बाद नींद ज्यादा आने के कारण मैं सो गयी थी। सुबह मैंने देखा, तब पता चला कि मैंने फोन कट किया ही नहीं था और बाते करते-करते ही मुझे नींद आ गयी थी।

सुबह उठते ही मैने रूटीन पूरा किया था। मैंने **5.25** की ट्रेन में निकलने का तय किया था। पप्पा और मम्मी मुझे स्टेशन तक छोडने आये थे। स्टेशन के बाहर अलग होने से पहले पता नहीं क्यों, लेकिन जिंदगी में पहली बार मैंने उनके पैर स्पर्श किये थे।

मम्मी-पप्पा एकदम आश्चर्यचकित हो गये थे। उन्होंने मेरे सिर पर एकदम प्रेम से भरा हाथ रखा था। एक पॉझिटीव उर्जा मेरे अंदर उनके

हाथों द्वारा संक्रमित होती हुई मुझे अनुभव हुई थी। मैं **5** मिनट तक उनके पैरों को पकड़कर बैठी रही थी।

फिर पप्पा ने मुझे कंधे से खड़ा किया था और वापस तीसरी बार मेरे सिर पर किस किया था। ''ध्यान रखना। अच्छी तरह रहना.... और फोन करना भूलना नहीं।'' ऐसे **3-4** वाक्यों से उन्होंने मुझे अंतिम बार विश किया था। मैं राईट ट्रेन में चढ़ गयी थी। मेरे पास ट्रावेलिंग पास होने के कारण मुझे टिकिट के काउंटर पर लाईन में खड़ा रहना नहीं पड़ा था। मैंने वायरलेस हेडफोन कान में डाला था और **S.D** रॉकर्स नामक ग्रुप के बनाये हुये नये गीत को सुन रही थी। गीत बहुत अमेझिंग था। **S.D** फेन्स में से ये **S.D.** रॉकर्स संगीत के लिये बना था।

इस इंग्लीश गीत का विषय **S.D.** की लाईफ पर था। उसका संगीत अलग स्तर का था। सेकेण्ड स्टोप आया। मैंने मेरा हेडफोन्स निकालकर बॉक्स में रख दिया। और बेग्स लेकर ट्रेन के दरवाजे पर खड़ी रह गयी। एकदम ताजगीभरा अनुभव मेरे दिमाग में हो रहा था। एक व्यक्त न कर सकूं ऐसी शक्ति मेरी हरेक नसोनस में दौड़ रही थी।

स्टॉप आया और मैं उतरी। बाहर जाकर मैने टैक्सी पकड़ी। टैक्सी मुझे ग्वालियर टेंक के जैन बिल्डिंग की तरफ लेकर गयी। मैने मीटर देखा। **20** रुपये हुए थे। मेरे पॉकेट में से बिना देखें ही नोट मैंने निकाली और टैक्सी ड्राइवर के हाथ में रख दी।

वो चेन्ज देने गया। मेरे अंदर से एक छुपी हुयी आवाज आयी ''ड्राइवर! आप ये पैसा रख लो।'' टैक्सी ड्राइवर को आश्चर्य हुआ। मैंने फिर से एक्शन करके पैसा रहने को कहा। वो टैक्सी में से उतरा। मेरी बेग पकड़कर वो मुझे **1ST FLOOR** तक, जहां शासनद्रष्टाश्रीजी ठहरे थे वहाँ तक छोड़ने आया। वो क्रिश्चन होने से निकलते समय उसने मेरे हाथ पर किस किया और ''मे गॉड ब्लेस यू'' बोलकर निकल गया।

शासनद्रष्टाश्रीजी गेट के पास ही उत्तर दिशा में बैठे हुये थे। मे-रे स्लीपर की आवाज सुनकर उन्होनें आंखे खोली। ''आ गई... तेरे घर में....?'' मुझे **S.D.** के शब्द एकदम नये लगे। कभी भी मुझे शासनद्रष्टा-श्रीजी ने इस तरह नहीं बुलाया था ।

''मैं मेरी बेग्स कहां रखूं?'' मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ देखा। शासनद्रष्टाश्रीजी ने ''फोलो-मी'' की साइन की। मैं उनके पीछे गयी। हम एक 200 SQ FT रूम में आये। मेरे बेडरूम जितना ही ये रूम था।

''तू यहाँ रह सकती हैं। मुझे लगता है तुम्हें कम्फर्टेबल रहेगा। ये घर हकीकत में किसी का घर था और अभी ही ट्रस्टीओं ने इसे हमारे रहने के लिये लिया है। बाकी तो हमारे रहने की जगह पर फेन और लाईट भी नहीं होता...'' मुझे मेरे मम्मी-पप्पा ने यह बात कही थी। लेकिन मैंने ''ये भी एक अनुभव है....'' कहकर तब बात मान ली थी।

''शुरुआत के 2-3 दिन तुझे नये जैसा लगेगा। फिर तो तू अपने आप सेट हो जायेंगी। आर यू OK...?'' शासनद्रष्टाश्रीजी मेरा आंकलन कर रहे हो, ऐसा मुझे लगा। मैने 'हां' कहां।

मैने मेरी बेग्स रूम के कोर्नर में रखी और फ्रेश होकर मैं बाहर गयी। शासनद्रष्टाश्रीजी म.सा. अपने गुरुणी के चरणों में झुककर आशीर्वाद ले रहे थे। गुरुणी S.D. से कुछ कह रहे थे।

''शासनद्रष्टाश्रीजी को क्यों आशीर्वाद लेना पड़े? वे तो स्वयं ही इतने सक्षम है?'' मेरे मन में विचार आया। *मैं यह प्रश्न पूछूंगी...'' मैंने नक्की किया।* S.D. अपनी जगह पर आये। मैं उनके पास जाकर बैठ गयी।

''तो तू आज क्या करेगी? तुने क्या सोचा है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मैं जो प्रश्न पूछने वाली थी वह ही पूछा। ''मैंने कोई प्लानिंग नही की है। मैंने सिर्फ मेरी लाइफ को एक दूसरा पहलू बताने का नक्की किया है। इसलिए आप जैसा कहोगे, वैसा करूंगी। मुझे कुछ नया सीखना है।'' मैने मेरे विचार S.D. के सामने रखें।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने एक पेज और पेपर लिया। उन्होंने लिखना चालू किया। मेरी नजर पेपर पर ही रही।

TIME TABLE OF A POWERED SOUL...

(1) FILL YOURSELF WITH AURA OF A POWERFUL SOUL ON GETTING UP.

(2) THINK ABOUT THE THINGS YOU OPT TO DO.

(3) THINK...

(4) THINK... WE ARE WHAT WE THINK OURSELVES TO BE. SO THINK (+) AND GREAT....

तेजगति के साथ शासनद्रष्टाश्रीजी लिख ही रहे थे। मुझे पहला पॉइन्ट ही अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ था। मेरी नजर वहाँ ही ठहरी हुयी थी।

''टेन्शन मत लेना, एक बार में लिख लूँ, फिर मैं तुझे विस्तार से समझाऊँगी।''

ऊपर देखे बिना ही लिखते-लिखते ही शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहां।

लिखने का काम खत्म करके S.D. ने मेरे हाथ में पेपर दिया।

''तो तू थोड़ी कन्फ्युइड लग रही है। स्पष्ट कर लेते है। पहला पॉइंट ये है कि आप जब सुबह उठो तब आपको पॉझिटीव ऊर्जा को भर लेनी चाहिए। उससे आपका पूरा दिन पॉझिटीव हो जाता है।

और इसके लिए ही...'' S.D. दो मिनट कुछ विचार कर रहे है ऐसा मुझे लगा। ''आपको एक बड़े व्यक्ति को नमन करना चाहिए...'' मुझे कुछ लाईट हुई।

''इसलिए ही आप आपके गुरुणी के पास गये थे ना...?'' S.D. ने हां कहा।

''लेकिन आप तो अबाध्य ऊर्जा से भरे हुए हो, तो आपको क्या जरूरत है?'' मैंने रात को पूछने के लिए विचार किया हुआ प्रश्न पूछ लिया।

मुझे S.D. ने बाहर दो वृक्ष बताये। एक वृक्ष आम का था और दूसरा नीम का था। ''तू इसे देखकर क्या समझी?'' मुझे S.D. ने पूछा।

''ये ही कि एक आम का वृक्ष है और दूसरा नीम का...'' मुझे उसमें दूसरा कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

''और भी एकाग्र बन...'' मैंने देखा और नही समझ में आने से सिर हिलाया। ''आई गीव अप।''S.D. ने गहरी नजरों से मेरी ओर देखा।

''देखो...., जो आम का वृक्ष है उसके ऊपर फल है और जो नीम का वृक्ष है वह बिना फल का है। इसलिए यदि तुम देखोगी तो आम का वृक्ष नीचे नमा हुआ.. झुका हुआ है ऐसा दिखाई देता है। और नीम का वृक्ष सीधा दिखाई देता है।'' मैंने देखा। ऐसा ही मुझे दिखाई दिया।

''तो अपेक्षा! एक वस्तु हमेशा के लिए समझने जैसी है। जैसे-जैसे पॉवर बढ़ता है यानी जब व्यक्ति पॉझिटीव ऊर्जा रूपी फल पॉवर से पूर्ण होता है, वैसे-वैसे वो नमता जाता है। यानी वो नम्र बनता जाता है, HE BOWS DOWN... आम का फल मीठा होता है। वैसे ही जो नीचे नमता है, वो ही मीठे फल को प्राप्त करके लोगों को दे सकता है।

जो इस नीम के वृक्ष की तरह नमते नही... झुकते नहीं, वो खारा, कड़वा बन जाता है। वो किसी का भी फेवरेट नहीं होता और इसलिए अपेक्षा!'' बीच में S.D. ने श्वास लेकर फाईनल पंच मारा।

''जब मैं मेरे गुरुणी को नमन करती हूँ, तब वे मुझे ऊर्जा से भरते हैं और उस ऊर्जा से बहुत सारे लोगों तक मीठास पहुंच सकती है। ये ही मेरे पावर का रहस्य है।

"AS THE POWER INCREASES, THE HUMBLENESS INCREASES....

AS THE HUMBLENESS DECREASES, THE POWER DECREASES AND CEASES..."

तुने स्प्रींग को देखा होगा.... वो जितनी नीचे जाती है, उतनी ही ऊपर जाती है। ये ही बात अपने जीवन में भी एक समान हैं। साधक जितना नमता है, उतना वो ऊपर जाता है। ये साधना का मूल है.... पॉवर्स का मूल है... ये तुम्हें हरेक व्यक्ति में देखने को मिलेगा....'' मेरी लाईफ का पहला लेसन मैंने सिख लिया...

''हम्बलनेस... ईझ द मास्टर की टु पॉवर।''

Chapter - 8

20/09/2010 I.S.T.18.00 Gwalior Tank, Mumbai

कोन्सन्ट्रेशन अति भयंकर होता है.....।

मैं बालकनी में खड़ी होकर नीचे जा रहे जुलुस को देख रही थी। पढना अशक्य हो जाने के कारण मैं बुक को साइड में रखकर नीचे जा रहे जुलूस को देखने के लिये बालकनी में आयी थी।

5000 - 10,000 लोग एक रथ के पीछे-पीछे चल रहे थे। उस रथ में एक देव का फोटो रखा हुआ था। उसके हाथ में तलवार थी और वह घोड़े पर बैठा हुआ था। वो दिखने में भयानक नहीं था।

सब लोग पागलों की तरह स्पीकर में बज रहे गीत के ऊपर डांस कर रहे थे। मुझे हँसना आया। ऐसा बेढ़ंगा डांस मैं पहली बार देख रही थी। आगे हाथ में भगवे कलर के झंडे लेकर 200 लोग बाईक पर जा रहे थे। और बाकी 50 जितने लोग 11 नम्बर की गाड़ी - अपने पैरों से चल रहे थे। उनके पीछे ये नाचने वाले थ' जो लगभग 1000 की संख्या में थे। उसके पीछे रथ और उसके पीछे सब लेडीझ चल रही थी। उन सबने नयी-नयी साडियाँ पहनी थी। वो इधर-उधर देख रही थी।

रथ में बैठा हुआ पूजारी सबको प्रसाद दे रहा था। वो लगातार मंत्र गुनगुना रहा था। उसने मेरी ओर देखा और एक पेंड़ा फेंका। मैंने वो पेंडा पकड़ा और मुंह में रखा। वो बहुत मीठा था। जुलुस के अंत में एक बड़ी पुलिस की गाड़ी चल रही थी। जुलूस पुरा हुआ और मैं आकर अपनी जगह

पर बैठी। मैं जब पढ़ने का ध्यान टूट जाने के कारण बालकनी में गयी थी।' तब मैंने देखा था कि S.D. मेडीटेशन में बैठे थे और जब मैं वापस आयी, तब भी सेम पोजिशन थी ।

''उन्हें देखने की इच्छा नहीं हुई?'' मेरे मनने मुझे प्रश्न किया। मैं बुक लेकर बैठ गयी। उसमें इस दुनियाँ में कितने प्रकार के जीव है ये लिखने में आया था। बर्ड्ज, रेप्टाईल्स, ॲम्फीबीयन्स वगैरे बहुत सारे जीवों के प्रकार का वर्णन उसमें था। मैने आगे पढ़ा। अब ये जो बात थी, वो मेरे लिये एकदम नयी थी। इस बुक में एक खास प्रजाति के पक्षीयों का वर्णन आया था, जिसके 2 प्रकार होते हैं... एक खुल्ले पंखवाले और दूसरे बंद पंखवाले....

जो खुल्ले पंखवाले पक्षी थे, वे अपनी सारी प्रवृत्ति खुले पंखों से ही करते थे। वे पूरी लाइफ में कभी भी अपने पंख बंद कर ही नहीं सकते थे। और जो बंद पंखवाले पक्षी थे, वे बंद पंख से ही उड़ते थे ।

ऐसा तो कभी भी मैंने डिस्कवरी या नेशनल जियोग्राफी चैनल पर भी देखा नही था। *''ये कैसे शक्य है... ?''* मेरे मन ने विरोध किया। मुझे और एक प्रश्न मिल गया।

S.D. ने दिये हुये टाईम टेबल में एक स्थान क्वेश्चन-आन्सर के लिये था, जो शाम को 6.30 से 7.30 बजे का था। तब S.D. अंधेरा हो जाने के कारण बुक पढ़ नहीं सकते थे और इसलिये तब हम ऐसे सब प्रश्नों की चर्चा करते थे ।

मैंने वॉच में देखा। 6.30 बजने में 2 मिनट बाकी थी। मैंने S.D. की तरफ देखा। वे सूर्य की किरणों में संस्कृत में लिखे हुये कोई शास्त्र पढ़ रहे थे। 6.30 हुये और उन्होनें शास्त्र बंद किये।

मैं S.D. के पास जाकर बैठी। S.D. भी अपना कार्य पूरा करके आ गये थे। S.D. से उनके ग्रुप मे 4 साध्वीजी सन्यास में बड़े थे। S.D. उन्हें हर रोज वंदन करते थे। मुझे कल ही पता चला कि जैन दीक्षा में महत्त्व उम्र का नहीं होता था, बल्कि आपने कितनी जल्दी दीक्षा ली उसका था। जो पहले साधु बनते वे उम्र में छोटे भी हो तो भी जो बाद में साधु बनते और उम्र में बड़े होते, उन्हें तो पहले साधु बनने वालों को नमन-वंदन करना पड़ता।

जैनीझम में उम्र की महत्ता नहीं है, लेकिन दीक्षा की उम्र का महत्ता है।

''अपेक्षा! फायर।'' मैं समझ गयी कि S.D. मुझे प्रश्न पूछने के लिए कह रहे है।

''पहले क्या पूछुं?'' दो मिनट मैंने विचार किया और फिर एक प्रश्न मैंने S.D. के सामने रखा।

''मैंने आज आपको देखा कि जब जुलुस की आवाज आनी चालू हो गई, तब आप मेडिटेशन में बैठ गये। इतने विघ्नों के बीच में ध्यान शक्य ही किस प्रकार है?''

शासनद्रष्टाश्रीजी ने हल्का स्मित किया।

''तेरा दिमाग ऍडप्टीव है। तेरे प्रश्न बहुत अच्छे होते है...''मेरी प्रशंसा सुनकर मुझे थोड़ा अच्छा अनुभव हुआ। ''अपेक्षा! विघ्न शब्द जो है ना वो दो जगहों पर प्रयोग किया जाता है.. अंदर और बाहर! जब कोई व्यक्ति अंदर से डिस्टर्ब्ड हो ना, तो ही बाहर का डिस्टर्बन्स उसे असर कर सकता है।

जब व्यक्ति अंदर से अनडिस्टर्ब्ड हो, तब उसके कानों के पास में भी यदि पूरी वॉल्युम से उसका फेवरेट गीत चालू हो ना, तो भी वह गीत उसे असर नही कर सकता। हमारा मन बहुत पॉवरफूल है। वह जिसके साथ भी एकाग्र बनता है, उस वस्तु के साथ हम एकाकार हो जाते है।

हम जब टी.वी. देख रहे होते है....' S.D. ने मेरी संपूर्ण एकाग्रता है या नहीं ये देखने के लिए मेरी ओर देखा।'' तब हमें मम्मी बुलाये या फ्रेंड हमारे नाम से आवाज दे, तब बहुत बार हमें पता चलता ही नहीं है कि उन्होनें हमें बुलाया है।

समझो कि हमें पता भी चलता है, तो भी मन टी.वी. सीरियल में इतना ज्यादा एकाग्र होता है कि हम सुनने के बाद भी अनसुना कर देते है।

तुने कभी भी बाईनोक्युलर लेन्स को देखा है? जब हम नीचे पेपर रखकर सूर्य की किरणों को उस पेपर पर उस लेन्स से एकाग्र करते है, तो सूर्यकिरण उस पेपर को जला देती है।

हमारा मन भी इस लेन्स जैसा ही है। हमें हमारी 5 इन्द्रियों से

बहुत सारी वस्तुओं का अनुभव एक साथ होता है, ऐसा लगता है। लेकिन जब मन कोई भी एक इन्द्रिय को पकड़कर एकाग्र बनता है, तब वो इन्द्रिया पॉवरफुल बन जाती है और उस इन्द्रिय से फिर हम कोई भी अशक्य कार्य भी कर सकते है।

आप मुंह के द्वारा सुंघ सकते हो, उससे देख सकते हो, उससे स्पर्श कर सकते हो। मीड-ब्रेन एक्टीवीटीझ में ये ही सब वस्तुऍं सिखायी जाती है। उसमें मेन पॉवर मन का ही तो होता है।

और इसलिए यदि आपका आंतरिक मन पॉवरफूल हो, तो आप-को बाहर का डीस्टर्बन्स डीस्टर्ब नहीं कर सकता। आप कोई भी एक ही वस्तु पर एकाग्र बन सकते हो।

जब बाहर का डिस्टर्बन्स बढ़ता है, तब मैं अपने मन को पावरफूल बनाने के लिये मैने पूरे दिन में याद की हुई अलग वस्तुओं में मन को एकाग्र बनाती हूं। उससे मुझे बाहर का डीस्टर्बन्स अनुभव नहीं होता है, क्योंकि मेरा मन उससे अलग हैं।'' S.D. रुकें। मैंने मेरे मन में ये सब जानकारी पचाई।

''लेकिन, ये शक्य किस प्रकार हो सकता है?'' मेरे बौधिक मन ने प्रश्न किया।

"BY PRATICE.....
PRATICE MAKES A MAN PERFECT..."

शासनद्रष्टाश्रीजी के मुँह पर चमक दिखाई दी।

Chapter - 9

22/09/2010 | I.S.T. 8.00 | Gwalior Tank, Mumbai

REVENGE अति भयंकर होती है.....।

मैं अपने मोबाईल में आये हुये कॉल्स चैक कर रही थी।S.D. ने कल रात को कहा था कि ''यदि आपको पावरफूल आत्मा बनना हो, तो आपको साधनों से स्वतंत्र बनना पड़ेगा। साधन ऐसी वस्तु है कि जो आपको दास बना देता है।''

मुझे समझ में आ गया था कि S.D. ने ये बात मेरा मोबाईल का ज्यादा उपयोग देखकर कहीं थी और इसलिये मैंने S.D. की मीठास से प्रभावित होकर पूरे दिन में सिर्फ 2 घण्टे मोबाईल का प्रयोग करने का नक्की किया था। सुबह S.D. को ये बात व्यक्त करने पर, उन्होंने सिर्फ स्मित किया था। उनकी बात कहने की इस स्टाइल की मैं फैन थी।

अभी एक घण्टा मेरा पूरा होने को था इसलिये एक अंतिम कॉल करने का विचार मैं कर रही थी। मुझे मम्मी के 7 मिस्ड कॉल दिखायी दिये। मैने नंबर डॉयल किया।

''तू आ रही है, अपेक्षा!'' शासनद्रष्टाश्रीजी मंदिर जा रहे थे। मैने सिर हिलाया और मोबाईल कट करके, मेसेज छोडकर S.D. के साथ मंदिर जाने के लिये मैं तैयार हो गयी। मंदिर में मोबाइल साथ में लेकर जाने की ना होने से मैंने मोबाइल चार्जिंग में रख दिया।

मैंने मेरी सफेद ड्रेस ठीक की और हम नीचे उतरे। मंदिर जाने के

लिये हमे रोड़ क्रॉस करना पड़ता था, इसलिये हम झेब्रा क्रॉसिंग पर खडे थे।

''मत्थऐण वंदामि !'' एक जैन स्त्री दिखाई दी। उसने रोड पर ही S.D. के सामने सिर झुकाया।

'म.सा। आपके पास 2 मिनट टाईम है, प्लीझ।' आँखों में आँ- सूओं के साथ उस बहन ने पूछा। वो बहुत डीप्रेशन में हो ऐसा मुझे लगा। S.D. और मैं एक कपड़े की दुकान के बाहर खडे थे। वह बहुत नजदीक आयी ।

''म.सा. !'' जैन मोन्क्स के लिये बोला जाने वाला शब्द बहन ने उच्चारण किए।

''मेरे 3 बच्चे है...'' वो स्त्री शायद विचार कर रही थी कि ''मैं म.सा. को कहुं या ना कहुं.....'' ऐसा लगा...

''बोलो...बोलो... यदि मेरे पास पॉवर होगा, तो मैं आप- को सोल्युशन दे दूंगी।'' उसकी रिजर्वनेस दूर करते हुये S.D. ने कहा। उस बहन ने हमारे सामने देखा।

''1 महिने पहले ही मुझे मेरा तीसरा बेटा हुआ है। मेरे पहले 2 बेटों में जो बड़ा है उसे दांये पैर में बहुत बड़ा प्रॉब्लम है। उसमें से कन्टीन्युझली एसीड जैसी वस्तु निकलती रहती है और उसे इस कारण भयंकर बर्निंग सेन्सेशन होती है ।

जो दूसरा बेटा है उसे भी सेम सेम प्रॉब्लम बायें पैर में हैं। और ये प्रॉब्लम तलीये से लगाकर बायें हाथ तक है। उसकी पूरी चमडी काली हो गयी है। और...'' बहुत जोर से वह बहन रोने लगी। आवाज बाहर न जायें इसके लिये उसने उसके मुँह पर हाथ रखा।

''मेरा जो तीसरा बेटा है...'' शब्द टूटे ''उसे...उसे तो पेट से ऊपर के भाग में ये प्रॉब्लम हो गया है।

वो भयंकर रूप से चीखता ही रहता है। मेरी इच्छा है कि उसे इस प्रकार जीने देने से तो मार देना ज्यादा अच्छा है... मैं क्या करूं? क्यों मुझे ही तीनों बेटे ऐसे मिले...'' वो मुंह में रूमाल डालकर जोर - जोर से रोने लगी।

शासनद्रष्टाश्रीजी 5 मिनट तक कुछ बोले नहीं। मैंने पहली बार S.D. को इतना डीपली विचार करते हुये देखा।

''बहन! अभी तो मैं तुम्हें जवाब नहीं दे सकती। लेकिन आप शाम को 8.00 बजे आना...'' उस बहन को थोड़ी शांति मिली हो ऐसा मुझे लगा।

मेरे दिमाग में बार-बार एक ही प्रश्न आने लगा। " HOW ? "

I.S.T.19.00

''**अपेक्षा!** तुम्हारे दो घण्टे पूरे हो गये...'' अचानक हमारी चल रही स्टोरी के बीच में S.D. ने मुझे पूछा।

''क्यों? नहीं हुये...'' मुझे S.D. कॉर्नर में लेकर गये। मुझे उन्होंने हाथ में एक पेपर की छोटी स्लीप दी।

''अपेक्षा! तुम्हारे 2 घण्टे सिवाय का टाईम इसके लिये गिनना, लेकिन मेरा ये अर्जेन्ट काम निपटा दे। इसमें...'' पेपर की स्लीप की तरफ इशारा करते हुये S.D. ने कहा।

''एक मेसेज और एक नंबर है। ये मेसेज इस नंबर पर मेसेज करना है। और OK रिप्लाय आता है या नहीं ये देखना हैं...।''

''OK, मैं यहाँ से ही फोन कर लूं?'' मैंने S.D. से पूछा। ''नहीं... मोबाइल हमारी स्वच्छ ओरा को डिस्टर्ब करता है। इसलिए प्लीझ! तूं तेरे रूम में जाकर ये कर लेना... और थेंक्यू...'' मुझे आखरी शब्द अच्छा लगा।

मैं फटाफट रूम में गयी और S.D. की एक्सीलेन्ट मरोड़ में लिखा हुआ मेसेज दिये हुये नंबर पर भेज दिया। मेसेज एकदम शोर्ट था ''मुझे 8.00 बजे मिलने आ सकते हो...''

मेरा मोबाईल बीप हुआ। "OK" 2 लेटर्स का मेसेज आया। मैंने जाकर S.D. को समाचार दे दिये । S.D. ने मुझे सिर्फ 5 शब्द का वाक्य कहा,

"BE READY FOR THE ADVENTURE..."

I.S.T.19.55

मैं और S.D. म.सा. आज मैंने पढ़ा हुआ एन्जल (देव) के टोपीक पर डिस्कसन कर रहे थे।

ऐसी एंजल नाम की वस्तु होती है, ये मेरा दिमाग स्वीकार करने के लिये तैयार ही नहीं था ।

''अपेक्षा!'' बीच में ही S.D. ने ऊपर देखा।

''आप आ सकते हो...'' किसी को उन्होंने कहा। मैने पीछे देखा। वे मॉर्निंग वाले आंटी आ गए थे। S.D. खडे हुये और उस आंटी को अपने गुरुणी के पास लेकर गये। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था किस प्रकार इस प्रोब्लम के कारण को S.D. ढूंढनेवाले थे?...

एक दूसरी स्त्री ने दरवाजा खटखटाया और S.D. ने उसे अंदर आने के लिये हाथ से इशारा किया। वो स्त्री भी धीरे से, किसी को भी डीस्टर्ब किये बिना, S.D. और उनके गुरु के पास पहुँच गयी।

इन चारों ने मिलकर कुछ बात की और 5 मिनट के बाद 3 व्यक्ति मेरी तरफ आये। गुरुजी इन 3 व्यक्तियों को जाते हुये अपनी जगह से देखते रहे। S.D. ने मुझे इशारा किया और मैं भी जैसे कि मेरी उत्कंठा से मेसमराईझ्ड हो गयी हूं, इस तरह S.D. के पीछे चलने लगी।

वो आगे चल रही स्त्री कोई जादुगार हो, ऐसी दिखाई दे रही थी। हम घर के अंत में रहे अंधेरी रूम में गये। वहाँ एक भी लाईट नहीं की हुयी थी। वहां डीके की बास आ रही थी... लंबे समय से प्रयोग नहीं किया हो ऐसा लग रहा था। स्त्री ने एक स्वीच दबाई। एक फोक्स जैसी लाईट चालू हुयी। S.D. ने तुरंत ही वुलन शॉल पहन ली। मुझे भी थोड़ा अजीब लग रहा था। लाईट का फोकस एक चेयर पर गिर रहा था। उस आन्टी को इस स्त्री ने चेयर पर बैठने के लिये कहा।

''मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी ने तुम्हारे केस की बात की है।'' अपने बालो को पीछे करते हुये स्त्री ने कहाँ, ''और मुझे लगता है कि इसकी जड़ तुम्हारे भूतकाल से संबंधित है और इसलिये...'' अपने साईड पॉकेट में से एक छोटा बॉक्स स्त्री ने बाहर निकाला और खोला। उसमें एक चमकती वस्तु पडी थी। एक साईड से स्त्री ने वस्तु को पकडा । उसकी चेन स्त्री के अंगुठे और 1^{ST} अंगुली के बीच में थी । उसमें एक 6 कोनेवाला स्टोन था। उसमें फोकस लाईट के कारण इन्द्रधनुष के रंग दिखाई दे रहे थे!

''मैं तुम्हे तुम्हारे भूतकाल में लेकर जाऊँगी । तुम्हें बहुत सारी वस्तुऐं दिखाई देगी। तुम्हें ये सारी वस्तुयें मुझे कहनी है... और मेरा नाम मत भूलना। अनामिका... जब बहुत ज्यादा डर लगे, तो सिर्फ मेरा नाम बोल देना, तुम्हें एक पॉझिटीवीटी की भावना आयेगी।

तुम्हारा नाम क्या है?' स्त्री ने बहन से पूछा।

''अस्मिता...'' उसकी आँखों में स्पष्ट डर दिखाई दे रहा था।

''रिलेक्स हो जा अस्मिता! अनामिका तुम्हारे साथ है। जब मैं तुम्हें जो कहुंगी वो बराबर सुनना और उसके अनुसार करना... मैं तुम्हें विश्वास देती हूँ कि तुम्हें तुम्हारे सारे प्रॉब्लम्स का सब समाधान मिल जाये-गा... सिर्फ मेरे साथ तुम को-ओर्डीनेट करना।

तो, तैयार!'' जोर से अंतिम शब्द अनामिका बोली!

अस्मिता ने एकदम धीरे से हाँ कहा। उसके मन में से कुछ हो जाने का डर निकला नहीं था। S.D. अस्मिता के पास गये। मैं तो रूम के कोर्नर में बैठकर सामने चल रहे प्रसंग को आश्चर्य से देख रहीं थी। S.D. के पास व्यक्ति को खुश करने के, टेन्शन फ्री करने के न जाने कितने तरीके है, ये मैं विचार कर रही थी।

'अस्मिता...' शासनद्रष्टाश्रीजी की तरफ अस्मिता ने मुँह घुमाया। ''पूरे विश्व में हिप्नोटीझम की कला में ये अनामिका मास्टर है। ये जैसा कहें वैसा तू कर... मैं तुम्हें विश्वास के साथ कहती हूँ कि तुम्हें कुछ भी नहीं होगा।''

S.D. के शब्दों का प्रभाव अस्मिता पर पड़ा। वह एकदम शांत हो गयी। ''तो हम प्रक्रिया चालू करते हैं।'' अनामिका ने अपने हाथ में रहें

हुये पेंड्युलम को सीधा किया, उसकी चमक अकल्पनीय थी।

''सबसे पहले अस्मिता! ''टेन्शन के कारण अपनी बंद आँखें अस्मिता ने खोली। तुम्हें इस पेंड्युलम पर फोकस करना है। ये जहाँ जायें, वहाँ तुम्हें भी अपनी आँखों को लेकर जाना है। तुम्हें एकाग्र बनना है। ''अनामिका ने पेंड्युलम को राईट-लेफ्ट घुमाना चालू किया। अस्मिता भी उसे फोलो करती रहीं। 5 मिनट के बाद उसकी आँखें पेंड्युलम के हिलने पर भी एक जगह पर स्थिर हो गयी।

''अस्मिता! तुम मेरे वश में हो... हाथ ऊपर कर...'' अस्मिता ने मेरे आश्चर्य के बीच हाथ ऊपर किया। ''ताली बजा...''अस्मिता ताली बजाने लगी। ''स्टैंड अप...'' वो खड़ी हो गयी। ''सीट डाऊन...'' वो बैठ गयी। अनामिका ने अस्मिता को अपनी नौकरानी बना दिया था ।

''तो अब तू आराम कर... अब हम तुम्हारे भूतकाल में प्रवेश करेंगे 5.4,3,2,1..."

I.S.T. 20.30

''**तुम** कहाँ हो? तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?'' 70 वर्ष भूतकाल में ले जाकर अनमिका ने हिप्नोटाईझ्ड अस्मिता को पूछा...

''अस्मिता! तू कहा है?'' अस्मिता कुछ भी बोली नहीं। अचानक कुछ दिखाई दे रहा हो, उस तरह अस्मिता बोली... ''कोई वीरान पड़ी हुई, जल जाने के कारण काली पड़ी हुयी जमीन मुझे दिखाई दे रही है। शायद रशिया जैसा लगता है.. मैं बहुत वृद्ध हो गयी हूँ... मेरी आँखों में से आंसू गिर रहे है, लेकिन वे किसलिये, ये पता नहीं। मैं... ''ॲन्फील्ड...मारको... सूसेन...'' ऐसे नाम बुला रही हूँ...क्या हुआ है ये पता नहीं है.... मुझे बहुत डर लग रहा है... डर लग रहा है...'' अस्मिता चेयर पर कांपने लगी।

''शांत हो जा...शांत हो जा... अपने विचारों पर कन्ट्रोल कर। तू सिर्फ देख रही है, अनुभव नहीं कर रही है।'' अनामिका ने शांत आवाज में कहा। जैसे कि बलून में से किसी ने हवा निकाल दी हो, उस प्रकार वह शांत हो गयी। अब हम 5 वर्ष पीछे जाते हैं....*5.4,3,2,1....* तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?'' आदेशात्मक भाषा में अनामिका ने पूछा।

''अभी सब शांत है... फूलो की ताजगी वातावरण में अनुभव हो रही है। नहीं...नहीं...'' अस्मिता चिल्लाने लगी।

''क्या हुआ अस्मिता? शांत हो।'' अस्मिता अपना हाथ हिलाती रही।

''ऊपर से एक प्लेन आ रही है... उसका उद्देश्य खराब लग रहा है... मैं भी डर रही हूं। मैं फटाफट प्लेन को देखकर बंकर में घूस रही हूं... आ...आ...आ.. क्या भयानक बॉम्ब का आवाज है। मेरे आस-पास में....'' अस्मिता के सिर पर पसीना छाया हुआ दिखाई दिया।

''सब यहां-वहां दौड़ रहे है। मैं भी बहुत रो रही हूं। ओह शीट... ओह शीट... मेरा पति... मेरा पति... मर गया।'' अस्मिता की आंख में से बूंद गिरने लगी। अनामिका के चेहरे पर शंका दिखाई दी।

''शांत हो जा... तू युद्ध में नहीं है... शांत हो।'' अस्मिता वापस शांत हो गयी। अनामिका आगे की गतिविधियों का विचार कर रही हो, ऐसा लगा।

''अब हम 2 वर्ष पीछे जाते है... *1,2,3,4,5....*'' अस्मिता - जोर से चिल्लाने लगी। ''शांत हो जा अस्मिता! शांत हो जा अस्मिता... अस्मिता...'' अनामिका ने पावरफुल आवाज में कहा। अस्मिता की आंखों में से लगातार अश्रु निकल रहे थे।

''क्या हुआ अस्मिता? तुमने क्या देखा?'' अनामिका अपने लक्ष्य के पास हो, ऐसा लगा।

''ये तीनों लोग... मेरे बेटे बाप रे! क्या कर रहे है? माय गॉड!'' उसके बाद अस्मिता शांत हो गयी। अनामिका ने एकदम पैनी नजरों से उसकी ओर देखा।

''बोल... वे क्या कर रहे है? एक-एक वस्तु बराबर बोलना।'' अनामिका ने अपनी आज्ञा दी। ''मेरे तीनों लड़कें एक व्यक्ति को पकड़ के लाये है। ये तीनों उसे बहुत मार रहे है। उसके मुंह पर खून निकलकर फैल गया है...ये...ये... शायद जर्मनी का है। ये बार-बार नाझी की बातें कर रहा है। मेरे बेटे उसे नाझी शब्द सुनते ही मार रहे है। मैं बहुत असहाय हूं... ये लोग मेरा सुनते नहीं है... उनके पप्पा भी बीच-बीच में पकड़े हुए उस सैनिक को पैरों से ठोकर मार रहे है...

मैं तो क्रिश्चीयानीटी में माननेवाली हूं। उसमें हरेक व्यक्ति का आदर करने को कहा गया है। ''मैं बचाने जाऊं।'' मुझे विचार आ रहा है। मैं जा रही हूं। सैनिक मेरी तरफ भीख मांगती नजरों से देख रहा है।

''प्लीझ....'' वो सैनिक रोने जैसा हो गया है। ''मॉम! तू यहाँ से चली जा...तू यहां से... '' मुझे मेरे ॲन्फील्ड ने साईड में खड़ा कर दिया।

''लगता है कि ये भी इसके जमात की ही है। इसे भी जर्मनी भेजना पड़ेगा....इसके साथ...'' मेरा पति जमीन पर थुकता है। मैं वहाँ से अपमानित अनुभव करके घर में जाकर दरवाजा बंद कर देती हूँ। वे सब जोर-जोर से हँस रहे हैं।'' अस्मिता शांत हो गई।

''क्या दिखाई दे रहा है तुम्हें अस्मिता? बोल बोल...'' अस्मिता

कुछ भी बोली नहीं।

''अस्मिता...अस्मिता...'' अनामिका ने उसे हिलाया। वो वैसी की वैसी आंख खुली रखकर पडी रही।

शासनद्रष्टाश्रीजी के चेहरे पर चिंता की रेखायें दिखाई दी।

''अनामिका! इसको क्या हुआ है?'' टेन्शन में दिखती अनामिका के पास S.D. गये।

''लगता है कि वहाँ इसने बहुत चौंका देनेवाली घटना देख ली है.. इसलिये इसके पास बोलने की शक्ति नहीं है। इस घटना में से इसे बाहर निकालना बहुत जरूरी है।'' ''थोडा डेन्जर है'' ऐसा मुझे अनामिका के चेहरे से लगा।

''अस्मिता!'' S.D. बोले।

''आह...आ..'' पूरे बिल्डिंग में सुनायी दे इतनी जोरदार चीख अस्मिता ने निकाली। ''बचाओ... इस जर्मन को बचाओ... ये मेरे बेटे कैसी यातना उसे दे रहे हैं। ये आग में जल जायेगा.. प्लीझ! ॲन्फील्ड, मारको, सुसेन! ऐसा मत करो।''

''शांत हो जा... शांत हो जा। क्या हो रहा है, ये तू मुझे बता अस्मिता! ''अस्मिता की आंखें बहुत बड़ी हो गयी हो, ऐसा लगा। वैसे भी उसकी चीख से मेरा हृदय एक धड़कन चूक गया था।

''मेरे तीनों बेटों ने उस जर्मन के दोनों हाथ रस्सी से बाँध लिये हैं। वह बहुत बड़ी पीड़ा में लग रहा है। मैं असहाय हूँ। मैं दरवाजा खोलने जा रही हूँ। ओह नो, दरवाजा ॲन्फील्ड ने बाहर से लॉक कर दिया है।

मेरा छोटा बेटा... उस जर्मन के हाथ की रस्सी को पेड़ से बाँध रहा हैं। अब ये क्या करेंगे? माय गॉड.. वे रस्सी के दूसरे किनारे को नीचे खींच रहे हैं। जर्मन जमीन से ऊपर उठ गया है। वो तड़प रहा है। उसके दोनों हाथ सीधे ऊपर रस्सी से बंधे हुये हैं। उसमें से उसके हाथ बाहर नहीं निकल सकते हैं।'' मुझे पता चल गया कि वे आगे क्या करने वाले हैं। इन तीनों की क्रुरता देखकर मैं दंग रह गयी।

''ओह नो। इन्होंने उस जर्मन के पैर के नीचे आग लगायी है। मेरा बड़ा बेटा उसके राईट पैर को चिमटे से पकड़ रहा है। मेरा छोटा बेटा

हाथ में रही रस्सी को लूझ कर रहा है।

माय गुडनेस... ये जर्मन आग में गिर जायेगा। थेंक्स गॉड... सुसेन ने रस्सी पकड़ ली । ओह नो... ये क्या? ॲन्फील्ड उसके राईट पैर को आग में सेंक रहा है। ओह...ये गुनाह बहुत खतरनाक है। नहीं...नहीं... ॲन्फील्ड नहीं... वो मर जायेगा...'' मेरी आँखों में पानी तैर आया। मुझे अस्मिता आंटी के पहले बेटे को प्रॉब्लम क्यों हुई थी उसका कारण समझ में आया।

वापस अस्मिता अपने कानों पर हाथ रखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

''अब मारको ने लेफ्ट पैर को पकड़ा है। वो लेफ्ट पैर को जला रहा है। राइट पैर तो पूरा जलकर पिघल गया है। ये सब कैसे राक्षस की तरह हँस रहे हैं। ओह... उसका लेफ्ट पैर भी पिघल गया है। वो कैसी दर्दभरी चीख निकाल रहा है... मैं सुन नहीं सकती। वो बहुत ही दयनीय हालत में है ।

ये...ये... छोटा... ये भी... इसके ऊपर तो मुझे सबसे ज्यादा आशा थी कि ये उन दोनों से अलग होगा। लेकिन, ये भी... ओह...नो... इसने तो रस्सी छोड़ दी है। धीरे-धीरे वो जर्मन आग की तरफ नीचे जा रहा है। उसकी छाती, उसका चेहरा, उसका मुंह...कुछ भी...कुछ भी...

इस मेरे छोटे को कोई तो समझाओ। ये क्या कर रहा है... इसने उस जर्मन को चिमटे से पकड़ लिया है। दो पैर सिवाय के ऊपर के शरीर को एक-एक करके जला रहा हैं। वो मर रहा है। ही ईझ डाईंग...'' जैसे कि बोल-बोलकर थक गई हो इस प्रकार अस्मिता शांत बैठ गयी।

''शासनद्रष्टाश्रीजी!'' अनामिका हमारे पास आयी। ''पता चल गया कारण क्या है? अब उसमें से रास्ता क्या निकालेंगें...?''S.D. विचारमग्न दिखाई दे रहे थे।

उनको कोई आइडिया आया हो, इस तरह वे अस्मिता जो हिप्नोटाईझ्ड थी उनके पास गये... उनके मुँह में से पहला शब्द मुझे सुनायी दिया, ''अस्मिता।''

I.S.T. 21.00

''**अस्मिता!**'' S.D. की मीठी आवाज अस्मिता में टेन्शन-फ्री ऊर्जा उत्पन्न करती हो ऐसा अस्मिता के चेहरे से लगा।

''अब समाधान एकदम नजदीक हैं। सिर्फ मैं तुम्हें एक प्रश्न पूछुंगी। तुम्हें इसका सही उत्तर देना पड़ेगा। OK.?" अस्मिता जड़ की तरह बैठी रही।

''तो... अस्मिता तुमने उस जर्मन को जलकर मरते हुये देखा। लेकिन वो यहाँ से मरकर कहाँ गया है, वो तू देख सकती है?'' थोडे टाइम तक अस्मिता ने कुछ भी रिस्पोन्स नहीं दिया।

''हाँ...मुझे कुछ दिखाई दे रहा है... लेकिन ये पूरी दुनिया... मैंने कभी भी पहले ऐसी दुनियाँ देखी नहीं है... वो एकदम ब्यूटीफूल है, वो एकदम छोटा है... और वो पलंग और चादर के बीच में सो रहा है, ऐसा लग रहा है... वो मुझे दिखाई नहीं दे रहा है क्योंकि वो चद्दर से ढका हुआ हैं। ये कौनसी दुनियाँ है?'' अस्मिता के चेहरे पर आश्चर्य के भाव दिखें। उसने कभी भी पहले शायद ऐसा नहीं देखा होगा।

S.D. को अस्मिता कहाँ की बात कर रही थी, वो समझ में आ गया।

''ये क्यां... इतनी सारी आकर्षक कामुक स्त्रीयां उसके आस-पास आकर खड़ी हो गयी है। वे सब एक अलग भाषा में गीत गा रही है, ''नमस्तुभ्यं । नमस्तुभ्यं। ऐही ऐही आगच्छ आगच्छ प्राणेश्वरः।'' ये कौन-सी भाषा है?

ओह! ये चद्दर में रहा हुआ जर्मन कितना फटाफट बड़ा हो गया है। ये 18 वर्ष के युवान जैसा हो गया है। ये कौन सी दुनियाँ है? अब ये बेड

पर बैठकर कुछ विचार कर रहा है। एक स्त्री आगे आकर इस जर्मन को कुछ कह रही हैं।

वो खुश होकर खड़ा हो रहा है। वो रूम में से बाहर निकल कर बडे हॉल में गया है। वहाँ का हॉल WOW ! क्यां इन्टीरियर है...! सब कितना जीवंत-लाईव है।'' अस्मिता लगातार बोलती ही जा रही थी।

''अनामिका! प्लीझ अब इसे 5 वर्ष आगे ले जा, जिससे ये देव बने जर्मन ने क्यां किया इन तीनों का वो पता चले...'' अनामिका अस्मिता के पास गयी।

''अब अस्मिता! हम 5 वर्ष तू जहाँ है, वहाँ से भावी में जायेंगे... तेरे मन को कन्ट्रोल कर....'' अस्मिता ने बोलना बंद कर दिया।

''1...2...3...4...5...गो....'' दो क्षण अनामिका ने जाने दी।

''अब बोल तुझे क्या दिखाई दे रहा है? वो जर्मन क्या कर रहा है ? ''अस्मिता। कोई दुःखद घटना देख रही हो, ऐसा उसके चेहरे पर से अनुमान हुआ ।

''मेरे छोटे बेटे की छाती के ऊपर और मुँह में और चेहरे पर किसी ने एसिड डाला है । वो बहुत तड़प रहा है... ओ...हो.... उसका दर्द बहुत असह्य लग रहा है। कोई भी इसे बचा सकेगा ऐसा लगता नहीं... मेरे दूसरे दो बेटों के पैर में भी प्लास्टर बाँधा हुआ है। वो दोनो एकदम उदास चेहरे के साथ चेयर पर बैठे हुये हैं। मेरे पति कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे है। शायद मर गये है, ऐसा लग रहा है।'' बहुत दयनीयता पूरे वातावरण में फैल गई। अस्मिता के मुँह पर भी दयनीयता दिखाई दे रही थी। शासनद्रष्टाश्रीजी अस्मिता के पास गये ।

''अस्मिता! मुझे सुन... तू देख सकती है कि जर्मन क्या कर रहा है? ''अस्मिता को S.D. के शब्द सुनाई दिए हो ऐसा एक भी रिएक्शन उसने किया नहीं।

''हाँ।'' अचानक अस्मिता बोली.. ''उसके मुँह पर एक कुटिल हास्य हैं। उसकी देवीयाँ डॉन्स कर रही हैं। जैसे कि बड़े युद्ध में किसी को पराजित करके आया हो, ऐसा मुझे लग रहा है।''S.D. सब समझ गये हो ऐसा उनके चेहरे से लगा।

''अनामिका! मेरा काम पूरा हो गया। अब इसे बाहर निकाल दें।''S.D. रूम से बाहर निकलने लगे...

''और अपेक्षा! तुम्हें देखना हो कि अनामिका किस तरह इसे वापस बाहर निकालती है, तो तू यहाँ रह सकती हैं। नहीं तो मेरे साथ आ जा...''

''मुझे रहना है।'' इस प्रकार मैंने इशारा किया।

I.S.T. 23.30

अस्मिता थोडी इझी अनुभव कर रही थी। मैनें अस्मिता आंटी का हाथ पकड़ा। वो धीरे-धीरे रूम से बाहर आयी ।

''आंटी ! आपने जो जो देखा वो आपको याद है?'' मैंने जानने के लिये प्रश्न किया।

'''नहीं... मैं तो एक लंबी गहरी नींद से जागी हूं, ऐसा मुझे अनुभव हो रहा है। क्या में नींद में बोल रही थी?'' अस्मिता आंटी ने मेरे सामने आश्चर्य से देखा।

''हिप्नोटीझम में हिप्नोटाइझड व्यक्ति भूल जाता है।'' अनामिका के शब्द मेरे कान में गूंजें।

'''नहीं...नही...नहीं... आप तो...'' गहरी नींद की एक्शन मैंने की अस्मिता आंटी हंसे। हम S.D. के सामने जाकर बैठें। वे बहुत गहराई से प्रार्थना कर रहे हो, ऐसा मुझे लगा। उन्होंने 5 मिनट के बाद आँखें खो-ली।

''ओह... तुम आ गये ? मुझे लगा कि तुम रूम में ही होंगे। तो।'' अस्मिता ने उत्कंठा से कोई समाधान की आशा से S.D. के सामने देखा ।

''अस्मिता! किये गए कर्म किसी को भी छोड़ते नहीं। तुम्हें अनामिका तुम्हारी भूतकाल की लाईफ में लेकर गयी थी। वहाँ तुम्हारे बेटों के कार्य बहुत ही क्रूर थे। उस कारण उन लोगों को, जो फिर से तुम्हारे ही बेटे बने है, इतने सारे प्रोब्लेम्स हैं। इसलिये अब तू ज्यादा टेन्शन लिऐ बिना मैं तुम्हें जो एक मंत्र दे रही हूँ उसका जाप कर। उससे तेरा मन स्थिर रहेगा।''S.D. ने अंधेरे में ही अपने पास रहे रफ कागज पर बिना नीचे देखें कुछ लिखकर दिया। बाहर से आती थोडी लाईट में अस्मिता ने मंत्र पढ़कर सुनाया।

''राईट... तुम्हारा उच्चारण एकदम स्पष्ट है। फिर से एक बात कह देती हूँ।'' S.D. के सामने अस्मिता ने देखा। ''किये हुये कर्म किसी को भी छोड़ते नहीं है, इसलिये उन कर्मों के बीच भी समाधि के साथ तू रहेंगी, तो वो कर्म तेरा पीछा नहीं करेंगे।'' जैसे कि अमृत कान में गया हो, इस प्रकार अस्मिता ने उस बात का स्वीकार किया।

''त्रिकाल वंदना म. सा.! आप मेरे लिये प्रार्थना करना कि हम इस जाल में से जल्दी मुक्त हो जायें । बाकी तो सब... और हां म.सा.! आपका उपकार मैं पूरी जिंदगी तक नहीं भूलूँगीं।''

वो लंगडाते-लंगड़ाते नीचे उतरने लगी। मैं उसे देखती रही। फिर मैं S.D. के सामने मुड़ी।

''आपको मैं एक प्रश्न पूछूं?'' S.D. के सामने मैंने देखा।

''हाँ...तू पूछ सकती हैं।'' एक गहरी आवाज सुनायी दी।

''आपको क्या लगता है कि तीनों व्यक्ति ठीक हो जायेंगे?'' इतनी देर से छुपायी हुयी जिज्ञासा मैने बाहर निकाली। S.D. ने सहजता से मेरी ओर देखा।

''अपेक्षा! मैं भी इसी बात का विचार कर रही थी। लेकिन...'' S.D. ने नीचे देखा। मैंने पहली बार S.D. को असहाय हालत में देखा।

''क्यों म.सा.! आप क्यों रूक गये ?... आपको यदि ठीक लगे तो प्लीझ मुझे कहो ना।'' मैंने उन्हें अरज की। S.D. के अपनी आँखों में से एक आँसू दूर किया।

''अपेक्षा!'' S.D. की आवाज दुःखभरी थी। ''रिवेन्ज'' ये शब्द सुनकर मेरे रोम खड़े हो गये।

''रिवेन्ज एक ऐसी वस्तु है कि जिसे इस दुनियाँ का कोई भी महान व्यक्ति रोक नहीं सकता।

भगवान महावीर थे, कृष्ण थे, तब भी बड़े युद्ध हुये थे। उसमें एक ही वस्तु स्पष्ट थी-रिवेन्ज। मुझे नहीं लगता है कि ये तीनों लड़कें ठीक होंगे, क्योंकि वो जर्मन अभी देव बनकर इन तीनों के पीछे हाथ धोकर पड़ा है। वो इन तीनों को छोड़ेगा नहीं।'' S.D शांत हो गये। वो आँखें बंद करके प्रार्थना में डूब गये। उनके मुँह पर बहुत दर्द दिखाई दे रहा था।

मेरे मन में भी प्रार्थना चालू हो गयी। मैं प्रार्थना क्यों कर रही थी इसका मुझे ख्याल नहीं आया, लेकिन मेरा मन भी उन तीनों के लिये दुःख अनुभव करने लगा।

मुझे बहुत वर्ष पहले कहीं पढी हुई बात याद आ गयी,

"REVENGE IS A POISON WHICH DESTROYS THE TAKER AND THE RECIVER AS WELL."

Chapter - 10

24/9/2010 I.S.T.22.00 Gwalior Tank, Mumbai

पॉझिटीवनेस अति भयंकर होती है.....।

मैंने मेरी नेट डाल दी थी। S.D. भी अपने वुलन और कॉटन के कपड़े को फैलाकर उसके ऊपर बैठ गये थे। वह हररोज प्रभु को प्रार्थना करके सोते कि ''यदि वे स्वयं आनेवाले कल को देखे, तो वो पॉझिटीवनेस से भरा हुआ हो....' और भगवान भी उनकी ये प्रार्थना लगभग पूरी करते।

मैं पूरे दिन की थकान के कारण जल्दी सोना चाहती थी। अभी तो मैं डनलोप की गादी पर सो ही रही थी कि मुझे रोने की आवाज सुनाई दी। मैंने दरवाजे की ओर देखा। क्योंकि आवाज वहां से ही आ रही थी। S.D. को भी आवाज सुनाई दी और हमारे हृदय में करूणा व्याप्त हो गई।

फिर से आवाज सुनाई दी और जोर से सुनाई दी। मैंने मेरी नेट साईड में की और देखने गयी। S.D.भी खड़े हो गये।

मैं दरवाजे से बाहर गयी। कोई नीचे उतर रहा हो, ऐसा लगा। मैंने उस आवाज का अनुसरण किया। मैं नीचे पहुंची। एक जवान 19-20 वर्ष की लड़की रोड़ पर खड़ी थी। वो लगातार रो रही थी और मुझे देखने के बाद उसका रोना ज्यादा बढ़ गया था।

''क्या हुआ?'' मेरे से उम्र में बड़ी ऐसी भी उसे मैंने बुलाया। वो सिर्फ रोती ही रही। S.D. अपनी शॉल ओढ़कर नीचे आये।

''अपेक्षा! क्या हुआ?'' मैंने वो रो रही लड़की की ओर पोइन्ट

किया। S.D.उसके पास गये। ''हेलो! क्या हुआ?'' एकदम मीठास से उस लड़की के कंधे पर S.D. ने अपना हाथ रखा। उस लड़की ने प्रतिकार नहीं किया। S.D. उसे बिल्डिंग के अंदर लेकर आये और उसे सीढ़ियों पर बिठाया।

''टेल मी द प्रॉब्लम, मैं उसे सॉल्व करने का प्रयत्न करूंगी...'' रोने का कारण जानने के लिए S.D. उसके पास आकर बैठे।

''म.सा.! मुझे दीक्षा दे दो... इस दुनिया को अब मैं सहन नही कर सकती।'' S.D. ने उसके रोते हुए चेहरे की ओर देखा। वो पागल नहीं, लेकिन अत्यन्त डिप्रेस्ड थी।

''तो, तू जैन है?'' उसने सिर हिलाया।

''लेकिन तू क्यों दीक्षा लेना चाहती है? तू क्या सहन नही कर सकती...'' लड़की ने S.D. की ओर देखा। उसे S.D. के चेहरे पर सौम्यता दिखाई दी।

''म.सा.! अब मैं सहन नहीं कर सकती।''

''लेकिन क्या...?'' दृढ़ता के साथ S.D. ने पूछा।

''मेरा भाई, मेरा भाई... मुझे दुश्मन-शत्रु समझता है। मैंने उसके बाद जन्म लिया और इसलिए पप्पा मुझे ज्यादा प्रेम करते थे। ये उसे बचपन से ही अच्छा नही लगता था। मुझे भी उसके पास जाने की इच्छा नही होती...'' स्टोरी लम्बी है ये S.D. को मालूम पड़ गया। वो खड़े हो गये।

''तेरा नाम क्या है?'' बीच में रोककर S.D. ने पूछा।

''अनोखी...''

''अनोखी!'' S.D. ने उसे उसके नाम से बुलाया। ''तू पहले ऊपर आ जा... ये देख तेरे होंठ में से खून निकल रहा है। उसे अपेक्षा ड्रेसिंग कर देगी। फिर हम आज ही रात को तेरी पूरी स्टोरी सुनेंगे। तैयार हो जा...'' S.D. ऊपर जाने लगे।

अनोखी साथ में आयी नहीं। मैंने उसे आँखों से ऊपर आने के लिए कहा। अनोखी ने अपने शोर्ट्स की तरफ इशारा किया। जैन साधुओं की रहने की जगह उपाश्रय में शोर्ट्स चलते नहीं थे।

''टेन्शन मत कर। मेरे पास ड्रेसेस है और तुम्हें फीट हो जाये ऐसे ही है।'' उसे विश्वास हुआ। वह ऊपर चढ़ी।

I.S.T 23.00

''**अनोखी!** देख अब तू रोना मत और तू जो भी बोले वो धीरे से बोलना। सब म.सा. सोये हुए है, इसलिए बिल्कुल रोना मत। नहीं तो सब...'' मेरी और S.D. की नम्रता और सौम्यता को देखकर वो थोड़ी शांत हुई।

''OK...म.सा.! मुझे रोना बिल्कुल पसंद नहीं, लेकिन मैं कन्ट्रोल नहीं कर सकती... और आज के प्रसंग के बाद तो...'' वो वापस रो पड़ेगी, ऐसा मुझे लगा। इसलिए मैंने उसके मुंह पर हाथ रख दिया। उसने आंख से इशारा किया।

''म.सा.! मैं कन्ट्रोल करने की कोशिश करूंगी...म.सा.! आज मुझे मेरे घर में से मेरे भाई ने बाहर निकाल दिया....'' उसके गले में रोने की आवाज आकर अटक गयी।

''एक महिने पहले ही मेरे पप्पा की मृत्यु हुई थी। वो अचानक चल बसे थे। उनका मेरे ऊपर जैसा कि मैंने पहले आपको बताया, वैसे प्रेम ज्यादा था। बचपन से ही मेरे भाई को ऐसा लगता था कि मेरे कारण पप्पा-मम्मी उसे कम प्यार करते है। इसलिए ही जब मम्मी-पप्पा बाहर जाते तो...'' अनोखी ने स्लीव्झ ऊपर की।

वहां बडे घाव का निशान था। वो पूरा भाग जल गया हो, ऐसा लग रहा था।

''मैंने मम्मी-पप्पा को ये बात पहले कही नही। लेकिन एक बार मुझे फ्रेक्चर हो जाने के कारण जब मम्मी ड्रेसिंग कर रही थी, तब उन्होनें वह भाग देखा। उनके मुख से चीख निकल गयी। पप्पा और भाई आ गये।'

''क्या हुआ?'' पप्पा ने पूछा। मम्मी ने मेरे जले हुए भाग को

तरफ ईशारा किया। पप्पा भी वह भाग देखकर दंग रह गये।

''किसने किया ये?'' गुस्से से उनका मुंह लाल हो गया । उन्होनें अपने हाथ में लकड़ी ली। मैं बोल भी नही पा रही थी, क्योंकि मुझे भाई से बहुत डर लगता था। भाई मेरे सामने भयानक नजर से देख रहा था। उसने अपने हाथ से अपने गले पर एक अंगुली घुमायी और अपने मुंह पर रखी।

''अनोखी! तू नहीं बोलेगी तो इस लकड़ी से मैं अपने आप को ही मारूंगा।'' उन्होनें जोर से लकड़ी घुमायी और सिर पर दे मारी।

सिर पर लगे उससे पहले ही मैंने ''स्टॉप'' कहा।

''मैं कहती हूं, मैं कहती हूं।''

''बोल...कौन था वो...?'' पहली बार मैंने पप्पा के मुंह से गाली सुनी।

मैंने अंगुली ऊपर की तरफ की। उस दिन भाई ने पशु से भी बदतर मार खायी। और बस उसके बाद मेरी और उसकी वैर की परंपरा चालू हुई। हम दोनों अलग-अलग गली के कुत्ते जैसे हो गये।

उसके बाद जब मम्मी-पप्पा बाहर गये, तब मुझे घर पर अकेला रहना पड़े उस प्रकार अपनी पिकनिक की बात बताकर वो मम्मी-पप्पा से पहले ट्रीप पर निकल गया। मम्मी-पप्पा को लगा कि 'वो घर पर नही है, तो हम अनोखी को अम्मा के भरोसे सुरक्षित रख सकते है।' मैंने भी उन्हें हां कह दिया, क्योंकि मैं तब 10^{TH} में थी और मम्मी-पप्पा मेरी वजह से बहुत समय से बाहर गये नही थे उसका मुझे दुःख था।

मैं रात को मेरे फ्रेन्ड्स के साथ बात कर रही थी और तब ही किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैं दरवाजे के पास पहुंची, तो दरवाजे का नीचे का लॉक खुला था। उसे किसी ने चाबी से खोला था। मैंने दरवाजे के छेद में से बाहर देखा, कोई भी दिखाई नहीं दिया।

मैंने दरवाजा खोला। एक पावरफूल हाथ ने मुझे अंदर धक्का मारा। मैं नीचे गिर गयी। मेरी आंखें दरवाजे के सामने ही थी। मेरा भाई मुझे वहां दिखाई दिया। मेरे मुंह मे से चीख निकल गयी। उसका चेहरा बहुत भयानक लग रहा था।

''अब अनोखी! तू क्या करेगी? इतने टाइम तक तू मम्मी-पप्पा

के पीछे छिपकर बच गयी ना? अब मेरे से तुझे कौन बचायेगा?'' उसने दरवाजा लॉक किया। मैं तो फर्श पर आश्चर्य से गिरी हुई थी।

वो मेरे पास आया। उसके मुंह मैं से भरपूर दारू पीने की दुर्गंध आ रही थी। उसने मेरे मुंह पर एक जोरदार तमाचा मारा। मेरा सिर झन-झनाने लगा।

''क्युं तुझे चेहरे पर बहुत प्रेम है ना? अब तू तेरा चेहरा किसी को भी बताने लायक नही रहे, इतना मैं तुझे मारूंगा...'' उसने मेरे चेहरे पर लात मारी। मुझे तो भय के कारण क्या चल रहा है वह ही पता नही चला।

''अब आ!'' उसने मेरे गुप्तांग की ओर देखा। तब मुझे ख्याल आया कि क्या चल रहा है। भाई ने अपने कपड़ें निकाल दिये थे। उसने मेरी शोर्ट्र्स पर हाथ रखा। मैं उसके पास से दूर भागने लगी। उसकी पक्कड़ टाईट होने से मेरी शोर्ट्र्स फट गयी। मैं सिर्फ मेरे नीचे के कपड़ें में ही रही। वहां से निकलकर मैं मेरे रूम में भागी। मैंने फटाफट रूम बंद कर दिया।

मेरा हृदय बहुत तेजी से धड़क रहा था। ''एक भाई अपनी बहन पर रेप...'' ये बात ही मैं मानने के लिए तैयार नही थी। बाहर से भाई की दरवाजा खटखटाने की आवाज आयी। दरवाजा टूट जायेगा इतना जोर से वह धक्का मार रहा था। मैंने मम्मी-पप्पा को फोन करने का विचार किया। मेरा मोबाइल बेड पर ही पड़ा हुआ था।

''अनोखी! याद रखना कि तुने यदि मम्मी-पप्पा को फोन लगाया है ना, तो अगली बार तेरा रेप और मर्डर साथ में होगा। इस टाईम सिर्फ रेप में पूरा हो जायेगा...'' मेरा हाथ कॉल बटन पर गया। नम्बर बीझी आ रहा था।

दरवाजे पर आवाज बढ़ी। वो कोई हथौड़ा लेकर ठोक रहा हो ऐसा लगा। मैं मेरे रूम के बाथरूम में घूस गयी। वहां बैठकर बाथरूम लॉक करके मैं लगातार रोती रही। तीन दिन बाद मम्मी-पप्पा घर आये।

घर की हालत देखकर उनको आश्चर्य हुआ। वे मेरे नाम से मुझे बुलाने लगे। लेकिन ज्यादा प्रेशर के कारण मैं बाथरूम में बेहोश हो गयी थी। पप्पा ने मेरा फोन ट्राय किया। तब उन्हें पता चला कि मैं बाथरूम में हूं।

बाथरूम का दरवाजा खुल रहा नहीं होने से पप्पा ने दरवाजा

तुड़वा दिया। मैं नीचे के एक वस्त्र में वहां पड़ी थी। मेरे मुंह पर सूझन पप्पा ने देखी। ये सब दृश्य देखकर पप्पा पागल जैसे हो गये।

उन्होनें मुझे जगाने की कोशिश की लेकिन मैं ज्यादा बेहोश थी। उन्होनें एम्ब्युलन्स के लिए फोन किया। एम्ब्युलन्स मुझे बोम्बे हॉस्पीटल ले गयी। 7 दिन के बाद मुझे होश आया। जब मैं उठी तब मेरा भाई वहां ही खड़ा था। मैं उसे देखकर वापस बेहोश हो गयी। पप्पा को पता चल गया कि मेरे बेहोश होने की जड़ क्या थी।

पप्पा ने हमारे रास्ते की तरफ के केमेरे चैक करवाये। उसमें भाई पकड़ा गया।

''वर्धमान! तुझे मुम्बई छोड़ना पड़ेगा और चेन्नई जाना पड़ेगा।'' पप्पा ने भाई को टिकिट पकड़ाते हुए कहा। ''मैं तुझे इस घर में नही रख सकता।''

''क्यों?'' भाई ने दलील की। सणसणाता एक तमाचा उसके मुंह पर पड़ा। पप्पा ने उसके मोबाइल पर एक विडियो सेन्ड किया, ''विडियो देख लेना, तुम्हें सब मालूम पड़ जायेगा...'' भाई ने विडियो देखा। उसे पता चल गया कि वह पकड़ा गया है। वह बेग पैक करके चेन्नई के लिए रवाना हुआ।

बाद मैं वह जब-जब मुम्बई मम्मी को मिलने आता, तब पप्पा मुझे लेकर बाहर चले जाते। पप्पा ने मरते दम तक उसका चेहरा कभी भी वापस नही देखा। सिर्फ अंतिम समय मैं विडियो कॉल करके उसके पास ''मिच्छामि दुक्कडं'' मांगा था। तब भी भाई ने पूछा था ''मैं आ जाऊं?'' पप्पा ने फोन कट कर दिया था। पप्पा ने वील बनाया था, जिसमें हम दोनों को समान भाग दिया था। उनके जाने के बाद वील एक्झीक्युट करने में आया था। और मेरे एकाउंट में आधे पैसे ट्रांसफर कर देने में आये थे।

हमारा घर और पप्पा की अपनी वस्तुऐं मम्मी के नाम करने में आयी थी। भाई पप्पा को अग्नि देने आया था। हम दोनों की शत्रुता पहाड़ जितनी हो गयी थी। अब एक होना अशक्य जैसा था।

और आज उसने ''तेरे कारण से मैं इतने वर्षों तक मां-बाप से अलग रहा।'' ऐसा कहकर मुझे बहुत मारा, फिर मेरी पीठ पर गरम इस्त्री

लगायी।'' मैंने अनोखी की ड्रेसिंग करते समय दाग देखा था। पूछने की मेरी इच्छा हुई थी, लेकिन मुझे तब उसके निजी जीवन में प्रश्न करने योग्य नहीं लगे थे।

''घर से बाहर लात मारकर निकाल दिया... अब आप ही कहो म.सा.! कि मुझे क्या करना?'' वो शांति से धीरे-धीरे रो रही थी। मेरी आंखों में भी दुनिया की इतनी हैवानियत देखकर आंसू आ गये।

''अब मैं वापस अपने घर नहीं जा सकती। मम्मी ने मेरे लिए बहुत फाईट की। लेकिन वो भी भाई के सामने परवश थी। मेरा भाई मुझे कभी भी घर में नही लेगा...''**S.D.** ने अपनी पलके बंद कर दी थी। ये **S.D.** की उपाय ढूंढने की स्पेशियल साईन थी। मैंने समाधान के लिए राह देखी।

I.S.T 23.30

''**चाईना** का मिनिस्टर केबिनेट इन्डिया के राजा के पास आया...''S.D अनोखी को समझा रहे थे। मैं और अनोखी मच्छर बहुत होने के कारण नेट में बैठे हुए थे।

''केबिनेट ने इन्डियन राजा को बहुत सारी गिफ्ट दी। इन्डियन राजा ने चाईना के केबिनेट को इंडिया आने का कारण पूछा।

''भारत के राजा! हमारे राजा ने यहां के लोग और राजा इतनी लम्बी उम्र तक इतने स्वस्थ किस तरह जीते है, उसका कारण ढूंढने के लिए भेजा है। हमारे लोग अभी छोटी उम्र में ही मर जाते है और तबीयत भी बहुत कमजोर होती है। आपके पास कोई खास उपाय हो तो हमें बताओ कि जिससे हम हमारे लोगों को ठीक कर सके।'' राजा उसे देखकर हंसता रहा।

''महानुभाव! पहले आप हमारे भारत का आतिथ्य तो मानों, फिर हम चर्चा करेगें।'' इन्डियन राजा ने अपने मंत्री को इशारा करके कुछ कहा और चाईना के मिनिस्टर्स को रवाना किया।

इन्डियन मंत्री चाईना के मिनिस्टर्स को अंडरग्राउंड में लेकर गया और वहां उन्हें जेल में लॉक कर दिया। खाने-पीने का सब अच्छा मिलता, लेकिन वे लॉक हो गये थे।

एक दिन इंडियन मंत्री उनको मिलने गया। ''हमें कब इस जेल से बाहर निकालोगे...? हम तो सिर्फ उपाय पूछने के लिए आये थे... हमारा अपराध क्या है?'' चाईना के मिनिस्टर्स एकदम दुःखी दिख रहे थे।

इन्डियन मंत्री ने जेल में से सामने दिखाई देते एक बहुत पुराने घटादार पेड़ की तरफ इशारा किया। ''ये पेड़ जब सूखकर गिर जायेगा, उस दिन तुम फ्री...'' उनके मुंह पर दरवाजा बंद करके मंत्री चला गया।

चाईना के मिनिस्टर्स को पता चल गया कि अब पूरी लाईफ इस जेल में ही बीतने वाली है और सड़कर सब यहां ही मरनेवाले है। पेड़ इतना हरा-भरा था कि अभी 100 वर्ष तक वो सूखनेवाला नही था।

चाईना के मिनिस्टर्स ने जेलर को इंडियन मंत्री के जाने के बाद पूछा कि ''ये पेड़ कितने वर्ष पुराना है?'' जेलर ने चाईना के मिनिस्टर्स को हृदय तोड़नेवाला उत्तर दिया ''1000 वर्ष...''

आधे मिनिस्टर्स तो मृत्यु से पहले ही मर गये जैसे हो गये थे। सभी के मन में लगातार एक ही भावना चल रही थी कि ''ये पेड़ सूख जाये तो अच्छा। ये पेड़ सूख जाये तो गुड...!'' उन सबका दिमाग उस पेड़ की तरफ ही था।

और एक दिन सुबह के समय मंत्री आया। चाईना के मिनिस्टर्स को जेल से बाहर निकाला और राजा के सामने उनको उपस्थित किया।

''देखो, ये पेड़ आज सुबह ही गिर गया। मेरी परम्परा के पहले राजा ने इसका बीज बोया था। ये 1000 वर्ष से यहां पर था, लेकिन हाय ये गिर गया...'' चाईना के मिनिस्टर्स को राजा के मुख पर दुःख दिखाई दिया।

''राजा! हमने तो ऐसा सुना था कि इंडिया के लोगों का आतिथ्य बहुत अच्छा होता है। और उसकी जगह आपने हमें 3 महिने तक जेल में डाल दिया...क्यों?'' एक नीडर मिनिस्टर ने सब चाईना के मिनिस्टर्स के हृदय में और मन में घूमता प्रश्न पूछ लिया।

राजा गंभीर हास्य से हंसने लगा।

''आपको पाठ सीखाने के लिए...इन्डिया और चाइना में क्या फर्क है ये सिखाने के लिए।'' चाईना के मिनिस्टर्स को बात सुनकर आश्चर्य हुआ।

''लेकिन किस प्रकार?'' सभी ने एकसाथ पूछा।

''ये जो पेड़ नीचे गिरा हुआ दिख रहा है।'' चाईना के मिनिस्टर्स को पता था कि राजा कौन से पेड़ की बात कर रहे थे। ''ये पेड़ 1000 वर्ष पुराना होने पर भी क्यों गिरा, पता है?'' एक भी मिनिस्टर के पास इसका जवाब नही था।

"ये पेड़ के गिरने का एकमात्र कारण आप सब हो, दूसरा कोई नही। आपके नेगेटिव विचारों ने ये पेड़ गिर जाए... ये पेड़ जल्दी नाश पाए..." पेड़ पर नेगेटिव असर की और ये गिर गया। ये पॉवर है विचारों का-मन का।

चाईना के लोगों का उनके राजा और लोगों के लिए नेगेटिव विचार है और इस कारण वहां के राजा और लोग ज्यादा जी नही सकते है। उनके शरीर में रोग हो जाता है।

जबकि हमारे दीर्घायु का कोई कारण है, तो हमारे लोगों की उनके राजा और लोगों के प्रति की पॉझिटीवीटी है। समझ गये?" चाईना के मिनिस्टर्स, इन्डियन राजा की कोई वस्तु सिखाने की कला को देखकर आश्चर्यचकित रह गये।

समझी अनोखी! मैं क्या कहना चाहती हूं?" अनोखी के सामने S.D ने देखा। अनोखी समझती हो ऐसा लगा।

"अनोखी! अपने मन का पॉवर बहुत जोरदार है। दुनिया में थोड़े ही ऐसे लोग है कि जो इस मन के पॉवर को जान सके और उसे अच्छे कार्यों में लगा सके। अपने मन की पॉझिटीवीटी और नेगेटीवीटी के संशोधन आज दुनिया के टॉप वैज्ञानिकों के द्वारा पेड़ तथा प्राणियों पर भी करने में आते है। और उसके अकथ्य परिणाम आते है।

मैं जब छोटी थी, तब एक प्रोग्राम आता। मेरे और मेरा भाई जैनम के पप्पा मि. ओसवाल ने साथ बैठकर एक बार प्रोग्राम देखा था, जिसमें हमें एक व्यक्ति बताया गया था। उसके हाथ में एक चम्मच थी और उसने सिर्फ अपने मन के पॉवर से वो चम्मच तोड़ दी थी।

अरे, इस मुम्बई में भी ऐसे मिड-ब्रेन एक्टीवीटी के क्लासेस चलते है, जहां छोटे बच्चों को अपने मन को विकसित करने के लिए गाइडन्स दिए जाते है।

उनकी आंखों पर रूमाल बांधकर, उनको रंग, नोट्स, बुक वगेरे के विषय में पूछा जाता है और वे उसका सच्चा जवाब देते है। जब उनका पॉवर बढ़ जाता है, तब वे अंधेरे में बुक भी पढ़ सकते है।

हमारे मन और दिमाग बहुत पॉवरफूल है। तुम जो विचार करो,

वो तुम कर सकती हो... मैं तुम्हें एक ही बात कहना चाहती हूं।" अनोखी ने S.D की तरफ देखा।

"हां।" अनोखी स्वीकार करने की इच्छावाली हो, ऐसा लगा।

"तू तेरे बलात्कारी, अत्याचारी भाई के लिए पॉझिटीव विचार ला... "वो दुनिया का सबसे अच्छा भाई है।" ऐसा विचार कर... और फिर देखना क्या चमत्कार होता है।"S.D रूक गये।

मैंने मेरे जीवन में पॉझिटीवीटी के चमत्कार देखे थे, इसलिए मुझे S.D की बातों पर पूर्ण विश्वास था। अनोखी विचार कर रही हो ऐसा लगा।

"म.सा.! आपकी बात तो सच्ची है। बचपन से जब से मुझे समझ आयी थी, तब से मैंने एक बार भी मेरे भाई के लिए पॉझिटीव विचार नही किया। लेकिन समझो कि मैं अब विचार भी करूं, लेकिन मेरे भविष्य का क्या? मेरा क्या होगा?" उसने अपने हृदय में कांटे की तरह चूभती बात की।

"तूं टेन्शन मत ले... तूं तेरा काम कर... आगे का भगवान पर छोड़ दे। भगवान सबका ध्यान रखते है.... मैं तुम्हें वचन देती हूं कि चमत्कार होगा... सिर्फ पॉझिटीव विचार कर।"S.D ने अनोखी के सिर पर हाथ रखा।

एक अकल्प्य शक्ति का पात उसके शरीर में होता अनोखी ने अनुभव किया। पॉझिटीव तरंगों को छोड़ने के लिए वह पद्मासन में बैठ गयी।

25/09/2010 **I.S.T. 8.00**

मैं कांच में देखकर अपने बालों को कंघी से सवार रही थी। अनोखी को रात की पॉझिटीव विचारों की एक्सरसाइझ के बाद अच्छा अनुभव हो रहा था। सुबह मेरा अलार्म बजते ही अनोखी भी जाग गयी थी। उसका टूटा हुआ विश्वास वापस आ गया हो ऐसा लग रहा था।

''अनोखी! मुझे S.D पिछले ३ दिनों से पूजा करने के लिए कह रहे थे... लेकिन मुझे आती नही थी। तूं मुझे सिखायेगी?'' उठते ही मैंने उसे पूछा था। वह जैन होने से उसे पूजा की सब विधियां और आचारों का पता था। मुझे मेरे दिखते भूतकाल में पूजा करने का ख्याल नही था। मैं जब छोटी थी, तब उत्सव के दिनों में मम्मी किसी मंदिर में लेकर जाती, इतना मुझे याद था।

अनोखी ने एकदम खुशी के साथ सिखाने की तैयारी बताई थी। फिर मैंने उसे मेरे सफेद ड्रेसों का कलेक्शन बताया था। वह चकित रह गयी थी। ऐसी कारीगरी उसने पहले कभी भी देखी हुई नही थी।

''तू नक्की कर। तुझे आज पूजा के लिए कौन सा ड्रेस पहनना है...'' अनोखी ने सब ड्रेस देखे थे... सब इतने अच्छे थे कि वह कन्फ्युज्ड हो गयी कि आज वो कौनसा ड्रेस पहने? फिर मैंने उसे एक ड्रेस निकालकर दिया था और अनोखी भी वो ही ड्रेस पसंद आने की बात बता रही थी। मेरा सिलेक्शन अच्छा था।

वह तैयार हो गयी थी। मैंने आज शेम्पू किया था, इसलिए मुझे तैयार होने में थोड़ा ज्यादा समय लगा था। उसने अपनी शोर्ट्स के पॉकेट में से 100 की नोट निकाली।

''क्यों?'' मैंने नोट की तरफ इशारा किया।

''जब हम भगवान के पास जाते है, तो खाली हाथ नहीं जाना, ऐसा मेरे पप्पा ने मुझे सिखाया है। इसलिए में जब वर्ष में 10-15 बार मंदिर जाती हूं तो पैसा या फल या मिठाई लेकर ही जाती हूं... शायद मैं 6 महिने

के बाद पूजा कर रही हूं।'' मुझे उसकी बात सुनकर आश्चर्य हुआ कि जैन होकर भी वह पूजा क्यों नही करती।

हम दोनों को S.D की आवाज सुनाई दी और हम दोनों हॉल में आये। गुरूणी अपने मुख्य स्थान पर बैठे हुए थे। वे कुछ पढ़ रहे थे। वे हम दोनों को देखकर खुश हो गए।

हम दोनों S.D के साथ मंदिर गये और अनोखी को S.D ने स्तुति गाने को कहा। अनोखी ने गाना चालू किया। उसकी आवाज में शहद भरा हो ऐसा मुझे लगा। उसकी आवाज बहुत मीठी थी। मुझे **''नवकार मंत्र''** के सिवाय दूसरा कुछ भी आता नही था।

S.D अनोखी को मेरे लिए सूचना देकर ३० मिनट के बाद वापस अपनी जगह पर जाने के लिए निकल गये। मुझे १ घंटे तक अनोखी ने अष्टप्रकारी पूजा किस तरह करनी वह सिखाया।

मैं जब भी मंदिर में आकर भगवान का चेहरा देखती, तब मुझे बहुत अच्छा लगता। आज मैंने उनके डायरेक्ट स्पर्श से एक अलग ही ऊर्जा मेरी नसों में बहती अनुभव की।

हम मंदिर से बाहर निकलकर हम जहां रूके थे, वहां जाने के लिए चलने लगे। रास्ते में अनोखी को मैंने भगवान के स्पर्श से मुझे अनुभव हुई पॉझिटीवीटी की बात की। अनोखी को भी ये ही अनुभूति हुई थी। उसे हृदय में अंदर से लग रहा था कि आज कुछ अच्छा होने वाला है।

हम एक-दूसरे को अलग-अलग वस्तुओं के लिए थैंक्यु कहते-कहते ऊपर चढ़े। बाहर बहुत सारे स्लीपर-बूट पड़े हुए थे।

''कोई म.सा. को मिलने आया होगा।'' मैंने अनोखी से कहा। अनोखी का चेहरा थोड़ा तनावग्रस्त दिखाई दे रहा था।

''क्या हुआ?'' मैंने पूछा।

''कुछ नही।'' वो सीधी हमारे रूम की तरफ चलने लगी। मैंने बड़े गुरूणी के पास बहुत सारे लोगों को बैठा हुआ देखा। S.D प्रार्थना कर रहे थे ऐसा मुझे लगा। अनोखी मुझसे कुछ छिपा रही थी ऐसा मुझे लगा।

मैं रूम की तरफ अनोखी के पीछे गई।

I.S.T. 9:30

''**अनोखी!** चल ना बाहर... S.D बुला रहे है।'' अनो-खी रूम से बाहर आने को तैयार ही नही थी। पिछले 15 मिनट से वो क्यों वापस शांत और गुमसुम हो गई ये बात समझने की कोशिश मैं कर रही थी। लेकिन अनोखी ने एक भी शब्द नहीं कहा।

''प्लीझ! मुझे फोर्स मत कर... मुझे नही आना।'' थोड़े गुस्से भरे आवाज में अनोखी बोली। मुझे खराब लगा।

मैंने फोर्स छोड़ दिया। लेकिन मेरे मन में तो प्रश्न चलते ही रहे। S.D को रूम से बाहर आया हुआ मैंने देखा।

''अनोखी....''S.D के बुलाने पर उसने ऊपर नही देखा, ''मैंने कल रात को तुझे क्या कहा था? तुझे याद है..?'' अनोखी ने S.D की तरफ देखा।

''ये अशक्य है। आप के कहने से ही मैंने किया।'' अनोखी को विश्वास नहीं हो रहा था S.D की बात का...

मुझे गुस्सा आया। ऐसा बर्ताव S.D के साथ कोई करे वह मुझे पसन्द नही था।

''अनोखी! "IMPOSSIBLE" शब्द में ही "I' M POSSIBLE" है... सच में तेरा भाई तुझे लेने आया है। एक बार तूं बाहर आ।'' अब मुझे समझ में आया कि बूट देखकर अनोखी को क्या हुआ था।

अनोखी की इच्छा नही लग रही थी फिर भी S.D ने वापस पॉझिटीवीटी की बातें करके अनोखी को बाहर आने के लिए राजी कर लिया था। वो खडी हो गयी। उसने मुझे पूछकर दूसरा सफेद ड्रेस पहना। वह बहुत सुंदर लग रही थी। दुपट्टा सिर पर ढककर वो बाहर गयी।

''क्या होगा?'' ये देखने के लिए मैं भी उसके पीछे-पीछे बाहर

गयी। गुरूणी के पास एक युवान बैठा हुआ था। S.D और अनोखी को देखकर वो खडा हो गया। मुझे ख्याल आ गया कि ये ही इसका भाई है।

जोर से रोने की आवाज मुझे सुनाई दी। अनोखी का भाई उसके पैरों में गिरकर बहुत रो रहा था। इतने युवान व्यक्ति को इस तरह पहली बार रोते हुए मैंने देखा था। इम्पोसिबल वस्तु आइ एम पोसिबल हो गयी थी।

अनोखी के चेहरे पर अविश्वास के भाव स्पष्ट दिख रहे थे।

'क्या करना?'' ये बात की समझ उसे भी नही थी। 5 मिनट वो खड़ी ही रही। फिर नीचे बैठकर अपने भाई की पीठ पर सिर रखकर वो भी रोने लगी।

ये दृश्य देखकर मेरी भी आंखें भर गयी। S.D ने और एक चम-त्कार शक्य किया था..

I.S.T. 10:00

आधे घण्टे तक दोनों एक-दूसरे पर इसी तरह बैठकर आंसू बहाते रहे। 20 वर्ष के बाद दोनों की दुश्मनी गायब हो गई थी।

''अनोखी! मैं तेरे लिए एक भाई का रोल कभी भी निभा नही सका। मैंने रक्षाबंधन के समय जो रक्षा की प्रतिज्ञा ली थी, वो मैं पालन नही कर सका। मैंने तेरे पर ही...'' आगे के शब्द उसके गले में ही अटक गये। वह बहुत रो रहा था।

S.D ने उसे शांत किया। वो 5 मिनट में एकदम शांत हो गया। सिर्फ उसकी छाती ऊपर-नीचे हो रही थी। वो देखने में बहुत हेन्डसम था, लेकिन उसके कार्य अनोखी के कहने अनुसार बहुत खराब थे। लेकिन उसका परिवर्तन देखकर मेरे मन में 'क्यों' शब्द उत्पन्न हुआ।

''तुम क्यों रो रहे हो? और ये परिवर्तन... क्या हुआ?''S.D ने मेरा मन पढ़ लिया हो ऐसा लगा।

''म.सा.!'' उसने बोलना शुरू किया। ''म.सा.! मैंने कल रात को अनोखी को घर से बाहर निकाल दिया। उसके बाद मम्मी एकदम गुमसुम हो गयी। उसने मेरे साथ एक शब्द की भी बात नहीं की।

मैं भी मेरे रूम में जाकर सो गया। लेकिन... मुझे नींद नही आयी। मुझे चारों तरफ खून-खून के ही दृश्य दिखने लगे। लगभग 11 से 11.30 बजे के बीच मैंने जो किया उसका पश्चात्ताप चालू हुआ।''

''पप्पा मर गये... मैं उन्हें पूरी लाईफ में थोड़ी भी खुशी नही दे सका। अब मम्मी भी मेरे इस जंगलीपन के कारण उदास हो गयी है... और अनोखी...'' मेरे मन में उस वक्त उसका फोटो आया। उसके साथ मैंने क्या-क्या नहीं किया था?

मुझे बहुत दुःख होने लगा। अब मेरे परिवार में से मेरे साथ कोई

भी नही था। मेरे पप्पा, मम्मी, बहन सब बिछड़े हुए पंछी की तरह हो गए थे। मुझे पूरी रात नींद नही आयी। मैं अंदर ही अंदर तड़पता रहा। मुझे कोई भी सपोर्ट करनेवाला नही मिला। उसी रात मेरा मेरी गर्लफ्रेंड के साथ बहुत बड़ा झगड़ा हो गया।

इतने वर्षों से जो मैं सुन रहा था, वो ही वस्तु उसने भी सुनायी, ''तूं कोई काम का नही।'' मेरा सिर लगातार दुःखने लगा। मुझे मर जाने की इच्छा हो गयी। इतने वर्षों में मेरे साथ ऐसा कभी भी नही हुआ था।

मम्मी! अंदर ही अंदर बहुत रो रही थी। मम्मी ने मुझे देखकर अपना चेहरा दूसरी ओर घूमा लिया। तब ये देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

''मैंने आप सबका क्या बिगाड़ा है?'' मैं जोर-जोर से पशु की तरह चिल्लाने लगा। लेकिन मुझे कोई भी प्रतिभाव मिला नही। मैं मम्मी के पास गया।

''मम्मी मैं कैसे जीयूं? तू भी बोलती नहीं। मेरा इस दुनिया में कौन है? क्यों मुझे इतने वर्ष अलग रखा? मैं मेरे पप्पा के अंतिम समय में भी उनके साथ...'' मेरा गला भर आया था।

मम्मी को मेरे प्रति थोड़ी करूणा आयी हो ऐसा लगा। लेकिन उसने करूणा बताने की एक भी चेष्टा नही की। वो जड़ की तरह मुझे देखती रही। मुझे मम्मी की आंखों में क्या भाव घूम रहे है, उसका अंदाज आया नही।

''प्लीझ मम्मी! प्लीझ मेरे साथ बात कर... मुझे कुछ तो बोल... मुझे बहुत...'' मैं बहुत रोने लगा।

''मैं क्या कहूं तुझे?'' आग बरसती वाणी मम्मी के मुंह में से निकली। मैं उस आवाज में रही हुई कर्कशता से दंग रह गया।

''तू हमारे साथ मानव बनकर जीया होता, तो मैं तुझे कुछ कहती। लेकिन तू तो हमारे साथ एक पशु से भी बदतर जीवन जीया है। पशु ही अपनी बहन पर रेप का प्रयास करते है ना?'' मैं चकित रह गया। मम्मी को कैसे पता चला कि मैंने मेरी बहन पर रेप का प्रयास किया था।

''तुम्हारे ही कारण पप्पा की मौत जल्दी हुई है। इसलिए मुझे

बहुत बार लगता है कि मुझे सिर्फ अनोखी ही हुई होती ना, तो मैं ज्यादा सुखी होती। तुझे पैदा करना, इससे बड़ा पाप मैंने और तुम्हारे पप्पा ने इस दुनिया में किया नही है और उसका ही फल अब मैं भुगत रही हूं।

बाहर निकल जा मेरे रूम से.... आज के बाद तेरी मम्मी तेरे लिए मर गयी है, ऐसा ही समझना। और जब तक अनोखी इस घर में वापस नही आयेगी, तब तक एक भी वस्तु मैं खाने वाली नहीं हूँ... GET OUT....?" कान फट जाये इतनी जोर से मम्मी ने चीख निकाली।

मुझे पहली बार मम्मी को देखकर डर लगा। इतनी अच्छी मम्मी का स्वभाव ऐसा हो सकता है उसका मुझे पता भी नही था।

मेरा हृदय मम्मी के हरेक शब्दों से हजार टूकड़ों में टूट गया। मैं रूम के बाहर जाकर मम्मी के शब्दों के प्रहार से टाईल्स पर गिर गया। मैं बेहोश हो गया।

सुबह जब मैं उठा, तब मैं अपने बेड पर ही था। हमारे घर के नौकर रामू ने मुझे वहां सुलाया था। लेकिन ये सब मुझे पता नही था।

मेरा सिर वेदना से फट रहा था। मैंने रामू को बुलाया। उसके मुंह पर भी बहुत दुःख था। मैंने उसको उसके दुःख का कारण पूछा।

उसने मुझ कारण कहा। मम्मी ने नाश्ता नही किया था। मैं मम्मी की रूम के पास गया। अंदर से रोने की आवाज आ रही थी। मैं रूम को खटखटाने गया, लेकिन उसके ऊपर के शब्दों ने मुझे वहां ही रोक दिया।

''जब तक तू अनोखी के साथ सुलह न करे, तब तक मुझे तेरा चेहरा मत बताना। नही तो मैं आत्महत्या कर लूंगी... जहर मेरे पास ही पड़ा है...''

मेरी आंखें मेरे परिवार को इस प्रकार तोड़ने के लिए बहने लगी। मैं वहां पर ही मम्मी के रूम के बाहर एक गहरे दबाव से बैठ गया। 'क्या करना?' ये ही मुझे पता नहीं चला।

अनोखी मुझे कहां मिलनेवाली थी। मेरा मन अनोखी को प्रेम के साथ स्वीकार करने के लिए तैयार हो गया था। मेरे मन में किए हुए अत्याचारों के लिए भयंकर पश्चात्ताप चालू हो गया था। मुझे मेरे टूटे हुए परिवार को वापस एक अखंड परिवार करने की इच्छा जाग गयी थी।

मैं वहां से खड़ा होकर किचन में गया। रामू वहां रोते-रोते मेरे लिए नाश्ता बना रहा था।

''रामू!'' मैंने एकदम कमजोर आवाज से उसे बुलाया। उसने पीछे देखा।

''तुम्हें पता है कि अनोखी कहां है?'' मेरे मुंह पर रही हुई सच्चाई को देखकर उसने अपना सिर 'हां' में हिलाया। उसने मुझे यहां का एड्रेस दिया। मुझे पहले विश्वास नही हुआ क्योंकि अनोखी पहले कभी भी धर्म के साथ, उसमें भी साधुओं के साथ जुड़ी हुई नही थी।

लेकिन मेरे पास दूसरा कोई विकल्प नहीं था और रामू ने अनोखी का पीछा किया होने से मैं यहां आया। यहां आकर देखा तो मुझे म.सा. आपने समाने से वेलकम किया। आपने मुझे कैसे पहचान लिया, इस बात का मुझे आश्चर्य हुआ... और स्टोरी अनोखी के आने के बाद पूरी हो गई...''

''अनोखी के आने से हकीकत में मेरी स्टोरी पूरी हो, ऐसी मेरी इच्छा है। अब तुम्हें नक्की करना है अनोखी...'' किये हुए काले कार्यों के कारण वर्धमान अनोखी की ओर देख नही पाया।

अनोखी और वर्धमान की स्टोरी जानकर मुझे आश्चर्य हुआ। पॉझिटीवीटी का पॉवर स्पष्ट देखने को मिला। अनोखी अपने भाई वर्धमान के गले लगकर फिर से रोने लगी। S.D अपना कार्य पूरा हो गया ऐसा जानकर वहां से निकल गये। मैं उनका सुखद अंत देखकर अपने आप को कन्ट्रोल न कर सकी। मेरी आंखों में भी वर्षा ऋतु चालू हो गयी।

Chapter - 11

27/9/2010

I.S.T 11:30

Gwalior Tank, Mumbai

REJOINING अति भयंकर होती है....!

मैं और अनोखी रूम में बैठकर कैन्डीक्रश गेम खेल रहे थे । उसकी गेम स्टाईल और प्रेक्टीस अव्वल दर्जे की थी, इसलिये वो मुझे गेमींग में आराम से हरा देती थी।

अनोखी अपने भाई के साथ अपने घर वापस चली गयी थी। उसकी मम्मी ने उस दिन 11 बजे वर्धमान और अनोखी के साथ नाश्ता किया था। वर्धमान के अंदर आये हुये बदलाव को देखकर उसकी मम्मी को विश्वास ही नही हो रहा था। अनोखी उस रात अपने घर पर ही सोयी थी। वह और वर्धमान, छोटे भाई-बहन की तरह एक ही बेड पर सोये थे।

उसकी मम्मी को ये दृश्य देखकर संपूर्ण संतोष हुआ था। वो भी रात को शांति से सो गयी थी। अपने संतानों की खुशी से बढ़कर कोई भी मम्मी-पप्पा को दूसरा कुछ नही होता है ना?

सुबह अनोखी उठी तब उसके लिये नाश्ता वर्धमान खुद तैयार करके लाया था। वर्धमान ने अपने हाथों से अनोखी को नाश्ता करवाया था। इतने जल्दी बदलाव को देखकर अनोखी को भी अपने भाई वर्धमान के लिये पॉझिटीव संवेदना होने लगी थी। 1 महिने के दुःखद वातावरण से अपने मन को फ्रेश करने के लिये अनोखी ने बनायें पेन- केक्स साथ लेकर तीनों हेंगींग गार्डन घुमने गये थे। वहाँ बैठकर उन्होंने अपनी लाईफ

की बातें की थी। फिर तीनों चौपाटी आये थे, वहाँ अरेबियन सागर में अपनी नेगेटीवीटी को डालकर वे सुखसागर हॉटेल में डीनर के लिये गये थे। वहाँ साउथ- इंडियन डीशीस पेट भर खाकर बाहर आकर कुल्फी पार्टी करके वे वापस घर गये थे।

सबने फ्रेश होकर वापस बहुत देर तक रात को बातें की थी। कोई भी देखे तो ऐसा ही लगे कि जैसे बहुत वर्षों के बाद ये लोग मिले होंगे।

आज सुबह अनोखी ने मुझसे मिलने आने के लिये अपनी मम्मी से परमिशन मांगी थी और वर्धमान अनोखी को बाईक नीन्जा पर छोड़ने आया था। बाइक के इंजन की आवाज सुनकर मैंने नीचे देखा था।

''हाय...'' अनोखी ने कहा था।

फिर अनोखी और वर्धमान ने ऊपर आकर **S.D** को अपने जीवन को इतना सुंदर बनाने के लिए थेंक्यू कहा था। वर्धमान, अनोखी को मेरे साथ छोड़कर अपनी नयी जॉब पर चला गया था। शाम को घर जाते समय वह अनोखी को पिक-अप करनेवाला था।

वर्धमान के जाने के बाद अनोखी ने अपने बेग में से मेरे लिए लायी हुई पेन-केक्स निकाली थी। मुझे केक खाये बहुत दिन हो गये थे। फिर उसने मेरे लिए लाया हुआ एक ड्रेस मुझे बताया था। वह बहुत महंगा होगा, ऐसा लग रहा था। मैंने उसे प्राइझ पूछी थी, लेकिन उसने मुझे नही कही थी। हर वक्त वो विषय बदल देती थी।

मैंने उसके साथ मिलकर पेन-केक्स खायी थी और फिर हम गेम्स खेलने बैठ गये थे। अभी मेरा फ्री टाईम था, इसलिए पढ़ने का या बाकी कोई काम मुझे अभी करना नही था। वैसे मैं मोबाइल पर गेमींग कम करती, लेकिन कोई मिल जाये तो समय कहां चला जाता उसका भी ख्याल मुझे रहता नही ।

और अभी मेरा और अनोखी का टाईम गेमिंग में ही खत्म हो रहा था।

अनोखी ने दूसरी गेम चालू की, जो मल्टीप्लेयर खेल सके वैसी थी। उसका नाम '**8 बॉल पूल**' था। हम दोनों एक-दूसरे के साथ कनेक्ट हुए। मैंने इस गेम के लिए सुना बहुत था, लेकिन कभी भी खेली नही थी।

हम टर्न बॉय टर्न अपने-अपने दांव खेलते रहे। मैं इस गेम में नयी होने से पहला मेच मैं हार गयी। मुझे मन में दुःख हुआ, क्योंकि मैंने मेरी टर्न गुमा दी थी।

दूसरी गेम चालू हुई। मैंने पूरी एकाग्रता के साथ गेम खेली। मैं जीत गयी।

''तू तो प्रो की तरह खेल रही है।'' अनोखी ने कहा, मुझे मन में अच्छा लगा।

''तीसरी गेम में भी इसको हरा दूं।'' मन में इच्छा हुई और हमारी तीसरी गेम स्टार्ट हुई। मैंने अंतिम शोर्ट खेला। एक साथ दो अंतिम बॉल होल में गये। मैं डान्स करने लगी। अनोखी को थोड़ा दुःख हुआ ऐसा लगा, लेकिन उसने मुझे कोन्ग्रेच्युलेशन किया।

''अपेक्षा!'' हमारे रूम के बाहर से आवाज आयी। हमें खाना खाने के लिए किसी के घर जाना था। जैन लोगों की वस्तुऐं मुझे बहुत पसंद थी। हम जहां रूके हुए थे, वहां भोजनशाला थी, लेकिन कभी-कभी किसी के घर से खाने के लिए विनंति आती, तब मैं उनके घर जाती थी। वहां वे लोग तरह-तरह की नयी-नयी आईटमों से मेरा आतिथ्य करते। उसमें भी मारवाड़ियों जैसा आतिथ्य तो मैंने कभी भी देखा नही था।

जैनम भी मारवाडी ही था और उसकी मम्मी भी आतिथ्य में एक्का थी। उसके घर आया हुआ व्यक्ति प्रशंसा किये बिना गया हो, ऐसा कभी भी हुआ नहीं था। हम ड्रेसीस बराबर करके उस आंटी के घर गये। उन्होंने हमारे लिये आज मेरी फेवरेट पंजाबी आईटम्स बनायी थी। पेट भरकर मैंने खाया। उनका बेटा टी.वी. देख रहा था। पाकिस्तान और दूसरे किसी की मैच थी। उनका बेटा पाकिस्तान के हरेक रन या 6/4 को देखकर ''शीट'' कर रहा था। मुझे उसके ऊपर हँसना आया। आखिर उसने टी.वी. बंद कर दिया।

वह मेरे सामने आकर बैठा। उसका मुँह उतरा हुआ लग रहा था।

''क्या हुआ?'' 10-11 वर्ष के बच्चे को मैंने पूछा।

''पाकिस्तान जीत गया....''

''तो?'' उसने मेरे सामने घूरकर देखा।

''आप इंडियन हो?'' उसने भड़ककर पूछा। मुझे उसका बर्ताव देखकर दिल में लग गया।

''ऐ...'' उसकी मम्मी ने उसे डाँटा, ''इस तरह अपने घर पर आये मेहमानों के साथ बात नहीं करते।'' बालक ने मम्मी की ओर देखा।

''मम्मी! ये दीदी मुझे पूछ रही हैं कि पाकिस्तान जीता तो क्या हुआ? इस दीदी को पता नहीं कि पाकिस्तान हमारा दुश्मन है। वो कभी भी किसी भी चीज में जीतना नहीं चाहिये।'' मम्मी ने अपने बेटे की ओर लाल आंखों से देखा। वो वहां से उठकर अपनी रूम में चला गया।

''सॉरी अपेक्षा!'' उसकी मम्मी ने कहा, ''आर्यन! इन्डिया का बहुत बड़ा फैन है और इसलिये चाईना, पाकिस्तान या इन्डिया का कोई दुश्मन कभी भी जीत जाये तो इसका मुड खराब हो जाता है। हम क्या कर सकते हैं ?'' मुझे बात समझ में आ गयी।

''ये छोटा है इसलिये ऐसा होता है। बड़ा हो जायेगा फिर ये नोर्मल हो जायेगा।'' उसकी मम्मी को मैंने आश्वासन दिया।

''भगवान से प्रार्थना करती हूं कि ऐसा हो जाये...'' आर्यन की मम्मी के चेहरे पर टेन्शन दिख रहा था।

मैं और अनोखी चटाकेदार आईटमों को खाकर फिर से उपाश्रय में आये। मेन रूम जहाँ सब म.सा. बैठते वहाँ परदा खुला हुआ था। उसके पीछे बैठकर म.सा. अपना एक टाईम का भोजन ले रहे थे। SD उनके गुरूणी और दूसरे भी सभी म.सा. एक टाईम ही भोजन लेते थे।

मुझे तो इस विषय पर विचार करते हुए भी पेट में भूख लगनी चालू हो जाती थी। मैं और अनोखी रूम में जाकर, AC ऑन करके बेड पर सो गये।

I.S.T. 16:00

‘‘**अनोखी!** अपेक्षा! ये गीत तुम सीख लो.. ये बहुत फेमस और हृदयस्पर्शी गीत है।’’ हमें हाथ में S.D ने बुक दी। उसके ऊपर **‘‘अमृतवेलनी सज्झाय’’** नाम लिखा था।

‘‘इसका मतलब क्या है?’’ मैंने S.D को नाम बताया। ‘‘मैं तुम्हें रात को बताऊंगी... अभी, तुम दोनों याद करो...’’S.D ने कहा।

हम दोनों इसे कंठस्थ करने लगे। उसमें 28 गाथा थी। 2 घंटे में मेरी 28 गाथा हो गई।

‘‘पूरा हो गया।’’ मैंने S.D के हाथों में बुक वापस दे दी और सब गाथा सुना दी। अनोखी अभी तक 10 ही गाथा याद कर सकी थी।

मुझे ये देखकर खुशी हुई, *‘‘मैंने उससे पहले पूरा किया।’’*S.D मुझे ही देख रहे थे।

***

‘‘**बाय** अनोखी! कल मिलेगें...’’ कहकर मैं वापस S.D के पास आकर बैठ गयी। अनोखी ने रात को यहाँ रूकने के लिये अपने घर और भाई को फोन किया था, लेकिन दोनों जगह नेगेटीव जवाब आया था। अनोखी को हमारे साथ रहने में बहुत आनंद अनुभव होता था। उसका स्वभाव बहुत ही रॉयल था। इस काल में ऐसा स्वभाव बहुत कम लोगों में देखने को मिलता।

S.D दूसरों के साथ कुछ चर्चा कर रहे थे। इसलिये मैने उन्हें डिस्टर्ब नहीं किया। मैं आज सीखे हुए गीत को गुनगुनाने लगी। म.सा. के साथ S.D की बात पूरी हो गयी और वे मेरी ओर मुड़े। मैं गीत में डूबी हुई थी। थोड़े समय के बाद पता चला कि S.D फ्री हो गये है। मैं उनके सामने

देख शरम के मारे हंस दी।

‘‘तू अच्छी तरह से गीत गाती है। ये तुझे अच्छा लगा है।’’ S.D ने मेरी प्रशंसा की।

‘‘हां, मुझे ये गीत अच्छा लगा है। यू-ट्यूब पर मैंने उसकी राग भी ढूंढ ली है। ये राग अच्छी है, लेकिन अनोखी की राग के सामने तो...’’ सुबह मंदिर में उसके राग की तो S.D ने भी प्रशंसा की थी। S.D की आँखें झपकी।

‘‘अपेक्षा! तुम्हें पता है कि इझरायेल और सीरिया में क्या फरक है ?’’

‘‘क्यों ऐसा प्रश्न मुझे पूछा?’’ ये ही मुझे समझ में आया नहीं। कुछ हुआ था वहाँ?

‘‘हां... एक ज्युईश देश है और एक मुस्लिम देश।’’ मुझे जितना याद था उतना मैंने कहा।

‘‘दोनों में समानता क्या है?’’ दूसरा प्रश्न S.D ने किया।

‘‘ये ही कि दोनों निरन्तर लड़ते रहते हैं...’’ S.D ने मैंने सही जवाब दिया है उसके लिये स्मित दिया। मेरे पप्पा को वर्ल्ड पोलिटीक्स का अच्छा रस होने से वे बहुत बार इन सब विषय में चर्चा करते। मैं भी ये सब वस्तु रस से सुनती।

‘‘मुझे प्रश्न ये होता है कि इझरायेल इतना समृद्ध कैसे है और सीरिया असमृद्ध क्यों है?’’ इस बात पर मैंने कभी विचार नही किया था।

‘‘क्यों है आपको ख्याल है?’’S.D मेरे सामने देखते रहे। दो मिनट के बाद जैसे कि अपना वर्षों का अनुभव कहते हो वैसे वह बोलने लगे।

‘‘अपेक्षा! दोनों मे फर्क दोनों देशों की मानसिकता में है। इझरायेल तुम्हें ख्याल ही होगा कि मिट्टी में से खड़े हुये फीनीक्स जैसा है। जो ज्युझ को जर्मनी में से बाहर निकाला गया था, उन सब ने मिलकर ये देश खड़ा किया है।

उन ज्युझ के पास कुछ भी नहीं था, लेकिन उनके पास एक लक्ष्य था, गोल था। खुद को वे ऊपर लाना चाहते थे, अपनी शक्ति को

बढ़ाकर।

जबकि सीरिया अपने अंदर के युद्ध में से ही ऊंचा नही आता। वो खुद ही अपनी शक्ति को दूसरों को नीचा दिखाने में, दूसरों को डीसेबल करने में खर्च कर रहा हैं।

इझरायेल का विकास उसकी पॉझिटीवीटी के कारण हुआ है। वो खुद अपने विकास में आनंद पाता है, साथ ही साथ दूसरे यदि अटेक करें, तो वो रिएक्ट करता है, दूसरे का नुकसान करने या दूसरे की हार में उत्सव मनानें वो कभी भी नहीं जाता।

सीरिया इससे एकदम उल्टा है। वो तो उसके सामने के देश को नुकसान पहुंचाने में, उनको नीचा दिखाने में ही अपनी सफलता मानता है और इसलिये ही वो स्वयं कभी सफल हो सकता नहीं। उसकी शक्ति दूसरों के पओ में आनंद मनाने में ही पूरी हो जाती है।''

''समझी तू?'' S.D ने मुझे गुप्त संदेश दे दिया था।

''अपेक्षा! इस दुनिया में ४ प्रकार के लोग होते हैं। (1) जो अपनी सफलता में आनंद अनुभव करते है। (2) दूसरों की सफलता में आनंद अनुभव करते है। (3) अपनी निष्फलता में आनंद अनुभव करते है। (4) जो दूसरों की निष्फलता में आनंद अनुभव करते है...

उसमें से नम्बर 2 प्रकार के कम होते हैं और हम उन्हें भगवान-प्रभु कहते हैं। दूसरों की सफलता देखकर, उसमें भी अपने शत्रु की सफलता देखकर आनंद-खुशी सिर्फ भगवान को ही होती हैं। क्योंकि वे तो अपने शत्रु का भी कल्याण ही चाहते हैं।

जो नम्बर 3 प्रकार के लोग है, जिसे हम पागल कहते है, वे खुद निष्फल होते हैं, तो उसकी पार्टी मनाते हैं। इनमें और पागल में ज्यादा अंतर नहीं है। जैसे पागल अपने उपर गंदा पानी डालकर खुश होता है, वैसे ही ये लोग भी गंदी निष्फलता अपने ऊपर डालकर आनंदित होते हैं।

जो पहले प्रकार के है, उन्हें हम मानव कहते है। दूसरों का जो हो वो, परंतु हमें सफलता मिली, तो हम आनंदित होते है। इसे हम सामान्य मानव स्वभाव कहते है।

और...' S.D ने वेधक दृष्टि से मेरे सामने देखा।

''जो नम्बर 4 प्रकार के लोग है उन्हें हम शैतान-डेवील कहते है। वह इतने खराब स्वभाववाले होते है कि दूसरों के नुकसान में ही उनको आनंद आता है। ऐसे लोग धरती पर बोझ जैसे है। उनका होना ही इस धरती के लिये अभिशाप है।

दूसरे फेल हो जाये उसमें उन दूसरों को जितना दुःख होता है, उससे ज्यादा सुख इन थर्ड क्लास लोगों को होता है। मैत्री नाम की वस्तु किसे कहते है, ये ही इन राक्षसों को पता नहीं होती है।'' आग बरसती स्पीच सुनकर में चकित रह गयी।

मुझे उस दिन घटित सब घटनायें याद आने लगी। मुझे आर्यन दिखा। मुझे मैं खुद दिखाई दी। इझरायेल के लोग मुझे दिखे और बोम्ब स्फोट में घायल हुये, अपने मम्मी-पप्पा-भाई के मर जाने के कारण रोते, खून की पिचकारी से लथपथ जमीन पर लोटते हजारों अनाथवाला सीरिया दिखाई दिया।

Chapter - 12

30/9/2010

I.S.T.21:30

Gwalior Tank, Mumbai

3 RULES अति भयंकर होते है....!

''हेलो अपेक्षा!'' मम्मी का फोन था। उनकी आवाज में मुझे डर अनुभव हो रहा था। एकदम दुःखमय प्रसंग बना हो, ऐसा लग रहा था।

''मम्मी! आप क्यों घबराये हुए लग रहे हो?'' मेरी आवाज में भी टेन्शन साथ मिला...

''अपेक्षा! मैं तुझे बहुत दुःखभरी न्यूझ देनेवाली हूं।'' मेरी धड़कने बढ़ गयी।

''क्या..?''

''अपेक्षा! पप्पा को हार्ट-अटेक...'' मेरे हाथ में से फोन नीचे गिर गया। मेरी आंखे और ह्दय रोने लगा।

'हेलो...हेलो...'' मोबाइल में से आवाज सुनाई दी, लेकिन मैंने प्रतिभाव दिया नहीं। मुझे एक बड़ा झटका लग गया। मेरे से जुड़े सब लोगों को हॉस्पीटल के साथ कोई जुड़ाव हो ऐसा मुझे लगने लगा।

फोन कट हो गया।

I.S.T.22:00

मम्मी का फोन एंगेज्ड आ रहा था। पिछले १५ मिनट से मैं प्रयत्न कर रही थी। न्यूझ सुनते ही जैसे मैं एक बडे तूफान से टकराई हूं ऐसा मुझे लगा था।

फिर अपने आप होश संभाल कर, मैने परिस्थिति चैक की थी। मैंने भी मम्मी से बराबर बात नहीं की थी। बड़ा झटका लगने से मैं मेरा कन्ट्रोल खो बैठी थी।

मैंने वापस फोन लगाया। रिंग गई। लंबे समय के बाद 'हेलो...' सुनाई दिया।

''क्या हुआ है मेरे पप्पा को?'' हकीकत जानने के लिये मैंने नर्स को प्रश्न किया।

''उन्हें हार्ट अटेक आया है। तुम्हारे पप्पा अभी गंभीर परिस्थिति में है। कितने टाईम तक वो जीयेंगे ये भी कुछ नक्की नहीं है'' ह्दय पर हथोड़े जैसे शब्द लगे।

''चान्सीस?''

''**50-50...**''

''हॉस्पिटल कौनसी है''? मैं जा सकुं उसके लिये मैंने पूछा।

''ऐशियन हार्ट...'' मेरे घर के पास में रही **5**-स्टार हॉटेल जैसी हॉस्पिटल मुझे दिखाई दी।

''अपेक्षा! तूं भाग्यशाली है कि तेरे पापा के पास मि. ओसवाल जैसे फ्रेन्ड्स है। नहीं तो शायद ये हॉस्पिटल तुम्हारे पप्पा का केस भी लेते नहीं...'' जैनम को जाकर हग करने की इच्छा मुझे हुई। मुझे दिया हुआ वादा जैनम के पूरा किया था। उसके शब्द मेरे मन में ऐम्बोस हुये।

''तूं तेरे मम्मी-पप्पा की चिंता मत कर, मैं उनका ख्याल रखूँ-गा।''

I.S.T.22:15

''**हेलो** जैनम! सब ठीक है ना?'' भयपूर्ण आवाज में मैंने पूछा।

''तुझे टेन्शन लेने की जरूरत नहीं है, यहाँ के टॉप डॉक्टर तेरे पप्पा को बचाने के लिये कमर कस रहे हैं। और अंदर की न्यूझ के अनुसार तेरे पप्पा खतरे से बाहर है। अब मेहनत उनके शारीरिक फंक्शन्स को जितना कम नुकसान हो, उसके लिये चल रही है।''

मुझे शांति मिली। मेरी आंखों में जैनम की मदद के लिये पानी तैर आया... मेरी आँखें भर आई।

''थेंक्यू...'' इतना मेरे मुँह से निकला।

''मेंशन नॉट... मैं तेरे लिये मर भी सकता हूँ।'' पीछे से किसी की आवाज सुनाई दी। वो आवाज जल्दी में हो ऐसा लगा।

''स्वीटहार्ट! मैं तुझे बाद में फोन करूँगा। मुझे यहाँ दवाईयाँ ला-कर देने का बड़ा काम आया हैं और नर्स मेरा सिर...'' फोन कट हो गया।

मैंने वापस 10 मिनट के बाद फोन ट्राय किया। लेकिन फोन लगा नहीं।

मैंने जैनम पर मेसेज छोड दिया। ***''मेरी वहाँ अभी जरूरत हो तो मैं अभी रात को ही वहाँ आ जाऊँ।''***

''जरूरत नहीं है... तुम सुबह आ सकती हो। रात को वो भी अकेले सफर करने का पागलपन वापस मत करना।'' शब्द कर्कश थे, लेकिन उसमें चिंता स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

मैंने प्रभु से सब अच्छा करने के लिये हृदय के अंतर भाव से प्रार्थना की।

I.S.T.22:30

शासनद्रष्टाश्रीजी सोने की तैयारी कर रहे थे। मैं धीरे से जाकर रूम के कोर्नर में खड़ी रही। मुझे बहुत अकेलापन लग रहा था। *'अगर अनोखी होती तो?'*

पिछले 2-3 दिन में अनोखी और मेरी फ्रेन्डशिप एकदम ज्यादा हो गयी थी। हम एकदम नजदीक आ गए थे। उसके दुःख में मुझे दुःख अनुभव होता और वह जब खुश दिखती, तब मेरा चेहरा भी खुश हो जाता। एक अटूट बंधन हम दोनों के बीच में बंधा था।

वह लगभग हर रोज मेरे लिये नयी ड्रेस, रेसिपी से बनायी हुई आईटम्स, नये गेजेट्स लेकर आती। वह बहुत उदार थी। उसके साथ मैं जब भी बाहर जाती, तब मुझे पर्स खोलने का मौका ही नही मिलता, क्योंकि मैं खोलूं, उससे पहले तो पेमेंट हो भी जाता था।

उसके भाई वर्धमान ने धार्मिक कार्यक्रमों में जाना चालू कर दिया था और वो नियमितता से हमारी जगह पर भी आता। वो S.D को बाकी सब लोगों की तरह स्पेशियल मानता और वो S.D का फैन बन गया था। उसने मुझे एक बार डिझनी ओरीजनल वॉच लाकर दी थी।

''तुमने ही मेरी अनोखी को उसकी डीप्रेस्ड अवस्था में ज्यादा संभाला है। मैं तुम्हें ज्यादा कुछ दे नहीं सकता, लेकिन...'' आँखों के कॉर्नर से एक बुंद नीचे गिराते हुए वर्धमान ने मुझे बॉक्स दिया था। फिर वो अपनी बाईक पर अनोखी के साथ वापस चला गया था। अनोखी का पूरा परिवार कुछ अलग ही मिट्टी का था।

S.D ने मुझे कॉर्नर में खड़ी हुयी देखा। उन्हें जैसे पता चल गया हो कि मुझे कोई तकलीफ हैरान कर रही है, इस तरह उन्होंने मुझे बुलाया।

I.S.T.22:35

“**ओह!!** ये तो बहुत खराब न्यूझ है।” मेरे बहते आँसू को देखकर **S.D** ने कहा। मैंने उन्हें भी मम्मी और जैनम के कॉल के विषय में बात की थी और फिर “मेरे साथ ही ऐसे क्यों होता है?” ये आक्रन्द व्यक्त किया था। **S.D** को भी थोड़ा सा झटका लगा हो ऐसा उनके चेहरे से लग रहा था।

“अपेक्षा! तूं रो मत... तू उसमें कुछ भी नहीं कर सकती है। ये तो प्रकृति का स्वभाव है। उसके सामने किसी का भी कुछ भी चल नहीं सकता।”**S.D** गहरे अनुभव के साथ बोल रहे थे, ऐसा मुझे लगा ।

“कल शायद मुझे जाना पड़ेगा।” थोडी शांत होकर मैंने मेरे मन की बात व्यक्त की। **S.D** का क्या मन्तव्य है, ये मुझे जानना था।

“ये तेरा निर्णय बराबर ही है। जहाँ जब जिस व्यक्ति की जरूरत हो, वहाँ उसे तब रहना जरूरी है। इसलिये तू जा सकती है।” सहजता से **S.D** ने मुझे कहाँ। मैं उनकी सहजता की बहुत बड़ी फैन थी।

“तो, अब हम वापस कब मिलेंगे...?” मेरी आवाज रोने के कारण दब गयी थी। **S.D** ने मेरे सिर पर हाथ रखा।

“टेंशन मत लें... भले ही मैं तेरे साथ वहाँ नहीं हूँ, लेकिन मैं तुझे गोल्डन रूल्स देना चाहती हूँ, जो कि तुझे मेरी तरह ही तेरी लाईफ के हरेक स्टेज पर मदद करनेवाले होंगे।”

‘ऐसे कौन से रूल्स होगें कि जो मुझे मदद करनेवाले होंगे? और वो भी S.D जितने?’ मेरे मन में ये बात बैठी नहीं।

“अपेक्षा! मैं अभी जो सलाह तुम्हें दे रही हूँ वो मेरे जीवन के वर्षों का रिसर्च है। इसलिये ध्यान से सुनना...” गिफ्ट की जैसे कोई व्यक्ति राह देखता है वैसे ही में ध्यान से **S.D** के बोलने की राह देख रही थी।

“अपेक्षा! हाल में ही मैंने एक जरनल में एक व्यक्ति की स्टोरी पढी थी।

वह **1964** में जन्मा था। उसके राज्य में इंग्लीश का प्रचलन बहुत कम था। वहां जो भी टुरिस्ट आते उनको इस परेशानी के कारण बातचीत करने में प्रॉब्लम होती।

बचपन से उस व्यक्ति को इंग्लिश सीखने का शौक था। वो जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे इंग्लिश में मास्टरी लाता गया। उस व्यक्ति ने आगे जाकर इंग्लीश में **B.A.** लोकल युनिवर्सिटी में से किया। जब वह स्कूल में था, तब वह इंग्लीश सिखने के लिये **70** माईल्स तक अपनी साईकल पर फोरेनर्स के गाइड के रूप में जाता। उसकी इंग्लिश सुधर गयी।

कॉलेज का **B.A.** कोर्स पूरा होने के बाद उसने एक **4** स्टार होटेल में नौकरी के लिये अप्लाय किया। उसके साथ दूसरे **24** व्यक्ति भी थे। लेकिन भाग्य!” मैं बराबर सुन रही हूँ या नहीं ये जानने के लिये **S.D** ने मेरी ओर देखा। मैं संपूर्ण एकाग्र थी।

“उसका नम्बर लगा नहीं। इतना ही नहीं उन **24** में से **23** का नम्बर लग गया, लेकिन उसका नहीं लगा। उसने दूसरे एक अपनी जातवाले व्यक्ति के वहाँ प्रयत्न किया। लेकिन उसने भी मना कर दिया....

वो अपने शहर में अलग-अलग **30** कम्पनीयों - रेस्टोरेन्ट में घूमा, लोकिन परिणाम ये ही... एक पीझा की दुकान में वह और उसका फ्रेन्ड दोनो गये। उसके फ्रेंड के मार्क्स उससे कम थे, फिर भी उसका मित्र चुन लिया गया... लेकिन वो रह गया। उसके मुँह पर ही पीझावाले ने दरवाजा बंद कर दिया ।

अंत में कोई विकल्प न होने से वह नेशनल पोलीस में जुड़ा। एक वीक के बाद मेन पोलीस ऑफिसर ने उसे स्पष्ट कह दिया कि “तू इस नौकरी के योग्य नहीं।”

इसी समय के दौरान उसने हार्वर्ड युनिवर्सिटी में भी अलग कोर्स में अप्लाय किया था। वहाँ से भी वह **10** बार रिजेक्ट हो गया।

उसने उसी समय नक्की कर लिया *“एक दिन मैं इसी युनिवर्सिटी में मेहमान वक्ता बनकर जाऊँगा।”* **1995** तक एक भी नौकरी के लिये योग्य न होने से, उसने नौकरी करने का विचार छोड़ दिया। नौकरी नहीं

मिलने के कारण उसके मन में व्यापारी बनने की इच्छा विकसित हुई।

1995 में उसने अपने फ्रेंड के साथ इन्टरनेट के विषय पर ज्यादा खोज करने के लिये अमेरिका जाने का निश्चय किया। थोडे समय पहले ही उसका नेट के साथ परिचय हुआ था और उसे ये नेट पसंद आ गया था।

वे अमेरिका गये। अलग-अलग कम्पनीयों की कार्य पद्धति वहाँ देखी। इन सब में उसे एक आश्चर्य हुआ कि सब वस्तु में आगे उसके देश का नामो-निशान भी इस विषय में नहीं था। पहली बार के पैसे डालकर उसने अपने देश की अलग-अलग कम्पनीयों को सर्विस देना चालू किया।

धीरे-धीरे उसका नाम बढ़ता गया। 1999 में उसने 5 मिलियन की वेल्यु की इन्वेस्टमेन्ट से दूसरी एक कम्पनी खोली और आज वो कम्पनी दुनियाँ की अच्छी पैसेवाली कम्पनी है। ये व्यक्ति दुनिया के टॉप 100 में है और शायद उसका विश्वास देखकर 2020 तक वह टॉप 10 में आ जायेगा।

जानती है तू, ये व्यक्ति कौन है?'' S.D ने मेरे सामने देखा।

मैंने बहुत से व्यापारीयों को देखा और सुना था, लेकिन इतनी मेहनत के बाद ऊपर आये बिझनेसमेन के विषय में, मैं पहली बार ही सुन रही थी। मैने ''नहीं'' कहा।

''अपेक्षा! ये बिझनेसमेन 46 वर्ष का चाईनीझ है और उसका नाम 'जैक मा' है...'' किसी जगह मैंने ये नाम सुना हो ऐसा मुझे लगा। शायद कभी जैनम ने कहा होगा। जैनम को बिझनेसमेन की लाईफ फोलो करने का रस था।

''लेकिन शासनद्रष्टाश्रीजी! उसमें आपके ३ रूल्स किस प्रकार आये?'' स्टोरी के पाये में रहे हुये 3 रूल्सवाली बात मुझे याद आयी।

''हाँ... इसका मतलब ये हुआ कि तू ध्यान से सुन रही थी। मुझे ये स्टोरी पढ़ने के बाद इस जैक मा की लाईफ में मेरे ३ रुल्स समाये हुये दिखें और उन्हें देखकर मुझे विश्वास आया कि मेरे रूल्स एकदम सच्चे थे। अपेक्षा! अभी 3 रूल्स सुन...

(1) GOD KNOWS EVERYTHIG RIGHT AND

GOD DOES EVERYTHING RIGHT...
SO ACCEPT EVERY SITUATION AS A GIFT OF GOD.

(2) SPEAK LESS, LISTEN MORE, SEE MORE.

(3) WHEN YOU THINK THAT A GOAL IS HARD TO REACH, DON'T CHANGE THE GOAL, CHANGE YOUR EFFORTS TOWARDS THE GOAL.

अपेक्षा! ये तीन गोल्डन रूल्स तू तेरी लाईफ में अपनाना। और मैं तेरे साथ शर्त लगाती हूँ कि तू कभी भी दुःख में नही जायेंगी। तूं कभी भी डीप्रेस नहीं होगी।''

मुझे S.D के 3 गोल्डन रूल्स सच में ही मेरी लाइफ में लगते हो वैसे लगे। लम्बे समय के लिये अमृत मेरी आत्मा को मिल गया।

1/10/2010 I.S.T. 6:00

अनोखी मुझे मेरे सफेद ड्रेसीस समेटने में मदद कर रही थी। कल रात को ही मुझे मेरे पप्पा के अटैक के न्यूझ मिलते ही मैंने अनोखी को कह दिया था। उसने ''मैं वहाँ 5.30 बजे तक आ जा-ऊंगी...'' का मेसेज किया था।

आज सुबह 5.30 की अलार्म बजने पर भी मैं उठ नहीं सकी थी। क्योंकि कल रात को S.D और मेरे बीच 12 बजे तक बातें चली थी। मैंने उनके पास मुंबई की जल्दी से बदलती लाईफ में स्वस्थ रहने की सलाह मांगी थी और उन्होंने अपना हृदय खोलकर मुझे सलाह दी थी। मेरे बहुत सारे प्रश्न भी उसमें सुलझ गये थे।

फिर अंतिम बार सॉरी कहकर मैं सो गयी थी। पूरी रात मीठी नींद में सपनों के व्याक्षेप बिना व्यतीत हुई थी। सुबह अनोखी ने आकर मुझे उठाया था। बाहर हल्की वर्षा हो रही थी। मैं छत्री लेना भूल गयी थी।

अनोखी ने अपने साथ मेरे लिये एक एक्स्ट्रा छत्री भी लायी थी। वो सार-संभाल रखने में नं. 1 थी। फिर पिछले 10-12 दिन का कचरा उसने साफ किया था और अंत में सभी वस्तुयें अपनी जगह पर रख दी थी।

''अपेक्षा! मैं तेरे साथ बांद्रा चलती हूँ।'' मुझे आश्चर्य हुआ। अनो-खी मेरी बेस्ट फ्रेंड जैसी थी, लेकिन इतनी बेस्ट फ्रेन्ड थी ये मुझे पता नहीं था।

''तेरी मम्मी...''

''तू उसका टेन्शन मत ले। मुझे तेरी सुरक्षा की चिंता ज्यादा है।'' मुझे उसके चेहरे पर सचमुच टेन्शन दिख रहा था।

''भाई भी कह रहा था कि लड़कियों को जल्दी सुबह अकेले ट्रा-वेल करना सुरक्षित नहीं है। इसलिये मेरे मना करने पर भी वो मुझे बाईक

पर यहाँ छोडने आया...'' मेरी बात को बीच में ही तोड़ते हुए अनोखी ने लेक्चर दिया।

मुझे पता चल गया कि वो मेरे साथ आने के अपने निर्णय से हिलनेवाली नहीं है। मैंने मेरी बेग हाथ में ली और अनोखी ने भी अपनी बेग पैक करके अपने कंधे पर डाली।

1/10/2010 I.S.T. 6.30

''म.सा.! मैं और अपेक्षा साथ में ही B.K.C जा रहें है।'' अनोखी ने मेरी ओर देखा। मैं एक भी शब्द S.D के सामने बोल नहीं सकी, क्योंकि आंसू लगातार मेरी आँखों से बह रहे थे। मुझे S.D से अलग होने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। मैं वे सामने होने पर भी अभी से उनको याद करने लग गयी थी। जैसे कि वे बहुत दूर जाने वाले हो और वापस न जाने कब मिलने वाले हो, ऐसा मुझे लग रहा था।

''अपेक्षा! अपेक्षा! बस...'' मैं S.D के चेहरे के सामने देख ही नहीं सक रही थी। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा।

''अपेक्षा! एक वस्तु समझ... बहुत बार फेवरेट व्यक्ति से अलग होना अच्छे के लिये होता हैं। क्योंकि भविष्य में तुम उस व्यक्ति के साथ और भी अच्छी तरह से एक होनेवाले होते हो। इसलीये टेन्शन मत लेना। जब भी तू डीप्रेस्ड हो, तो सिर्फ मुझे याद कर लेना। मैं वहाँ ही रहूंगी।''

अशक्य बात S.D कर रहे थे।

''ऐसा मत सोचना कि मैंने अशक्य बात कही है' क्योंकि कि हम जिसे अंतर से याद करते है, वो कोई न कोई स्वरूप में हमारे साथ आ ही जाता है।'' मुझ S.D के शब्दों में रहा हुआ रहस्य समझ में आ गया।

कल बताये हुए 3 गोल्डन रूल्स मुझे याद आये। मैंने अंतिम बार शासनद्रष्टाश्रीजी की गोद में अपना चेहरा छिपाकर मेरे हृदय को खाली किया। शासनद्रष्टाश्रीजी के जादुई स्पर्श ने मेरे सब प्रॉब्लेम्स, टेन्शन्स को गायब कर दिया।

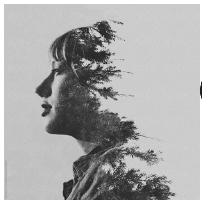

Chapter - 1

1/10/2010 **I.S.T.08.00** K2 Towers, BKC

HEALING अति भयंकर होती है.....।

पड़ोसी के पास से चाबी लेकर मैंने घर खोला। मम्मी ने मुझे कहा ही था कि मैं जब आऊंगी, तब वह हॉस्पिटल में होगी। मम्मी ने नाश्ता तैयार रखने की बात की थी और फिर तैयार होकर मुझे भी हॉस्पिटल आने का मम्मी ने कहा था।

अनोखी मेरे साथ है, ये बात मम्मी को पता नहीं थी, क्योंकि मुझे भी आज सुबह ही इस बात की जानकारी हुई थी और मैंने मम्मी को बताया नहीं था। मम्मी ऐसी परिस्थिति में अनोखी का आना पॉझिटीवली या नेगेटीवली ले उसका मुझे ख्याल नहीं था।

''अनोखी! ये मेरा घर है...'' बेग्स आदि सामान को अंदर लेते समय मैंने अनोखी के सामने देखा। उसने मेरी बेग उठाई थी और उसकी बेग भी उसके कंधे पर लगी हुई ही थी। मैं उसके हाथ में से मेरी बेग लेने गयी, परंतु उसने मना कर दिया।

''अपेक्षा! ये मेरा ही घर है... और इसलिये ही मेरी मेहमानगीरी करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तेरे ही परिवार की सभ्य हूं ऐसा ही समझना। इसलिए तू खुद के पप्पा की तबियत पर ज्यादा ध्यान देना और घर का और मेरा काम भूल जाना।'' हृदय के अंदर से निकले हुए अनोखी के शब्द मुझे स्पर्श कर गये।

इतने करीब हम कब आ गये, वो ही मेरे स्मरण में नहीं आ रहा था। वो मेरे सभी टेन्शन्स को जानती थी, ऐसा ही मुझे लग रहा था। वह सच में ही अनोखी थी।

मेरे लिए मम्मी मेरी फेवरेट आयटम 'चटपटी' बनाकर गयी थी। मैं और अनोखी मेरे रूम में रूके। मैंने उसे मेरा कबोर्ड, मेरा कलेक्शन्स सब बताया। वह मेरी **CHOICE** पर फिदा हो गयी। मैंने उसे खुद का सामान रखने के लिए एक ऍम्पटी कबोर्ड दे दिया।

उसने 10 मिनट में खुद का बेग खाली करके वहां जमा दिया। वह काम में बहुत फास्ट थी।

''अपेक्षा! किचन कहा है?''

''उसे भूख लगी होगी।'' मेरे मन में विचार आया। मैंने सहज रीत से डाइनींग टेबल पर पड़े हुए मेरे नास्ते की तरफ अंगुली की। अनोखी मेरी ऍक्शन देखकर हंसी।

''अपेक्षा! मैं नास्ते के लिए नहीं कह रही। इस नास्ते को मैं स्पर्श भी नहीं करूंगी, क्योंकि मुझे पता है कि तेरी मम्मी ने तेरे लिए खास तेरी फेवरेट आइटम बनायी है। मुझे तो किचन देखना है।'' अनोखी की समझ देखकर मेरा मुंह शर्म से नीचे हो गया।

I.S.T.09:00

बहुत दिनों के बाद घर में सभी कार्य करने का आनंद ही अलग होता है। मैं टॉवेल पहनकर बाहर आयी और खुद के बालों को ड्रायर से सुखाने लगी। पिछले 15 दिनों में मैंने मेरे बालों की संभाल नही की थी, उसके कारण वे चिपकु और कड़क हो गये थे। आज मैंने पेन्टीन शेम्पू लगाकर उसे सॉफ्ट कर दिये थे।

किचन में से नाक के रंध्रो को फ्रेश कर दे वेसी सुगंध आ रही थी। अनोखी कुछ बना रही थी। मेरा नास्ता बाकी था। बालो को सुखाकर कांच में देखकर मैंने बालो को स्ट्रेटनींग मशीन से सीधे किये। आज मैंने मेरे बालो को खुल्ला रखने का ही विचार किया था।

मैं बाहर गयी। मेरे चेयर के सामने पड़ा हुआ नास्ता मुझे दिखा नहीं। मैं किचन में जाने लगी। अनोखी किचन में से बाहर आयी।

''सॉरी अपेक्षा! तुझे रुकना पड़ा...'' अनोखी ने गरम बॉर्नवीटा दूध और गर्म चटपटी (माइक्रोवेव की) मेरे सामने रखी।

''तुझे कैसे पता है कि मैं बॉर्नवीटा पीती हूँ?'' मुझे दूध देखकर विस्मय हुआ। वह जानो कि मेरे मन को बुक की तरह पढती हो ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

''तेरे किचन में बोर्नवीटा हो, तो लगभग उसे कौन पियेगा ?'' अनोखी ने मुझे प्रश्न किया। ''अपेक्षा! ये कॉमन सॅन्स है कि बॉर्नवीटा लगभग बच्चे ही पीते है, इसलिये मैने बॉर्नवीटा का दूध तू ही पीती होगी ऐसा अनुमान किया।'' एकदम सामान्य बात हो इस तरह वह बोली....

''परंतु तुझे ये गर्म करने की क्या जरूरत थी.....''

''**SSSHHH....**'' उसने खुद के होंठ पर अंगुली रखी। ''तुझे शायद पता नही कि बहन किसे कहा जाता है। थोड़े दिनों के लिए तुझे मेरा ये आतिथ्य झेलना पड़ेगा। अभी से ही मैं तुझे सॉरी कह देती हूं... अब मुझे ज्यादा सवाल मत करना, नहीं तो मेरी आईटम जल जायेगी...'' अनोखी किचन में चली गयी।

आईटम की सुंगध से भी अनोखी के लाइफ की गुणवत्ता मुझे ज्यादा फ्रेश कर गयी। ऐसी फ्रेन्ड हो तो डीप्रेशन में जाना अशक्य मुझे लगा।

I.S.T.10:00

पार्किंग की जगह में बिल्डिंग के बाहर मैं और अनोखी खड़े थे। मैंने जैनम को फोन किया था। बारिश ज्यादा होने के कारण से जैनम ने मर्सीडीझ बेन्ज भेजने की बात की थी। वह आयेगा या नहीं वो बात नहीं हुई थी।

अनोखी ने खुद के बेग में सभी के लिए बनायी हुई अज्ञात आ-ईटम पैक करके रख दी थी और खुद को शासनद्रष्टाश्रीजी ने पढ़ने के लिये दी हुई **''समरादित्य महाकथा''** नाम की बुक भी साथ में ले ली थी। हम कितने समय तक हॉस्पिटल में रुकने वाले थे, वह अभी फिक्स नहीं था। मेरे पेन्डिंग कन्फेशन को कम्प्लीट करने के लिए मैंने लेपटॉप भी साथ में लिया था। फ्री टाइम में वह ही कन्फेशन का कार्य मुझे करना था। **''समरादित्य महाकथा''** स्टोरी पढ़ने के बाद अब पापों को साफ करने की इच्छा बढ़ गयी थी।

एक ब्लेक सीडेन पार्किंग लॉट में आयी। उसमें से जैनम उतरा। उसे सूट में देखकर मुझे हंसना आया।

''हाय! स्वीटहार्ट! हे ये कौन है? जिसके बारे में तू मुझे मेसेज कर रही थी और जिसकी प्रशंसा करते तू थकती नहीं, वह है ये?'' मैं हंसी।

''ओहो, क्या कॉम्बो है?'' जैनम के मुंह को देखकर हम दोनों हंसे।

''आपको क्या मैं जोकर लग रहा हूँ? कुछ नहीं... आजकल अच्छे कपडे पहनने वालो को सभी जोकर ही गिनते हैं।'' खुद की ब्लेक सीडेन की तरफ जैनम ने इशारा किया और हम सभी उसमें बैठ गये।

रास्ते में हमने अलग-अलग वस्तुओं पर चर्चा की। मम्मी को टेन्शन और प्रेशर बहुत ज्यादा था ये बात जैनम ने मुझे की। मम्मी की पूरी लाईफ मुझे संघर्ष वाली ही दिखी। अनोखी ध्यान से सब सुन रही थी। उसके विचार क्या थे? उसे पढ़ना मेरे लिए अशक्य था।

हमारी गाडी रूक गयी । हम ऐशियन हार्ट हॉस्पिटल के बेसमेन्ट में उतरे । सामने ही लिफ्ट दिखाई दे रही थी। मैंने मेरा ड्रेस बराबर किया। जिन्स और टीशर्ट आज मैंने पहना हुआ था। अनोखी भी ऐसी ही ड्रेस में थी। मैंने उसे मेरे कबोर्ड में से ड्रेस सिलेक्ट करने का कहा था। उसके माप के ड्रेस मेरे पास बहुत थे।

''बहुत ज्यादा खराब न्यूझ न हो...लॉर्ड..'' मैंने भगवान को प्रार्थना की और हम तीनो लिफ्ट की तरफ रवाना हुए।

I.S.T.11:00

''**अपेक्षा!** तेरे पापा खतरे के बाहर है। बस, अब दूसरे कॉम्प्लीकेशन्स ना हो उसका प्रयास हम कर रहे है। आपके पापा के नर्वस सिस्टम पर उनके पीने की आदत के कारण से वापस ठीक ना हो ऐसा खराब रीऐक्शन हुआ है। शायद वे वापस चल नहीं सकेगे।'' हृदय को चीर दे ऐसी दूसरी न्यूझ डॉक्टर ने दी ।

''डॉक्टर! क्या इसका कोई उपाय नहीं है?'' जैनम ने डॉक्टर को पूछा। ''है। परंतु, शायद समय हमारे हाथ में से पसार हो गया है। तो भी मैं प्रयत्न कर रहा हूं। आप टेन्शन मत लेना।'' डॉक्टर खुद के काम के लिए चलने लगे।

''डॉक्टर!'' मैंने डॉक्टर को रोका। ''वे जैसे पहले थे, वैसे हो सकते हैं?'' डॉक्टर ने मेरे प्रश्न को ध्यान में लिया।

''शायद हा... शायद ना... अगर आप मुझे मानसिक स्तर पर पूछते हो, तो हमारे बड़े डॉक्टर ने उनके दिमाग को बिगड़ने से बचा लिया है। अगर आप शारीरिक स्तर से पूछ रहे हो तो...मैं प्रयत्न करूंगा।'' ऐसा डॉक्टर के मुंह पर से लगा ।

''डॉक्टर! प्लीझ... प्लीझ! मैं आपके पास भीख मांगती हूं कि आप उन्हें ठीक कर दीजिये।'' मैं उनके पैर में गिरने गयी। डॉक्टर ने मुझे कंधे से पकड़ लिया।

''अपेक्षा! तू मेरी रोल-मॉडल है। मैं एक SD फेन हूं.... और मैं तुझे भी अच्छी तरह से पहचानता हूं.... तू मेरे लिये मिरेकल गर्ल है... इसलिये तू अब तेरे पापा का टेन्शन छोड़ दे। मैं उन्हें ठीक करने के लिए मेरा सर्वस्व दे दूंगा.... मैं तुझे कभी गलत सलाह देनेवाला नहीं हूं। इसलिए मैं तुझे जो कहूँ वह शांती से सुनना और फिर निर्णय आपका है।'' प्रेम के

साथ डॉक्टर बोले।

मुझे सिर पर टपली लगाकर डॉक्टर निकल गये। आगे जाकर वापस वे घूमे।

''मैं तुझें एक बात कहना भूल गया... आगे से तू किसी के पैर में गिरना मत क्योंकि...'' डॉक्टर दो सैंकंड के लिए रुक गये। ''तेरी किमत कितनी है, वह तू भी जानती नहीं है। तू बहुत प्रीसीयस है। ''प्रीसीयस'' शब्द सुनकर ''लॉर्ड ऑफ द रिंग्स'' का 'गोलम' मुझे याद आया।

मैं जाते हुए डॉक्टर की पीठ निश्चल आँखो से देखती रही।

I.S.T.11:15

खुद के मुंह को खुद की गोद में रखकर मम्मी रो रही हो ऐसा मुझे लगा। मैं मम्मी के पास गयी।

हम हॉस्पिटल में आकर सबसे पहले डॉक्टर को मिलने गये थे। मम्मी ICU के वेइटींग रूम में बैठी हुई थी और असिस्टन्ट डॉक्टर पापा को ट्रीट कर रहे थे ।

मुझे पता था कि मम्मी को हमारे नहीं आने के कारण टेन्शन होने वाला था, परंतु मेरे लिये सबसे महत्त्व का अभी पापा की परिस्थिति के बारे में स्पष्ट होना वह था, जो कि डॉक्टर को मिलने के बाद स्पष्ट हो गया था। बाद में हम मम्मी को मिलने के लिये निकले ।

''मम्मी...'' मेरा शब्द सुनकर मम्मी ने ऊपर देखा। मुझे देखते ही उसने खडे होकर मुझे हग किया और फिर वह रोने लगी ।

मुझे उसके रूदन में, दो प्रकार के अश्रुओं का अनुभव हुआ। एक मुझे मिलने का... दूसरा पापा के अटेक का.... मैं मम्मी की बहुत डीयर और नीयर थी।

10 मिनट तक वह मेरे कंधे पर सिर रखकर रोती ही रही। ''सॉरी, अपेक्षा! परंतु मैं खुद को कन्ट्रोल नहीं कर सकी...'' मेरे से दूर होकर मम्मी ने मेरे सामने देखा। मैने मम्मी के आसुंओं को पोंछा।

''मम्मी! मैं डॉक्टर को मिलकर आयी हूँ। वह SD फैन है और इसलिए ही उसने खुद की पूरी मेहनत करके पापा को नॉर्मल करने का वचन दिया है, इसलिए तू मजबूत बन...

ऐसे रोया मत कर।'' मम्मी को मैंने शांत किया।

मम्मी मुझे लेकर चेयर पर बैठ गयी। जैनम और अनोखी भी पास आकर बैठ गये।

''अच्छा। तू ठीक है ना? ''खुद को संभालकर मम्मी ने मेरे साम ने देखा।

''हां... सिर्फ कल रात को झटका लगा था.... बाकी तो...'' मुझे शासनद्रष्टश्रीजी याद आये। मेरा मन उनको मिलने के लिए भर गया। मैं चूप हो गयी।

मम्मी ने मुझे पापा को हार्ट अटेक किस तरह आया उसकी पूरी स्टोरी सुनायी। गैस मुख्य कारण है, ऐसा मुझे ख्याल आया। मैंने वॉच में देखा- 12.00 बजे थे। मेरा पेट कुछ खाने का मांग रहा था। ''मम्मी! मुझे भूख लगी है। वो टीफीन...'' मैं कहूँ उसके पहले ही मम्मी का टीफीन तैयार था।

''अपेक्षा! तेरी मम्मी तेरे से ज्यादा होशियार है। मैंने तेरे मुंह पर से पता कर लिया कि तुझे भूख लगी है।'' मम्मी ने टीफीन खोला। पंजाबी पनीर टीका मसाला और नान से पूरा बॉक्स भरा हुआ था। मैंने अनोखी और जैनम को भी हमारे साथ लंच के लिये बुलाया।

अनोखी ने खुद का बैग खोला। मम्मी उसकी तरफ देख रही थी। हमारी बातों में मैंने अनोखी का परिचय ही मम्मी को करवाया नहीं था।

''मम्मी! ये अनोखी है। मेरी 10 दिन में बनी हुई बेस्ट फ्रेंड... ये थोड़े दिनों तक अपने साथ ही रहेगी। आज सुबह...'' अनोखी ने मेरे मुह पर हाथ रखकर मुझे बोलने से अटकाया....

मम्मी उसकी ऍक्शन देखकर थोड़ी हंसी।

अनोखी ने खुद की बनायी हुई आइटम खोली।

''आंटी! सॉरी... मैंने आपका दूध - शक्कर इसमें उपयोग किया है। परंतु, आप एक बार टेस्ट करो...'' मम्मी को अनोखी ने मेरे फेवरेट बनकेक हाथ में दिये। उसका पूरा टीफीन उससे भरा हुआ था। जैनम ने पंजाबी खाने की मनाई की थी, परंतु बनकेक की गजब की सुंगंध उसे भी वहाँ खिंचकर लेकर आयी।

''ये क्या है? डीलीसीयस।' उसके मुंह में पानी आ रहा हो ऐसा मुझे स्पष्ट लगा। मैंने उसे देखकर चिडानेवाला स्मित दिया। उसने एक बनकेक बॉक्स में से उठाने का प्रयत्न किया। अनोखी ने उसके हाथ पर

हाथ मारा। "OUCH....." उसने हाथ पीछे ले लिया।

''आंटी को टेस्ट तो करने दे... फिर तू लेना।'' मजाक में अनोखी ने कहा। जैनम एक तरफ चेयर लेकर बैठ गया। मम्मी ने बनकेक टेस्ट किया। मम्मी के मुंह पर गजब की शांतता चमकी।

''ये बनकेक शायद दुनिया की सबसे टेस्टी बनकेक होगी।'' मम्मी ने टेस्ट से बनकेक खाते हुए कहा। मम्मी को अनोखी ने दूसरी बनकेक दी। उसने चार अलग-अलग फ्लेवर वाली बनकेक बनायी थी। मम्मी ने चारों टेस्ट की। हमारा लंच पंजाबी डीश और बनकेक से पूरा हुआ।

''अनोखी!'' खाना खाने के बाद मम्मी ने अनोखी को बुलाया। मैं एक चेयर पर बैठकर लेपटॉप पर खुद का काम कर रही थी। जैनम कॉर्नर में बैठकर मोबाइल पर शेयर्स का भाव देख रहा था। मेरा ध्यान मम्मी और अनोखी की तरफ गया।

''अनोखी!'' मम्मी ने अनोखी को विस्मय हो उस तरीके से उसके सिर पर कीस किया। ''तेरे बनकेक सिर्फ टेस्ट में सर्वश्रेष्ठ थे ऐसा ही नहीं, परंतु उन केक्स में मुझे प्रेम का भी अनुभव हुआ।

जिस क्षण मैंने मेरे मुंह में तेरी केक रखी, उस ही क्षण मेरे सभी टेन्शन मुझे उड़कर जाते हुए अनुभव हुए। तुने उन केक्स में प्रेम के ऐसे फॉर्म्युले डाले थे कि जिससे सभी रोग...टॅन्शन्स सूख जाये।

शायद मेरी पूरी लाइफ में अपेक्षा ही मेरे हृदय से सबसे नजदीक है। उसे भी इतने प्रेम से भरी हुई वस्तु शायद मैंने पूरी लाइफ में खिलायी नहीं होगी।'' मम्मी के अश्रु चालू हो गये।

''शायद ये रूझ लानेवाला पोशन मैं मेरे पति...'' मम्मी आगे बोल नहीं सकी।

''अनोखी...'' दो मिनट के बाद सहज होकर मम्मी बोली ''आज से तू मेरी बड़ी बेटी है। मेरे कोई भी बेटा-बेटी ऑफिशीयली नहीं है, परंतु रत्न जैसी दो बेटियाँ देकर भगवान ने मेरे पर अकथ्य कृपा की वर्षा की है।''

Chapter - 2

8/10/2010 **I.S.T.20.00** Asian Heart Hospital, Mumbai

ट्रावेलींग अति भयंकर होती है.....।

''मैं बोलते हुए दुःख का अनुभव करता हूं कि.... अपेक्षा!'' डॉक्टर मुझे आघातजनक न्यूझ दे रहे थे। मुझे डॉक्टर ने प्राइवेटली खुद की केबिन में बुलाया था। अंतिम एक सप्ताह से पापा को रूझ जल्दी आ रही थी। दो दिन पहले होश भी आ गया था।

''अपेक्षा ! तेरे पापा के ट्रीटमेंट के समय तेरे पापा के शरीर में एक गलत जीन पैदा हुआ...'' डॉक्टर ने मुझे ICU का विडीयो ट्रान्समिशन दिखाया। पापा के मुंह पर ऑक्सीजन मास्क था।

''ओ माय!'' मेरा हाथ मुंह पर गया। पापा का शरीर बिना किसी भी टॉनीक के फुल रहा था। उनके साथ एटेक की सुबह विडीयो कॉल पर बात करते समय जो उनका शरीर था उससे डबल उनका शरीर विडीयो केमेरा में दिख रहा था...।

''डॉक्टर ये क्या हुआ...हुआ?'' मेरे शब्द हकलाने लगे।

''अपेक्षा! तुझे डरने की जरूरत नहीं है। क्योंकि सब कन्ट्रोल में है। इस रोग को मेडिकल टर्मीनोलॉजी में CYSTIC FIBROSIS कहने में आता है। इस रोग में एक गलत जीन लंग्स और पॅन्क्रीयाझ पर असर करता है और उसके फंक्शन्स बिगड़ जाने के कारण व्यक्ति फुलता जाता है...'' डॉक्टर ने मेरे सामने देखा।

''डॉक्टर! इसका कोई इलाज नहीं है?'' मैंने डॉक्टर के सामने दयनीयता के साथ देखा।

''अभी तक तो इसका कोई इलाज नहीं निकला है, परंतु इसे हम कंट्रोल में रख सकते है।'' मेरा हृदय फट जाएगा ऐसा मुझे अनुभव हुआ।

''परंतु, उसके लिए क्या करना पड़ेगा? '' डॉक्टर कुछ भी बोले नहीं। दो मिनट के बाद वे खुद की चेयर से उठकर मेरे चेयर की बाजु की चेयर पर आकर बैठ गये।

''बस, ये ही चर्चा करने के लिये मैंने तुझे मेरी प्राइवेट केबीन में बुलाया है। मैं आशा रखता हूं कि तू मेरी बात सुनेगी और उसका अनुसरण करने का प्रयत्न करेगी।''

I.S.T.22.00

अनोखी और मम्मी आज जल्दी खुद के सपनों की दुनिया में पहुंच गये थे। ICU का वेटींग रूम सोने के लिए स्वर्ग था। मुझे कभी भी मम्मी या अनोखी जागने नहीं देते थे, परंतु आज मैंने जिद्द की थी और उन दोनों को मानना पड़ा था। जैनम हररोज रात को 9.00 बजे खुद के घर चला जाता और सुबह 9.00 बजे आ जाता। डॉक्टर के साथ मीटिंग करने के बाद केबीन से बाहर निकलते ही जैनम ने मुझे डॉक्टर ने क्या कहा उसके बारे में प्रश्न किया था। मैंने मेटर को अनइम्पोर्टन्ट कहकर उड़ा दिया था। उसे अच्छा नहीं लगा था। परंतु मेरे मुड को देखकर वह तभी कुछ भी बोला नहीं था।

मम्मी और अनोखी ने भी मुझे पूछा था, परंतु मैंने विशेष कुछ कहा नहीं था। फिर वे दोनों ठीक से प्रत्युत्तर नहीं मिलने के कारण खुद की बातों में खो गये थे। डॉक्टर ने मुझे कहे हुए भारी शब्दों को तोलने में ही मेरा संपूर्ण मन लगा हुआ था। मेरे मन को डाइवर्ट करने के लिए मैंने लेपटॉप पावर ऑन किया।

मुझे एक महत्त्व का कार्य पूरा करना था कि जिसके लिए मुझे अकेलापन चाहिए था। मम्मी और अनोखी थोड़े समय के बाद खुद की बातें पूरी करके मेरे पास आये थे। वे दोनों मेरे आस-पास चेयर पर बैठे थे और उन्होंने लेपटॉप देखा था।

''मम्मी! देखो आज आपको स्पष्ट शब्दों में कह देती हूं कि आज मैं ही जागने वाली हूँ।'' फिर हमारा बड़ा शब्दयुद्ध शुरू हुआ था। अंत में मैं जीत गयी थी।

मैंने आसपास में देखा। मम्मी और अनोखी थकान के कारण से गहरी नींद में थे। मैंने मेरे लेपटॉप का पावर वापस से ऑन किया। नेट की स्पीड अच्छी दिख रही थी। मैंने गूगल सर्च किया। गूगलवाले ने सर्च शब्द

पूछा। मैंने टाइप किया।

NEW JERSEY

मैंने सर्च बटन पर क्लीक किया। 2.1 सैकन्ड में बहुत सारी वेबसाइट के पेज लोड हो गये। मैंने एक वेबसाइट की लींक पर क्लीक किया। वेबसाइट खुल गयी।

वहाँ बहुत से ऑप्शन्स दिखाई दे रहे थे। मैंने **'अबाउट न्यू जर्सी'** नाम के ऑप्शन पर क्लीक किया। न्यूझर्सी का संपूर्ण इतिहास उसमें दिया था। न्यू जर्सी पहले जर्सी ही कहा जाता था। जर्सी का अर्थ इंग्लिश में 'पॅस्टर्स ऑफ़ ग्रीन लॅन्ड' था। जर्सी वह अमेरिका का सबसे छोटा और अग्यारहवाँ सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला राज्य था ।

न्यूझर्सी के कुल 8 नाम थे। उसमें से 'स्वीत्जरलैंड ऑफ अमेरिका' एक नाम था और 'द गार्डन स्टेट' दूसरा नाम था। वह खास करके खूबसूरती और ग्रीनरी के लिये प्रसिद्ध था। वहाँ का वातावरण स्वर्ग जैसा था और उस वातावरण में रूझ लाने की शक्ति थी।

डिसेम्बर, 1787 के दिन नये गवर्नर सर ज्योर्ज कारटर को सम्मानित करने के लिये कींग चार्ल्स के भाई ड्यूक ऑफ यॉर्क-जेम्स ने राज्य के जर्सी नाम को बदलकर न्यू जर्सी रखा था।

नेवार्क, जर्सी सीटी आदि न्यू जर्सी राज्य के मुख्य नगर थे। उसके उत्तर में न्यूयॉर्क था। और दक्षिण में पेनीसील्वीया था। उसके पूर्व में अटलान्टीक महासागर था।

नीचे लिखे एक छोटे पोस्ट पर मेरी नजर गयी। उस पर मैंने क्लिक किया।

9/10/2010

I.S.T. 9.00

रात को लॅपटॉप पर लेट होने के कारण से जब सुबह मेरी आंख खुली, तब मेरा सिर नींद के कारण से फट रहा था। मेरी आंखे जल रही थी। मैं वापस से मेरी चेयर पर सो गयी।

''अपेक्षा!'' अनोखी ने मुझे उठाया। ''समय तो देख। वहाँ म.सा. के पास थी, तब तो जल्दी उठ जाती थी और अभी.... देख...'' उसने मेरे मुंह के सामने खुद का मोबाइल फलेश किया। उसमें 9.02 मुझे दिखा।

''मुझे पता है कि तुने देर रात तक काम किया है, क्योंकि मैं रात को 12.00 तक तो जाग ही रही थी...'' मुझे भय लगा। *'मेरा काम उसने देख लिया होगा तो?'* *एक दो बार कॉफी का मग भरने के लिए कॅन्टीन* में मैं गयी थी। परंतु, तब मैंने लॅपटॉप की स्क्रीन ब्लेन्क नहीं की थी। मुझे स्क्रीन को ब्लेन्क करने का कोई कारण ही लगा नहीं था। मैंने डेस्परेटली अनोखी के सामने देखा।

''परंतु, मेरी आदत ऐसी नहीं है कि मैं दूसरे के कार्य में झाँकु। इसलिए मैंने तू क्या कर रही है, वह देखा नहीं है।'' मेरा चेहरा रिलेक्स हुआ। ''परंतु अपेक्षा मुझे तुझे एक सलाह देने की इच्छा हो रही है।'' अनोखी बोलते-बोलते अटक गयी। वह आगे के शब्दो को बोलना या नहीं बोलना ऐसा सोचती हो वैसा मुझे लगा।

''अपेक्षा ! तेरी डॉक्टर के प्राइवेट केबीन की मीटिंग के बाद तू डिस्टर्ब हो, ऐसा मुझे स्पष्ट लग रहा है। इसलिए तुझे कुछ भी निर्णय लेने के पहले उस बात की चर्चा करनी चाहिए किसी के भी साथ... तुझे छोटी उम्र में बहुत बड़े निर्णय लेने पड़ रहे है ऐसा मुझे स्पष्ट दिख रहा है...''

''अपेक्षा मॅडम !'' नर्स की आवाज सुनाई दी। मेरा ध्यान अनोखी के शब्दों से हटकर नर्स पर गया।

“डॉक्टर आपको बुला रहे है... प्लीझ, अरजन्ट है।” मुझे एक जटिल जगह में से निकालने के लिए मैंने भगवान का उपकार माना। अगर अनोखी अभी थोड़ा आग्रह करती, तो मैं शायद सब बात उसे कह देती। मैं नर्स के साथ में अनोखी को ‘मैं आ रही हूँ।’ कहकर डॉक्टर की केबीन में गयी।

डॉक्टर सामने खुद के लेपटॉप पर कुछ देख रहे थे।

“तो, तुने क्या विचार किया ?...” मेरे हाथ में गरमागरम कॉफी देकर डॉक्टर ने मुझे पूछा। मेरा मन अनोखी और डॉक्टर के शब्दों के बीच उलझ रहा था।

5 मिनट के बाद कॉफी की चूसकी के साथ मेरे मन में लाइट हुई।

‘डॉक्टर!’ खुद के लेपटॉप में मेरे मूक स्वभाव के कारण व्यस्त हुए डॉक्टर ने चश्मे में से मेरे सामने देखा। “मैंने जाने का नक्की तो कर दिया, परंतु सभी को पूछने के बाद...”

मुझे डॉक्टर के मुंह पर ‘कभी खुशी, कभी गम’ दिखा।

Chapter - 3

18/10/2010 **I.S.T.08.00** Asian Heart Hospital, Mumbai

कन्वीन्सींग अति भयंकर होती है.....।

पूरा न्यूझपेपर स्केम से भरा हुआ था। आदर्श स्केम की खोज में चीफ मिनिस्टर ऑफ महाराष्ट्र अशोक चव्हाण को राजीनामा देना पडे ऐसी परिस्थिति खड़ी हो रही थी। दूसरी तरफ अमेरिका के राष्ट्रपति नवम्बर में भारत घूमने के लिए आने वाले थे। इन्डिया और अमेरिका के संबंध अभी अच्छे हो ऐसी पूरी शक्यता थी। मुझे ये न्यूझ पढ़कर खुशी हुई।

अंतिम **10** दिनों में मेरी हालत भी महाराष्ट्र के सी.अेम. जैसी ही थी। क्या निर्णय लेना वह मुझे पता नहीं था। निर्णय लेने से भी निर्णय को व्यक्त करने में मुझे ज्यादा डर लग रहा था।

अनोखी को मेरे काम और प्रॉब्लम के बारे में पता हो ऐसा मुझे लग रहा था, परंतु वह भी मेरी संभाल ज्यादा करने के अलावा दूसरा एक भी शब्द मेरे साथ बोलती नहीं थी।

मम्मी को तो सालो के बाद अनोखी जैसी बेटी या फ्रेन्ड मिलने के कारण से खुद का समय निकालना आसान हो गया था। वे दोनों पूरे दिन रेसीपीस और लेडीझ की बातों में ही व्यस्त रहते।

जैनम भी बदल गया हो, ऐसा लग रहा था। उसे भी मेरे मन में पक रही खिचडी की सुगंध आ गयी हो ऐसा मुझे लग रहा था। इसलिए फिलहाल वह कम आता और एकदम कम बोलकर चला जाता। शायद

डॉक्टर ने कुछ हिन्ट दी हो ऐसी शक्यता थी।

मैंने डॉक्टर को भी मुझे समय देने को कहा था। डॉक्टर ने स्पष्ट कहा था 'जितना समय ज्यादा लेगी, उतनी ज्यादा उलझन में पड़ेगी।' उसने मुझे खुद पर विश्वास रखने के लिए कहा था।

'इतना बड़ा निर्णय किस तरह करना? उसके रीएक्शन्स क्या आएगें?' ये सभी विचार ही अंदर से मुझे खा रहे थे।

मैंने न्यूझपेपर बंध किया। आज मैंने मेरे प्रॉब्लम्स और निर्णय को ही तीन लोगों के सामने रखने का निर्णय ले लिया था। मैंने मेरा मोबाइल निकाला। मैंने एक मेसेज उसमें, टाइप किया।

''प्लीझ! मुझे एक प्रॉब्लम है। मुझे 11.00 बजे शार्प वेटिंग रूम में मिलना।''

मैंने सेन्ड बटन दबाया। मेरे मन में मुझे शांति का अनुभव हुआ।

I.S.T.10.55

मैं अंतिम दो घंटे में बनाये मेरे प्रेझेन्टेशन का अंतिम व्यू ले रही थी। डॉक्टर ने मेरे केस को मैं अच्छी तरह से रख सकूं उसके लिए मुझे स्क्रीन में बताये हुए मेरे पापा के शरीर के फोटोझ को देने की तैयारी बतायी थी। ऑफिशीयली हॉस्पिटल्स के नियम के अनुसार इस तरह फोटोझ देना गैरकानूनी था, परंतु तो भी डॉक्टर ने मुझे सपोर्ट करने का नक्की किया था।

मैंने जैनम को लीफ्ट में से बाहर निकलते देखा। उसने मेरा टेक्स्ट मेसेज पढ़ लिया था। उसके मुंह पर मेरे प्रॉब्लम के कारण से गमगीनी दिख रही थी। मैंने मेरा लेपटॉप शट डाउन किया और बाथरूम में गयी। वहाँ मेरे मुंह को फेसवोश से फ्रेश करके, मेरे हताश मुंह को नोर्मल करके बाहर आयी। मम्मी, जैनम और अनोखी अलग-अलग चेयर्स पर, टीवी में आते डान्स शो के जज हो उस तरह बैठे थे। मैं चौथी चेयर पर जाकर बैठी।

मैंने मेरा लेपटॉप मेरे पास की चेयर पर रखा। जैनम ध्यान से मुझे ही देख रहा था। मैंने मेरे मन में चल रहे नेगेटीव विचारों को झटका।

''मम्मी!'' उम्र में सबसे बड़े होने से और समझाने में सरल होने से मैंने मम्मी की तरफ देखा। ''आपको ख्याल हो तो आपने 10 दिन पहले मुझे पूछा था कि 'डॉक्टर और तेरी क्या बात हुई?' तब मैंने आपको ऐसे ही उडाऊ जवाब दिया था और ''बात कुछ खास नहीं है।'' ऐसा कहकर उड़ा दी थी, परंतु...'' मैं दो मिनट के लिए रुक गयी।

''परंतु, वह बात बहुत ही महत्त्व की थी और बहुत विचार करके मैंने ये बात आप सभी को कहने का नक्की किया है।'' जैनम खुद की सीट में हिला।

''शायद अनोखी को थोड़ा पता होगा, परंतु उसके अलावा... मेरे मन को ही ये बात पता है।'' मैंने सभी के प्रतिभावों को देखा। मम्मी थोड़ी तनाव में लग रही थी।

''सिर्फ मेरी विनंति इतनी ही है कि जब मैं बोलूं, तब मुझे बीच में अटकाना मत और अंत में आप सभी को मुझे जितने प्रश्न पूछने हो, उतने पूछ सकते हो....'' मैंने पी.सी. ऑन किया। उन सभी को दिखे उस तरह से उसे मैंने रखा।

मैंने पॉवर - पोइन्ट प्रेझेन्टेशन में जाकर मेरी फाइल कि जो DAD नाम से सेव थी वह ओपन की। 15 मिनट तक जानकारी से भरा हुआ शो चला। मम्मी, अनोखी और जैनम ध्यानपूर्वक उसे देखते रहे। स्क्रीन ब्लेन्क हो गयी।

''अब हमे नक्की करना है कि क्या करना...'' वह स्लाइड फ्लेश होती रही।

मम्मी के मुंह पर अकल्प्य दुःख दिख रहा था। जैनम खुद की आंखों को बंद करके जाने कि गहरे विचारों में खो गया हो ऐसा लग रहा था। अनोखी सतत स्क्रीन पर ही देख रही थी। उसके मुंह पर एक बख्तर आ गया हो ऐसा लग रहा था। उसके भावो को पकडना अशक्य हो गया था।

''मम्मी!'' मैंने शांतता को तोड़ा। ''ये परिस्थिति है मेरे प्यारे पापा की।''

''क्या ये रोग ठीक हो सकता है ?'' मैं जिस प्रश्न की लंबे समय से राह देख रही थी वह जैनम ने पूछा।

''नहीं।'' मैंने हृदय तोड़ने वाला जवाब दिया।

''तो डॉक्टर की सलाह क्या है?'' मैंने जिस बात को मनाने के लिए सभी को इकट्ठा किया था, उसें खोलने का समय अब पास में था। मैं खुद की चेयर पर हिली।

''ये ही कि हम सभी न्यूजर्सी जाये।''

Chapter - 4

21/10/2010 I.S.T.19.00 K2 Towers, BKC

पॅकिंग अतिविषम होती है..!

अनोखी मेरे मम्मी-पापा के साथ के पसार किये क्षणों के फोटोझ के आल्बम का निरीक्षण कर रही थी। थोडे फोटोझ को देखकर उसके मुंह पर आनंद स्मित आता और थोड़े फोटोझ को देखकर वह खुद के विचारों में खो जाती।

''अपेक्षा! मेरे हिसाब से तुझे ये आल्बम सभी समय, और सभी जगह तेरे साथ ही रखनी चाहिए। ये एक अमूल्य खजाना है।'' मुझे बॅग में आल्बम डालने के लिये देते समय अनोखी ने कहा। मैं और अनोखी पिछले तीन घंटे से बॅग पॅक करने में ही मशगूल थे ।

हमने अमेरिका जाने का नक्की कर लिया था। मीटिंग के दिन जैनम की इच्छा कम थी, परंतु दूसरा कोई विकल्प नहीं होने के कारण वह भी झुक जाने के लिए मजबूर हुआ था। वह मुझसे दूर रहने के लिए एक मिनट के लिए भी तैयार नहीं था। मीटिंग के दिन जब शाम को वह घर जाने के लिए निकल रहा था, तब उसने मुझे बुलाया था।

वह मुझे हॉस्पिटल की पार्किंग में ले गया था । फिर उसने मुझे लंबे समय तक प्रेम किया था और उसके मुंह में से शब्द निकल गये थे ''अपेक्षा! सच कहूँ तो मैं तुझ पर इतना आसक्त हो गया हूं कि मैं तेरे बिना

रह नहीं सकता। उस दिन जब तू डॉक्टर की केबीन से बाहर आयी, तब तेरे मुंह को देखकर ही मैंने नक्की कर दिया था कि अभी कुछ खराब न्यूझ है।

मैंने पापा को घर जाकर पूछने की कोशिश की थी, परंतु उन्होंने भी बराबर उत्तर नही दिया था। शायद मेरे लाइफ में मुझे आघात लगे ऐसा वह इच्छते नहीं थे। मैंने मम्मी को भी पूछने की कोशिश की थी, परंतु उनको भी कुछ पता नहीं था।

और आज मुझे ...''वह रोने लग जाएगा ऐसा मुझे लगा था। उसने खुद की स्लीव्झ से खुद के आंसू को पोंछा था। ''अपेक्षा! मैं ज्यादा बोल नहीं सकुंगा, परंतु शायद मैं भी जल्दी ही न्यू जर्सी... ''वह मेरे हाथ को दबाकर, खुद के वाक्य को अधूरा रखकर सीडेन में बैठकर निकल गया था। मैंने सबको मना तो दिया था, परंतु सभी के रीएक्शन्स इतने हाइपर होंगें वह गणित मैंने नहीं लगाया था। मैं लिफ्ट में वापस ऊपर गयी थी। मम्मी चेयर पर गहरे कोई विचार में डूबे हुए दिखाई दे रहे थे। मैं उनके बाजू में जाकर बैठ गयी थी।

वो रो पड़े थे। ''अपेक्षा! मुझे तेरे जैसी बेटी मिली इस बात पर बहुत गर्व है। तेरे रिहॅब सेन्टर की सुपरिन्टेन्डेन्ट ने हम जब दत्तक लेने के लिए पहली बार आये थे, तब कही हुई बात मुझे बारबार तुझे देखकर याद आती है।

''अपेक्षा! एक ऐसी लड़की है कि जो आपके घर के लिए, आप-के संबंधो के लिए स्तंभ का काम करेगी। आप पूरे भारत के एडॉप्शन्स सेन्टर्स में घुम लो...आपको ऐसी लड़की मिल जाये, तो मेरा नाम बदल देना।'' उस समय तो मुझे सुपरिटेन्डेन्ट का वाक्य हायपरबोल लगा था, परंतु आज मुझे उस वाक्य का गहरा अर्थ समझ में आ रहा है।

यु आर अ सुपर गर्ल!''

आगे के दो दिन नोर्मल पसार हुए थे। पापा को भी डॉक्टर ने न्यूजर्सी जाने के लिए समझा दिया था। शुरूआत में उन्होंने थोड़ी आना-कानी की थी, परंतु फिर वे आसानी से मान गये थे। क्योंकि समझाने वाले मिस्टर ओसवाल थे। कल के दिन मि. ओसवाल हॉस्पिटल से खुद के घर

रिटर्न होते समय मेरे पास आये थे।

''अपेक्षा! तेरे पास सच में ही मजबूत ह्रदय है। मुझे ऐसा था कि कोमा तेरी क्षमता को घटा डालेगी, परंतु कोमा के बाद तेरी बुद्धि सूक्ष्म हो गयी है। तेरे पापा को मैंने और डॉक्टर ने अमेरिका जाने के लिए मना लिया है और...'' खुद के पॉकेट में से 3 प्लेन टीकीट्स निकालकर उन्होंने मेरे हाथ में रखी थी।

मैंने उस पर प्रिन्ट की हुई तारीख देखी- 26^{TH} ऑक्टोबर... ''6 दिन बाकी है अपेक्षा! पैक अप एन्ड फ्लाय।''

खुद के पॉकेट में से मि. ओसवाल ने एक डेबिट कार्ड निकाला था। ''ये डेबिट कार्ड जैनम ने मेरे पास तुझे मिलने के बाद तुरंत ही बनवाया था। उसमें 1,50,000 डॉलर का डेबिट अभी है, ये तुझे अमेरिका में काम आएगा।'' मैं डेबिट कार्ड लेने की मनाई कर रही थी और तब मि. ओसवाल ने मुझे कहा था।

''अपेक्षा! ये मेरी तरफ से गिफ्ट समझना। मुझे पता है कि तेरे पापा के पास बैंक बेलेन्स अच्छा है...परंतु जैनम के बेस्ट फ्रेन्ड के लिए अगर मैं इतना भी नहीं करूं, तो वह 100% मेरे पर गुस्सा होने वाला है। इसलिए प्लीझ!'' जाने कि मेरे पास भीख मांग रहे हो ऐसा मुंह उन्होंने बनाया था। मेरे पास डेबिट कार्ड स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

मम्मी के पास से छुट्टी लेकर पैकिंग करने के लिए आज सुबह ही मैं और अनोखी K2 टावर के मेरे फ्लेट में आये थे। घर घर है...!

''अपेक्षा!'' भूतकाल में खोयी हुई मैं अनोखी के शब्दों को सु-नकर वर्तमान में आयी।

''ये तेरा नेकलेस, फोन तुझे बहुत अच्छा लगता है? ऐसा लगता है...तुझे अमेरिका साथ में लेकर जाना है?'' अनोखी ने मुझे एक पाउच बताया। उसे देखकर मुझे मेरा काला भूतकाल याद आया। मैं उसमें वापस खो गयी।

I.S.T.22.00

''**हाँ,** मैं समझती हूँ.....'' अनोखी ने फोन कट किया।

''किसका फोन था?'' अनोखी की तरफ मैंने देखा। उसके मुंह पर मुझे थकान स्पष्ट दिखी। हम सुबह से पेकिंग ही कर रहे थे। मि. ओसवाल ने हमे 'ट्रावेल लाइट' की सलाह दी थी, इसलिए हम ने दो अलग लगेज बनाये थे।

एक जो हमारे साथ केरी करना था और दूसरा जो मि. ओसवाल हर सोमवार को खुद की अमेरिका ऑफिस में प्रवास करने वाले खुद के इंसान के साथ भेजने वाले थे।

मि. ओसवाल की वजह से हमारे पासपोर्ट-वीझा की सभी प्रक्रियाएँ फटाफट और शांती से हो गयी थी। वे सच में ही बहुत पहुंचे हुए व्यक्ति थे। अमेरिका में सुपर सायकोलॉजिस्ट और कोमा स्पेशियालीस्ट डॉ. ब्राउन ही व्यवस्था कर रहे थे। अमेरिका में न्यूजर्सी में समर विला भी मि. ओसवाल का था। वही 99% हमारा रुकना होने वाला था। जैनम ने मुझे उसका फोटो बताया था। वह लाजवाब था।

''नहीं.. अपेक्षा... कुछ नहीं।'' अनोखी ने खुद का मुंह मचकोडा। ''भाई का फोन था। वह मुझे घर आने को कह रहा है, परंतु, मैंने उसे कह दिया है कि मैं 26TH के पहले आनेवाली नहीं हूं। शायद 1-2 दिन में जब तू कम व्यस्त होगी उस दिन मैं मम्मी को मिलकर 3-4 घंटे में आ जाऊं-गी। काम बहुत बाकी है और समय बहुत कम है।'' इतनी थकान होने के बावजूद भी अनोखी वापस से पेकींग के काम में जुड़ गयी।

आधे घंटे के बाद मेरी सब पैकिंग पूरी हो गयी। छह महिने तक चले इतनी ड्रेसीस और दूसरी वस्तुएँ मैंने ली थी। हम वापस से इन्डिया कब आएंगे वह नक्की नहीं था। शायद 1/2 साल, 1 साल, 2 साल भी लगे

ऐसी संभावना थी।

हम पापा के रूम में गये और 12 बजे तक पापा के फॉर्मल्स, नाइट सूट्स, परफ्युम्स, घडियां, फोटोझ... सभी की पेकिंग की। मम्मी खुद की पेकिंग कल खुद आकर करने वाली थी। हम दोनो की ड्यूटी कल संपूर्णतया हॉस्पिटल में ही थी।

मैं थक गयी थी, इसलिए मेरे बेड पर आकर मैं ढेर हो गयी। अनोखी किचन का काम निपटा रही थी। मेरा फोन ब्लिन्क हुआ। दो दिन के बाद जैनम का फोन आया था।

''हॅलो...'' सामने से आवाज आयी नहीं।

''हॅलो...हॅलो...'' लंबे टोन में मैंने कहा। प्रतिभाव शून्य होने से मैं फोन कट करने वाली थी कि सामने से आवाज सुनायी दी।

''हॅलो... मुझे ये हॅलो बहुत पसंद है। एकबार वापस प्लीझ!'' जैनम की आवाज सुनायी दी। मैंने वापस से दो बार 'हेलो' कहा।

''अपेक्षा! मैं तेरे लिए एक स्पेशियल गिफ्ट लाया हूं, जो मैं तुझे डीपार्चर के दिन दूंगा। इसलिए तेरे बेग में एक बॉक्स जितनी जगह खाली रखना। ओ.के....'' जैनम ने खुद की लवस्टोरी शुरू की। मैं सुनती गयी। कोई मेरे पीछे खड़ा हो ऐसा मुझे लगा। मैंने पीछे देखा। अनोखी शायद अभी ही आयी थी। ''मैं तेरे साथ बाद में बात करूंगी।'' कहकर मैंने जैनम का फोन कट किया।

''सीट...'' मैंने अनोखी को मेरे बेड की तरफ इशारा किया।

वह मेरे बाजू में आकर बैठी। वह बहुत थक गयी हो ऐसा लगा। परंतु उसके स्वभाव में कुछ अलगाव भी मुझे अनुभव हुआ। वह कुछ छुपा रही हो ऐसा मुझे इन्ट्युशन हुआ। मैंने उसके हाथ को एक छोटी बहन की तरह मेरे हाथ में लिया।

''अनोखी! मुझे ऐसा लग रहा है कि तू मुझे कुछ कहना चाहती है। ये सच बात है?'' उसके मुंह पर स्मित आया। उसने खुद का सिर ''हा'' में हिलाया। ''तो बोल...''

''अपेक्षा!'' खुद के पोकेट में से एक वस्तु निकालकर उसने खुद की हथेली में चुस्तता से बंध रखी। ''तेरी और मेरी विचारधारा इतनी समान

है कि हम दोनों एक-दूसरे के भावो को पढ़ सकते है। टेलीपथी जैसा भी कितनी बार होता है और इसलिए ही।'' अनोखी ने मेरा दाया हाथ सीधा किया। खुद की हथेली में रही हुई सील्वर कलर की वस्तु मेरे हाथ में अनो-खी ने पहनाई।

वह एक हस्ताभूषण था। मैंने पहली बार इतना अच्छी तरह बना हुआ हस्ताभूषण देखा था। बीच में शायद रूबी का एक बड़ा जॅम-स्टोन था और उस जॅम स्टोन को सपोर्ट करती *2 C.M.* मोटी चेन थी, जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई थी। अनोखी मुझे वह पहना रही थी तब ही मुझे एक न समझ में आये ऐसी शक्ति मेरी आत्मा में पैदा हो रही हो वैसा अनुभव हुआ।

''अपेक्षा! ये मेरी सबसे मूल्यवान वस्तु है। ये वस्तु मेरे पापा ने जो मेरे सबसे नजदीक थे, मुझे मेरे *18*[TH] बर्थ-डे के दिन दी थी। उन्होंने मुझे तब कहा था ''अनोखी! ये मेरे और तेरे जुड़ाव का चिन्ह है। मेरी इच्छा है कि तू खुद की पूरी लाइफ इस वस्तु को पहने। इसका सील्वर स्पेशियली क्राफ्टेड है और इसलिए उसकी चमक कभी कम नही होगी। वैसे ही अपने संबंध कभी भी।''

''झांखे नहीं होगें...'' मैंने पूरा किया।

''अब वो वादा देनेवाले व्यक्ति ही इस दुनिया में नहीं है, इसलिए ही....'' खुद के पापा की बहुत याद आती हो, ऐसा बतानेवाला अनोखी की आंख में से आंसू बेड पर गिरा। ''इसलिए ही अपेक्षा! तुझे ये दे रही हूँ। मुझे तुझ में अबाध्य शक्ति दिख रही है। एक लीडर की तरह और मेरी बहन की तरह... और इसलिए...'' उसने मुझे छाती से लगाया।

''आशा करती हूँ तेरी पेकिंग में तू मेरे इस गिफ्ट को भी समा लेगी...'' मुझे मेरे पीठ पर गीलेपण का अनुभव हुआ। **'द पावरफूल'** कम जोर पड़ गयी थी।

Chapter - 5

26/10/2010 **I.S.T. 7.00** AsianHeart Hospital, Mumbai

डीपार्चर अतिविषम होता है..!

15 मिनट में हॉस्पिटल से डीपार्चर था। पापा जनरल क्लास में दूसरे कुछ कॉम्प्लीकेशन नहीं होने के कारण एक नोर्मल पेसेन्जर की तरह ही मुसाफरी करने वाले थे। वे स्वस्थ हो रहे थे, तो भी खुद के ज्यादा वजन के कारण वे *100%* फीट नहीं थे।

इसलिए मि. ओसवाल ने डॉक्टर और हॉस्पिटल की अनुमति लेकर, ॲम्ब्युलन्स में ही उन्हें लेकर जाना नक्की किया था। मम्मी, मैं, जैनम, अनोखी, सभी ॲम्ब्युलन्स में ही मुसाफरी करनेवाले थे। हमारी फ्लाइट *11* बजे की थी, परंतु इन्टरनेशनल फलाईट्स के लिए ३ घंटे पहले एयरपोर्ट पर पहुंचना अनिवार्य था। चेकिंग, वीझा स्टॅम्पींग... बहुत लंबी प्रक्रिया में से प्रसार होना पड़ता था।

मैं कल रात को हॉस्पिटल में ही थी। अनोखी के साथ में मैंने उसकी भावी लाइफ और मेरे उसके साथ के जुड़ाव के बारे में *12.00* बजे तक बात की थी। जैनम भी *10.00* बजे तक आ ही गया था। उसके पापा ने उसके जिद्द के कारण एक दिन हॉस्पिटल में मेरे साथ पसार करने की अनुमति दी थी।

आफ्टर *12.00* मैं उसके साथ ही, पार्किंग में गयी थी। थोड़ा रोमान्स करके हम दो बजे तक हॉस्पिटल के कॅम्पस में घुमे थे। सुबह

6.00 बजे उठने का नक्की करके हम सो गये थे। सुबह 6.00 बजे अनोखी मेरे और जैनम लिए दो कप कॉफी लेकर आयी थी और हमे उठाया था। दोनों की आंखे जल रही थी, उसके कारण वापस सोने की इच्छा हो गयी थी।

''फ्लाइट में सो जाना अपेक्षा!'' इस तरह कहकर मुझे अनोखी ने जगा दिया था। वहाँ ही फ्रेश होकर मेरी मुसाफरी के लिए लाया हुआ ट्रॅकसूट पहनकर मानो कि जॉगींग करने जा रही हूं वैसे मैं तैयार हो गयी थी। मम्मी भी 6:30 तक आ गयी थी।

अनोखी ने पॅन्ट्रीवाले को विनंति करके मेरी फेवरेट चटपटी खुद ही बनाकर मुझे नास्ता करवाया था। उसका स्वाद मम्मी से भी ज्यादा अच्छा था। मम्मी ने भी उसकी प्रशंसा की थी। फिर मि. ओसवाल खुद की स्लीक सीडेन में आये थे। वे 'मॅन इन ब्लॅक' के हीरो जैसे लग रहे थे। उनके गॉगल्स से लेकर सब काला था।

जैनम ने मुझे 7:05 को पेपर और पेन लाकर दिया। कार्यों की व्यस्तता के बीच भी मैंने पेपर पर लिखना शुरू किया।

"MY GOD" शासनद्रष्टा श्रीजी!

मैं आपको अनंत बार नमन करती हूं...

मैं आपको मिले बिना अमेरिका जा रही हूं। तीव्र इच्छा थी कि आपको मिलुं, परंतु परिस्थितियों का सर्जन नहीं हुआ कि मैं आपसे मिल सकुं। मुझे इस बात का बहुत दुःख है।

अब हमारा वापस मिलना कब होगा वह मुझे पता नहीं है। मैं इच्छा करती हूं कि....''

कोई मुझे बुला रहा हो ऐसा मुझे लगा। मेरे विचार अटक गये।

''अपेक्षा...'' मैंने ऊपर देखा। पापा वहाँ व्हीलचेयर पर बैठे हुए थे। मैं पेपर को छोड़कर उनके पास गयी। मैंने उन्हें हग किया और गाल पर कीस की...

''अमेरिका के लिए तैयार... पॉप्स?'' मैंने हंसते-हंसते पूछा'' तू जब साथ में हो, तब मेरे लिए जर्नी जर्नी ही नहीं है। तू जहाँ है, मैं वहाँ रहता हूं...'' उन्होंने सामने स्मित दिया। सच में ही पापा मुझे अकथ्य प्रेम

करते थे।

''चलो, पापा और बेटी ! मूव... टाईम होने आया है। ''मि. ओसवाल पीछे से आये। पापा ने उनको आवकार दिया। दोनों के बीच बातचीत चालू हो गयी। मैंने मेरे पेपर और पेन लिये और लिखी ही हुई लाईन देखकर मेरे नाइट सूट के पॉकेट में रख दिए । अनोखी, जैनम भी तैयार होकर आ गये थे।

हॉस्पिटल के चीफ डॉक्टर खुद के केबीन में से बाहर आये।

''अपेक्षा!'' उन्होंने मुझे अंदर आने का इशारा किया। मैं केबीन में गयी। डॉक्टर ने डाइरेक्ट मुझे बिठाकर खुद का विषय चालू किया।

''अपेक्षा...! अंतिम थोड़े दिनों से मैं तेरे ॲक्शन्स को देख रहा हूं। तुझें मैं एक बात कहना चाहता हूं।'' डॉक्टर खुद के चेयर में आगे आये। ''तेरी शक्ति गजब की है। मुझे तेरा भविष्य गजब का दिखाई दे रहा है और सो...'' डॉक्टर ने खुद का व्यक्तिगत कार्ड मुझे हाथ में दिया।

''फ्युचर में तुझे मेरा कुछ भी काम पडे, तो बिना शर्म के मुझे फोन करना। मैं तेरे लिए किसी भी समय और किसी भी जगह हाजिर रहूंगा....''

I.S.T. 8.00

हम एयरपोर्ट में जहाँ तक गाडीयाँ जा सके, उस लिमिट तक आ गये। जैनम के पापा मि. ओसवाल हमारी गाडी में आये थे। ॲम्ब्युलन्स एयरपोर्ट के टेकऑफ तक जा सकती थी। हमे तो रेस्ट रुम के पास उतरना था। रेस्ट रूम के बाहर आकर ॲम्ब्युलन्स खड़ी रही। मैं और मि. ओसवाल अंत में बैठे थे इसलिए सबसे पहले नीचे उतरे।

शुद्ध हवा मेरे मुंह को स्पर्श हुई। पापा को ॲम्ब्युलन्स में साथ में आये हुए हॉस्पिटल के कर्मचारीयों ने नीचे उतारा और एयरपोर्ट फ्रेन्डली व्हीलचेयर में बिठाया। पापा में चल सके वैसी स्टेमीना नहीं थी।

वॉर्ड- बॉय ने हमारी सभी ट्रॉलीवाली सूटकेसीस को एक बड़ी ट्रॉली में चढ़ाया। हम सभी रेस्टरूम में जाकर बैठे। जब मैं एयरपोर्ट में अंदर आयी तब मुझे हाथ में बेनर लेकर खड़े हुए बहुत से लोग दिखे थे। वे सभी अब रेस्टरूम की तरफ आ रहे थे।

मैंने मेरे पर्स में से शासनद्रष्टश्रीजी का पत्र पूर्ण करने के लिए पेपर और पेन निकाला।

"पापा को जल्दी ठीक हो जाये और मैं वापस से आपको मिल सकूं। मेरे लिए ये निर्णय बहुत कठिन था, परंतु आपकी कही हुई एक बात मुझे याद आयी थी। जिस व्यक्ति को अंतर से याद करोगे, वह किसी न किसी स्वरूप में आपके साथ-सामने आ ही जाता है। और इसलिए ही मैं ये निर्णय ले सकी हूँ...! भविष्य में मुझे कभी कोई प्रॉब्लम आये, तब आपके ये शब्द सत्य हो ऐसी मैं इच्छा रखती हूँ।"

"हॅलो...अपेक्षा!" वापस से मुझे किसी ने अवरोध किया। मैंने ऊपर देखा । तेजस वहां खड़ा था।

'हाय!' उसने वापस से कहा। मैंने उसे देखकर आश्चर्य व्यक्त किया।

'तेजस! इतने दिनों के बाद.. तू कहाँ खो गया था..." वह मेरे पास के चेयर पर बैठा।

"बस... कहीं नहीं। मेरी नयी जिंदगी के साथ अभ्यस्त होने की कोशिश कर रहा था..." एक नकली स्मित उसने दिया। "रीयली! मैं तेरे पास जो पिछले 15-20 दिन से नहीं आया, वह इसके लिए ही कि मुझे ऐसा लग ही रहा था कि अब भगवान मेरे से मेरे जीवनदाता को दूर करेगा। शुरुआत के 2-3 दिन तो मुझे आंसू भी आये, जो मेरे लिए एक मजाक जैसा था। क्योंकि मैं मेरी पूरी लाइफ में शायद मम्मी के पेट में से निकलने के समय के बिना कभी रोया नहीं था...." मुझे उसके शब्दों के खेल को देखकर हंसना आया।

"रीयली अपेक्षा! मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ... परंतु फिर लाईफ ने मुझे जीना सीखा दिया। आज, बस तुझे ऐसे ही फेरवेल देने आया हूँ। अब भगवान जाने हम वापस कब मिलेगें।" खुद के आंसू को अटकाना तेजस के लिए अशक्य सा हो गया।

वह खुद के घुटनो पर बैठ गया, और जैसे पुराने जमाने में एक दूत खुद के राजा को संदेश देता है, वैसे उसने मेरे सामने एक ग्रीन कलर के डेकोरेटेड पेपर से ढकी हुई एक चोरस वस्तु दी।

मैंने उसके हाथ में से वह चोरस वस्तु का स्वीकार किया। मैंने उसे खोला। बॉक्स के अंदर बॉक्स.... बॉक्स के अंदर बॉक्स... मम्मी... पापा तेजस के खेल को देखकर हंस पडे। मि. ओसवाल भी आश्चर्य से देखने लगे। जैनम थोड़े समय के लिए पता नहीं कहाँ अदृश्य हो गया था। शायद मैं तेजस के साथ मैं रहुं वह उसे अच्छा नहीं लगता था।

सबसे अंतिम बॉक्स मेरे हाथ में आया। उसके ऊपर शायद चाईनीझ भाषा में कुछ लिखा था। मैंने बॉक्स को खोला। उसमें हेडफोन्स जैसा मुझे कुछ दिखाई दिया। मैंने उसे टच किया। तो वह बीप होने लगा। "पहले, डीकोड कर..." नहीं तो वह पूरे एयरपोर्ट को इकट्ठा कर देगा इतनी उसकी आवाज है। "तेजस मेरी असहायता देखकर हंसने लगा।

'कोड क्या है?' मैंने गुस्से से उसके सामने देखा।

''तेरा फेवरेट....'' वह मेरे गुस्से की उपेक्षा करके वापस से हंसा।

''शासनद्रष्टाश्रीजी...'' मैंने हेडफोन जैसे गेड्जेट के स्पीकर में कहा। वह बीप होना बंध हो गया। उस गेड्जेट को मैंने ध्यान से देखा। मुझे ये क्या है उसका पता नही चला...

''ये क्या है तेजस?'' वह खड़ा हुआ।

''इसे कहा जाता है माइन्ड सॅन्सर... ये बहुत उपयोगी है....''

I.S.T. 8.45

सतत SD फेन्स मुझे एक के बाद एक मिलने आ रहे थे। थोड़े तो मेरे साथ ही अमेरिका सफर करने वाले थे। अमेरिका जाने के न्यूझ आग की तरह SD फॅन्स ग्रुप में फैल गये थे। मुझे वे लोग मिलने आये उसका टेन्शन नहीं था परंतु मेरा लेटर पूरा नहीं होगा उसका टेन्शन था।

अंतिम फेन को स्मित देकर और उसकी गिफ्ट लेकर मैंने उसे बाय-बाय किया। मेरे पास में गिफ्ट का टावर बन गया था। सभी मुझे साथ लेकर जाना अशक्य था। मि. ओसवाल ने सभी गिफ्ट्स ऑफिस के आदमी के साथ उनके चार्टर में भेज देने की बात की थी। मैंने मेरे लेटर और पेन को उठाया।

मैंने आस-पास में देखा। सामने से सादिया आती हुई दिखाई दी। उसके पीछे डॉन का बॉडीगार्ड अब्दुल दिखाई दिया। *''डॉन तो आये नहीं है ना?''* मैं जब तक ये विचार कर रही थी, तब द ऑल रॅायल डॉन दिखा। उसके साथ एयरपोर्ट का मेनेजर उसकी जी हजूरी करता हुआ मैंने देखा। मुझे ये देखकर हंसना आ गया। तेजस भी डॉन को देखकर खड़ा हो गया। उसने आकर मि. ओसवाल के साथ हाथ मिलाया। एयरपोर्ट के मेनेजर के साथ उसने मि. ओसवाल का परिचय करवाया। डॉन ने कुछ मजाक किया और सभी हंस पड़े। सादिया ने आकर मुझे हग किया।

''हॅलो, अपेक्षा! बहुत दिन हो गये तुझे मिलकर... अब्बा कह रहे थे कि अपेक्षा जा रही है इसलिए मैं तुझे मिलने आयी हूँ।'' वह पानी के बहाव की तरह बोलने लगी।

''सब तेरे लिए गिफ्ट ला रहे है, परंतु मैं नहीं लायी... मैं तुझे बड़ी गिफ्ट देना चाहती हूं।'' उसने एक बॉक्स निकालकर मुझे दिया।

''प्लीझ! उसके कवर को खोलना।'' सादिया उत्साहित थी। मैंने कवर खोला। उसमें एक लेटर था। मैने लेटर पढ़ा। मेरे साथ फ्रेन्डशीप करने

के बाद सादिया ने नॉन-वेज संपूर्णता से छोड़ दिया था। उसके डॉन पापा ने भी उसका समर्थन किया था। साथ में बॉक्स में चोकलेट थी जो सादिया ने खुद के हाथ से नये बर्तन में बनायी थी और मुझे गिफ्ट दी थी।

मेरे मन में उसके प्रति आदर प्रकट हुआ। जहां नॉनवेज खाना अनिवार्य था, वहां वह मेरी फ्रेन्डशीप के लिए नॉनवेज छोड़ रही थी। इस समय मैंने उसे हग किया।

''थैंक्यू सो मच सादिया! शासनद्रष्टाश्रीजी बहुत खुश होगे।''

''मेरे से तू जुडी...'' सादिया पापा को देखकर चूप हो गयी। डॉन मेरे पास एयरपोर्ट के मेनेजर को लेकर आये। डॉन ने खुद के घुटने पर बैठकर मुझे अदब किया। एयरपोर्ट का मेनेजर स्तब्ध हो गया।

''मिस्टर चोपडा! ये हमारी बेटी से भी बढ़कर है। इसको कोई भी दिक्कत न आये उसका ध्यान रखना।'' एयरपोर्ट मेनेजर मि. चोपडा ने सिर हिलाया।

''अपेक्षा ! आज तेरी और फेमिलीवालों की चेकींग नहीं होगी। इसलिए और...'' डॉन ने खुद के घडीयां में समय देखा ! ''देढ घंटे यहाँ बाहर रह सकती है। फिर तुझे एयरक्राफ्ट में बैठना पड़ेगा....और हाँ!'' डॉन ने खुद के पॉकेट में से एक वस्तु निकाली।

''ये तेरे लिए गिफ्ट.... ये मेरे अब्बा ने मुझे मेरी सुरक्षा के लिए दिया था। इसमें ताबीज है जो बहुत चमत्कारी है... माशा अल्लाह! उसका इस्तमाल अच्छी तरह से करना.....'' डॉन ने खुद की आंखे बंध की।

''अपेक्षा! तुम लोगों को मिलने के बाद मेरा जीवन बहुत बदल गया। अब मेरे मन में मैंने किये हुए करतुतो का गहरा डंख रहता है। शायद अब फरिश्ते ही उसे दूर कर पायेंगें...'' उसके मुंह पर गहरा दर्द दिखाई दे रहा था। फरिश्ता नाम सुनकर मुझे मेरा भूतकाल याद आया।

''भाई!'' मैंने डॉन के सामने देखा। वह नीचे धरती को ही देख रहा था।'' मेरा एक काम करोगे.... ''काम का नाम सुनकर उनकी आंखे चमक उठी ''फरमाओ... अब्बा की कसम मेरी जान देकर भी करूंगा।''

''डॉन ! अभी आपने जो गलत काम कर लिये है, उसे याद करने का कोई फायदा नहीं है। अभी आप उसे मिटा सकने वाले नहीं हो। परंतु

प्रवास बिना किसी आफत के पूरा हो, इसलिए आप हर रोज खैरात करोगे!'' मैंने सुने हुए और पढ़े हुए हिन्दी और उर्दू शब्द बराबर निकले।

डॉन ने दो मिनट सोचा। ''ठीक है बेटीजान! मैं हररोज के लिए ये काम चालु कर दूंगा...''

I.S.T. 9:30

''बाकी तो दुःख उस वस्तु का है कि जब आप मेरे पास थे, तब मैं आपको समझ नहीं सकी। मुझे बहुत कुछ ग्रहण करना था, परंतु मेरी ग्राह्यता ही कम थी। मेरी इन भूलो को आप भूल जाओगे वह, तो मुझे पता ही है, परंतु मुझे उसका दुःख रहेगा ही... ॲन्ड में...

WHEN YOU ARE NEAR, I HAVE NO FEAR,
BUT...

WHEN YOU ARE FAR, MY LIFE GETS TEAR.

प्लीझ ! हमेशा मेरे पास रहो, ये ही भगवान को प्रार्थना...

YOURS UNDESERVED,
APEKSHA

मैंने मेरे लेटर को अंत में 2.30 घंटे में पूरा किया। मैंने वापस एक बार उसे लिया। वह अच्छी तरह से बना था। मैं मेरी संवेदना को उसमें क्लीयरली व्यक्त करने में सफल हुई थी। मैंने उसे कवर में पेक किया और उसके दांयी ओर ऊपर **''टू शासनद्रष्टाश्रीजी''** लिखा।

मैं लेटर अनोखी को देने वाली थी कि जिसने मेरे साथ से सुबह से थोड़ी भी बात नहीं की थी। शायद मेरे जाने के कारण उसे असह्य आघात था। मैंने अनोखी के तरफ देखा। वह शासनद्रष्टाश्रीजी के स्टाइल में प्रार्थना कर रही थी।

मैं उसकी चेयर के पास में रही चेयर पर जाकर बैठ गयी।

''अनोखी!'' अनोखी ने खुद की बंध आंखे खोली ।

''हा....'' उसके आवाज में स्वीट्जरलैन्ड जैसी ठंडक थी। वह किसी दूसरी ही दुनिया में से बाहर आयी हो ऐसा उसकी आंखो में दिख रहा था।

''ये....'' मैंने उसके हाथ में लिखा हुआ लेटर रखा।

''शासनद्रष्टाश्रीजी को देना है, ओ.के.?'' मेरा वाक्य अनोखी ने पूरा किया।

''अपेक्षा! ये जुदाई का समय मेरे लिए एकदम महत्त्व का साबित हुआ है।'' मुझे वह क्या बोल रही है समझ में नहीं आया।

मेरे मुँह के भावो को देखकर उसने सिर्फ मुझे इतना कहा।

''तू आश्चर्यचकित मत होना... तुझे थोड़े समय में ही पता चल जाएगा।''

Chapter - 6

26/10/2010 **I.S.T. 10:30** Sahara Airport, Mumbai

JOURNEY अतिविषम होती है..!

एयरपोर्ट के मेनेजर मि. चोपडा हमे फ्लाइट तक छोड़ने आए। जिस फ्लाइट में हम प्रवास करने वाले थे, वह दुनिया की एक श्रेष्ठ फ्लाइट थी। मैंने सामने शुद्ध सफेद कलर में पेइन्ट की हुई और गोल्डन कलर में लिखी हुई नाम वाली हमारी एयरलाइन्स देखी- ETIHAD.

ऐसा कहा जाता था कि एतीहाद के मालिक और डॉन के बीच बहुत अच्छे संबंध थे। उसका मालिक अबुधाबी में रहता था और उसके सिवाय उसके अगणित घर थे। मैंने सामने खड़ी जर्नी के लिए तैयार होती एयरबस के अडवान्स्ड मॉडल को देखा। दुनिया की दो एयरोप्लेन्स बनाने वाली कंपनीओ में से एयरबस खुद के लिमिटेड पेसेन्जर मॉडल्स के लिए प्रसिद्ध थी। बोइंग बड़े पेसेन्जर केरीयर्स बनाता था। 777 मोडल उसका बहुत प्रसिद्ध हुआ था। मुझे भारत को अनिश्चित काल के लिए छोड़ने का समय आ गया था।

जैनम को डॉन के कहने से मेनेजर ने अंदर आने की अनुमति दी थी, परंतु उससे आगे अब मेनेजर को भी मंजूरी नहीं थी। जैनम ने मेरे हाथ में एक बॉक्स दिया। आज बाकी सभी ने मुझे गिफ्ट दी थी, परंतु जैनम शायद आघात में भूल गया हो ऐसा मुझे लगा था।

''माय हार्ट! मैं इससे बड़ी गिफ्ट खरीद नहीं सका, इसलिए

सॉरी.... और इससे अच्छी गिफ्ट मुझे दिखाई नहीं दी उसके लिए भी सॉरी... जल्दी मिलेंगे....'' मेरे कान में गुनगुनाहट करके वहाँ किसी को पता नहीं चले उस तरह से कीस करके वह झड़प से वापस लौट गया।

शायद वह उसे अनुभव होती मेरी जुदाई मुझे बताना नहीं चाहता था और इसलिए ही वह खुद के अश्रु दिखाये बिना ही वहाँ से इस तरह निकल गया। मैं उसके भीतर देख सकती थी कि उसके आंखों में अश्रु थे। मैं वह जब तक दिखाई दिया, तब तक देखती रही। अंत में एक अंतिम झांकी देकर वह अनिश्चित समय के लिए मेरी लाईफ में से गायब हो गया।

लाईफ की यात्रा को आगे बढ़ाने का समय आ गया था। मैंने हमारी 20 घंटे की मुसाफरी पर ध्यान केन्द्रित किया। टेकऑफ के लिए फ्लाइट तैयार खड़ी थी। मैंने भारत की भूमि को अंतिम बार के लिए हाथ से स्पर्श किया।

उस पवित्र आत्मावाली भारत की भूमि को मैंने अंतिम बार 'बाय-अलविदा' कहा। मेरे सिर पर मैंने भारतमाता की मिट्टी को लगायी।

A.D.T. 12.45p.m

Abu Dhabi

मैंने मेरी घड़ी को अबुधाबी के 1.45 मिनट देरी से चलते समय के साथ अॅडजस्ट की। न्यूयॉर्क जहाँ हमारा फाइनल डेस्टिनेशन था वह इन्डियन स्टॅन्डर्ड समय से 9.30 घंटे पीछे था।

अबुधाबी की अमीरी उसके एयरपोर्ट में स्पष्ट दिख रही थी। एतीहाद वह U.A.E की कम्पनी होने से उसका फ्युल फीलिंग - सर्वीसींग-पेसेन्जर वेईटींग अबुधाबी में ही होता। वहाँ से नॉनस्टॉप 18-19 घंटे की मुसाफरी के बाद हम न्युयॉर्क के जे. एफ. केनेडी एयरपोर्ट पर लॅन्ड होने वाले थे। हमारे लिए संबंधों के कारण से एतिहादवालो ने स्पेशियल V.I.P रूम्स तैयार किये थे। हम 2.30 घंटे के लिए अबीधाबी की धरती पर रहने वाले थे। एयरलाइन्स की सोफिस्टीकेटेड हॉस्ट्रेस ने हम हमारे वेटिंग रूम में छोड़ा। हमारे लिए प्योर वेज फुड को ध्यान में रखकर न्यूयोर्क, रास्ते में, अबुधाबी में भी डॉन ने प्योर वेज फूड की व्यवस्था कर दी थी।

तीनो जगह का भोजन प्योर वेज हॉटेल में से आने वाला था। डॉन ने मेरे फेवरेटनेस पर बराबर ध्यान दिया हो ऐसा मुझे भोजन करते वक्त स्पष्ट अनुभव हुआ था। एकदम मजेदार पंजाबी नान-पंजाबी पनीर-टीका, पापड छाछ का मेनु था। साथ में सादिया ने यहाँ भी किसी के साथ प्योर वेज चोकलेट्स मुझे वापस से गिफ्ट की थी।

इस समय सिर्फ चॉकलेट्स नहीं थी, परंतु दुबई की फेमस गोल्ड रींग भी साथ में थी। उस पर उसने छोटे अक्षरों में इम्प्रीन्ट किया था।

PLEASE WEAR ME ON YOUR FINGER...

मैंने मेरे हाथ की तरफ देखा। एमीरल्ड स्टोन से जडित श्र। साईनवाली प्लेटीनम रींग कि जो मेरे लिए जैनम ने खास बनवायी थी, वह वहाँ पहले से ही चमक रही थी। मैंने उसे मेरी चौथी अंगुली पर पहनी थी। उसमें मेरा और जैनम का पहला अक्षर अंकित था और स्टोन्स उसके अनुसार जडने में आये थे।

मैंने सादिया की रींग मेरी बीच की अंगुली में पहनी थी। उसका फोटो खिंचकर मैंने फेसबुक पर सादिया के लिए पोस्ट किया। सादिया ने स्माईलींग स्माईली मुझे वापस से भेजा। वो मेरे प्रतिभाव के लिए ही शायद ऑनलाइन थी। मुझे उसकी फ्रेन्डशीप की क्रेझीनेस देखकर बहुत हंसना आया।

A.D.T. 14.30

हम एयरपोर्ट अबुधाबी पर रही हुई दुकानो में रखड़ रहे थे। मम्मी को शॉपींग करने की मजा आ रही थी। मम्मी ने एक गौतम बुद्ध के मॅडीटेशन वाली फोटो फ्रेम देखी। मम्मी को वह अत्यंत अच्छी लगी थी। दुकान के मालिक को मम्मी ने भाव पूछा। इन्डिया के रू. *5000* हो रहे थे। ''मॅडम! आप ले लो, डॉन अमझदभाई ने मुझे फोटो भेजा हुआ है।'' मुझे और मम्मी को दुकान के मालिक ने फोटो बताया। उसमें मेरा गोगल्स वाला फोटो था। कि अगर ये आये, तो उनके पास एक दीनार भी नहीं लेना... इसलिए आपको जो अच्छा लगा, वो आप ले लेना.... एतीहाद के मालिक का भी मुझे फोन आया था... वह आपके सामान को आपके न्यूयोर्क के घर में पहुँचा देगा।''

''मुझे किसी की कही हुई बात याद आयी।'' डॉन की शक्ति कितनी होती है, वह जानना मुश्किल नहीं, नामुमकीन होती है।''

मम्मी ने मेरी तरफ 'लुं या नही लु?' ये पूछने के लिए इशारा किया। दुकान के मालिक ने ये देख लिया। दुकान के मालिक ने मेरे मम्मी के हाथ में से वो बुद्ध की फ्रेम लेकर उसे पैक करने का आर्डर दे दिया। फिर वह बाहर आया। हमारे साथ वह पूरे स्टोर में घुमा!

वह मम्मी के हावभाव की तरफ देखतां। उसे जहाँ लगता कि ये वस्तु मम्मी को अच्छी लगी है, तो वो वो वस्तु पेक करवा देता। बीच में मुझे उसे मना करना पड़ता।

''हमने जो शोपींग की उसका बिल कितना हुआ?'' अंत में फ्लाईट के डीपार्चर का समय होने पर मैंने पूछा ।

''पेमेन्ट की प्लीझ बात मत करना। मेरी तरफ से आपको दिया हुआ एक तोहफा समझना। जिसकी डॉन भी जी- हजूरी करता है, उससे

में पैसे कैसे ले सकता हूं। हमारे लिए तुम्हारा पैसा हराम है।'' एकदम नोर्मल हावभाव के साथ उसने कहा। उसकी सरलता देखकर में चकित हो गयी । क्या सभी **U.A.E** के लोग ऐसे ही होते है ?

मुस्लिम लोगों के संपर्क में जब से मैं आयी थी तब से मुझे एक विशिष्ट गुणवत्ता देखने मिली थी, उनका भाईचारा। वे खुद के भाईओ के लिए कुछ भी करने के तैयार थे।

मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी ने ''अमृतवेल की सज्झाय'' नाम के गीत को पढ़ाते समय कही हुई एक लाईन याद आयी। मुझे वह लाईन उसके गुण देखकर सामने खड़े हुए दुकान मालिक में जड़बेसलाक फीट होते दिखाई दी। ''थोडलो गुण परतणो, देखी हर्ष, मन आण रे...''

"SEE THE VALUES OF OTHERS...
&....
AFTER SEEING THE VALUE BRING
HAPPINESS IN YOUR MIND..."

मैंने मालिक को स्मित किया।

N.Y.T. 21:15

प्लीझ! वेर यॉर सीटबेल्ट....आई रिपिट प्लीझ वेर यॉर सीटबेल्ट।' माइक में अनाउन्समेन्ट हुआ और अंतिम 13-14 घंटे के लिए छोड़े हुए सीट बेल्ट को मैंने वापस से मेरी छाती पर पहना। मैंने प्लेन की खिड़की में से नीचे देखा।

न्यूयोर्क की जलसीमा स्पष्ट दिख रही थी। अगणित लाइट्स का रण हो ऐसा वह लग रहा था। अंत में अमेरिका की धरती में, कि जिसके बारे में बहुत सुना था, वहाँ हम लेन्ड होने वाले थे।

मैंने मेरी अबुधाबी से न्यूयॉर्क की लगभग मुसाफरी नींद में ही पसार की थी। बीच-बीच में प्योर वेज फूड लेकर हॉस्ट्रेस आती तब और कोल्डड्रींग्स की आवाज के कारण से मेरी नींद में विक्षेप पडता था।

एतीहाद की सर्विस बहुत जबरदस्त थी और उसमें भी जब आप V.I.P हो, तो तो बात ही पूछनी नहीं। सिर्फ मेरे एक्शन्स से ही हॉस्ट्रेसीस को मेरी आवश्यकता की खबर हो जाती थी और फिर उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वे एक्शन में आ जाते।

जब मैं जागती तब सामने रही हुई छोटी स्क्रीन में कि जो सभी सीट के पीछे थी, उसमे मैं "**हेरी पोर्टर**" की मूवी देखती। 1/2 मूवी ही मैं पूर्ण कर सकी थी क्योंकि वापस से मेरे झोके चालू हो जाते थे।

मैंने रे-बेन के सनग्लासीस भी मुसाफरी के समय खरीदे थे और बिल में देखा तो "AS A GIFT FROM ETIHAD" लिखा था। ऐसे सभी प्रसंगो में मेरा मन मेरे पास्ट में खो जाता और मुझे तब पूअर और रीच अपेक्षा में फर्क दिखाई देता। एक व्यक्ति की शक्ति दूसरे व्यक्ति की लाईफ में किस तरह असर कर सकती है वह मुझे स्पष्ट दिखता।

बारबार ऊपर के स्पीकर में से बेल्ट्स की सूचनाएँ दोहराने में,

आ रही थी। प्लेन नीचे उतर रहा हो ऐसा मुझे लगा। जॉन. अॅफ. केनेडी एयरपोर्ट की लाल लाईट्स मुझे स्पष्ट दिखाई दी। एतीहाद के प्लेन के टायर्स बाहर आये और 'थड' के साथ वे रन-वे पर लॅन्ड हुए। मेरी अमेरिका की धरती का एक नया चॅप्टर शुरू हुआ।

Chapter - 1

26/10/2010 N.Y.T. 21:35 J.F.Kennedy Airport, Newyork

डायग्नोसीस अति भयंकर होता है....!

मैं प्लेन में से मेरी हेण्ड्बेग्स को लेकर निकल रही थी।

''हाय अपेक्षा!'' मैंने पीछे देखा। पीछे एरोप्लेन का केप्टन खड़ा था। वह दिखने में एकदम स्मार्ट था और फीट शरीरवाला था। मेरे कान ने सुनने में भूल की हो ऐसा मुझे लगा।

''यु हेव ग्रोन अडीक्टेड टु फेम...'' मेरे मन ने मुझे ताना मारा। मैं वापस से सीधी होकर चलने लगी।

''अपेक्षा हाय!'' अब मेरा मन गेम नहीं खेल रहा था। केप्टन ने सच में मुझे बुलाया था।

''हाँ...'' मैं वापस मुडी। ''मुझे जैनम ने आपके विषय में बात की थी। तू ही चमत्कार से बची थी। तेरी स्पीच भी उसने मुझे सुनाई थी। हाय, आई एम मि. शर्मा...'' पाइलोट ने हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे किया। मैंने उसके साथ हाथ मिलाया।

''आपका और जैनम का क्या संबंध है?'' मैंने पायलोट के सामने प्रश्न में मेरी आंखे ऊपर-नीचे की।

''मैं व्यवसायिक स्तर पर एतीहाद की सभी फ्लाइट्स चलाता हूँ। चाहे वह बोईंग हो या एयरबस और ऐसे मैं जैनम का चार्टर्ड प्लेन का भी पायलोट हूँ....''

मेरे मन में जैनम का स्टेटस और ऊपर हुआ।

'उसके पास चार्टर प्लेन भी है ?' मैं हंसी।

''तो, वह आपके साथ सब शेयर करता है?....''

''ना... सब नहीं, परंतु बहुत कुछ....'' पाइलोट मि. शर्मा फ्रेन्कली बोले, ''वह मेरे क्लायन्ट से भी मेरा फ्रेन्ड ज्यादा है। मुझे जैनम ने विनंती की थी कि एक बार फ्लाईट का कॉकपिट मैं आपको बताऊ.... देखना है?'' विनंति के साथ प्रश्न पायलोट ने किया।

मैंने हाँ कहा। वह मुझे केबीन में ले गया। अलग-अलग प्रकार का बहुत फंक्शन्सवाला मोनिटर मुझे दिखाया। आगे जोस्टीक जैसा एरोप्लेन की ड्राईवींग को संभालने वाला स्टीयरींग था।

लेटीट्युड....लोंगीट्युड को बतानेवाले डीझीटल एक्वीपमेन्ट्स, स्पीड और हाइट बतानेवाले एक्वीपमेन्ट्स, रडार प्लेट आदि बहुत सारे कंट्रोल्स का पाइलोट ने मुझे परिचय करवाया। किसी भी पार्ट में होते प्रोब्लम्स को पहचानने के लिए भी बहुत एक्वीपमेन्ट्स इस प्लेन में थे। मुझे एरोप्लेन के चलानेवाले के लिये उपयोग में आते इतने पार्ट्स को देखकर विचित्र लगा।

मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी ने एक बार **नवतत्त्व** पढ़ाते समय कहे हुए शब्द मुझे याद आये।

''अपेक्षा! हमारे मन और शरीर एरोप्लेन जैसे है। उसके कंट्रोल्स को अगर हम जानते हो तो अपना प्लेन कभी भी क्रेश नहीं होगा...'' मेरे मन में ये शब्द गुंजने लगे।

N.Y.T. 21:55

एतीहाद एयरलाइन्स का *N.Y.* का स्टाफ मेरे लिए बुके लेकर स्वागत करने कलिए खड़ा था। अब ये रूटीन मेरे लिए कंटालाजनक हो गया था। गिफ्ट, बुके, सत्कार मेरे लिए अब सामान्य जैसा हो गया था। वे हमारे लगेज को साथ में लेकर हमे एयरपोर्ट के गेट तक छोडने के लिए आये। वही नवाबी कपडे में तैयार एक अमेरिकन मेरे पास आया।

''हाय अपेक्षा!'' पिछले **24** घंटे में शायद *100TH* बार मैंने ये शब्द सुने। मम्मी-डेडी भी अब जितनी बार ये शब्द सुनते उतनी बार हंसते। उन्हें मुझे चिढ़ाने में मजा आती थी।

''आई नो देट यु डोन्ट नो मी, बट आइ नो यु....से हुं आई एम?'' पहेली में उस अमेरिकन ने मुझे पूछा। मैं सच में ही उस व्यक्ति को जानती नहीं थी। पापा ने खड़े होकर उस अमेरिकन के साथ हाथ मिलाया। ''हॅलो मि.ब्राउन!'' शब्द सुनते ही मेरे मन में लाइट हुई। ''कोमा स्पेशियालिस्ट।'' मैंने भी मि. ब्राउन के साथ हाथ मिलाया।

''सो मिरेकल गर्ल! मुझे तुझे मिलने की बहुत समय से इच्छा थी। मैं सोच रहा था कि जब मैं बोम्बे आऊंगा, तब मैं तुझे मिलूंगा... परंतु गॉड इझ ग्रेसीयस... उसने मेरी प्रार्थना सुन ली। तू ही आ गयी।'' वह खुद के चमत्कारवाले केस को देखकर बहुत उत्साहित लगा।

''तो अब हम चलते है। पहले, हम हॉस्पिटल जाएँगे जो नेवार्क सीटी के वर्जन स्ट्रीट में है। हॉस्पिटल बहुत फेमस है। फिर हम नक्की करेगें कि आप हॉस्पिटल में रहोगे या मि. ओसवाल के बंगलो में... ओ.के...'' मैंने सिर से मि. ब्राउन की बात में समर्थन दिया।

ऍम्ब्युलन्स आयी। उस पर ***''युनिवर्सिटी हॉस्पिटल''*** लिखा हुआ था। हॉस्पिटल के अच्छी तरह से प्रशिक्षित स्टाफ ने पप्पा को स्ट्रेचर पर

सुलाकर ॲम्ब्युलन्स में सुलाया। मम्मी और डॉक्टर ब्राउन भी अंदर चढे। मैने ॲम्ब्युलन्स में चढ़कर ॲम्ब्युलेन्स का दरवाजा बंद किया।

रात्री का समय होने के कारण से ट्राफिक बहुत कम था। ॲम्ब्युलन्स फूल स्पीड में रोड पर दौड़ रही थी। जब मैं छोटी थी तब डिझनीलन्ड जाने के सपने, सीन्ड्रेला बनने के सपने बहुत देखती थी। वे सपने मुझे बहुत खुश करते।

मेरे मोबाइल में गूगल मेप अेप चालू था। वो ॲप केनेडी एयरपोर्ट से 55 मिनट का रास्ता यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल तक का बता रहा था। युनिवर्सिटी हॉस्पिटल अमेरिका की एक सबसे प्रख्यात जेनेटीक हॉस्पिटल थी।

मि. ब्राउन पिछली 10 मिनट से लगातार पापा को अलग-अलग तबियत के प्रश्न पूछ रहे थे। बहुत बार पापा के चेहरे पर शून्यता-उलझन दिखती। शायद इसलिए ही वे वन ऑफ ध प्रख्यात सायकेट्रीस्ट थे।

सादिया और जैनम के **''कांग्रेट्स फोर सेफ जर्नी''** के मेसेज आये और मैंने उन्हें ''थम्स अप'' और ''हार्ट'' भेजा। जैनम का मेरे साथ विडीयो कॉल पर बात करने के लिए मेसेज आया है, परंतु मैंने उसे ''*कॉल मी लेटर*'' का मेसेज किया।

डॉन के संबंध अमेरिका में भी विस्तृत थे। इस्लाम धर्म की शक्ति क्रमशः अमेरिका में भी बढ़ रही थी। ओबामा की पॉलिसी एकदम उदार और आम जनता के लिये फ्रेन्डली थी और इसलिए ही वह सबसे अधिक एक अच्छे राष्ट्रपतिओं की लिस्ट में एकदम टॉप पर थे।

''अपेक्षा!'' खुद के ओल्डीश अमेरिकन एसन्ट में मि. ब्राउन ने मेरा नाम कहा। मुझे हंसना आया।

''वॉट डु यु नो अबाउट अमेरिका? वॉट हेव यु लर्न्ड अबाउट ईट इन योर स्कुल?'' अचानक पूछे गये प्रश्न से मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने मेरी इतिहास की पुस्तक की जानकारी याद की।

''अमेरिका वह अमेरिगो वेसपुसी ने खोज की हुई धरती है और इसलिए 'अमेरिका' उसके नाम पर बना है। यहाँ पहले रेड इन्डियन्स रहते थे और उन्हें बाहर निकालकर पैसेवाले युरोपियन व्यापारीओ ने इकट्ठे

होकर ये देश खड़ा किया है।'' मैं दो सेकन्ड के लिए रुक गयी। मि. ब्राउन मुझे ध्यानपूर्वक देख रहे थे।

''अमेरिका के पहले प्रेसिडेन्ट ज्योर्ज वॉशिंग्टन थे और वे कुशल नेता थे। उनकी विचारधारा अत्यंत विशाल थी।'' आगे की 15 मिनट मैंने अमेरिका के एब्राहिम लिन्कन, क्लीन्टन्स, एजन होवर ब्ला ब्ला प्रेसिडेन्ट्स के विषय पर मेरे अमेरिका के ज्ञान को बताया।

''मुझे इतनी ही जानकारी है।'' ध्यान से सुन रहे मि. ब्राउन को मैंने कहा। मि. ब्राउन ने मेरे सामने देखकर स्मित दिया।

''तुने जो कहा सब सत्य है, परंतु ये तो तुने अमेरिका की गौरवता और उसके प्रेसिडेन्ट्स की बात की। मुझे ये जानना है कि अमेरिका के मूल में क्या था ?....''

मैंने उस पर विचार किया, परंतु मेरे मन में कुछ भी क्लीक हुआ नहीं। दो मिनट के मौन के बाद जो मैंने जैनम के पास से मि. ब्राउन के श्रेष्ठ मन की शक्ति के बारे में सुना था, उसका छोटा स्पार्क मुझे देखने मिला।

''अपेक्षा! सच कहूं तो... अमेरिका के मूल में उसकी एकता थी। ''युनिटी इझ स्ट्रेन्थ'' ऐसा हम सभी गाते है, परंतु बहुत कम को इसका अर्थ पता होता है।

अमेरिका एकता की शक्ति से ईट के बाद ईट के न्याय से बना है। और इसलिए ही जो ईट के बाद ईट के न्याय से बनता है, उसमें बनाने वाले को सोचने का अवकाश मिलता है कि मुझे आगे की ईट कहाँ रखनी है और जो वस्तु आप सोचकर करते हो, वह लगभग गलत नहीं होती...'' मि. ब्राउन ने खुद का चेहरा मेरे पास लाया।

''अमेरिका विचार और बनावो का मेसेज देनेवाला सबसे अच्छे देशो में से एक देश है। और तुझे ये वस्तु उसके हरेक मॉन्युमेन्ट, पार्क्स, बिल्डिंग्स में दिखेगी, स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी से लेकर केपीटॉल बिल्डिंग्स, वॉशिंग्टन डी.सी तक....''

N.Y.T.22.50

यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल के मुख्य डॉक्टर ने हमारा स्वागत किया। वे बहुत दिल्लगी स्वभाव वाले इंसान थे। उन्हें देखकर ऐसा लगेगा ही नहीं कि वे इतनी बड़ी हॉस्पिटल के मुखिया हो। उनका नाम मि. स्कूलर था। वे हमारे साथ आगे चल रहे थे। तब मि. ब्राउन ने मेरे कान में कुछ कहा, ''मि. स्कूलर का सूत्र है- लाफ्टर इझ अ मेडिसीन धेट केन क्योर अेवरी डीसीझ।''

हम हमारे रहने की जगह पहुँचे। 5-स्टार होटल्स में जैसे रूम होते है, वैसा दो रूम जितना एक रूम हमे रहने के लिए देने में आया था।

''मि. सक्सेना! मैं सब व्यवस्था करके 15 मिनट में आता हूं। आज आपका पूरा शरीर चेक-अप और जेनेटीक चेक-अप होगा, फिर हम नक्की करेंगे कि आगे क्या करना है।'' मि. स्कूलर ने हमने सोची हुई बात को दुहराया।

''तो तैयार हो जाओ।'' वे व्यवस्था के लिए डॉक्टर ब्राउन के साथ गये। वे और मि. ब्राउन पापा की मानसिकता के बारे में चर्चा कर रहे हो ऐसा मुझे लगा।

पापा टेस्ट के लिए तैयार होने के लिए फ्रेश होने चले गये। उनके मुंह पर मैंने कभी नहीं देखी हुई थकान दिखाई दी। *''रोग मनुष्य को निकम्मा करने में बहुत शक्तिशाली होता है। इसलिए रोग बिना का जितना समय अपना है वह ही सच्चा समय है। इसलिए समय को बिगाड़ो मत...''* भवनिस्तारक के मेरे मन पर छाए हुए शब्द मुझे याद आये।

मैं भी मेरा चेहरा साफ करके, मेरी 20 घंटे की मुसाफरी के कारण गंदे कपड़ो को बदलकर चेयर पर बैठी। मम्मी हमारा सामान रूम में जमाने लगी। किसी भी जगह को खुद के घर में बदलने की मम्मी की

कला जबरदस्त थी।

मैंने मेरा मोबाइल निकाला और उसे चार्जिंग में डालकर हॉस्पीटल के वाइ-फाइ का उपयोग करके जैनम को ओनलाइन विडीयो कॉल किया ।

''हाय...'' उसका संवेदन से मिश्रित चेहरा दिखा।

''कैसा है?'' मैंने उसे छोटा स्मित दिया। फिर 10 मिनट मैंने मेरे प्रवास की बातें की। उसका एक ही कहना था कि ''वापस जल्दी आ जाना।''

''मैं तुझे बाद में फोन करती हूं...'' कहकर मैंने फोन कट किया। डॉक्टर स्कूलर और डॉक्टर ब्राउन आ गये। ''सो. मि. सक्सेना....'' थोड़े फ्रेश लगते पापा को डॉक्टर ने ईशारा किया। ''आपको जांचने का समय आ गया है। हम आपके दिमाग और शरीर दोनों की जांच करेगे। ''

पीछे बड़े स्ट्रेचर ने हमारे रूम में ऐन्ट्री की। भर्ती होने के लिए पापा उस पर सो गये। हमारा अमेरिका आने का कारण का पहला स्टेप शुरू हो गया।

''डायग्नोसीस...''

Chapter - 2

30/10/2010 N.Y.T. 8.00 Raymond BLUD Homes, Newark

अनपेकिंग अति भयंकर होती है....!

नये बंगले में हम कल ही आ गये थे। मि. ब्राउन और मि. स्कूलर के निरीक्षण के बाद ऐसा निष्कर्ष आया कि शायद पूरी लाइफ तक ये जेनेटीक बिमारी ठीक नहीं भी हो, परंतु लीवर और पेन्क्रीयाझ को कम नुकसान हो उसके प्रयत्न शक्य थे । दोनों डॉक्टर्स का मुख्य लक्ष्य कम नुकसान पर और मानसिक स्वस्थता पर ही था और साथ-साथ में अगर इलाज मिल जाए तो अच्छा था।

कल शाम को ही डॉक्टर ने पापा को छुट्टी दी थी और हम पेसा-इक नदी के किनारे बनाये हुए मि. ओसवाल के बंगलो पर आए थे। वह युनिवर्सिटी हॉस्पिटल से सिर्फ 4 कि.मी. ही दूर था और 7-10 मिनट के ड्राइव में तो हॉस्पिटल के केम्पस में पहुँच सकते थे।

मि. ओसवाल के इस बंगलो में, मैंने उनके बोम्बे के घर में देखी हुई सुविधाओं से भी ज्यादा हाइ-टेक सुविधाएँ थी। टेम्परेचर मेच, ऑटो रिकोग्नाइजेशन, ऑटो लाइट स्वीचीस, ऑटो टेप्स, सब ऑटो-ऑटो ही था। न्युयोर्क का उनका घर एकदम साफ-सुथरा था।

मम्मी को तो बंगला देखकर ही लव एट फर्स्ट साइट हो गया था। उनके मन में पूरी लाइफ वहाँ रहने के सपने आ गये थे। ''मैं ये वस्तु यहाँ

सजाऊंगी, ये वस्तु यहाँ सजाऊंगी, और ये यहाँ....'' मम्मी खुद के साथ ऑटो टॉक कर रही थी। मुझे भी इस घर में एक नीरव शांतता की अनुभूति हुई।

नेवार्क का ये पूरा नोर्थ आइरन बाउन्ड का एरिया बंगलोवाला था और सीटी का शायद सबसे पोश एरिया था। व्यवस्था, जैसे कि डॉक्टर ब्राउन ने मुझे कहा था उसके हरेक ईट में थी। पूरे रास्ते पर अच्छी तरह वृक्ष लगाये हुए थे ।

शांतता मैं ही वहाँ का बड़प्पन था ।

मैंने ग्राउन्डफ्लोर पर ही साउथ वेस्ट कोर्नर का रूम मेरे लिए नक्की किया। मम्मी-पापा ने सहजता से हाँ कह दी। जैनम ने मुझे उसी ही रूम में रहने को कहा था। उसमें से नदी का सीधा नजारा मिलता और एक तरफ में ग्रीन लेन्ड का गोचर था। वह स्वर्ग था ।

मैंने जब रूम में प्रवेश किया था उस समय से ही मुझे पॉझिटीवीटी की अनुभूति शुरू हो गयी थी। एक रात में तो मुझे उसके साथ प्रेम हो गया था ।

सुबह पक्षीओ के मधुर स्वर से मेरी नींद खुल गयी। मैंने पश्चिम क्षितिज में देखा। सफेद बादल दिखाई दे रहे थे! आज सुबह मैंने मेरे लिए एक खास कार्य तुरंत की उठने के बाद नक्की किया था। अनपेकिंग ध गिफ्ट्स!

कल शाम को ही सभी गिफ्ट्स मेरे रूम में एक साइड में अच्छी तरह रखे हुए मैंने देखे थे। मेरे चाहक कितने थे, वो इन गिफ्ट्स पर से नक्की हो गया था। बोम्बे एयरपोर्ट पर सिर्फ सादिया, तेजस और जैनम की गिफ्ट्स खोली थी। बाकी सभी की गिफ्ट्स ओसवाल अंकल खुद के आदमी के साथ भेजने वाले थे। गिफ्ट्स अलग-अलग कवर में पेक करने में आये थे। सभी पर गिफ्ट्स देनेवाले का नेमटेग चिपकाने में आया था।

मैं गिफ्ट्स देख रही थी। एक अजीब चोरस गिफ्ट मि. ओसवाल के नाम के टेगवाला मुझे दिखा। वह सिल्वर कलर के कवर में पेक था। मैंने उसे हाथ में लेकर बारीकी से निरक्षण किया।

फिर मैंने वह कवर खोला। उसमें मुझे एक ग्रीटिंग कार्ड दिखा

। उसके आगे की तरफ सिर्फ 4 अक्षर लिखे थे

''बूक्स मेक, बूक्स ब्रेक...''

मैंने ग्रीटिंग कार्ड खोला। अंदर मेरे नाम से मेसेज लिखा हुआ था

''डियर अपेक्षा!

मैं तुझे सादे उपहारो से ''हेपी जर्नी'' वीश नहीं करूंगा। मेरे पापा ने एक वस्तु बचपन से मुझे सिखायी थी। ''कभी सभी करे वैसी वस्तु नहीं करनी, हमेशा कुछ नया कर।' आज मेरा जो स्टेटस है वह इस उपदेश के कारण से ही है.....

और, इसलिए,

मैं तुझे शिक्षा-ज्ञान गिफ्ट करना चाहता हूँ।

इस ग्रीटींग के साथ मैंने एक हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का सोशियल साइकोलॉजी कोर्स में तेरा एडमिशन हो गया है उसका प्रमाणपत्र भेजा है। तू वह देख लेना।

कोर्स खास साइकोलॉजी का है, कि जो मुझे तेरे मन और शक्ति को देखकर ठीक लगा। तू तेरे पापा के बीमारी के हिसाब से घर में रहकर भी ऑनलाईन कोर्स कर सकेगी और उसकी परमिशन मैंने युनिवर्सिटी के डीन के पास से ले ली है। तू बहुत आगे बढ़कर इस दुनिया के लिए कुछ करने वाली बने बस इस आशा के साथ.....

(M.OSWAL)"

मैंने ग्रीटिंग को फिराया. उसके पीछे एक पंच लाईन लिखी थी,

"KNOWLEDGE GIVES YOU THAT, THAT NO ONE CAN GIVE... THAT IS RIGHTNESS..."

आज मुझे पता चला कि क्यों मि. ओसवाल मि.ओसवाल थे

Chapter - 3

30/3/2011 | N.Y.T. 8.00 | Raymond BLUD Homes, Newark

इन्फ्लो अति भयंकर होता है....!

''हॅलो अपेक्षा!'' अनोखी की आवाज सामने की तरफ सुनाई दी।

''हां...'' अनोखी की आवाज में मुझे उत्साह का अनुभव हुआ।

''मैंने तुझे बहुत दिनों के बाद कॉल किया उसके लिये सॉरी... सच कहुं तो मैं पिछले थोड़े दिनो से बहुत व्यस्त थी...'' 'व्यस्त' शब्द पर उसने अलग ही भार दिया।

''तू क्या कर रही है अनोखी?'' मुझे जानने की इच्छा हुई।

''ऐसा कुछ खास नहीं, परंतु पिछले थोडे दिनों के लिए शासनद्रष्टाश्रीजी ने।''

शासनद्रष्टाश्रीजी का नाम सुनकर मेरी आंखे आर्द्र हो गयी। पिछले पांच महिने से मैंने उनको एक भी पत्र भेजा नहीं था। वे तो किसी को भी फोन करवाते नहीं थे। पिछले पांच महिने मेरे पानी की तरह पसार हो गये थे। मम्मी-पापा को मैंने मेरी यूनिवर्सिटी के कोर्स के बारे में कहा था। मम्मी-पापा ने सहजता से स्वीकार किया था। मेरे दिन का लगभग समय ऑनलाईन ग्रुप डीस्कशन्स, रीसर्च में ही निकल जाता था।

सोशियल साइकोलॉजी एक गजब का विस्तृत विषय था। उसमें मुख्य रूप से इस दुनिया के सभी व्यक्ति की अलग-अलग सोचने की

पेटर्न्स, उनके रीएक्शन, उनके अप्रोचीस का रीसर्च होता। उसमें डॉक्टर ब्राउन की मदद मुझे अच्छी मिली थी। हर रोज देर रात तक हमारी चर्चा चलती। मेरी रात एक बजे पूरी होती। मेरा परफोर्मन्स अकल्प्य था और इसलिए मुझे एक बार स्टुडन्ट्स को लेक्चर देने के लिए भी हार्वर्ड युनिवर्सिटी से फोन आया था।

मम्मी और मैं गयी थी। वहाँ के सेमिनार के लिए तीन दिन की जबरदस्त मेहनत मैंने की थी। शासनद्रष्टाश्रीजी के साइकोलॉजिकल रीडींग्स उन सभी में मुझे काम आये थे। वहाँ भी लेक्चर देते समय संवेदनाओ को मैं नियंत्रित नहीं कर सकी थी और अश्रु मेरे मुंह पर से बहने लगे थे।

मेरे लेक्चर के अंत में जोरदार प्रतिभाव मुझे लोगो के पास से मिला था। तब मैंने शासनद्रष्टाश्रीजी को बहुत याद किया था।

पापा ने भी डॉक्टर को पूछकर घर से ही ऑनलाईन सॉफ्टवेयर सर्विसीझ शुरू कर दी थी। उसके कारण से पापा फ्रेश रहते थे। मम्मी ने भी केक्स, कुकीज, बेक्स जो अनोखी के पास से सीखा था, उसकी ऑनलाईन बिक्री शुरू कर दी थी। एक राइझींग ब्रान्ड की तरह अब मम्मी की केक ऑनलाईन शॉप बढ़ रही थी। इन्कम का इन्फ्लो असामान्य हो रहा था।

''तू है....'' अनोखी की आवाज सुनायी दी।

''हाँ!'' मैं मेरे भूतकाल को छोड़कर वर्तमान में आयी। इतना समय किस तरह पसार हो गया वह ही पता नहीं चला।

''आर यु ओ.के.? क्या हुआ?'' अनोखी की चिंतापूर्ण आवाज सुनाई दी।

''हा! सिर्फ शासनद्रष्टाश्रीजी का नाम सुनते मेरा भूतकाल मेरे मन के गूगल में खुल गया, इसलिए उसके बहाव में फंस गयी।'' अनोखी का हास्य मुझे सुनायी दी।

''तू क्यों हंस रही है?'' मैंने गुस्से से पूछा।

''अपेक्षा! जिस दिन तू शासनद्रष्टाश्रीजी के साइकोलॉजी का चित्रण करेगी, तब मैं तुझे सच्ची साइकोलॉजिस्ट मानुंगी।'' उसने मुझे चुनौति दी ।

''इसलिए ही मैंने इस कोर्स को लिया है।'' मेरे मुंह पर हास्य

फैल गया। अनोखी की आवाज़ दो मिनट तक सुनायी नहीं दी। उसके श्वास की आवाज सुनायी दे रही थी।

''अपेक्षा! मेनली मैंने तुझे ये फोन एक मेसेज देने के लिए किया है।'' संपूर्ण गंभीरता के साथ वह बोल रही हो ऐसी उसकी आवाज थी।

''किसका और क्या?'' मुझे जानने की इच्छा हुई।

''शासनद्रष्टाश्रीजी का...'' नाम सुनकर मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। ''अपेक्षा! शासनद्रष्टाश्रीजी ने तुझे ये मेसेज दिया है।

"LIFE FLOWS ON, JUST OBSERVE IT,
DON'T INDULGE IN IT..."

N.Y.T. 20:30

मैं लैम्प्स से प्रकाशित आयरन बाउन्ड की गलीओ से मेरे घर की तरफ जा रही थी। किराणा खरीदी करने के लिए मैं हमारे एरिया के ग्रोसरी स्टोर पर गयी थी। यहाँ के स्टोर्स भी सभी मिनी मॉल जैसे ही दिखते थे।

रोड का मोड आया और मैने वेस्ट कट मारा। पूरा रोड सुनसान था। एक दो गाडी के अलावा उस रोड पर ज्यादा ट्राफिक दिखा नहीं। मेरा दाहिणा हाथ अचानक से कंपने लगा। मैंने मेरी मम्मी के पास सुना था कि जब स्त्री का दाहिना हाथ कांपता है, तब उसके साथ कुछ खराब होने वाला है, वैसा समझ लेना ।

मेरे मन में एक भय उत्पन्न हुआ। मैंने उसे मेरी साइकोलॉजीकल सीख से लड़ने की कोशिश की। उस गली में मैं सौ कदम चली और पीछे से मुझे कोई इंसान मारामारी कर रहे हो ऐसी आवाज सुनायी दी। मैंने पीछे देखा।

एक काला व्यक्ति और एक गोरे व्यक्ति के बीच मारामारी चल रही थी, काला इंसान उस गोरे इंसान को पशु की तरह मार रहा था। मुझे उस गोरे इंसान को बचाने की इच्छा हो गयी। मैं उस मारामारी के स्थल के तरफ गयी। मैं वहाँ पहोंचुं उसके पहले कोई अदृश्य शक्ति मुझे अटकाती हो ऐसा मुझे लगा। मेरा पैर आगे बढ़ा ही नहीं।

एक दूसरे अंकल मारामारी के बीच आये। मारामारी करने वाले दोनों को अलग करने गये। काले इंसान ने खुद के पॉकेट में से खंजर निकाला, वे अलग करने वाले अंकल कुछ बोले उसके पहले उस काले इंसान ने अंकल के पेट में खंजर घुसा दिया। अंकल के मुंह में से खून निकला। मेरे मुंह में से एक जोरदार चीख निकल गयी। आस-पास की गली में रहे हुए बंग्लोझ की लाईट चालू हुयी। काला इंसान और गोरा इंसान उस अंकल को छोड़कर उनकी सभी वस्तुओं को लेकर दौड़ने लगे। सामने से पुलिस की गाड़ी दिखाई दी। वे दोनों आस पास की गली में गायब हो गये।

पुलिस ने आकर उस मर्डर स्पॉट को सील किया। मैं उस पूरे समय तक वहाँ जड की तरह स्तब्ध ही रही। मुझे सतत अनोखी ने आज सुबह कहाँ हुआ शासनद्रष्टाश्रीजी का मेसेज ही फ्लेश हो रहा था।

"LIFE FLOWS ON, JUST OBSERVE IT, DON'T INDULGE IN IT..."

मुझे तब समझ में आया कि कौनसी अदृश्य शक्ति ने मुझे मारा-मारी में इन्डल्ज होने से क्यों अटकाया।

Chapter - 4

13/4/2011 N.Y.T. 20.15 Raymond BLUD-Homes, Newark

प्रिपेरेशन अति भंयकर होती है.....!

''मम्मी! आज सुबह में जैनम का फोन आया था...'' मैं और मम्मी बर्थ डे की तैयारी कर रहे थे। आज सुबह में ही मम्मी ने मुझे मेरे बर्थ-डे के दिन कुछ अलग करने की बात रखी थी। मैं कल 17 साल की होनेवाली थी।

''सत्तरे आवे शान'' मम्मी ने मुझे उनके पापा ने उन्हें 17^{TH} बर्थ-डे के लिए कही हुई कहावत कही थी। उसका अर्थ ''17 साल की उम्र में ज्ञान और निर्णय शक्ति आती है...'' ऐसा था।

मम्मी की इच्छा ऐसी थी कि हम सभी सुबह में N.Y वेस्ट में रहे हुए मंदिर में जाकर मेरा बर्थ-डे मनाये। फिर शाम को हमारा न्युयोर्क में घुमने का प्लान था। हम उसकी ही तैयारी कर रहे थे। अलग अलग प्रकार के पुष्प मम्मी ने नेवार्क की अलग-अलग दुकानो में से इकट्ठे किये थे।

मम्मी को मेरे अलग-अलग पुष्प चढ़ाने के रस के विषय में अच्छी तरह से पता था।

''जैनम क्या कह रहा था?'' मम्मी को मेरी और उसकी प्रगाढता के विषय में पूरी जानकारी थी। ''ये ही की मैं तुझे एक बहुत बड़ी गीफ्ट भेजने वाला हूं। मम्मी वह क्या हो सकती है?'' मेरा वाक्य पूरा हुआ और

हमारे बंगलो के दरवाजे की बेल बजी।

मम्मी ने एमेझोन पर से मेरे बर्थडे के सेलीब्रेशन के लिए थोडी चीजे ऑर्डर की थी। मम्मी खुद के काम में व्यस्त थी । मै मेरा काम पूरा करके खड़ी हुई। रूम से बाहर जाकर मैंने बंगलो का दरवाजा खोला। सामने ऐक्सप्रेस कुरीयरमेन खड़ा था। उसके हाथ में उसके आधे शरीर को ढकनेवाला बड़ा पार्सल था।

''कुरीयर, मेम!'' मैंने उसके हाथ में से रीसीप्ट ली। ये गिफ्ट सील करने में आया था इन्डिया से। मुझे लाईट हुई । जैनम ने मुझे कहा था कि ''मैं तुझे बड़ी गिफ्ट देनेवाला हूँ।''

कुरीयर एक दिन जल्दी आ गया था। कुरीयरमेन के पास से कुरीयर लेकर मैंने उसे पानी के लिए पूछा। उसने स्मित किया और 'नो थैंक्यू' कहकर निकल गया।

मैंने दरवाजा बंद किया और साइझ में भारी, परंतु उठाने में हल्का ऐसे इस कुरीयर को मम्मी-पापा के रूम में लाकर रखा।

''ओह! तो आ गया जैनम का गिफ्ट पार्सल?'' मम्मी ने मुझे चिड़ाया।

मेरे चेहरे पर लज्जा से भरा स्मित आया। मम्मी पास में आयी और कहा ''ओपन इट।''

खोलने की इच्छा मेरी भी थी, परंतु उसके पहले मैंने उसका निरीक्षण किया। मुझे खोलने की जगह मिल गयी। जैनम चालाकी में बहुत होशियार था, इसलिए इसमें भी कुछ चालाकी हो वह शक्य थी।

मैंने बोक्स को खोलने की जगह पर लगाए हुए एक पेपर को देखा। उस पर साफ सुथरे अक्षर प्रीन्ट किये हुए थे।

**'SOME THINGS LOOK SMALL,
BUT THEY ARE BIG...'**

मम्मी को *QUOTE* देखकर हंसना आया। वह पेपर मैंने अलग

किया और गिफ्ट को खोलने लगी। हर समय की तरह इस समय भी जैनम ने खुद की चालाकी भरी स्टाइल छोडी नहीं थी। बॉक्स में बॉक्स, बॉक्स में बॉक्स.... **21** बॉक्सीस मैंने खोले। मम्मी और पापा को ये शरारते ह्युमरस लगी। वे हंस रहे थे।

अंत में मेरे हाथ में एक क्यूब जितना छोटा बॉक्स आया। मुझे बॉक्स के ऊपर चिपकाया हुआ टेग 'सम...' वाला प्रोवर्ब याद आया। मैंने उस क्यूब को खोला। उसमें से एक चमकता पीरामिड निकला। उसके चारो ओर चमकते स्टोन्स लगाने में आए थे। मैं उसे चारों ओर से देख रही थी और तब ही मुझे उसमें से आवाज सुनाई दिया। 'ओपन मी अपेक्षा। आई ॲम फोर यू।' वह टोन बारबार बजा। मुझे गुस्सा आया। मैं उस पीरामिड क्युब के साथ अफड़ातफड़ी करने लगी। साईकोलॉजी ट्रेनिंग में मन को शांत करने के लिए क्युब का उपयोग होता। इसलिए मैंने उसे डीकोड करना सीखा था। मैंने वो आवाज बंध करने के लिये एकदम जल्दी से क्यूब को डीकोड किया।

क्यूब खुल गया। उसमें से एक गोल्डन स्लीप बाहर निकली। उसके ऊपर ***''बाय जैनम''*** लिखने में आया था। मैंने उस गोल्डन स्लिप को फाड़ा। उसमें से दो टीकीट्स जैसा मुझे दिखाई दिया। एक टीकीट डीझनीलेंड की थी और एक टीकीट लास वेगास की थी। सबसे अच्छे एक "**M.G.M. GRAND**" रूम की बुकिंग **5D/4N** के लिए करने में आयी थी।

''मैं जानेवाली किसके साथ हूं?'' मुझे गुस्सा आया। जैनम ने मेरे साथ खराब मजाक किया था। उसके लिए मेरी संवेदनाएं कितनी थी वह पहचान नहीं सका था। मेरी आंखों में पानी आने लगा।

बेल की आवाज वापस से सुनायी दी। मैंने दरवाजा खोला। मैं स्तब्ध हो गयी।

N.Y.T. 22:30

जैनम और मैं मेरे रूम में यानी उसके घर में बैठकर बातें कर रहे थे। मम्मी, मैं और पापा तीनो जैनम के अचानक आगमन से संपूर्णतः स्तब्ध हो गये थे। उसे देखते ही मैंने खुद के घर के स्लीपर्स को निकालकर उसे हग कर दिया था।

मम्मी तब तक '' कौन है अपेक्षा?'' ऐसे बारबार पूछते हुए आ गयी थी। जैनम को देखकर मम्मी का मुंह खुला का खुला रह गया था। ''ओह माय गॉड! जैनम!'' हर्ष में मम्मी ने आवाज निकाली थी। पापा का भी जैनम को देखकर सेम रीएक्शन था।

जैनम की पीठ थपथपाकर पापा ने उसे कहा था ''नाउ यु लुक लाइक अ ग्रोईंग मेन...'' सच में ही जैनम का अंतिम **5-6** महिने में जबरदस्त शारीरिक बढ़ावा हुआ था। वह पहले से ज्यादा पावरफूल और हेन्डसम दिख रहा था।

''पहले उसे अंदर तो आने दो। फिर हम बाते करेगें।'' कहकर उत्साह में खुद के आतिथ्य को भूल जाने पर हमे मम्मी ने टेढ़े-ढंग से कहा था। उसकी बेग को ट्रोली करके मैंने मेरे रूम में रखी थी। जैनम ने स्मित किया था।

फिर हम सभी ने डीनर किया था। आज मम्मी ने जैनम की फेवरेट आइटम बनायी थी। जैनम, जब जब बॉम्बे हमारे घर आता, तब वह आइटम नक्की थी- पनीर पकोडे। जैनम ने पूरी प्लेट खाली कर दी थी ''वाह आंटी! क्या आइटम बनायी है। इन्डिया से भी ज्यादा अमेरिका आकर आपका टेस्ट बढ़ गया है।''

फिर मम्मी और पापा ने इन्डिया में होती मुख्य-मुख्य घटनाओ की चर्चा की थी। इन्डिया वर्ल्डकप **1983** में जीतने के बाद वापस से दूसरी

बार जीता था। महेन्द्रसिंह धोनी और युवराज सिंग चमकते सितारे की तरह दुनिया के सामने प्रगट हुए थे।

मेरा कोर्स चल रहा होने से मैंने इन सभी न्यूझ रबीश पर ध्यान दिया नहीं था।

फिर मम्मी ने जैनम को यहाँ आने का कारण पूछा था। वह दो मिनट चुप ही रहा था। फिर ''आंटी! ये स्टोरी बहुत बड़ी है। मैं आपको बाद में कहूंगा।'' कहकर उस बात को उसने उड़ा दिया था।

''मैं मुसाफरी से थक गया हूं। मुझे आराम करना पड़ेगा।''

''हाँ...हा..।' कहकर मम्मी-पापा ने उसे अनुमति दी थी।

''यु हेव अ बीग सरप्राइज फॉर यॉर बर्थ-डे..'' मुझे मम्मी ने धीरे आवाज से कहा था। मेरा चेहरा चमक उठा था। जितने समय में जैनम के साथ अभी थी, उससे मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ था कि वह थोड़ा शर्मिला हुआ था और खुद के भावो को आसानी से व्यक्त नहीं कर रहा था।

शायद मेरा उसकी लाइफ में से जाने से ये बदलाव आया हो ये शक्य था। उस बात को स्पष्ट करने के निर्णय के साथ कल जल्दी उठने के बहाने से वह वहाँ से खड़ा हो गया था।

मैं मेरे रूम में आ गयी थी। जैनम बेड पर सोया हुआ था। मैं उसके साइड में आकर बैठी थी। उनकी जिम मेड छाती ऊपर-नीचे हो रही थी। मैंने मेरे लेपटाप को पावर ऑन किया था। मि. ब्राउन के साथ मेरी आज की चर्चा बाकी थी। मैंने उनकी लिन्क पर क्लिक किया था।

लेपटॉप की आवाज होते ही जैनम खुद की स्लीप में डीस्टर्ब हुआ हो ऐसा मुझे लगा था। मैंने हेडफोन्स लेपटॉप के साथ अटेच किए थे। फिर मेरी और मि. ब्राउन की चर्चा शुरू हुयी थी।

बीच में अचानक डॉक्टर ब्राउन हंसने लगे थे। मुझे समझ में नहीं आया कि वे क्यों हंस रहे थे। फिर धीरे से मेरे इयरफोन में डॉक्टर ब्राउन ने कहा था ''सी एट योर बेक।'' मैं पीछे मुडी थी। जैनम उठ गया था और वह विचित्र मुंह बना रहा था। मेरे पीछे देखते ही वह सोने की एक्टींग करने लग गया था, परंतु मैंने उसे मेरे हाथ में रहे हुए रबर से मजाक में मारा था।

''बाय अपेक्षा...'' चर्चा करने के लिए गलत समय था ये जानकर

डॉक्टर ब्राउन ने हमारी चर्चा पूरी कर दी थी। मैंने भी लेपटॉप बंद कर दिया था।

फिर मैंने जैनम को एक्टींग करने के लिए तकिये से बहुत मारा था। उसने ''सॉरी'' कहकर मुझे शांत किया था। फिर मैंने उसके साथ रोज की बातें शुरू की थी। मेरी यहाँ मि. ओसवाल के कारण से चल रही पढ़ाई, उसमें उत्तीर्णता, पापा की स्थिति सब मैंने उसे बताया था।

जैनम ने भी खुद की लाइफ में मेरे जाने के बाद उसकी लाइफ में दुःख, मि. ओसवाल ने उसे बताया हुआ रास्ता सब बातें की। वापस से स्पष्ट रूप से मि. ओसवाल की समझदारी देखने मिली थी।

''परंतु जैनम! तू आज यहाँ क्यों आया?' डीनर के समय जैनम ने उडाए हुए प्रश्न को मैंने उसे पूछा।

''रीयली टू से...'' जैनम गंभीर लगा। ''तेरे बिना मुझे लाइफ आगे ले जाना अशक्य लगी और इसलिए ही मैंने अमेरिका में रहने का तय किया है।'' उसके गंभीर मुंह पर स्पष्ट निर्णय छलकता हुआ मुझे दिखाई दिया...

N.Y.T.23.55

सोने से पहले पढ़ने के लिए जैनम ने मुझे सेन्ड किए हुए खुद के अमेरिका शीफ्ट होने के प्लान के मेसेज को मैं देख रही थी।

''डियर अपेक्षा!

मैंने अमेरिका तेरे साथ समय पसार करने के लिए शिफ्ट होने का सोचा है। पापा की दो इच्छाएँ मेरे यहाँ आने से पूर्ण हो जाएगी। १. हार्वर्ड बिझनेस स्कूल में पढ़ना। २. अमेरिका का बिझनेस संभालना।

तुझे दुःख हो ऐसा मुझे कुछ भी कहना नहीं है, परंतु तुझे हकीकत स्पष्ट करने के लिए कह रहा हूँ...

डॉक्टर ब्राउन और डॉक्टर स्कूलर ने स्पष्ट कहा है कि ''जो जेनेटीक बीमारी है, उसे सिर्फ प्रकृति ही ठीक कर सकती है और इसलिए नेवार्क जैसी सीटीझ में रहना और खुद की लाइफ को आगे बढ़ाना, उसके अलावा तेरे पापा के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है। इसलिए शायद अब आप सभी अमेरिका कभी छोड़ नहीं सकोगे।''

अंतिम लाईन पढ़कर मुझे जोरदार झटका लगा। *''क्या मैं वापस से कभी भी खुद की मातृभूमि में जा नहीं सकूंगी?''* मैंने जैनम के सामने देखा। वह शांतीपूर्ण नींद में मुंह पर स्मित के साथ बेड पर लेटा हुआ था। उसे स्वर्ग का सुख मिल गया हो ऐसा लग रहा था। मैंने मोबाइल पर सेकन्ड पेज फ्लीप किया।

''शासनद्रष्ट्रश्रीजी को भी मैंने ये बात कही थी। उन्होंने मुझे तुझे एक ही मेसेज देने के लिए कहा था, ''टाइम हिल्स एवरीथींग...''

मेरी और पापा दोनों की इच्छाएँ मेरे अमेरिका आने से पूरी होने वाली थी और इसलिए ही मेरा ये निर्णय है। अपेक्षा! जब हम पहलीबार डेट पर मिले थे, तब तुने मुझे पूछा था, ''तेरे लिए मेरा महत्व कितना?'' तब तुझे मैंने कहा था कि ''मेरे खुद से और मम्मी-पापा से कम...''

परंतु उक्त वाक्य को मुझे बदलना पड़ेगा। आज परिस्थिति ऐसी है कि मुझे, तेरे अलावा कोई दूसरा दिखता ही नहीं है। और, इसलिए..

मेरे खुद से और मम्मी- पापा से भी तू ही मेरे लिए ज्यादा है। शायद तुझे ये अतिशयोक्ति लगेगी, परंतु ये मेरी हकीकत है। मैं तेरे बिना जी नहीं सकता......

तू है, तो मैं पूर्ण हूँ...

तू है, तो मैं हूँ....

तू है, तो ये दुनिया है....

बड़े भाग का समय मैं मेरे अभ्यास पर केन्द्रित करूंगा.... और जब फ्री समय मिलेगा तब वीकएन्डस पर मैं तुझे मिलने आऊंगा।

मैं तेरे बिना मेरी लाइफ के लिए सोचता भी हूं, तो मुझे अंधकार के अलावा उसमें कुछ भी दिखता नहीं है। शायद तू मुझे समझ सकेगी।

तेरे 17TH बर्थ-डे के लिए कॉन्ग्रेट्स!

तेरे बिना अधूरा

जैनम....''

मैंने घड़ी में देखा। ठीक 12 बजे थे, मेरी लाइफ का एक साल कम हुआ था। मैंने मेरी आंखे बंध कर दी।

Chapter - 5

14/4/2011 **N.Y.T. 6:15** Raymond BLUD-Homes, Newark

सेलीब्रेशन अति भंयकर होता है.....!

''हेपी बर्थ-डे टु यु, हेपी बर्थ डे टु यु।'' टोन मेरी नींद को बहुत खलेल पहुँचा रहा था। मैं मोबाइल पर क्लिक कर रही थी, परंतु टोन बंद ही नहीं हो रहा था। अंत में मैंने मेरी आंख खोली। दूर लेम्पस्टेन्ड पर एक रेकोर्डर जैसा कुछ पड़ा था।

मैं बेड पर से खड़ी हुई और लेम्प-स्टेन्ड के पास गयी। जैनम बेड पर बाजु में नहीं था। रेकोर्डर को बंद करके मैं वापस से बेड पर सोने का प्रयत्न करने लगी, परंतु प्रयत्न सभी निष्फल थे।

मै उठकर खुद के शॉर्ट्स में लीवींग रूम में गयी। मम्मी की आ-वाज किचन में से आ रही थी। वह कुछ बना रही थी। सुंगध बहुत जोरदार थी। मैं बाहर सोफे पर जाकर बैठी।

''हाय...माय गर्ल!'' पापा पटियाला-कुर्ते में एकदम युवान दिख रहे थे। ''हेपी बर्थ-डे माय गर्ल।'' पापा ने मेरे गाल पर कीस की। आज मेरा चेहरा बहुत-सी कीसीस से भरने वाला था, वह मुझे पता था। आज मेरे बर्थ-डे के सेलीब्रेशन के लिए मेरे हार्वर्ड के फ्रेन्ड्स और टीचर्स का भी आमंत्रण आया था। मैंने अभी तक नक्की नहीं किया था मुझे क्या करना था। मैंने पापा को मीठा स्मित दिया।

''पापा! आप क्यों इस तरह तैयार हो रहे हो?'' उनके बराबर बनाए हुए बालों को देखकर मैंने कहा।

''तुम सभी बड़े साइकोलॉजिस्ट्स खुद के बेसीक्स भूल रहे हो....'' पापा ने स्मित दिया, ''तू भूल गयी है कि आज हमे तेरे बर्थ-डे के लिए N.Y. वेस्ट के जैन मंदिर में जाना है।'' जैनम के आने के बाद हम हमारा काम ही भूल गये थे। मम्मी ने शायद सभी तैयारी कर दी थी।

जैनम...! हं....!

''पापा! जैनम कहाँ है?'' पापा ने मुझे पेपरवेट के नीचे पडे हुए एक पेपर की तरफ इशारा किया। उसमें सिर्फ दो वाक्य लिखे हुए थे।

'MEET ME AT TEMPLE 7.30 SHARP...
BE READY FOR THE CELEBRATION...'

''पापा! वह कितने बजे निकला?''

''शायद 4.30...''

''इतने जल्दी...'' मैंने जैनम को कभी इतने जल्दी उठते देखा नहीं था। मुझे बहुत आश्चर्य के भाव आये। ''वह कुछ बड़ा विचार कर रहा है, माय गर्ल! शायद...'' पापा सरप्राइझ बोलनेवाले ही थे, परंतु वे चुप हो गये।

''पापा! मेरे से आप क्या छुपा रहे हो?'' पापा ने स्मित दिया और 'एक सेकेंड' कहकर वहाँ से निकल गये।

''अपेक्षा! जल्दी तैयार हो जा.... जैनम राह देख रहा है।'' मम्मी की बड़ी आवाज किचन में से आयी। मैं सोफे पर से खड़ी होकर शॉवर लेने गयी।

N.Y.T. 7:00

जैनम ने दी हुई ड्रेस बहुत भारी था। **''देवदास''** पिक्चर की माधुरी दीक्षित के ''डोला रे डोला'' गीत के ड्रेस को भी हल्का कहना पड़े वैसा यह ड्रेस था।

मैंने अंतिम बार मोजेक मिरर में मेरा पूरा देदार देखा। मैं जोधपुर के महाराजा की महारानी लग रही थी। मैं मेरे रूम से लींवींग रूम में मेरी राह देख रहे मम्मी पापा के पास आयी।

''गॉर्जियस! वोट ए ड्रेस।'' मम्मी के मुंह पर आश्चर्य दिखा। मुझे भार लगने के कारण बिना कोई कमेन्ट किये वहाँ से मैं रोड पर आ गयी। पापा ने लोकल टेक्सी को N.Y. वेस्ट में जाने के लिए बूक की थी। ऑनलाइन टेक्सी ॲप आने के कारण सब एकदम सरल हो गया था।

एक फास्ट गाडी मेरे सामने से गयी। मेरा दुपट्टा उसके पवन के कारण उड़ा। इतनी रेश ड्राइवींग मैंने पहली बार अमेरिका में देखी।

अचानक वह गाडी आगे जाकर रुक गयी। रीवर्स आती हो ऐसा टोन सुनायी दिया। हमारे घर के सामने वह गाड़ी आकर रुकी। एक 25-30 साल का युवान ड्राइवर उस स्पोर्ट्‌स कार में से उतरा। उसने न्यूयॉर्क येंकीस की बेसबॉल की टोपी पहनी थी। उसने मेरे सामने आकर टोपी उतारी और टीपीकल वेस्टर्न स्टाइल में मुझे नमन किया। ''आइ. एम. जेसन हीयर, मेम! योर शोफर। हेपी बर्थ-डे।''

''यु ड्राइव वेरी रेश...आई डान्ट वॉन्ट यु टू बी-कम माय ड्राइवर! आई वान्ट टु गो टु न्युयोर्क, नोट टु हेवनयोर्क।'' वह मेरे शब्दों की चतुराई से हंसा।

''आई एम सॉरी मेम! बट, माय बॉस नीड्स एवरी वर्क ऑन टाईम...देट्स वाय।'' खुद की फरारी जैसी रेसींग गाडी की तरफ उसने

इशारा किया।

''प्लीझ! सीट इन्साइड...ओर वाट वॉंझ हीझ नेम...ओह जैनम...'' मैं और मम्मी-पापा वह आगे कुछ बोले उसके पहले अंदर कार में बैठ गये।

उस शोफर जेसन ने जी.पी.ऐस ट्रेकर ऑन किया। उसमें मैंने हमारे जैन-मंदिर का एड्रेस देखा।

43-11 ITHACA STREET, FLUSHING, NY-11373.

''मंदिर कितना दूर है?'' मैंने जेसन को पूछा।

''जस्ट 17 माइल्स, मेम! जस्ट एवरी वन वेअर योर सीटबेल्ट्स...'' जेसन ने उत्साह से कहा।

''हम उधर कितनी देर में पहुँचेंगे?'' जेसन ने खुद की घडी में देखा। ''जस्ट 10 मिनट मेम!''

उसने एक्सीलेटर पर पैर रखा।

N.Y.T. 7:25

मैंने घड़ी में देखा-9 MIN-35 SEC. जेसन ने स्क्रीचींग ब्रेक मारी।

''हियर इझ अवर डेस्टीनेशन।'' खुद के सफेद दांत बताकर स्मित करते जेसन ने कहा। पापा का चेहरा बेसुमार गति के कारण से लाल हो गया था। मम्मी का भी हृदय अप-डाउन हो रहा था। हम गाड़ी में से उतरे। सामने ही जैनीज्म सेन्टर का बोर्ड लगा हुआ था। मम्मी खुद के बेग्स गाडी में से ले रही थी।

''नो नीड मेम!'' जैसन ने मम्मी को कहा। ''मैं वह कर दूंगा... जैनम राह देख रहा है... आप लेट होगे तो उसे अच्छा नहीं लगेगा।'' कभी किसी की बात नहीं मानने वाली मम्मी आसानी से मान गयी।

मुझे कुछ खास आज होने वाला है ऐसा कल से ही लग रहा था। स्वाभाविक बदलाव देखकर वह वस्तु और पक्की हुई। मेरे मन की अलग-अलग संवेदना को ट्रैक करने के लिए तेजस ने मुझे पार्टींग गिफ्ट के तौर पर दिया हुआ माइन्ड सेन्सर मैंने आज प्लग इन कर दिया था। मेरे बाल के बीच वह छिपा हुआ था।

पूजा के लिए तैयार की हुई वस्तुओं को लेकर हम मंदिर में गये। बहुत लोग वहाँ एक ही कपड़े में किसी फंक्शन के लिए तैयार हुए हो ऐसा लग रहा था। मेरे जैसे ही भारी कपड़ो में जैनम सभी के आगे खड़ा था। एक तरफ से शंख की आवाज आयी। पीछे से मेरे प्रिय धार्मिक गीत शुरु हुए।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे समझाया था उस तरीके से जैन ती-र्थंकरों के बर्थ डे के निमित्त देवो के महोत्सव के स्टाइल में सभी तैयार हुए थे। मैं और जैनम भगवान के पास गये। भगवान की मूर्ति बहुत जीवंत लग रही थी। सुवर्ण के आभूषणों से भगवान को सजाने में आया था।

मैं भगवान की पूजा में खुद के अस्तित्व को भूल गयी।

N.Y.T. 10:00

सुबह उठकर नास्ता करनेवाली मुझे आज भूख ही लगी नही थी। आज भगवान की पूजा में मुझे अवर्णनीय आनंद आया था।

हम अभी जैनम के स्वजनों के घर नास्ता कर रहे थे। शुद्ध मारवाडी आइटम N.Y. में हमे टेस्ट करने मिल रही थी, परंतु तो भी मेरा मन पिछले दो घंटे के प्रोग्राम में ही घूम रहा था। मैं क्या खा रही थी, क्या कर रही थी, वो ही मुझे पता नहीं था।

''अपेक्षा! पेनकेक!'' मम्मी ने मेरे मुंह में बर्थ-डे के निमित्त केक रखी। सभी इकट्ठे हुए लोगों ने बर्थ-डे का गीत गाकर मुझे वो केक खिलाई। मैं रोबोट की तरह सब फोलो कर रही थी।

लोग थोड़े बिखरे तब जैनम ने मेरे सामने देखा।

''आर यु ओ.के.?'' मैंने सिर हिलाया।

''तू खो गयी थी।''

मेरे अलग स्वभाव को देखकर जैनम गंभीरता से बोला। मैं हंसी।

''क्या करूं? ये भगवान की शक्ति है।''

N.Y.T. 10:30

जैनम मेरे विचित्र बर्ताव के कारण चेयर में से उठकर खुद के कझीन्स के साथ मस्ती - मजाक कर रहा था। फिर वह मम्मी के साथ कुछ बात करने के लिए सोफे पर जाकर बैठा। मैं 10 मिनट से मम्मी और जैनम को गहरी चर्चा में डूबा हुआ देख रही थी। पिछले आधे घंटे से मेरे पर आज के प्रोग्राम की असर छायी हुई थी।

उस कारण कोई भी मुझे डीस्टर्ब करे वह मुझे 1% भी अच्छा नहीं लगता था। जैनम ने मेरे साथ बात चालू करने की बहुत कोशिश की थी, परंतु मैं प्रतिभाव नहीं दे रही थी। मैंने मेरा मोबाइल मेरे छोटे पाउच में से निकाला।

मैंने भारी ड्रेस बदल दी थी और अभी में हंस की पंखुडीओ में से बनी हुई आकर्षक स्लीवलेस वन पीस शोर्ट ड्रेस में चमक रही थी। मेरे हाथ में जैनम ने डाइमन्ड की अंगूठी पहनाई थी। उसके अलावा अनोखी, सुपरिन्टेन्डेन्ट, जैनम ने दिए हुए एकस्ट्रा नेकलेसीस, रींग्स, ब्रेसलेट्स तो मैंने पहनकर ही रखे थे।

मोबाइल का इनबॉक्स मेसेजीस से ओवरफ्लो हो रहा था। मैंने बिना काम के पुराने मेसेज डिलिट किए। टींग, टींग करते नये मेसेजीस आते गये। मेसेजीस मेरे इनबॉक्स में आने के लिए रात को 12.00 बजे से राह देख रहे थे। मैंने पहला मेसेज खोला। डॉन का मेसेज था।

''जन्मदिन मुबारक।

तुम जीयो हजारो साल, जिससे आये इस दुनिया में प्यार..

तुम रहो हमेशा लाल, यही मुझे कहना है इस बार....

17TH बर्थ-डे के लिए कॉन्ग्रेच्युलेशन.... आज में तुम्हारे लिए 17 CR. का दान गरीबो को दूंगा और कुछ भी करना हो तो.... प्लीझ बोल-ना.....''

सादिया का भी मेसेज एकदम अच्छा था। मैंने सभी मेसेजीस पढ़ें। दो व्यक्ति के मेसेजीस मुझे दिखे नहीं.... अनोखी... शासनद्रष्टाश्रीजी... मुझे हल्का दुःख हुआ। शायद वे भूल गये होंगे....

जैनम मेरे पास चेयर में आकर बैठा।

''अब तू फ्रेश लग रही है....तू क्या कर रही है?'' मेरे मोबाइल में और एक मेसेज पॉप-अप हुआ।

''जस्ट चेकींग माय इनबॉक्स।'' जैनम ने मेरे सामने आश्चर्य के साथ देखा। मैं लास्ट मेसेज पढ़ रही थी, तब ही जैनम ने मेरे हाथ में से मोबाइल खिंच लिया। मैंने उसके सामने देखा।

''अपेक्षा! आज तेरा जन्मदिन है।'' वह रुका।

''ओ....'' मैंने उसे प्रश्नात्मक नज़र से देखा।

''कुछ नहीं।'' दो मिनट के बाद मेरी नजर सहन करने के लिए अशक्त उसने नीचे देखा। मुझे पता चल गया कि वह मेरे साथ समय पसार करना चाहता है।

''अपेक्षा! मैंने तुझे जो बड़ी गिफ्ट भेजी थी वो तुने खोली ?'' रस के साथ जैनम ने मेरी तरफ स्मित किया।

''हाँ.. मेरे मम्मी-पापा कन्टीन्यूझली तेरी पेकिंग को देखकर हंस रहे थे, परंतु उसमें तो डीझनीलेन्ड और लास वेगास की सिंगल टिकीट थी। मैं कभी अकेले जाने वाली ही नहीं थी..'' मैं वाक्य पूरा करू उसके पहले जैनम ने ऐसी ही टिकिट्स खुद के शॉर्ट्र्स में से बाहर निकाली।

''वी आर फ्लाईंग टु-डे।'' जैनम के मुंह पर मिस्चीफ दिखी।

N.Y.T. 12:00

"**बाय मॉम!** तुझे 10 दिन के बाद मैं मिलूंगी। "जैनम ने पहले ही मम्मी - पापा को हमारी डीझनीलेंन्ड की ट्रीप के लिए मना लिया था। मम्मी और पापा ने कुछ पता नहीं हो उस तरह नाटक किया था।

मैंने मम्मी और पापा को अमेरिकन कल्चर के अनुसार कीस किया और जैनम के साथ मैं अलग, परंतु उस ही शोफरवाली स्पोर्ट्स कार में बैठी। शोफर ने जैनम को नमस्कार किया और खुद की टोपी को ऊपर करके एक्सिलेटर पर पैर मारा।

"जैनम!" स्पीड और इंजन के कारण से थोड़े जोर से मैंने कहा। जैनम ने स्माइल के साथ मेरे सामने देखा। "हम दोनों अकेले कपल के रूप में तो जा रहे है, परंतु वापस ग्रांड हयात की घटना नहीं होनी चाहिए।" मेरा ब्लेक-डे मुझे याद आया। मैंने मेरी कीमत उस दिन खो दी थी। जैनम ने सिर हिलाया।

"तेरी बात सच्ची है... हम शुद्ध वेकेशन ही मनानेवाले है। यहाँ तो हमे आग्रह करने वाले फ्रेन्ड्स भी नहीं है, इसलिए वह शक्य ही नहीं है.... परंतु उसके सिवाय... तुझे मुझे तेरा समय और तेरा लव..." मैंने शर्माकर स्मित किया। जैनम भी हंसा।

गाडी ने शार्प टन मारा। मैं जैनम पर गिरी।

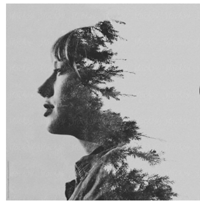

Chapter - 6

14/4/2011

N.Y.T. 20:00

Disneyland, orlando

FLUCTUATION अति भयंकर होता है....!

मैं और जैनम डीझनीलेंन्ड के केरेक्टर्स के खास कॉन्सर्ट को देख रहे थे। टी.वी. पर बहुत बार मैंने उन कॅरेक्टर्स को देखा था, परंतु हकीकत में उनकी ॲक्टींग देखना उसका आनंद ही अलग था। अभी एक हंसानेवाले सीन चल रहा था। जैनम और मैं पेट पकड़कर हंस रहे थे।

1100 माइल्स की मुसाफरी के बाद कोई भी थका हुआ इंसान कॅरेक्टर्स को देखकर रिफ्रेश हो ही जाता, इसलिए ही फिरने के स्थल के रूप में दुनिया में प्रसिद्ध स्थलों में इसका नंबर टॉप-10 में आता।

मिकी मजाक में गोल-गोल फिरने लगी। सभी दर्शक थोड़े समय तक लगातार हंसते ही रहे। उसकी एक्टींग जबरदस्त थी। पेपर में आते कार्टून के रूप में वॉल्ट डीझनी को "मिकी माउस" को बनाते समय शायद ऐसी कल्पना भी नहीं होगी कि उसका केरेक्टर हजारो के हृदय को हल्का बनाने वाला बनेगा।

सभी केरेक्टर्स ने नमन किया और हमे पता चला कि शो पूरा हो गया है। हम हमारी सीट पर से खड़े हुए और डीझनीलॅन्ड की इन्फो ऑफीस के सामने आए। सामने अलग-अलग डीझनी की राइड्स का स्थल और रास्ता चित्र में बताने में आया था। नोर्मल राइड्स से लेकर

खतरनाक राइड्स तक सभी की जानकारी उसमें दिखाने में आयी थी।

मैंने एक के बाद एक सब पढ़ा। उसमें एक सींड्रेला केसल था। इन्डिया में जिसे भूत-बंगला कहने में आता है ऐसा भी उसमें दिखाने में आया था।

''अपेक्षा! ये तेरे लिए नहीं हैं...'' भूतबंगले की जानकारी को पढ़ती मुझे जैनम ने टोन्ट मारा।

''क्यो?'' उसके चिढ़ाते हुए मुंह को देखकर मुझे गुस्सा आया। उसने मुझे बोर्ड के नीचे लिखी हुई वस्तु पढ़ने को कहा। मेरी आंखें उस तरफ घुमी।

**"NOT FOR CHILDRENS...
ONLY FOR ABOVE 18..."**

जैनम के मुंह पर बढ़ा स्मित था। मैंने उसे मेरे हाथ से मारा। जैनम मेरे हाथ के मार से मुश्किल से बचा। हम वापस बालक बन गये....

N.Y.T. 23:00

मैं जैनम को मेरे बहुत नजदीक अनुभव कर रही थी। हम डीझनी रीसोर्ट की एक रूम में दोनों अकेले बेड पर सोने की तैयारी कर रहे थे।

जैनम ने मुझे वापस बर्थ-डे वीश किया। मैंने भी उसके प्रति एक अकथ्य आकर्षण का अनुभव किया। मैंने उसे पहले ही मना कर दिया था। वह खुद की मर्यादा में ही था।

परंतु....

मेरे मन में बड़ा संघर्ष चल रहा था। मैंने मेरी आंखे बंध की। टूटे हुए नल में से जैसे पानी टपकता है, वैसे मेरे मन में विचार टपक रहे थे। मेरे मन को स्थिर करना अशक्य हो गया।

मेरा मन जैनम के प्रेम से परवश हो गया। ग्रान्ड हयात की ट्रेजेडी वापस होने के स्टेज पर थी।

''एक मिनट। मैं आ रही हूँ।'' मैं जैनम को कहकर बेड पर से खड़ी हो गयी और बाथरूम में आयी। मेरा मोबाइल मैंने निकाला और मैं मेरी पूरी स्पीड से मेरे मन के विचारों को टाइप करने लगी। मैं ५ मिनट तक टाइप करती ही रही। फिर मुझे राहत मिली। मेरे में आयी हुई शारीरिक सुख की इच्छा थोड़ी शांत हुई।

मैंने मेरे बाल के बीच छुपाए हुए माइन्ड सेन्सर को निकाला। मोबाइल में उसका एप मेरे पास डाउनलोड किया हुआ था। मैंने एप ऑन किया। उस पर क्लीक किया। होम पेज जैसा आया। उसमें "MY ANALYSIS" पर मैंने क्लीक किया। एक टेबल मेरे आगे प्रगट हुआ।

1) ANGER	25
2) LOVE	89
3) DEVOTION	70
4) SEX	30
5) GREED	2
6) HONOR	90
7) REMEMBERENCE	110
8) NEGATIVITY	0.5 %
9) POSITIVITY	99.5 %
10) MIND	GOOD

मेरे मन को गुड की रेटींग मिली थी। 4TH पोइन्ट देखकर मुझे मेरा मन राक्षस जैसा लगा। मन की चंचलता नियंत्रित करना कठिन था। मैंने पिछले एक घंटे की रीडींग निकाली। मेरी तीस की तीस सेक्स की तीव्र संवेदनाएँ पिछले एक घंटे में आयी थी। मेरे आंख में से वे संवेदनाएं बाहर आने लगी।

मैंने वापस से मेरे मोबाइल नोट्स खोली। मेरा मन कह रहा है कि मैं जैनम की इच्छा के विवश हो जाऊँ।

पार्ट 1 : इस दुनिया में ऐसा चान्स किसे मिलता है?

पार्ट 2 : पागल! तुने भवनिस्तारक के पास इस ही पाप का कन्फेशन किया है।

पार्ट 1 : मैं एक सामान्य मनुष्य हूँ। जैनम कितना प्रेमाल है।

पार्ट 2 : प्रेम को व्यक्त करने का रास्ता सिर्फ पशु जैसी क्रीडा नहीं है।

पार्ट 1 : तो तेरे पास दूसरा रास्ता भी है?

पार्ट 2 : हाँ... परंतु तू उसे स्वीकार नहीं करेगी। उसमें मन से मन का कनेक्शन है। शरीर से शरीर का नहीं।

पार्ट 1: तू सभी फीलोसॉफीकल बाते करती है। तू भगवान नहीं है, मनुष्य है।

''बीइंग ह्युमन'' बहुत जरूरी है...

मैंने मेरे मन को बंद करने का प्रयास किया। दोनों मानसिकता के बीच के संघर्ष में मेरा मन खराब तरीके से फट रहा था। एक सेकन्ड के लिए मेरी इच्छा वापस से हो गयी जैनम के साथ.... नहीं...नहीं।

मैंने आंखो को बंद करके मेरे मुँह को मेरे हाथ में छुपा दिया।

मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी का चेहरा दिखाई दिया। मैंने उनके पास शक्ति देने की प्रार्थना की। मेरा शरीर असह्य शारीरिक सुखो की संवेद-नाओ से कांपने लगा। अचानक दो मिनट के बाद वह रुक गया। मेरे मन में शासनद्रष्टाश्रीजी ने कहे हुए शब्द वापस...वापस घुमने लगे...

''अपेक्षा! मानव को एक होशियार प्राणी कहने में आता है। इसलिए उसके पास खुद को नियंत्रित करने की शक्ति होनी चाहिए, नहीं तो उसमें और पशुओं में कोई फर्क होता नहीं है।

हमेशा के लिए एक बात खुद के मन में बिठा देना।

अगर तुझे भोगसुखो की संवेदनाओ से बचना हो तो,

(१) कभी अकेली किसी के साथ भी रहना मत!

(२) कभी भी अंधेरे में मत रहना!

(३) खुद के मन को खाली होने मत देना, क्योंकि खाली मन शैतान...''

Chapter - 7

19/4/2011

N.Y.T. 18.00

Las Vegas, America

MATERIALISM अति भयंकर होता है....!

MGM ग्रेन्ड की ग्रेन्ड होटल की रूम हमारे लिए जैनम ने बुक करवायी थी।

जैनम के बंगलो को भी तुच्छ साबित करे ऐसा इन्टीरियर उसमें था। पिछले 6 दिन डीझनीलॅन्ड में बहुत साहसीकता पूर्ण पसार किये थे।

बड़े भाग के राइड्स मैंने और जैनम ने कवर कर लिये थे। उसमें स्टोर्मी माउन्टन की राइड हृदय को ठंडा कर दे ऐसी थी। उस राइड में मैं बेहोश होने की तैयारी में थी। जैनम ने मेरी उस बेहोश होने की संभावना को च्वींगम देकर दूर किया था। मुझे मीन्ट का डोझ सिर में हीट होते ही शांतता अनुभव हुई थी। मैं स्थिर हुई थी ।

आज सुबह ही फ्लाइट पकड़कर 6 घंटे की मुसाफरी के अंत में हम L.V. पहुँचे थे! यहाँ हमारा 5 दिन का रहवास था। हम दोपहर को L.V. एयरपोर्ट पर उतरे थे और फिर थकान के कारण से हमे ए.सी. वाली रूम में जाकर बेड पर ढेर हो गये थे।

4 घंटे की सतत खलेल बिना की नींद के अंत में मुझे जैनम ने उठाया था। उसे बहुत भूख लगी थी। हमारी बेग में मम्मी ने भरी हुयी पॅनकेक्स कल ही पूरी हो गयी थी और इसलिए हम L.V. की गलीओ में हमारी भूखको शांत करनेवाली वस्तुओं को खोज रहे थे।

हमे इन्डियन वेज रेस्टोरन्ट सामने दिखी। इन्डिया का झंडा उसके बाहर लटकाने में आया था। हमने बाहर की गलीयो के हसल-बसल को पीछे छोड़कर सुंगधी टेस्टी गुजराती थाली के रेस्टोरन्ट में प्रवेश किया।

N.Y.T. 20:00

बातें करके खाते-खाते कितना समय गया उसका हमे ध्यान रहा ही नहीं। दो घंटे के बाद हम रेस्टोरन्ट में से बाहर निकले। बहुत समय के बाद ट्रीप में हमने पेट भरकर खाना खाया था।

''अपेक्षा! हम चलकर जाये? खाया हुआ पच भी जाएगा.....-''. मैंने थम्स-अप करके हाँ कहाँ। हम L.V. की जीवंत गलीओ में उतरे। रात में भी दिन का अनुभव कराए उतनी लाईट्स से गलीयाँ चकाचौंध थी।

दुनिया की लगभग सभी वस्तुएँ माफिया राजवाले L.V. में उपलब्ध थी। शायद व्यक्ति खुद की पूरी जिंदगी भी L.V. में रहे, तो भी वह भौतिक वस्तुओं का पार नहीं पा सके उतनी सभी वस्तुएँ अलग-अलग दुकानो में डीस्प्ले पर थी । नया व्यक्ति 100%. L.V. को छोड़ नहीं सके ऐसी उस माफिया सीटी की चुंबकीय शक्ति थी।

माफिया की शक्ति का अच्छा उपयोग हो, तो देश को टुरीझम, टेक्स से कितना फायदा हो सकता है उसका L.V. जीता जागता उदाहरण था। मैं और जैनम एक-एक वस्तुओं को देखते हुए आगे कछुए की गति से बढ़ते गये। मुझे थकान का अनुभव होने लगा।

''जैनम? चल हम जाते है। हम कल यहाँ आएंगे।'' जैनम ने ओ.के. किया। हम MGM ग्रेन्ड होटल के रास्ते पर आगे चलने लगे। हमे उस रास्ते पर बहुत सी छोटे कपडे पहनी हुई स्त्रीयां दिखाई दी। उन सभी स्त्रीयाँ ने सिर्फ दो कपडे ही पहने हुए थे।

एक स्त्री हमारे तरफ आयी। वह जैनम के आगे आकर खड़ी हुई।

''वोना कम...'' उस स्त्री ने खुद का कार्ड जैनम के हाथ में दिया। उसमें उसके वेश्या के करीयर का विषय, उसका संपर्क नंबर और रूम नंबर

छपा हुआ था।

''आई वील कम लेटर।'' जैनम ने उससे छूटने के लिए जवाब दिया। ''डोन्ट फर्गेट... आई एम वेईटींग फॉर यु।'' जैनम को खराब तरह से स्पर्श करके वह वहाँ से गयी। मैं तो L.V. की निर्लज्जता देखकर छक ही रह गयी।

किस तरह इतनी युवान लड़कियाँ खुद का करीयर इस फील्ड में बनाने वाली थी। पूरी लाइफ एक पशु की तरह किसी के साथ भी रहना किस तरह शक्य था। L.V. की ये पूरी गली ऐसी वेश्याओं से भरी हुई थी। उनकी लाइफ कैसी होगी उसकी कल्पना करना भी मुझे अशक्य जैसा लगा। वे अन्याय के पात्र बन गये थे। मुझे शासनद्रष्ठश्रीजी ने एक बार लेक्चर्स में कही बात याद आयी।

''हम बहुत बार ये ही विचार करते है कि ''भगवान ने मुझे ये नहीं दिया....'' कभी दुनिया में बाहर भी जाओ, तुम्हें पता चल जाएगा कि भगवान ने तुम्हें कितना दिया है।''

Chapter - 8

20/4/2011 | N.Y.T. 18.30 | M.G.M. Grand casino, L.V.

कसीनोझ अति भयंकर होते है.....!

"ENTRY FOR ONLY ABOVE-18..." स्पष्ट चमकते अक्षरो में M.G.M. ग्रान्ड के कसीनो के बाहर नोटिस-बोर्ड लगाया हुआ था। मैं और जैनम ने कसीनों के अंदर एन्ट्री मारी। बॉडीगार्ड्स जुरासीक पार्क मुवी में डाइनोसोर को मारनेवाले पावरफूल रेन्जर्स जैसे थे।

''आपका प्रूफ सर...!'' बोडीगार्ड ने हमको अटकाया। जैनम ने खुद के पॉकेट में से वी.आई.पी.कार्ड बताया। ''यु आर वेलकम टु M.G.M. ग्रान्ड कसीनो सर!'' कहकर बॉडीगार्ड ने हमे एन्ट्री दी।

शुरूआत में रीसेप्शन पर एक वनपीस पहनी हुई युवान स्त्री खड़ी थी। जैनम ने V.I.P. कार्ड दिया। V.I.P. कार्ड उसने स्केन किया और उसके अंदर रहे हुए डेटा को देखा। उस रिसेप्शनिस्ट के मुंह पर आश्चर्य दिखाई दिया। उसने रिंग बजाई और एक दूसरी युवान स्त्री जो वैसी ही ड्रेस में थी वह वहाँ आयी।

''डीमेला! ये माफिया केसीयो का CHIEF V.I.P. है। उनका संपूर्ण आतिथ्य तुझे ही करना है। केसीयो सर ने 1/2 मिलियन डॉलर्स की क्रेडिट सर जैनम को दी है ''सर मस्ट वीन' ऐसा अपने माफिया का कहना है...ओ.के...'' खुद के बीसी में रही हुई डीमेला ने जैनम को स्मित दिया।

''कमोन सर! वी स्टार्ट ध प्ले।'' वह हमे गाइड करने लगी।

उसके पास 1/2 मिलियन के किंमत के सिक्के थे। 1 डॉलर से लेकर 1 मिलियन डॉलर्स के किंमत के सिक्के कसीनो के पास थे।

सिक्का कसीनो की इन्कम थी, उसमे ही खेल सकते थे और अंत में जितने सिक्के बचते उसके हिसाब से डॉलर्स की वेल्युएशन होती।

''जैनम! यहाँ तेरी लिंक किस तरह से है? वह भी माफिया ? तू कोई बड़ी स्टोरी में मिला हुआ तो नहीं है ना?'' मेरे मुंह के चिंताजनक दिखावे को देखकर उसे हंसना आया।

''अपेक्षा ! तू मेरे साथ पिछले एक-देढ़ साल से है, तो भी तू मुझे पहचान नहीं सकी...'' जैनम के मुंह पर करुणतामय दृश्य था।

''क्या?'' हाथ को हिलाते मैंने उसे प्रश्न किया।

''अपेक्षा! आई एम अ मारवाडी....हमारी ताकात मनाने और खिलाने में है। वह रिसेप्शनवाली जिस माफिया केसीयो की बात कर रही थी, वह शेयर इन्वेस्टमेन्ट के लिए इन्डिया आया था। उसे कोई नफेवाली कम्पनी खरीदनी थी। पापा को उनके एजन्ट्स ने टीप-ऑफ कर दिया था कि 'नये माफिया है।'

बस, फिर पापा हो, वहाँ क्या बाकी रहता है। पापा ने उसे लेने के लिए ब्रीज केन्डी में कम से कम किंमत में मिलती किराये की लीमोझीन गाडी भेजी थी। पापा खुद उसमें बैठकर उसे लेने गये थे।

फिर तो बातचीत में उस माफिया को दुनिया के सबसे रॅायल इंसान के रूप में पापा ने नवाजा था। पागल खुद की प्रशंसा सुने फिर बाकी क्या रहे? उसने एक नयी मार्केट में आती कम्पनी को पापा के कहने पर खरीद ली। उस कम्पनी का मुआवजा बहुत अच्छा आया। माफिया जब इन्डिया से गया, तब ये V.I.P. कार्ड और खुद से डायरेक्ट कोन्टेक्ट नंबर पापा को देकर कहाँ,

''सर! आप जब भी अमेरिका आओ, तब लास वेगास जरूर आना ही और डॉन केसियो को भूल मत जाना। वह आपकी सेवा में रहे-गा।'' पार्टिंग गीफ्ट के रूप में पापा ने उसे एक क्युबन सीगार गिफ्ट की थी, जो एक वारसागत आयी वस्तु थी।

केसीयो को सीगार के कलेक्शन का पागल जैसा शौक

है....फिर तो संबंध सुधरते गये और हम अभी यहाँ है अन्डरएज + V.I.P...." जैनम ने मेरे सामने चतुरता से भरा हुआ चेहरा बनाया। बिजनेस के लिए मारवाडीझ कुछ भी करने के लिए तैयार होते है।

''सर! हीयर...'' डीमेला ने हमे ध डॉन के रूम की तरफ इशारा किया। हम उसके पीछे-पीछे गये। डीमेला ने दरवाजे पर दस्तक दी।

''कम इन...'' गाली के साथ के वेलकम की आवाज अंदर से सुनाई दी। मैं और जैनम डीमेला के पीछे अंदर गये। पूरा रूम सीगार की गंध से गंध मार रहा था। मुझे खांसी आ गयी। नीचे की फ्लोरिंग्स के कोर्नर में डाइमन्ड्स जडे हुए थे।

सामने रॉयल थ्रोन जैसी चेयर पर एक सीगारवाला इंसान बैठा हुआ था। उसके आस-पास में छोटे कपड़ों में ५-६ युवान लड़कियाँ घुम रही थी। वह उनके मुंह पर धुंआ छोड़ रहा था।

''ये सर केसीयो है।'' जैनम ने खुद के सफेद दांत मेरे सामने चमकाये।

''कम ऑन...कम ऑन माय सन...'' खुद के भारी आवाज में माफिया केसीयो बोला। वह खड़ा हुआ और हमें रोलींग रॉयल चेयर्स बैठने के लिए दी। छोटे कपड़ो वाली लड़कियों को उसने बाद में आने का इशारा किया।

'' जैनम! सो यु आर जैनम!'' धूंऐं की बड़ी रींग केसीओ ने छोड़ी।

N.Y.T. 21.00

50-60 टेबल्स एक साथ लाइन में पड़े हुए थे। हरेक टेबल के पास रिसेप्शनिस्ट जैसी वनपीस पहनी हुई युवान स्त्रीयाँ खड़ी थी। वे खेलनेवालो को गाइड कर रही थी। केसीयो को देखकर सभी रेड अलर्ट हो गयी।

''जैनम! वॉट वुड यु लाइक टु प्ले?'' केसीयो डॉन जैनम की तरफ मुड़ा।

''मैं इस फील्ड में नया हूँ, परंतु मैं बिझनेसमेन हूँ। सो, आपको पता है कि मुझे क्या चाहिए।'' फायदा हरेक व्यापारी का प्राथमिक उद्देश्य होता है।

''यु आर क्लेवर एझ यॉर डेड!'' केसीयो ने स्माइल में खुद का चमकता सोने का दांत बताया। वह MNM का बड़ा फेन लग रहा था। पीछे बॅक म्युझिक में उसके ही रॅप गीत चल रहे थे। उसके बीट्स बहुत फास्ट थे।

दूसरे भी केसीयो को जानते छोटे-बडे माफिया उस टेबल के चारो ओर आकर बैठ गये थे। केसीयो शायद बहुत कम समय बाहर आता होगा, ऐसा उनके मुंह पर से प्रतिबिंबित हो रहा था।

''लेडीझ एन्ड जेन्टलमेन! ही इझ जैनम... ही हेझ कम फ्रोम इन्डिया। सो वी वील प्ले टुडे इन नेम ऑफ.....'' केसीयो ने वाक्य पूरा नहीं किया।

''जैनम यु आर अवर गेस्ट....सो.... फर्स्ट यु सीलेक्ट ध नंबर।'' एक बड़ा राउन्ड स्पीनर टेबल पर था। उसमें अलग-अलग नंबर लिखे हुए थे। एक बॉल उन अंको के बीच छोड़ने में आता। वह बोल जहाँ रुकता, वह अंक जिसने नक्की किया हो वह जीता हुआ गिना जाता।

''जैनम! लेट्स सी वॉट इझ योर लक्की नंबर...'' प्रश्नसूचक आंखो से केसीयो ने जैनम के सामने देखा।

“मैं 10 गोल्ड सिक्के रखता हूँ और मेरा नंबर है।” इतनी बड़ी डॉलर 100000 की रकम एक साथ रखते देखकर बाकी माफिया हांफने लगे। वे अंदर-अंदर बडबड करने लगे।

“8...” फाइनल नंबर जैनम ने कहा। जैनम ने मेरे सामने देखा । इन्डियन करन्सी के गणित के अनुसार जैनम ने खुद के 1/5 सिक्के यानी 60-70 लाख रूपये एक ही समय में लगाए थे।

केसीयो ने 8 नंबर के गोल्डन कार्ड के पीछे मिटा सके ऐसी स्याही में जैनम लिखा और वह कार्ड जैनम को दिया।

“मिस यु....” मेरे सामने ताकते केसीयो कहा, “यु आर ध पार्टनर ऑफ माय फ्रेन्ड... सो आई गीव यु अ चान्स...”

मेरे पास सिक्के नहीं थे । इसलिए दांव खेलना मेरे लिए शक्य नहीं था।

“सर! आइ डोन्ट हेव कोइन्स...”कोई अच्छा जोक मार दिया हो इस तरह सभी हंसने लगे। केसीयो ने वनपीस को कुछ इशारा किया और वह एक ट्रे भरकर सिक्के लेकर आयी।

“मेम! धीस ट्रे इझ ऑफ 1 लेख डॉलर्स।” मैंने वे ले लिये और 1000 डॉलर्स टेबल पर रखे, “माय नंबर इझ 5..” शासनद्रष्टाश्रीजी का फेवरेट नंबर मैंने नक्की किया। केसीयो ने मुझे भी नंबर कार्ड दिया।

एक के बाद एक सभी माफिया खुद-खुद के अंक और सिक्के रखते गये।

“सो! वी स्टार्ट ध गेम..” केसीयो ने स्पीनर स्पीन किया और केसीयों ने खुद के हाथ में रहा हुआ गोल्डन बॉल छोड़ा। बॉल बाउन्स होने लगा। हम सभी एकदम शांतता के साथ खुद की चेर्स में परिणाम को देखने के लिए बैठे थे।

बॉल 9 नंबर पर बाउन्स हुआ और स्पीनर बंद हो गया। 9 के बाजु में 5 था। दोनों के बीच रही हुई जगह में वह उछला और अंत में वह ५ नंबर पर आकर अटका।

“हूर्रे।” मैं चिल्लाई। मैं जैनम को गले लग गयी।

Chapter - 9

24/04/2011 N.Y.T. 16.00 M.G.M. Grand, Las Vegas

जेलेसी अति भयंकर होती है....!

“आई विल मिस यॉर कम्पनी...” 5 मिलियन डॉलर्स की बेलेन्स लेकर हम नेवार्क के लिए निकल रहे थे। केसीयो माफिया हमे छोड़ने के लिए एयरपोर्ट तक खुद की ऐ-ग्रेड लीमोझीन में आया था।

“मैंने तेरे पापा को इन्फॉर्म कर दिया है कि, जैनम और उसकी फीयान्सी ने...” मुझे शब्द सुनकर विचित्र लगा। “5 मिलियन डॉलर्स हमारे पास से जीते है। आज के रेट के अनुसार उसकी वेल्यु 32-33 करोड... पहली बार मेरे कसीनो के बिझनेस की हिस्टरी में किसी को इतने मैंने डॉलर्स दिये है। बाकी सभी तो लुझ ही करते है।” केसीयो ने मेरे सामने आंखे घुमायी।

“जैनम! आइ वॉन्ट टु से ओनली वन थींग बीफोर पार्टींग... शी....”

मेरी तरफ केसीयो ने अंगुली बतायी, “इझ योर लक्की नंबर, इसे कभी लीव मत करना... इन लाइफ और इन डेथ...”

N.Y.T. 23:55

Raymond BLUD
Homes, Newark

एक लाइट के अलावा बाकी सभी लाइट बाहर से बंद दिखाई दे रही थी। जैनम ने वापस से हमारे बंगलो की घंटी बजाई। अंदर से चलने की आवाज आयी। दरवाजा खुला....

''तू कौन है?'' नयी लड़की को खुद के घर में देखकर जैनम ने अज्ञानता व्यक्त की। सामने एक 18 साल की सुंदर युवान लडकी खड़ी थी।

''आपकी नयी नौकरानी सर..... मेरा नाम मार्गरिट है और मैं आपकी नयी सेक्रेटरी हूँ। आपके पापा ने मुझे भेजा है।'' जैनम को आश्चर्य हुआ। मुझे भी ये एक्स्ट्रा हाइपर लूक्सवाली स्त्री अच्छी नहीं लगी।

मैं और जैनम हमारे रूम में गये। मार्गरिट ने हमारा समान हमारे रूम में लाकर व्यवस्थित तरह से रखा। ''आप दोनों थक गये हो। मैं बाद में आऊँगी... आपको कुछ खाने-पीने के लिए चाहिए?'' निकलते निकलते मार्गरिट ने हमारे सामने प्रश्नात्मक आंखो से देखा।

हमारा पेट माफिया ने दिये हुए प्योर वेज वस्तुओं से पूरा भरा हुआ था। हमने मार्गरिट को मनाई की। ''गुड नाइट सर!'' कहकर वह रूम के बाहर निकल गयी। मैंने जैनम के सामने देखा।

''तू क्या विचार कर रहा है?'' बिना इच्छा के भी मन का प्रश्न मुंह से बाहर निकला। ''किसके बारे में?'' चिढ़ा हुआ हो उस तरह जैनम ने मेरी तरफ चेहरा किया।'' ''मार्गरिट...''

25/04/2011

N.Y.T. 6.00

''मम्मी! ये मार्गरिट कौन है...?'' मार्गरिट के विषय पर चर्चा के बाद भी जैनम के पास से मुझे संतोषकारक जवाब मिला नहीं था। जैनम कुछ छुपा रहा हो ऐसा मुझे स्पष्ट तरीके से अनुभव हो रहा था !

''अपेक्षा! मार्गरिट इस घर के घर-की पर की बेटी है। परंतु उसका आतिथ्य....'' मम्मी के मुंह पर उस मार्गरिट के आतिथ्य से खुश हुए हो उसकी चमक दिखायी दी।

''वह जैनम और मेरे बीच आ गई तो?'' ''मार्गरिट'' को देखने के बाद मेरे मन में आया हुआ शंका का कीडा वापस से चलने लगा।

''अपेक्षा! वह ज्यादा पढ़ी हुई नहीं है।'' मुझे मन में थोड़ी शांती हुई। ''परंतु, उसका समर्पण, उसका प्रभाव जबरदस्त है। उसे मि. ओसवाल ने जैनम की आवश्यकताओं पर ध्यान रखने के लिए भेजा है...'' मार्गरिट ने कल की हुई बात सच निकली।

''मम्मी! वह कितने दिन यहाँ रहने वाली है?'' मम्मी ने मेरे सामने देखा।

''क्युँ?''

''नहीं, वह तो ऐसे ही।'' मैं मेरी चेयर में हिली।

''अपेक्षा! L.V. से आने के बाद तू थोड़ा अलग बर्ताव कर रही है....तू ठीक तो है ना?'' साइकोलॉजिस्ट बने बिना साइकोलॉजी को पढ़ने वाली मम्मी को देखकर मैंने हाँ कहा।

N.Y.T. 11.00

मैं जैनम को कोट पहना रही थी। वह रुबाबदार लग रहा था।

''मैं तुझे शाम को मिलूँगा....'' जैनम ने मुझे बाय कहा और वह खुद की बेग लेकर मर्सीडीझ गाड़ी की तरफ गया। मागरिट वहाँ ही खड़ी थी। मैं खुद के रूम की खिडकी में से बाहर के दृश्य को देख रही थी।

जैनम ने हंसकर मागरिट को कुछ कहा और उसने भी मीठा स्मित दिया। गाड़ी का दरवाजा बंद करके मागरिट ने जैनम को बाय कहा। मुझे असुरक्षितता की संवेदना हुई।

जैनम के मेरे प्रति के समर्पण की मुझे खबर थी, परंतु मुझे मागरिट के आने के बाद जैनम के हृदय में मेरा स्थान कमजोर अनुभव हो रहा था।

मेरे इर्ष्या के विचार मेरे मन को अस्थिर करने लगे।

''उसे मागरिट से प्यार हो गया तो? वैसे तो वह दिखाने में मेरे से कम है, परंतु उसका आतिथ्य वह मीठी -छुरी जैसा है। उस छुरी को जैनम के हृदय में घुसाकर उसे वह वश कर लेगी?

ओह नो, उसकी बात करने का तरीका तो मेरे से अच्छा है। उसके शब्दों में जादू है। अब जैनम मेरे से दूर चला गया तो?

उसकी चलने की अदा भी मॉडल जैसी है। कल रात को जैनम भी उसकी चलने की अदा को देखकर हंसा था। नहीं पूछने के बावजूद मुझे पता चल गया था कि वो क्यो हंसा...

मि. ओसवाल को भी इस मागरिट को यहाँ भेजने की क्या जरूरत थी?'' मुझे मि. ओसवाल पर गुस्सा आया।

मेरे मन में विचारो का तूफान चालू हुआ। अलग-अलग विचार एक-दूसरे के साथ टकराने लगे। मेरा सिर फूट जाएगा ऐसा मुझे लगा।

''बेस्ट.... मागरिट को मैं...'' उसे मार डालने की इच्छा ने मेरे मन को वश कर दिया। मैं मेरे कबोर्ड के तरफ गयी। मुझे गिफ्ट में एक फेन ने इलेक्ट्रीक शोक की मशीन दी थी। स्टन गन जैसे उसके कार्य थे। मैं उसे लेने गयी। उसके आगे एक कागज पड़ा हुआ था। उस पर लिखे हुए शब्द मेरी आंखो में चमके।

"THINK TWICE BEFORE YOU DO..."

N.Y.T. 12.55

मेरी आंख मार्गरिट पर ही थी। वह मम्मी के साथ अस्खलित रूप से इंग्लीश में बातचीत कर रही थी। वे पेनकेक्स बनाने की पद्धति की चर्चा कर रहे थे। उसका शांत चेहरा मेरे गुस्से से भरे हुए चेहरे से ज्यादा सौम्य लग रहा था।

मेरे आगे मेरी फेवरेट पनीर डीश पडी थी। मैंने उसमें से सिर्फ एक पकोडा खाया। मुझे खाने का अच्छा ही नहीं लग रहा था। मैं मेरी चेयर को जोर से खिसका कर खड़ी हो गयी। मार्गरिट और मम्मी ने मेरे सामने देखा।

''अपेक्षा! तुझे क्या हुआ है?'' मम्मी के चेहरे पर चिंता दिखाई दी। ''कुछ नहीं...'' मैं मेरी रूम की तरफ चलने लगी। मैंने जोर से दरवाजा बंद किया। मैं बेड पर गिर गयी।

मेरी आंखो में से अश्रु गिरने लगे। मेरे सभी विचारों में मार्गरिट कि जिसमें कुछ भी कमी नहीं थी, वह ही व्याप्त थी। मेरा मन एकदम सांशयिक स्तर में पहुंच गया। शंका के कीडे ने मेरे पूरे सिर को कुतर कर खा लिया था।

आधे घंटे तक मैं ऐसे ही वहाँ पड़ी रही। मम्मी ने 2-3 बार दरवा-जे पर खट-खटाकर खोलने का प्रयत्न किया, परंतु मैं खुद की जगह पर से खड़ी नहीं हुई। आधे घंटे के बाद मेरा मन शांत हुआ। रोने के कारण से उलझने बह गयी। मैंने मेरे मोबाइल से एक नंबर डायल किया। नंबर स्वीच ऑफ आया।

दूसरा नंबर डायल किया। वह व्यस्त आया। अनोखी और जैनम दोनों के नंबर से मैं संपर्क नहीं कर सकी। मेरे दिमाग में वापस से मारने की इच्छाएँ जोर पकड़ने लगी। पिछले 20-25 दिन से अनोखी और मेरी बात हुई नहीं थी।

जैनम भी इन्डिया से यहाँ शिफ्ट होने की तैयारीओ में व्यस्त था। इसलिए वह भी शासनद्रष्टाश्रीजी को मिलने के लिए किसी को भेज सका नहीं था।

मुझे असहायता अनुभव हुई। मैं बेड पर बिना खाये सो गयी।

N.Y.T. 18.55

बाहर से दरवाजे को खटखटाने की आवाज से मेरी शांत-तापूर्ण मीठी नींद में खलेल पहुँची। मैंने मेरे अस्त-व्यस्त ड्रेस में बेड पर से खड़ी होकर दरवाजा खोला।

''अपेक्षा! तू क्या कर रही है?'' मेरे मुंह पर चिंता से मम्मी हाथ घुमाने लगी। मार्गरेट मम्मी के पीछे ही खड़ी थी। मुझे हकीकत का ख्याल आया। मैं मम्मी के एक्शन्स को अटकाकर बेड पर जाकर बैठी। घड़ी में 7.00 बजे थे। एक साथ में मैं 6 घंटे सोई थी।

मार्गरेट ने मुझे टोनिक ज्युस लाकर दिया। मैंने उसे एक घूंट में पी लिया। मेरे पेट में खींचाव आ रहा हो, ऐसा लग रहा था।

''अपेक्षा ! तुझे क्या हुआ है?'' मम्मी गंभीर चेहरा करके मेरे सामने खड़ी रही। मैं लास्ट बाकी रहा ज्युस आवाज के साथ चूसती रही।

''अपेक्षा!'' मम्मी की आवाज में मैंने पहली बार गुस्से का अनुभव किया। मम्मीने मेरे साथ कभी गुस्से से भरी आवाज में बात की नहीं थी।

''प्लीझ मोम! मुझे आज के दिन अकेला छोड़ दो। मुझे स्वतंत्र रहने दो...'' रोने जैसी होकर मैंने मम्मी को विनंति की। मम्मी को मेरी बात सुनकर झटका लगा हो ऐसा उनके मुँह के हावभाव से ख्याल आया।

मम्मी और मार्गरेट धीरे कदमों से बाहर निकल गये।

''मॅम! मैं आपके लिए कुछ लाऊं? '' मेरे मन को पढ़ती हो उस तरह मार्गरेट ने पूछा। मैंने हाँ कहा। उसके मुंह पर मुझे हर्ष की रेखा नजर आयी। मुझे किसी भी जगह उसके मुंह पर मेरे पास से जैनम को लूटने की भावना दिखाई नही दी।

N.Y.T. 22.00

मेरे रूम की लाइट बंद थी। आज विचारों की विचलितता के कारण से मैं जैनम को मिले बिना ही जल्दी सो गयी थी। रूम में कोई आया हो वैसा मुझे अनुभव हुआ। वह मेरे बेड के पास आया और बेड पर बैठा। मेरी पलके थोड़ी बंद थी।

''अपेक्षा! मैं तेरे बिना जीवन सोच नहीं सकता।'' जैनम खुद के साथ ही बात कर रहा था। उसके हाथ में मोबाइल टोर्च ऑन थी। वह मेरे सामने ही देखकर बोल रहा था।

''अपेक्षा! जब तेरा मूड उड जाता है, मेरा मूड भी...'' उसके चेहरे पर चिंता स्पष्ट उभर आयी थी। वह आगे कुछ भी बोला नहीं। उसने उसका चेहरा मेरे पास लाया।मुझे आंखे खोलकर जैनम को टाइटली हग करने की इच्छा हो गयी। मैंने मेरी संवेदनाओ को नियंत्रित किया।

उसने खुद के होंठ मेरे चेहरे पर धीरे से रखें। ५ मिनट तक जैनम इस ही अवस्था में रहा। मैं थोड़ी हिली। जैनम ने तुरंत ही खुद का चेहरा ऊपर ले लिया। मैं उठ नहीं जांऊ उसका उसे टेंशन था।

''तुझे खलेल पहुँचाने के लिए सॉरी अपेक्षा!'' वह खड़ा हो गया और रूम से बाहर निकल गया। दरवाजा बंद होने की हल्की आवाज सु-नायी दी। मैंने मेरी आंखे खोली। उसमें अकथ्य आनंद चमक रहा था। अब मुझे विश्वास आ गया।

''इस लाइफ में तो मुझसे जैनम को कोई चोरी नहीं कर सकता है।''

मेरी आंखे बंद हो गयी। मुझे नींद आ गयी।

N.Y.T. 23.55

वॉशरूम जाने की तीव्र शंका के कारण से मेरी नींद खुल गयी। मैं वॉशरूम में फ्रेश होकर आयी। ए.सी. का तापमान बहुत घट जाने के कारण मुझे फ्रेश होने के लिए रात को पहली बार उठना पड़ा था।

मैंने खिड़की में से बाहर गली को देखा। वह एकदम खाली थी। वातावरण में शांती फैली हुई थी। मुझे वह वातावरण बहुत फ्रेशनेस और पॉझिटीवीटी लाने वाला अनुभव हुआ। मैंने ए.सी. बंद कर दिया और खिड़की को खोल दिया।

ताजी हवा को झौका उसमें से पसार हुआ। प्रकृति की प्रेमलता मुझे उसमें अनुभव हुई। सच में ही शासनद्रष्टाश्रीजी जैसे साध्वीजी क्यों इतने पॉझिटीव रहते होगें उसका कारण मुझे पकड़ में आया।

''मार्गरिट! कितनी प्रेमल है। मैंने बिना किसी कारण के उस पर शंका की....'' ऊपर पक्षीओ ने जैसे कि मैंने सच सोचा हो उस तरह आवाज की।

मैं मेरे रूम में गयी और मेरी पॅनड्राइव लेकर आयी। मेरे पास आई-पॉड था। मैंने हेडफोन्स मेरे कान में डाले और आइ-पॉड से पॅनड्राइव को जोड़कर वह प्ले किया। ये पॅनड्राइव मेरे जीवन की धडकन थी। अंदर आवाज सुनायी दी। जानों कि मेरे लिए ही बोल रहा हो ऐसा मुझे लगा। मैंने ताजी हवा का अनुभव किया और मेरी आंखो को बंद किया।

''अपेक्षा! जेलीसी आग जैसी है। वह खुद को पहले जलाती है और अगर चान्स मिले तो दूसरे को भी जलाती है।

एक वस्तु हमेशा याद रखना ''कभी ऐसा विचार मत करना कि मेरे पास उससे कौन सी वस्तु कम है?'' हमेशा विचार करना कि ''मैं किस तरह मुझे मिली हुई वस्तु का सच्चा अच्छा उपयोग करके सामने वाले को कुछ दे सकुं...''

26/04/2011

N.Y.T. 6.00

मैं मेरे मन को मजबूत करने के लिए शासनद्रष्टाश्रीजी ने सिखाये हुए मेडिटेशन में डूबी हुई थी। कोई दरवाजे पर आया हो ऐसा मुझे लगा। मैंने मेरी आंखे खोली नहीं। ***''सच्चे ध्यान में आप दूसरी वस्तुओ से की हुई व्यग्रता का अनुभव नहीं कर सकते।''*** शासनद्रष्टाश्रीजी के शब्दो को अनुसरण करने का प्रयास मैंने किया।

मैंने रात को शासनद्रष्टाश्रीजी ने समझाई हुई प्रकृति की गिफ्ट के विषय पर ध्यान किया था। मुझे अकथ्य आनंद अनुभव हुआ था। मैं मेडिटेशन पूर्ण करके उठी और बाथरूम में फ्रेश होने गयी। आज मैंने जल्दी तैयार होकर खुद के कार्य संपूर्ण करने का विचार किया था।

5 मिनट शॉवर लेकर गीले बालो के साथ मैं टॉवेल में बाहर आयी। दरवाजा खुला और मैं लज्जा के कारण पर्दे के पीछे छुप गयी। मार्गरिट दरवाजे पर खड़ी रहकर मेरे रूम की तलाश कर रही थी। मुझे नहीं देखने के कारण वह निराश होकर पीछे घूम रही थी और तब ही मैं पर्दे में से बाहर आयी।

''मार्गरिट...'' वह वापस घुमी।

''तुझे कुछ मेरे से काम था?'' एक बहन की तरह प्रेम के साथ मैंने उसे प्रश्न किया। मेरे स्वभाव के बदलाव को देखकर उसे आश्चर्य का अनुभव हुआ।

''नहीं! आपके लिए क्या नाश्ता लाना वह पूछने....'' वह वाक्य पूर्ण करे उसके पहले मैं मेरे टॉवेल में ही उसके पास गयी। मैंने उसे टाइटली हग किया।

''मैं माफी मांग रही हूँ मार्गरिट! तुझे मैंने ठेस पहुँचायी...'' मार्गरिट की आंखे भी आर्द्र हो गयी। उसने भी मुझे टाइटली हग किया।

Chapter - 10

1/5/2011 | N.Y.T. 8.00 | Raymond BLUD Homes, Newark

स्टडीझ अति भयंकर होती है.....!

'HARWARD-THE HISTORY ....!'

जैनम की बुक्स को मैं पलट रही थी। आज शाम को वह दुनिया की सबसे प्रसिद्ध में से एक हार्वर्ड बिजनेस स्कूल मे खुद के कोर्स के लिए भर्ती होने वाला था। वहां की हॉस्टेल एक श्रेष्ठ हॉस्टेल कहलाती थी। वहाँ के केम्पस की तो बात भी हो सके वैसी नहीं थी।

मैंने बुक को खोला। अच्छे अक्षरवाले फॉन्ट्स में छपे हुए शब्द मुझे पढ़ने के लिए मजबूर कर रहे थे। मैंने पढ़ना शुरू किया।

अमेरिका के मेस्साच्यु-सेट्स राज्य में आयी हुई केम्ब्रीज नाम की सीटी में ये हार्वर्ड स्कूल है।

'हार्वर्ड' नाम 1638 में प्युरीटन मिनिस्टर जॉन हार्वर्ड के मान में रखने में आया था। उसके पहले उसका नाम 'केम्बरीज कॉलेज' था और उसके पहले वह 'टाउन स्कूल' कही जाती थी। इंग्लॅन्ड 'आइ वी लीग' स्कूल में हार्वर्ड की भी गिनती होती है।

16-17 शताब्दी में चर्च ऑफ इंग्लेन्ड को सोशियली सुधारने में प्यु-रीटन का बड़ा भाग रहा है। प्युरीटन इंग्लीश प्रो-टेस्टन्ट्स की एक शाखा थी जिसका मुख्य लक्ष्य चर्च ऑफ इंग्लेन्ड को पवित्र करना था। तब भ्रष्टाचार और गलत प्रणालीयाँ चर्च में बहुत बढ़ गयी थी।

और उसके कारण से क्रिस्टीयेनीटी खड्डे में जा रही थी। प्युरीटन्ट्स ने चर्च को एक गौरवभरे स्थान पर लाने के लिए भरसक प्रयास किया।

जॉन हार्वर्ड वह प्युरीट शाखा का पावरफूल

मिनिस्टर था। अमेरिका में उसकी खुद की मेस्सा-च्युसेट्स राज्य में बहुत जमीनें थी। उसे बुक्स का पागल जैसा शोख था और इसलिए उसके पास बुक्स का जबरदस्त संग्रह था।

1637 में उसने खुद का वील बना दिया था। 1638 में जब जॉन हार्वर्ड की मृत्यु हुई तब उसके वील के अनुसार उसने खुद की 1/2 जमीन और 1 खुद की पूरी लाइब्रेरी केम्ब्रीज स्कूल को दान की थी।

जॉन हार्वर्ड

मुझे जॉन की उदारता को देखकर आंखो में अश्रु आने लगे। वह इतनी आसानी से खुद की संपत्ति को छोड़ सका था? परंतु मैं...मैं.... खुद की संपत्ति जैनम को छोड़ने के लिए अशक्त थी... जैनम के जाने के ही विचार मेरे मन पर गिद्ध की तरह मंडरा रहे थे।

N.Y.T. 18.00

जैनम खुद के हार्वर्ड युनिफोर्म में बहुत स्मार्ट लग रहा था। **"आकृतिर्गुणान् कथयति..."** संस्कृत की कहावत 100% जैनम पर लग रही थी। वह नवाब के बेटे से भी ज्यादा राजशाही लग रहा था।

खुद के कोर्ट को पर्फेक्ट करके, हेन्ड कफ्स बांधकर उसने मेरे सामने देखा। ''मैं कैसा दिख रहा हूँ?'' उसने मेरे सामने हंसकर पूछा।

''आगे का बिलीयनेर!'' जैनम के मुंह पर मेरी कमेन्ट सुनकर स्मित आया। उसने मेरे सिर पर टपली मारी। उसने खुद का ओफिशियल स्कूल बेग तैयार किया और साथ में हॉस्टेल बेग भी तैयार किया। ॲप्पल का नया डॅस्कटॉप अभी ही दो दिन पहले जैनम ने स्टडीझ के लिए खरीदा था।

''ऑल ध बेस्ट, जैनम!'' मैंने उसके हाथ में उसकी लॅपटॉप बेग देते कहा।

''थैंक्स, मैं तुझे बहुत याद करूंगा, अपेक्षा!'' जैनम के मुंह पर संवेदनाओं की रेखाएँ बढ़ती मुझे दिखाई दी। वह मेरे पास आया। अंतिम बार हम दोनों ने हमारा प्रेम किया। मैं जैनम को छोड़ने के लिए गाडी तक गयी। मार्गरिट भी वहाँ ही खड़ी थी। उसके मुंह पर दुःख स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसने भी जैनम को हग किया।

पिछले **3-4** दिनों से मेरे और मार्गरिट के बीच फेवीकोल जैसी अभेदता हो गयी थी। वह मुझे अनोखी की कार्बन कॉपी लगती थी। वह मेरे भोजन से लेकर सभी वस्तुओं का ध्यान रखती थी। उसके हाथ के पीझा

बहुत टेस्टी लगते थे।

"बाय! स्वीटहार्ट! मैं तुझे जल्दी ही मिलूंगा।" जैनम मर्सीडीझ में बैठा। उसने ग्लास नीचे किया और आंख झपकायी। जेसन ने गाड़ी को दौड़ा दी। मैं 5-10 मिनट तक गाडी जब तक दिखी और बाद में भी ऐसे ही वहाँ खड़ी रही।

मुझे मेरे हृदय में स्पष्ट लग रहा था कि शायद अब लंबे समय के लिए मैं और जैनम मिल नहीं सकेगें। ये इन्टयुशन मेरे मन में सांप की तरह रेंगने लगा।

Chapter - 11

30/5/2011 N.Y.T. 9.00 Raymond BLUD Homes, Newark

मिस्डकॉल अति भयंकर होता है.....!

"अपेक्षा! तू और डॉक्टर ब्राउन कल क्या चर्चा कर रहे थे?" मार्गरिट मेरे रूम की कुछ खिड़कियाँ साफ कर रही थी। मैंने मेरे लेपटॉप में से ऊपर देखा।

"कुछ ऐसा खास नहीं। क्यों?" मुझे ऐसा प्रश्न मार्गरिट ने क्यूं पूछा, वह समझ में नहीं आया। वह कभी भी मुझे मेरी व्यक्तिगत लाइफ के प्रश्नों को करती नहीं थी।

"कल आप बहुत अच्छी लगे ऐसी चर्चा कर रहे थे। मेरी विचा-रधारा और आपकी चर्चा बहुत मिले वैसी थी। इसलिए मेरा मन उत्कंठित हुआ था।"

मैंने मेरे दिमाग को कल हम क्या चर्चा कर रहे थे वह जानने के लिए कसा। कल रात को एक बजे तक मेरे और डॉक्टर ब्राउन के बीच गरमा-गरमी वाली चर्चा हुई थी। अंत में हम दोनों को एक दूसरे को सॉरी कहना पड़ा था।

"रीएक्शन प्रोसेस....!" मेरे दिमाग में चर्चा के विषय के बारे में लाइट हुई। जब किसी व्यक्ति पर कोई व्यक्ति बिनपायेदार आरोप रखता है, तो उसका रीएक्शन क्या आता है उस पर हम चर्चा कर रहे थे। डॉक्टर

ब्राउन का कहना था कि कोई भी व्यक्ति पहले तो खुद का आरोप साफ करने की ही कोशिश करेगा। मेरी साइड थी कि वह प्रतिकार नहीं भी करे। जैसे की इंडिया के योगीयों पर आप आरोप रखो, तो वे उसे दिमाग पर नहीं लेंगे।

मि. ब्राउन का कहना था कि एक क्षण के लिए भी खुद के आरोप का प्रतिकार करने के लिए योगीयों का मन काम करने लग जाएगा।

अंत में चर्चा का परिणाम नहीं आया था क्योंकि डॉक्टर ब्राउन या मैं कोई भी योगी नहीं थे और शासनद्रष्टश्रीजी को संपर्क करने का एकमात्र स्थान भी मेरे लिए स्वीच ऑफ हो गया था।

''मार्गरेट! तू किसकी साइड में है? मेरे या डॉक्टर ब्राउन के?'' मैंने लॅपटॉप साइड में रखा और मैं उसके साइड में जाकर खड़ी रही। उसने हीप्स पर हाथ रखने की टीपीकल स्टाइल के साथ मेरे सामने देखा।

''ऑफकोर्स तेरे साइड.... क्योंकि मुझे भी बहुत बार तुने कही बात का अनुभव हुआ है। कोई मेरे पर बिना कारण के आरोप करे, तो भी मुझे उसकी असर लगभग नहीं होती और हो तो भी उसका....'' मेरे फोन की घंटी बजी। मेरा ध्यान उस तरफ गया।

मैं फोन को उठाऊ उसके पहले तो वह कट हो गया। **''यु हेव वन मिस्ड कॉल''** ऐसा मोबाइल की स्क्रीन पर लिखा हुआ था। मैंने मिस्ड कॉल पर क्लीक किया। नंबर-नाम देखकर एक अकल्प्य उत्तेजना मेरे में उत्पन्न हुई।

Chapter - 12

30/5/2011 N.Y.T. 10.00 Raymond BLUD Homes, Newark

ब्रेकींग न्यूझ अति भयंकर होती है...!

''आर यु सिरीयस?'' सामने से मोबाइल पर बोलते शब्दो पर मुझे थोड़ा भी विश्वास बैठा नहीं।

''अशक्य....परंतु किस तरह....'' मेरे मुंह के हावभाव और आंसू देखकर मार्गरेट ने भी खुद का काम बंद कर दिया। वह मेरी तरफ आकर खड़ी रही।

आंसू सतत बहते रहे।

मेरी और सामने के व्यक्ति की बात 16 मिनट चली। मैं बिना विश्वास के सब सुनती रही। मुझे ऐसा ही लगा कि मैं कल्पना में हूँ। अंत में मैंने फोन कट किया।

''अपेक्षा! क्या हुआ?'' लगातार बहते अश्रुओं को देखकर मार्गरेट ने पूछा।

''मैं इन्डिया जा रही हूं ....'' मेरे हाथ में से फोन गिर गया।

N.Y.T. 13.00

''आर यु सीरीयस?'' 10 वीं बार मुझे किसी ने ये प्रश्न पूछा। मम्मी का खाने का कोर मेरी बात सुनकर रूक गया था। उनकी आंखो मे पूरी स्टोरी जानने की जिज्ञासा दिखाई दी।

''मम्मी ! आई वील हेव टु गो टु इन्डिया...'' मैंने भोजन किये बिना चेयर को पीछे करके उठने की एक्शन की.... मम्मी ने तुंरत 'स्टोप' कहकर मुझे बिठाकर रखा।

''पहले मुझे पूरी स्टोरी कह दे।'' मुझे कंटाला आ रहा था। वो की वो स्टोरी वापस-वापस कहकर मै थक गयी थी। परंतु, मुझे पता था कि बिना बोले, मैं मम्मी की जिज्ञासा से छूट नहीं सकती।

''मम्मी! आज सुबह मुझे मिस्ड कॉल आया था। मुझे नंबर देख-कर आश्चर्य हुआ था। मैंने वापस कोशिश की तो वह व्यस्त आ रहा था। शायद उत्तेजना के कारण से कॉल नहीं करने के कारण वह दूसरे कॉल पर व्यस्त हो गयी थी। प्रयत्न करते-करते अंत में 30 मिनट के बाद मेरी लाइन कनेक्ट हुई।

''हेलो! हाऊ आर यु?'' सामने से मुझे फेवरेट ऐसा एक आवाज सुनाई दी। ''तू बहुत व्यस्त हो गयी लगती है।'' मैंने उसे ताना मारा।

''तू जो कह रही है वह 100% सच्ची बात है। सच में ही मैं बहुत व्यस्त हूं।' सच्चाई मुझे उसकी आवाज में अनुभव हुई।

''क्यों क्या कारण है?'' फिर उसने खुद की साध्वी बनने की बात कही। मैं तो स्तब्ध रह गयी।

उसके कल्चरवाली लड़की के लिए वह बात शक्य ही नहीं थी। मैंने उसकी सच्चाई साबित करने के लिए अलग-अलग प्रकार से प्रश्न

किये, परंतु उसका हरेक जवाब दीक्षा के तरफ ही इशारा कर रहा था।

फिर मैंने उसे दीक्षा की तारीख पूछी थी। उसने 14 जून की तारीख दी। मुझे मेरे हाथ में बहुत थोड़े दिन हो ऐसा लगा था। और मुझे झटका लगा था, अभी भी मुझे उसकी बातें असर कर रही थी। अनुभव हो रहा है।'' मम्मी ध्यान से मेरी बात सुन रही थी।

''परंतु वह व्यक्ति कौन है और उसके साथ तेरा क्या संबंध है?'' मार्गरेट ने बीच मे प्रश्न किया। ''उसका नाम अनोखी है और वह मेरी बेस्ट फ्रेन्ड है।''

1/6/2011 N.Y.T. 09.00 J.F.Kennedy Airport, Newyork

मार्गरेट व मैं एयरपोर्ट पर देरी से पहुँचने के कारण से दौड़ रहे थे। मेरा नाम बारबार अनाउन्स हो रहा था। हम फ्लाइट के लिए लेट थे। चेकिंग काउन्टर पर मैंने मार्गरेट को हग किया और मेरे बेग्स को चेकिंग के लिए रखा। वहाँ खड़े चेकिंग ऑफिसर ने एतीहाद एयरलाइन्सवाले का मेरे आगमन की बात वॉल्की- टॉल्की पर की और अनाउन्समेन्ट बंद हुआ।

''मम्मी और पप्पा का ध्यान रखना हा....'' मेरे से ज्यादा देखभाल करनेवाली मार्गरेट को मेरे मन की खुशी के लिए मैं बोली। उसने खुद का सिर हकार में हिलाया। ''मैं वापस 20 दिन में आ जाऊंगी।'' अंतिम वाक्य कहकर जल्दी करने के लिए कहते फ्लाइट के अटेन्डेन्ट्स के साथ में इन्डिया के टूर के लिए पैर उठाये।

मार्गरेट अंत तक मेरी पीठ को देखती रही। मैं उसकी आंख से अंतिम बार बाय करके गायब हो गयी। मिस्ड कॉल ने मेरे अमेरिकन रुटिन को तोड़ दिया था।

"NEWS IS LIKE A FIRE.. IT BURNS EVERY-THING..."

ये कही सुनी हुई कहावत मुझे फ्लाइट में पैर रखते याद आयी....

Chapter - 1

2/6/2011

I.S.T. 15.30

Sahara Airport,
Mumbai

वेलकम अति भयंकर होता है....!

मेरे इन्डिया आने की न्यूझ आग की तरह फेसबुक पर फैल गयी थी। मैंने चेकिंग काउन्टर पर से ट्रॉली में मेरी 17 किलो की ट्रॉली बैग को खिंचकर जहाँ सभी लोग खुद के स्वजनो को वेलकम करने के लिए खडे रहते है, वहाँ मैं आयी। मुझे ऐसा लग था कि शायद मुझे कोई लेने आएगा।

स्वागत करने की जगह मैं जिसे पहचानती हूँ, ऐसा एक भी व्यक्ति मुझे दिखाई नहीं दिया। मैं ट्रॉली को खिंचकर टेक्सी स्टेन्ड पर आयी। मैं टेक्सी स्टेन्ड पर टेक्सीवाले से बात कर रही थी और वही किसी ने मेरी आंखो पर खुद का हाथ रखा।

''मैं कौन हूँ?'' आंख को खुद के टाइट हाथ से बंद करनेवाले ने मुझे पूछा। मुझे आवाज पर से पता नहीं चला। मैंने दो मिनट का समय लिया।

''तेजस.... राइट....'' मेरी आंख पर से तेजस ने हाथ निकला। मैंने पीछे देखा। शुरुआत में मुझे कोई भी दिखा नहीं परंतु मैं थोड़ी दाहिने ओर घुमी। एक टेक्सी के साइड में तेजस खड़ा था। मैंने सच्चा अनुमान किया था। उसने मुझे हाय किया और खुद की ''हाइड ऐन्ड सीक'' गेम बंद की।

''तू कैसी है?'' मेरी पीठ पर जोर से मारते तेजस ने पूछा। मुझे

पीडा का अनुभव हुआ।

''अच्छी नहीं हूं।'' मैंने पीठ के तरफ इशारा करते कहा। उसके मुंह पर स्मित आया।

''तू अमेरिका जाकर भी तेरे तानो को भूली नहीं है।'' उसने मेरे लिए किराये पर ली हुई मर्सीडीझ की ओर इशारा किया। उसका ड्राइवर गाड़ी लेकर आया। तेजस ने कार का दरवाजा खोला।

''हम कहाँ जा रहे है?'' गाडी में बैठकर मैंने तेजस के सामने देखा। ''तुझे जहाँ जाना है - फाइनल डेस्टीनेशन....''

I.S.T. 16.30

CAB, Mumbai

तेजस मुझे पिछले 6 महिने से बने हुए मुंबई और इन्डिया के न्यूझ से बॉम्बार्ड कर रहा था। बहुत कुछ अच्छा-खराब इन्डिया में चल रहा था। घोटाले उसमें पहले क्रमांक पर थे। कांग्रेस सरकार को अन्ना हजारे का सामना करना कठिन पड रहा था। अन्ना हजारे को लोगों का भरपूर सहकार मिला था।

भ्रष्टाचार वायरस की तरह हरेक-हरेक सेक्टर में घुस गया था। कांग्रेस की परिस्थिति डगमगा गयी थी। डॉन पर पिक्चर बनने की बात चल रही थी। उसमें डॉन खुद भी व्यस्त था। शासनद्रष्टाश्रीजी का भी खुद के लाइफ में महत्त्व का रोल पिक्चर में बताने का डॉन ने नक्की किया था। तेजस निरंतर बोल ही रहा था।

मैं मेरे मोबाइल में S.D फेन्स के फेसबुक पेज की डेट्स देख रही थी। अनोखी ने खुद का प्रोग्राम और इन्वीटेशन फेसबुक पर ही भेजा था। शासनद्रष्टाश्रीजी ने स्पष्टता से कोई भी पोस्टर्स, इन्वीटेशनकार्ड, पत्रिका छपवाने की मनाई की थी। उसमें फोगट के पैसे का खर्चा और पेपर का बिगाड़ शासनद्रष्टाश्रीजी को अनुभव होता था।

उसकी जगह अनोखी सभी परिचितो को '15 गोल्डन स्टेप्स' नाम की बुक और 1 किलो आम, गोल्ड प्लेटेड सिल्वर का जैन दीक्षा का प्रतीक रजोहरण (एक वस्तु कि जो जैन साधु खुद के शरीर के नीचे के अंग को स्वच्छ रखने और जमीन पर घुमने वाले जीवों को दूर करने के लिए उपयोग करते है।) दे रही थी। कॉन्सेप्ट एकदम नया था और फालतू व्यय से रहित था।

हमारी गाडी अनोखी के फ्लेट के बाहर रुकी। तेजस मेरी बेग लेकर मर्सीडीझ के ड्राईवर को फ्री करके लीफ्ट के पास आया।

''तो ये मेरा डेस्टीनेशन है?'' मैंने तेजस के सामने आंखे झपकाई। ''हाँ.... अनोखी कह रही थी कि अब आगे के १३-१४ दिन अपेक्षा मेरे साथ ही मेरे ही रूम में रहेगी। मुझे उस पवित्र आत्मा के साथ समय पसार करना है।'' तेजस 'पवित्र' शब्द पर थोड़ा हंसा। मैंने मेरी आंखे घुमायी।

हमने लीफ्ट में 5TH फ्लोर दबाया। लीफ्ट ने ऊपर चढ़ना शुरू किया!। 5TH फ्लोर लीफ्ट में अनाउन्स हुआ। हम लीफ्ट के बाहर आये।

मैं उसके पीछे-पीछे गयी। फ्लोर में रहे हुए सभी घर खुल्ले थे। ए.सी. की ठंडी हवा सभी घर में से बाहर बह रही थी। चप्पल्स और शूझ का ढेर एक साइड में पड़ा हुआ था।

लीफ्ट से बहार निकलते ही दाहिने तरफ, अनोखी का बड़ा वॉलपेपर सीधे दीवार पर चिपकाया हुआ था। साड़ी में अनोखी जबरदस्त लग रही थी। मैंने दो मिनट तक वह पिक्चर ही देखा।

''कमॉन अपेक्षा! अनोखी तेरी राह देख रही है...'' तेजसने मुझे मेरे मन के कमरे में से बाहर निकाला। हम सबसे ज्यादा चप्पलवाले फ्लेट में गये। बहुत से लोगों से चक्का जाम वह घर था। सभी डीझायनर सारीझ और कुर्तीझ में तैयार हुए थे। मुझे मेरे स्कर्ट को देखकर अजीब लगा। मुझे फ्लेट में जाने की इच्छा एक मिनट के लिए गायब हो गयी। तेजस मेरे मन के विचारो को समझ गया।

मैं पीछे मूड ही रही थी कि मधमीठा आवाज सुनाई दिया ''अपे-क्षा!'' आवाज किसका है वह मुझे मुझे 'अ' अक्षर सुनते ही पता चल गया था। मैं घुमी।

सभी मेरे सामने ही अहोभाव से देख रहे थे। अनोखी ने आकर मुझे टाईटली हग किया।

''वेलकम, माय गॉड!'' एक ही वाक्य उसके मुंह में से बहता रहा।

Chapter - 2

3/6/2011 I. S.T. 20.00 Anokhi House, Mumbai

एनर्जी अति भयंकर होती है....!

मेरे अंगोअंग में थकान लग रही थी। हम आज 30 घरो में महंगे मेहमान की तरह गये थे। पिछले 15 दिन से अनोखी इस तरह सभी घर की टुरिंग कर रही थी। उसने 180 घर पूरे कर दिये थे। उसके परिवार की जड़े बहुत गहरी फैली हुई थी। मेरे मोबाइल में पूरी लीस्ट मैं देख रही थी। अभी तक 200 घर बाकी थे।

''इम्पोसिबल....'' मैंने श्वास छोड़ा।

''अपेक्षा! तू थक गयी लगती है?'' अनोखी ने खुद की बुक में से ऊपर देखा। वह शासनद्रष्टाश्रीजी ने उसे दी हुई जैन दीक्षा के 5 नियमो के (जैन परिभाषा में 'महाव्रत' कहे जाते) वर्णन की **'महाव्रतो'** बुक पढ़ रही थी।

मैंने उसके शब्द सच्चे है वह बताने के लिए मेरा अंगूठा ऊपर किया।

''तू किस तरह इतना स्ट्रेस सहन कर सकती है?'' मैंने थकान से भरी हुई आंखो से अनोखी के सामने देखा। उसका चेहरा थोड़ा गंभीर हुआ हो ऐसा मुझे लगा।

''वह तो तू मेरे से ज्यादा जानती है।'' मुझे अनोखी के गूढ शब्द समझ में नहीं आये। *''वह क्या कहना चाहती है?''*

''शासनद्रष्टाश्रीजी....'' एक शब्द सुनकर मुझे सब समझ में आ गया।

अमोघ शक्ति का स्थान था शासनद्रष्टाश्रीजी। मेरी इच्छा इन्डिया में लेन्ड होने के वक्त सबसे पहले उन्हें मिलने की थी। परंतु, व्यस्तता के कारण अभी तक मैं समय निकाल सकी नहीं थी। मुझे अनोखी ने खुद का दाया हाथ बना दिया था।

''अपेक्षा! तेरे जाने के बाद मेरी बेटरी रिचार्ज करने का संपूर्ण कार्य शासनद्रष्टाश्रीजी ने किया है। बाकी इस स्पर्धात्मक दुनिया में खुद को टीकाकर रखना अशक्य है। जिसके पास पावर हाऊस नहीं है, उनकी हालत क्या होती है वह तो, मुझे मेरे भूतकाल को याद करने से पता चलता है...'' वह खुद के अभी ही बीते हुए भूतकाल में घुम रही हो ऐसा मुझे लगा।

''रिचार्ज के लिए जाना है।'' मेरे गले तक की इच्छा मैंने बता दी।

''हाँ... मुझे भी शासनद्रष्टाश्रीजी को मिलने की इच्छा बहुत है। परंतु...'' अनोखी ने मुझे खुद के रूम के बाहर इशारा किया। बहुत सारे अनोखी के स्वजन बाहर इकट्ठे हुए थे।

''आई. सी....'' मेरे मन में एक प्लान खड़ा हुआ ।

Chapter - 3

3/6/2011 I. S.T. 21.30 Navjeevan Society, Mumbai Central

वैराग्य अति भयंकर होता है.....!

''तुम दोनों...'' शासनद्रष्टाश्रीजी को मुझे देखकर एकदम आश्चर्य हुआ।

''तो तू आ गयी अपेक्षा?'' शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे प्रश्न किया या फिर ऐसे ही बोला, वह मुझे समझ में नहीं आया।

''तेरी अमेरिका की लाइफ कैसी है?'' शासनद्रष्टाश्रीजी खुद के स्थान पर जाकर बैठे।

''बस, चल रही है।'' मुझे वे क्यों ऐसे प्रश्न कर रहे है? वह समझ में नहीं आया। शासनद्रष्टाश्रीजी ने अनोखी के तरफ देखा। ''अनोखी! तुने तेरी वैराग्य की स्टोरी अपेक्षा को कही ?'' अनोखी ने खुद का सिर नकार में हिलाया। मुझे ''वैराग्य'' शब्द समझ मे नहीं आया।

''डीटेचमेन्ट...'' मेरे दिमाग में रही हुई शंका को जानकर शासनद्रष्टाश्रीजी ने वैराग्य का अर्थ कहा। मैं उनके सामने कुछ सुनने के लिए चातक की तरह देखती रही।

''हमेशा एक वस्तु याद रखना। भगवान के साथ जुडने के लिए दुनिया से जुड़ाव को काटना बहुत महत्त्व का है। जो दुनिया से चिपका हुआ रहता है, वह भगवान से जुड़कर नहीं रह सकता। इसमे 'सप्लाय' का इकोनोमीक्स लगता है।

जैसे-जैसे सप्लाय बढ़ता है, वैसे-वैसे भाव घटते है। और जैसे-जैसे सप्लाय घटता है, वैसे वैसे भाव बढ़ते है। ये ही गणित दुनिया और भगवान के साथ जुड़ाव का है।

जैसे-जैसे दुनिया के साथ का जुड़ाव बढ़ता है, वैसे-वैसे भगवान के साथ का जुड़ाव घटता है, और

जैसे-जैसे भगवान के साथ का जुड़ाव बढ़ता है, वैसे-वैसे दुनिया के साथ का जुड़ाव घटता है। भगवान की ऐसी शक्ति है।''

I. S.T. 22.30

Anokhi House,
Mumbai

पिछले 20 मिनट से शासनद्रष्टाश्रीजी का सप्लाय इकोनोमिक्स ही मेरे दिमाग में घूम रहा था। दुनिया की सभी वस्तुएँ मुझे फालतू जैसी लगने लगी। मुझे किसी के साथ बात करने की भी इच्छा नहीं रही थी।

अनोखी खुद के कपडे बदल रही थी। वह पूरे दिन भारी ड्रेसीस और भारी मेक-अप से ही घिरी हुई रहती थी। उसे रात को जाकर कुछ शांती मिलती थी।

''अनोखी!'' मुझे कुछ याद आया ''हाँ....!'' वह काच में देखकर खुद के इयरींग्स निकाल रही थी।

''शासनद्रष्टाश्रीजी ने मुझे तेरी वैराग्य स्टोरी सुनाने को कही है। प्लीझ! तू मुझे कह सकेगी?'' मैंने अनोखी को विनंति की।

खुद का काम छोड़कर उसने खुद के ड्रोअर में से एक डायरी निकाली और मेरे हाथ में रखी। वह वापस से खुद के काम में लग गयी।

मैंने डायरी का पहला पेज खोला। वह उन्नत आत्माओ के फोटो से भरा हुआ था। एक फोटो में एक इंसान पर सुबह के उगते सूरज की किरणे पड़ रही थी और उसका सिर्फ आकार दिखाई दे रहा था। एक फोटो में सूर्यास्त की इमेझ थी और ऐसा ही लग रहा था कि व्यक्ति सूर्य के अंदर बैठकर ध्यान कर रहा है।

मैंने पेज घुमाया। उस पर 3 शब्द लिखे हुए थे।

MY DETACHMENT STORY...

आसपास में जोरदार आकर्षक डीझाइन्स करने में आयी थी। सभी डीझाइन्स किसी जबरदस्त घटना को बताती हो ऐसा लग रहा था। मैं पेज नं. 3 पर गयी। उसमें दाहिने तरफ ऊपर तारीख लिखी थी और नीचे उस दिन की खुद की परिस्थिति का बयान लिखा था। उस डायरी की पहली तारीख मेरे अमेरिका जाने की तारीख थी।

26/10/2010

Glooms

आज एक उन्नत आत्मा का डीपार्चर हुआ है। उस उन्नत आत्मा का मेरी लाइफ को शुद्ध करने में बहुत बड़ा भाग है। मुझे पता नहीं है कि मैं उस उन्नत आत्मा को वापस से कभी मिलुंगी...

मेरी लाइफ का ये पहला डीटेचमेन्ट हुआ है। आगे कितने डीटेचमेन्ट होंगे वह मुझे पता नहीं है....

3RD पेज में इतना ही लिखा हुआ था। आधा पेज कमेन्ट्स के लिए खाली रखने में आया था। मैंने पेज घुमाया। पेज नं. 4 पूरा भरा हुआ था। उसमें अनोखी के अक्षरो में हर्ष दिखाई दे रहा था।

30/10/2010

Majority

आज चार दिन के बाद मुझे खुद के मानसिक उतार-चढ़ाव के बाद, फ्रेश लग रहा है। दो उन्नत आत्माओ ने मुझे पिछले ४ दिन में बहुत कुछ सीखाया।

मुझे ऐसा पहले से लगता था कि मैं अकेली हूं, मेरा कोई नहीं है। कोई मुझे लाइक नहीं करता है। परंतु उन्नत आत्मा और उनके उन्नत गुरु आत्मा के संपर्क के बाद मैं मेजोरिटी में हो गयी। ऐसा मुझे लग रहा था।

गुरु आत्मा के अनुभव अनुसार अकेला इंसान एकलता तभी अनुभव करता है जब उसके जीवन में भगवान नाम की सर्वोच्च आत्मा नहीं हो। उन्होंने मुझे एक जोरदार सुवाक्य JOHN KNOX का कहा था,

A MAN WITH GOD IS ALWAYS IN MAJORITY...

मैंने पृष्ठ घुमाया। उसमें भी 4-5 दिन के बाद की तारीख थी और उसमें अनोखी ने खुद के अनुभव शेयर किये थे। मैं एक के बाद एक पेज पढ़ती गयी। 15-20 पेज पढ़ने के बाद एक अच्छी तरह लिखा हुआ पेज मुझे दिखाई दिया। उस पर दूसरा एक पेरा भी था। कमेन्ट्स सेक्शन में शायद शासनद्रष्टाश्रीजी ने कुछ लिखा था।

1/1/2011

God

आज न्यू ईयर है। मैंने सुबह भगवान के पास मेरा और उनका वार्तालाप हो ऐसी बात की थी। भगवान ने अभी तक कभी मेरी प्रार्थना सुनी नहीं है।

मुझे ऐसे प्रसंगो के बाद ऐसा स्पष्ट लगता है कि भगवान आप ले सके वैसी आत्मा नहीं है। भगवान सिर्फ देखते है, मुझे मदद नहीं करते....

लोग कहते है कि 'मुझे भगवान मिले,' परंतु मुझे उस बात पर विश्वास बैठता नहीं है। उन्नत आत्मा के साथ मैंने उस विषय पर चर्चा की थी। परंतु उन्हें भगवान दिखे नहीं है। अमेरिका में इन्डिया से भगवान देखने की शक्यता कम है।

COMMENTS

मैंने कही पर्ल बेली की एक थॉट पढ़ी थी।

'PEOPLE SEE GOD EVERYDAY. THEY JUST DON'T RECOGNIZE HIM...'

तेरे अंदर रहे हुए अच्छे गुण वे ही भगवान है। भगवान वे तो अच्छे गुणो के निधान है और तेरे अच्छे गुण वे उस निधान के ही भाग है।

- SD

शासनद्रष्टश्रीजी के अक्षर बड़े थे। उनके अक्षरो पर से ही उनकी आत्मशक्ति अनुमान कर सके वैसा था। मैंने पेजीस घुमाये। सभी में 2

लाइन, कभी 4 लाइन, कभी 7 लाइन, कभी पूरा पेज भी भरा हुआ था।

किसी किसी जगह पर कमेन्ट्स लिखे हुए थे और किसी-किसी जगह पर वे खाली थे। जिस किसी जगह पर कमेन्ट्स थे, वे बहुत संक्षिप्त और वेधक थे।

मुख्य चेप्टर आया। मुझे वह ही जानना था कि क्यों अनोखी ने मेरे साथ इतने लंबे समय तक फोन पर वार्तालाप नहीं किया था। मैंने तारीख देखी- ***1.4.2011*** मैंने ध्यान से पेज पढ़ना शुरू किया।

1/4/2011

Confusion

मेरे गुरु अत्युन्नत आत्मा ने मुझे कल ही सभी के साथ डीटेच होने का आदेश दिया। इस दुनिया में मैं अनोखी दो व्यक्तियों के साथ जुड़ी हुई हूं। एक उन्नत आत्मा मेरी गाइड, दूसरा जिसके विषय में मैंने किसी के साथ भी बात नहीं की- वह मेरा बी.ऑफ.!

उन्नत आत्मा के साथ डीटेच होना आसान है, क्योंकि वह तो अमेरिका है, परंतु बी. ऑफ. तो मेरे साथ हरेक सेकन्ड समय व्यतीत करने की इच्छा रखता है। वह बहुत ही प्रेमल है, जैनम जैसा....

मैं दुविधा (उलझन) में हूँ।

मैंने एक दिन दोनों को फोन किया ही नहीं और डीटेचमेन्ट लाने का प्रयास किया, परंतु वह बहुत कठिन है। मैं मेरे जुड़ाव को छोडुं या नहीं?

COMMENTS

इस दुनिया में चतुर इंसान को जुड़ाव उस के साथ करना चाहिए जो हमेशा साथ में रहने वाला हो... जिससे तू जुड़ी हुई है, वे ज्यादा से ज्यादा 100 साल ही रहेंगे, उसके बाद क्या?

मेरे अनुसार भगवान के साथ ही जुड़ाव करना चाहिए, जो कभी भी जाने वाले नहीं है। भगवान के मार्गदर्शन के बिना कुछ भी होता नहीं है।

तुझे, मैंने सुनने को कही हुई स्पीच सुनी होगी। अब्राहम लिंकन की इस स्पीच में एक बात बहुत जोरदार उन्होंने की थी।

'WITHOUT THE ASSISTANCE OF THAT DIVINE BEING, I CANNOT SUCCEED. WITH THAT ASSISTANCE I CANNOT FAIL...'

सिर्फ इस सुवाक्य को बारबार घुटना। तेरे मन की डीटेचमेन्ट की खिड़की खुल जाएगी।

-SD

मुझे तूफान की तरह अब्राहम लिंकन के शब्द लगे। प्रेसिडन्ट जैसी भूमिका पहुँचने के बाद भी ऐसा दैविक जुड़ाव अकल्प्य अनुभव हुआ। इस भूमिका पर तो ''आइ रुल ध वर्ल्ड...'' आ जाता है... भगवान तो उसमें कही खो जाते है.... डीटेचमेन्ट की भूमिका आगे के पेजीस में बढ़ती गयी। अनोखी खुद के बॉयफ्रेंड को मनाने में सफल हुई थी। ये बात 63RD पेज पर लिखी थी। 64TH पेज मेरे साथ का भी उसने जुड़ाव तूटने का लिखा था। मैंने उस पेज पर तारीख देखी... 14.04.2011 - मेरा बर्थडे...

उस दिन अनोखी ने मुझे फोन नहीं किया था। मेरे हृदय में उसकी आग से जलने जितनी असर हुई थी। इसलिए ही उस दिन मुझे नेगेटीव विचार भी भरपूर आये थे। जैनम की उपस्थिती भी मुझे पॉझिटीव करने के लिए असर नहीं कर सकी थी।

उस दिन मुझे भी सुबह दैविक अनुग्रह का अनुभव हुआ था। परंतु उसके बाद मन थोड़ा खिन्न था। शायद अगर उसमें से शासनद्रष्टाश्रीजी के शब्दो से मैं बाहर नहीं आती, तो आज वापस से पापो से भर गयी होती।

मैंने आगे के पेजीस को फ्लीप किया। डीटेचमेन्ट का स्तर धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। मैं अंतिम पेज पर आयी। उस पर 5 ***** किये हुए थे। बहुत दिलचस्पी वाला लेखन होगा ऐसा मुझे लगा। मैंने घड़ी की तरफ देखा।

अनोखी खुद के सपनो में शांती से घूम रही थी।

29/04/2011

Power

घर में मेरे दीक्षा की तैयारी फुल फ्लेश में चल रही है, परंतु भाई मुझे फ्री रखता है। जिस दिन मैंने ये दीक्षा लेने का नक्की किया था, उस दिन मैंने भगवान को प्रार्थना की थी कि तेरी शक्ति का एक छोटा चमकारा दिखाना।

परंतु, शायद मेरे में उस शक्ति के चमत्कार को पचाने की पात्रता नहीं होगी, शायद इसलिए भगवान ने मुझे खुद का चमत्कार बताया नहीं। बहुत बार मुझे ऐसी सभी परिस्थितियाँ और घटनाओं को देखकर ऐसा लगता है कि भगवान मुझे मदद नहीं करता और शायद वो किसी को भी मदद नही करतां है।

COMMENTS

कभी भगवान की शक्ति पर शंका मत करना। आज हम सभी जिस भूमिका में है, वह भगवान की कृपा के बिना शक्य नहीं है। एक एकदम सहज उदाहरण इस बात को समझा सकता है।

जब आप इस दुनिया की सिरपच्ची से कंटाल जाओ, तब आप भगवान के पास मुड़ते हो और तब आपको आंतरिक शांती का छोटा अनुभव होता है। ये भगवान की शक्ति नहीं है, तो दूसरा क्या है?

एकदम स्पष्ट भाषा में कहने जाऊ तो,

ANY FOOL CAN COUNT THE SEEDS IN AN APPLE. ONLY GOD CAN COUNT ALL THE APPLES IN ONE SEED...

रॉबर्ट स्कूलर की पंक्ति पढ़कर कभी भगवान को अशक्त मत मानना।

\- S.D.

इस पेज के नीचे "*THE END*" लिखा हुआ था। डायरी को पूरी करने के बाद मैंने वह उस डायरी को ड्रोअर में रखी। मेरी आंखे नम हो गयी। ये सिर्फ डायरी नहीं थी, वह डीटेचमेन्ट की थीसीस थी।

Chapter - 4

13/5/2011 I.S.T.-8.00 Anokhi's House, Mumbai

पीसफुलनेस अति भयंकर होता है....!

काउन्टडाउन चालू हो गया था। 3 दिन के बाद 16TH को अनोखी की दीक्षा थी। उसके पारिवारिक समृद्धि के अनुसार तो 5000 लोग कम से कम इस प्रसंग में उपस्थित रहने वाले थे। S.D फैन्स में V.I.P. को ही ऐन्ट्री देने का नक्की करने में आया था। बाकी सभी लाईव कवरेज में देखने वाले थे।

मैं अनोखी को आज 9.30 के प्रोग्राम के लिए तैयार कर रही थी। ब्युटी पार्लरवाली अभी तक आयी नहीं थी। अनोखी ने नास्ता किया नहीं था। उसे कुछ भी खाने की इच्छा नहीं थी। सिर्फ कॉफी उसकी मम्मी साइड में रखकर गयी थी। उसे भी अनोखी ने टच नहीं किया था। वह पड़े पडे कोल्ड कॉफी बनने की तैयारी में थी। मुझे उस कॉफी को देखकर दया आयी।

''तू किसी वस्तु के टेन्शन में है?'' मैंने उसके तरफ कांच में देखा। उसने मना किया और कॉफी को पीने लगी।

''हेलललललललो.....''एक छोटा लड़का खुद के हाथ में रहे हुए छोटे माइक में बोलते बोलते हमारे पास आया। ''आई लव यू भूआ अनो-खी...'' मैंने अनोखी के तरफ देखा। 'क्या वर्धमान के अनऑफिशियल

लडके थे?''

अनोखी मेरा मुंह देखकर हंसने लगी। ''अपेक्षा! ये मेरे कझीन भाई का लड़का है। वर्धमान की तो शादी भी नहीं हुई है और सगाई भी नहीं हुई है। वह मेरे इस डीटेचमेन्ट को देखकर खुद डीटेच होने की बात सोच रहा है। परंतु, मुझे लगता नहीं है कि वह डीटेच हो सकेगा। उसकी जडे बहुत गहरी है।'' मुझे मेरी मूर्खता पर हंसना आया। कैसी उल्टी वस्तुएँ मेरे दिमाग में आ रही थी।

छोटा लड़का हमारी मेकअप कीट से खेलने लगा। वह लाईनर को लेकर खुद भी लाइनर लगाने का ड्रामा करने लगा। कोई दीक्षा का गीत गा रहा था। उसे सुनकर वह डान्स करने लगा।

मैंने उसके हाथ में से टूट जाने का चान्स होने से लाईनर ले लिया। छोटा भीम ज्यादा देखा होने से वह गुस्सा हो गया और फॉर्म में आ गया। उसने कॉफी का कप उछाला। पूरी कॉफी दो लाख के अनोखी के ड्रेस पर गिर गयी।

अनोखी उसे लाफा मारेगी ऐसा मुझे लगा। मेरे मुंह पर गुस्सा स्पष्ट दिखाई देने लगा। वह छोटा लडका घबरा गया हो ऐसा मुझे स्पष्ट लगा और मेरा मुंह देखकर तो 100 % वह घबरा गया।

''यहाँ आ कैरव!'' अनोखी ने उसे प्रेम से बुलाया। वह अनोखी के पास आया। ''अगर हम T.V. देखकर ऐसा खराब सीखे, तो कैसा होता है ना? देख, भूआ की ड्रेस बिगड गयी ना?'' एकदम मीठाश के साथ अनोखी ने कहा। वह रोने लगा।

''तू रो मत। भूआ तेरी मम्मी को भी नहीं कहेगी।'' मैं अनोखी की शांतता को देखकर स्तब्ध हो गयी। अगर मेरे साथ, मेरे प्रोग्राम के दिनों में, समय की अल्पता में ऐसा हुआ होता तो 100% कैरव का चेहरा थप्पड़ से लाल हो गया होता। अनोखी के कंट्रोल को देखकर मेरा दिमाग ब्लॉक हो गया।

I.S.T.-21.30

Car

प्रोग्राम बहुत ही हृदयद्रावक था। श्रेष्ठ वक्ताओं में से एक वक्ता ने प्रोग्राम संचालित किया था। प्रोग्राम का मुख्य विषय डिबेट का था। ''अनो- खी दीक्षा क्यों लेनी चाहिए?'' उसके पक्ष में बोल रही थी और वक्ता और लोग उसके विपक्ष में।

अनोखी के जवाबों को देखकर मेरी सभी होशियारी उतर गयी थी। मैंने पिछले छह महिने से साइकोलॉजी की स्टडीझ करके भी जो मन की सुस्थता प्राप्त नही की थी, वह सुस्थता अनोखी में जन्म से ही आ गयी हो ऐसा लग रहा था।

गाडी एक जगह पर अटकी और मैं आज के प्रोग्राम के रिकेप में से बहार निकली। अनोखी आंख बंध करके मानो कि बड़े प्रवास के लिए तैयार हो रही हो ऐसे भाव उसके मुँह पर उछल रहे थे।

मैंने गाडी किस कारण से अटकी वह देखने के लिए गाडी की खिड़की को खोला। एक गाय रास्ते में बैठी हुई थी। एक पुलिस हवालदार उसे उठाने का प्रयत्न कर रहा था, परंतु वह खड़ी ही नहीं हो रही थी। मुंबई अराजकता से भरा हुआ था। मैंने खिडकी बंध की।

''अनोखी!'' एक प्रश्न याद आते ही मुझे पूछने की इच्छा हुई। उसने शासनद्रष्टाश्रीजी की स्टाइल में आंखे खोली। वह मुझे शासनद्रष्टाश्री- जी की प्रतिछाया ही लगी।

''हां...तुझे कुछ पूछना हो ऐसा लग रहा है ?''

''तू सही है...'' विस्मय से मेरा चेहरा नम गया।

''अनोखी! तेरी जगह पर अगर मैं होती तो, तो सुबह जो तेरे भाई का बेटा था ना, उसका मुंह लाल हो जाता। तू किस तरह तेरी २ लाख की ड्रेस बिगड़ गयी, तो भी शांतता रख सकी? तुझे गुस्सा क्यों नहीं आया?'' मुझे मेरी ड्रेस नहीं होने के बावजूद मेरा लाल चेहेरा याद आया।

''शासनद्रष्टाश्रीजी ने जिस दिन...'' कुछ सोचती हो उस तरह अनोखी अटक गयी। ''मुझे दीक्षा के लिए अनुमति दी, उस दिन मुझे एक बात घर जाने से पहले ही कही थी।

''अनोखी ! अब तू दीक्षा के मार्ग पर चलने वाली है। एक बात दीक्षा की खास याद रखना। ''कभी भी निर्जीव वस्तु के लिए जीवित वस्तुओं के साथ शत्रुता मत करना, मारा-मारी मत करना, कर्कश शब्द बोलना मत।

निर्जीव वस्तुएँ टूटे, तो नयी बन सकती है, परंतु जीवित वस्तु का एक बार हृदय टूट जाए, तो उसे वापस से जोड़ना अशक्य है।

अगर मैं कैरव को मेरे रू. 2 लाख के ड्रेस को बिगाड़ने के लिए लाफा मारती, तो उसे मेरे प्रति, दीक्षा स्वीकार करनेवालो के प्रति जो आदर हृदय में है वह बिगड़ जाता।

और अगर वह बिगड़ जाता तो...'' अंतिम फटका लगाती हो, ऐसे हावभाव उसके शरीर में मुझे दिखाई दिये, ''जिस तरह तुझे और मुझे शासनद्रष्टाश्रीजी हाथ पकड़नेवाले मिले, उस तरह उसे मिलते नहीं, क्योंकि उसे दीक्षा पर शत्रुता हो जाती।

दीक्षा का पहला नियम ही ये ही है कि ''हरेक जीवित वस्तु को खुद के मित्र की तरह देखो... और तो ही पीसफूलनेस मिलेगी।''

Chapter - 5

15/5/2011 | I.S.T- 21.00 | Birla Matushree hall, Mumbai

REPAY अति भयंकर होता है....!

सभी लाइट्स संपूर्ण बंद थी। ऑडीटोरियम की ठंडक मन को अच्छी लगे वैसी थी। सभी का पूरा फोकस अनोखी पर था। आज वह खुद की दीक्षा के पहले की अंतिम स्पीच देने वाली थी।

वक्ता इतने करुण आवाज में स्पीच दे रहा था कि पत्थर दिल व्यक्ति भी रो पडे। मेरी आंखो में तो वर्षाऋतु जैसा धोध चल रहा था।

वक्ता ने प्रोग्राम के आगे की कड़ी में ऐन्ट्री की।

''अनोखी बहन की ऐसी इच्छा थी कि मुझे मेरे पर उपकार करनेवालो का खास बहुमान करना है और इसलिए ही अनोखी दो मिनट उस विषय पर बोलेगी और फिर हम प्रोग्राम को आगे बढ़ाएगें।'' इकट्ठे हुए लोग जैसे कि ग्रान्ड फीनाले शुरू होने वाला हो उस तरह तैयार हो गये।

अनोखी मुख्य स्टेज पर आयी। उसके ऊपर सभी लाइट्स केन्द्रित हो गयी। वह मुख्य आकर्षण थी। उसके हाथ में वक्ता ने माईक दिया। वह खुद की खूबसूरती और कपड़ो की चमक के कारण आकाश में रहे हुए चमकते तारे की तरह चमक रही थी। उसके मुँह पर अकल्प्य कृतज्ञता दिखाई दे रही थी।

''बोलो सिद्ध भगवंतो की....''

''जय...'' सभी ने अनोखी की आवाज में खुद का स्वर भरा।

''यहाँ इकट्ठे हुए, खुद के अमूल्य समय का भाग देने वाले हरेक शक्तिशाली आत्मा को मेरा नमन...'' सभी का फोकस अनोखी पर था। सभी अनोखी को बार-बार नमन कर रहे थे।

''सर्वविभू आत्माओं! आज मैं आपको जो दिख रही हूँ, वह चार व्यक्तिओं के कारण से है। वे चार व्यक्ति कौन है उनके बारे में मैं आपको थोड़े समय के बाद कहूंगी।

इस दुनिया में थोड़ी वस्तुओं की गिफ्ट ऐसी होती है कि जो आप रि-पे नहीं कर सकते। आप शायद 1,00,000 करोड का लोन रि-पे कर सकोगे, क्योंकि वह भौतिक है, परंतु जब कोई मरते ऐसे आपकी लाईफ को 10 रूपये के पानी से बचाये, तो आप उसे किस तरह रि-पे करोगें? मैं मर रही थी...'' कुछ एकदम नया सुन रही हूँ ऐसा मेरे कान को लग रहा था। इस आत्मविश्वास के साथ मैंने कभी अनोखी को बोलते नही देखा था।

''और मुझे तब ऊपर के चार में से दो व्यक्तियों ने बचाया है। आपको पता है वे कौन है? किसने बचाया है?'' मेरे मन में भी प्रश्न आया। अचानक लाईट्स का फोकस मेरे सामने आया। मेरी आंख उसके प्रकाश के कारण अंज गयी।

''हाँ! ये ही मेरी लाइफ बचाने वाली फ्रेन्ड अपेक्षा! आप उसे वक्ता के रूप में जानते होंगें, मिरेकल गर्ल के रूप में जानते होगें, परंतु उसे आप लोगों ने लाईफसेवर के रूप में कभी जाना नहीं होगा।'' अनोखी की आवाज में नमी ने प्रवेश किया।

''अगर मेरी आत्महत्या की रात के अवसर पर अपेक्षा ने खुद की मच्छरदानी में से खुद को निकालकर मेरी आंखो में रहे हुए आंसुओं को नहीं पौंछा होता, तो शायद आज मैं भी किसी कबर में सड़ रही होती और मेरे कबर पर लिखा होता,

"HERE ANOKHI RESTS IN PEACE (R.I.P.)...."

अनोखी ने श्वास लिया।

मुझे मेरे कर्मो पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। इतने बड़े प्रोग्राम

में वह मुझे याद करेगी ऐसी मुझे आशा भी नहीं थी। वह तो अब मेरे से असंख्य सीढीयाँ ऊपर चली गयी थी।

''आई वील लाइक टु वेलकम अपेक्षा ऑन ध स्टेज।'' अनोखी ने मेरे सामने ही आंखो से देखते हुए अनाउन्स किया। मेरे पैर ऑडीटोरियम के साथ जड़ गए। मुझे खड़े होने की ही इच्छा नहीं हुई।

''प्लीझ अपेक्षा!'' अनोखी की आर्द्र आवाज सुनाई दी। उसके मुँह पर मुझे बुलाने की अशम्य इच्छा दिख रही थी। मैं जानो कि रोबोट होऊं उस तरह खड़ी हो गयी। मेरे पैर अपने आप ही चलने लगे। मैं अनोखी की दृढ़ इच्छा के सामने असहाय थी।

स्टेज पर अनोखी एक सिंहासन पर बैठी हुई थी। वह मुझे स्टेज के स्टेप्स तक लेने आयी। मेरे मुंह पर खेद स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वह मेरे हाथ में हाथ मिलाकर मुझे स्टेज के बीच लेकर आयी और खुद के सिंहासन पर बिठाने लगी। ''प्लीझ नो...! आइ डु नॉट डीझर्व धीस।'' मैंने उसे विनंति की। उसने मेरा कुछ भी सुना नहीं।

''उन्नत आत्माओ! इस उन्नत आत्मा के उपकारो को रि-पे करना मेरे लिए शक्य नहीं है। परंतु, मैं इस उन्नत आत्मा के लिए प्रार्थना तो कर ही सकती हूं। जिस दिन मेरी दीक्षा होगी, उस दिन से ही मैं मेरी प्रार्थना चालू कर दूंगी।'' अनोखी ने खुद के भावो को व्यक्त किया।

''आपकी प्रार्थना अपेक्षा बहन के लिए क्या होगी?'' वक्ता ने अनोखी को प्रश्न किया। दो मिनट विचार के बाद अनोखी ने उत्तर दिया। '' यही कि जिस अनंत सुख के मार्ग पर मैं कदम रख रही हूँ, उसके ऊपर आप मुझे बचानेवाली उन्नत आत्मा को भी जल्दी भेज दो....'' पूरे ऑडीटोरियम में लगातार तालीयों की आवाज गूंजने लगी।

वक्ता हाथ में एक गोल्ड प्लेटेड थाली लेकर आया। उसमें पानी, दूध, नेपकीन, केसर, चावल जैसी वस्तुएँ थी।

''अब, अनोखी खुद के उपकारी अपेक्षा बहन के चरण प्रक्षालित करेंगें। जिनशासन का ये प्रताप है कि, जहाँ जो व्यक्ति कल साध्वी बन जाएगी, वह आज के दिन खुद के उपकारी के चरण प्रक्षालित कर रहे है। ऐसी कहावत है कि '' जैसे-जैसे व्यक्ति का स्तर बढ़ता जाता है, वैसे वैसे

वह व्यक्ति डाउन टु अर्थ होता जाता है। और ये बात...'' वक्ता ने हमारे दोनों की तरफ इशारा किया।

''यहाँ स्पष्ट देखने मिलता है।'' ऑडीयन्स में बैठे हुए हरेक व्यक्ति की आंखे आर्द्र थी। मेरी आंखे तो... मैंने मेरी आंखें बंद कर दी थी।

अनोखी मुझे खुद की लाइफ में इस स्तर पर रखती है,'' यह मुझे पहली बार पता चला।

Chapter - 6

16/5/2011 I.S.T- 7.00 August Kranti Ground,Mumbai

DEFEAT अति भयंकर होता है...!

''वह पल, वह घडी, वह मुहूर्त, वह समय कि जिसका अनोखी पिछले **6** महिने से राह देख रही थी, वह आ गया है। देखो, प्रभु का ये परम पवित्र वेष का सूचक रजोहरण कि जिसका तसलाट मुमुक्षु आत्मा अनोखी को पिछले कितने ही महिनों से हृदय में चल रहा था, उसे अर्पण करने का परम पावन समय आ चुका है। जरा मुमुक्षु के मुख पर एक दृष्टितो करो... क्या कह रहा है वह?'' वक्ता के भावो से परिपूर्ण शुद्ध गुजराती भाषा में बोलें हुए शब्दो ने मेरे पूरे शरीर में एक शक्ति का संचार किया। वह किसकी शक्ति थी वह मुझे पता नहीं था।

''अनोखी के हृदय की एक ही आवाज है।

विरतिधर नो वेष प्यारो प्यारो लागे रे....'' वक्ता ने दो बार एक ही पंक्ति दोहरायी।

''संसारी नो संग खारो-खारो लागे रे....'' ऑडीयन्स में से आवाज आयी। गीत की दूसरी पंक्ति लोगों ने पूरी की। वापस से पहली पंक्ति उसने खुद ने गायी, दूसरी पंक्ति में पब्लीक के सामने वक्ता ने माइक बताया। ऑडीयन्स में से वापस दूसरी पंक्ति इस समय वुफर साउन्ड जैसी सुनाई दी।

पूरे वातावरण में डीटेचमेन्ट की ओरा फैल रही हो वैसा मुझे अनुभव हो रहा था।

पार्ट 1: ''अपेक्षा! तेरी बेस्ट फ्रेन्ड जा रही है। तू भी उसके साथ चली जा...''

पार्ट 2: ''नहीं.... शक्य नहीं है। पापा की देखभाल कौन करे-गा....? पहले मुझे मेरी जवाबदारी पूरी करनी पड़ेगी...''

पार्ट 1: ''परंतु तेरी फ्रेन्ड कि जो तुझे बचानेवाली मानती है, जो तुझे इतना मान देती है, वह सभी को छोड़कर जा रही है। सच्ची फ्रेन्डशीप में किसी भी समय में, मे बी इट बेड और गुड फ्रेन्ड तो फ्रेन्ड के साथ ही रहते है।''

पार्ट 2: ''मेरी परवशताएँ....?''

पार्ट 1: ''क्या है तेरी परवशताएँ? तू खुद...?''

क्या है मेरी परवशताएँ? मेरा तार्किक मन उहापोह करने लगा। दीक्षा का वर्णन करते गीतो का मधुर संगीत बेकग्राउन्ड में बज रहा था।

अनोखी के मुख पर अशक्य-वास्तु प्राप्त करने की तत्परता दिख रही थी। उसका फोकस भवनिस्तारक के गुरू के हाथ में रहे हुए रजोहरण पर ही था। भवनिस्तारक के गुरू रजोहरण को हाथ में लेकर कुछ उच्चारण कर रहे थे।

शासनद्रष्टाश्रीजी आँखे बंद करके अलग दुनिया में ही पहुंच गये हो ऐसा उनका चेहरा बता रहा था।

पार्ट 1: 'तुझे कब ऐसी शांती मिलेगी अपेक्षा?'

पार्ट 2: 'मुझे नहीं चाहिए ऐसी शांती। मैं तो अमेरिका की शांती में ही अच्छी हूं। मुझे जैनम की चेस्ट चाहिए, मम्मी के साथ रेस्ट चाहिए, पापा ऑल ध बेस्ट चाहिए। फिर फर्गेट ध रेस्ट चाहिए।'

पार्ट 1: ''मूर्ख! तू सिर्फ ऐसे फालतू वाक्यों को बकने में ही होशियार है। जब जमीन पर काम करने का आता है, जब कोई पावरफूल निर्णय लेने का आता है तो मुझे तेरी पूंछ ही दिखती है। चूप बैठ। समझ जैनम मर गया तो ?''

मुझे 1ST पार्ट के शब्द लोहे के घाव की तरह लगे...

''तू बाद में क्या करेगी? मम्मी मर गयी तो, मौत हो गयी तो,

पापा की बीमारी आउट ऑफ कंट्रोल हो गयी, तो तू रेस्ट कहाँ करेगी? जब व्यक्ति के पास विकल्प नहीं होता, तब वह क्या करता है ?''

मुझे 1st पार्ट की बात सच्ची लगी। उस काले दिन की कल्पना करके मेरे पूरे शरीर में कंपकंपी छूट गयी।

''जैनम बिना की मेरी लाइफ... मम्मी के बिना की मेरी लाइफ... पापा के बिना की मेरी लाइफ।'' 14 अप्रेल 2008 की रात मेरी आंखों के सामने नाचने लगी। मैं मेरे खुद से ही हार गयी। ''अपेक्षा! तेरे में शक्ति है कि तू दीक्षा ले सकती है। वहाँ ही उत्कृष्ट आनंद है।

तू जिस आनंद को दुनिया में खोज रही है या अनुभव कर रही है, वह अत्यल्पकालीन है। जिस समय वो आनंद उड़ जाएगा उस समय तू क्या करेगी? देख तुझे तेरी फ्रेन्ड बुला रही है। ये तेरे मन के विघ्नो को साफ कर दे...'' अनोखी की तरफ मैने देखा।

उसने एक क्षण के लिए मेरे तरफ मुंह किया और फिर उसका मुँह वापस आचार्यश्री की तरफ मुड गया।

मेरी आखो में आंसू छाने लगे। गीतो की आवाज मेरे हृदय में कम होने लगी। मेरे पूरे शरीर में से एक ही आवाज आने लगी,''अपेक्षा! तू यह कर सकती है।'

भवनिस्तारक के गुरू स्टेज पर खड़े हुए। अनोखी उनके पास गयी। मैं भी अनोखी के पास जाऊ ऐसी इच्छा मेरे मन में आ गयी। मैं मेरी जगह से खड़ी होने वाली थी, परंतु मेरे दूसरे पार्ट ने मुझे खड़ा होने नहीं दिया। 'मत कर अपेक्षा! समझ!'

गीतो का स्वर तेज हुआ। अनोखी के मुंह पर खुशी बढ़ती गयी।

पार्ट १ः ''डरपोक, तू डरपोक है, तू हारी हुई है, हारी हुई। तू खुद की लाइफ में कुछ भी प्राप्त करने वाली नहीं है। यु आर अ वेस्ट क्रीयेचर।''

1st पार्ट मेरी विडंबना करने लगा।

आचार्यश्री ने अनोखी के हाथ में रजोहरण रख दिया। उसे वर्ल्ड कप मिल गया। डीफीट हो गया मेरा! मैं मेरे मन से टूट गयी। एक बेस्ट फ्रेन्ड मेरे से अनिर्णीत समय के लिए अलग हो गयी। मैं हार गयी।

Chapter - 7

18/5/2011 I.S.T- 6.00 Navjeevan Society, Mumbai Central

SILENCE अति भयंकर होता है...!

अनोखी कि जिसको साध्वीश्री अपुनरावृत्तिदृष्टाश्रीजी नाम देने में आया था, वे नयी जगह विहार करने के लिए तैयार हो रहे थे। वे नये होने से उनको खुद का सब सामान किस तरह बांधना वह आता नहीं था। शासनद्रष्टाश्रीजी उन्हें सीखा रहे थे। मैं उस ही जगह दूर खड़ी रहकर ये दृश्य देख रही थी।

पिछले 3 दिन में भी अनोखी की मेरे से अलग होने की वेदना कम नहीं हुई थी। मैं पिछले 3 दिन से सतत आधे-आधे घंटे में रोने लगती थी। मुझे पूरी दुनिया छोड़कर अनोखी के साथ जाने की इच्छा होती।

मम्मी का अमेरिका से प्रोग्राम कैसा हुआ उस बारे में फोन आया था। मैंने बराबर उत्तर भी नहीं दिया था। जैनम, पापा, मम्मी सभी मेरे बदलाव से तनाव में थे।

मैं मेरी परिस्थिति को सुधारने के लिए वर्धमान के पास गयी थी, परंतु उसके पास से मुझे संतोषकारक प्रतिभाव मिल सका नहीं था। शासनद्रष्टाश्रीजी और अनोखी एकदम व्यस्त थे। इसलिए उनकी सलाह लेने का समय मुझे मिला नहीं था।

आज मुझे समय मिलेगा ऐसा सोचकर 1 घंटे पहले जल्दी उठकर मैं उपाश्रय में आ गयी थी, परंतु अपुनरावृत्तिदृष्टाश्रीजी और शासनद्रष्टाश्री-

जी तो विहार की तैयारी कर रहे थे।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने कॉर्नर में खड़ी मुझे देखा और हल्का स्मित किया। मुझे लगा कि वे मुझे बुलाएंगे, परंतु वे वापस से खुद के काम में व्यस्त हो गये। मैं उनकी तैयारियों को देखती रही।

1/2 घंटे के बाद अपुनरावृत्तिश्रीजी मेरे साइड में से गये। उन्होनें मेरी तरफ एक क्षण के लिए देखा और दूसरी सेकन्ड ही खुद का मुंह नीचे कर दिया। उन्होंने दीक्षा दिन से ही मौन ले लिया था। भवनिस्तारक ने दीक्षा के दिन कहा था।

''जो कोई व्यक्ति इस दुनिया में शिखर पर पहुँचा है, उनके पीछे उनकी आत्मा की शक्ति काम करती है। और उस शक्ति को बाहर लाने के लिए एक ही रास्ता है.... **KEEP SILENCE....** थींक मोर, स्पीक लेस और स्पीक नोट।''

शासनद्रष्टाश्रीजी क्यों इतना कम बोलते थे उसका कारण मुझे उस दिन ही पता चला था। मेरे में पिछले **3** दिन से मौन ने ऐन्ट्री कर ली थी। परंतु, मेरे लिए वह निराशा लाने वाला साबित हुआ था।

शासनद्रष्टाश्रीजी भी खुद के काम पूरा करके विहार के लिए तैयार हो गये। वे सबसे लास्ट थे। उन्होंने उपाश्रय की सभी खुल्ली खिड़कियां बंद की। मैंने उनको मदद की, सब काम पूरा हुआ फिर उन्होंने मुझे पूछा, ''तू कब जा रही है ?''

''आज।'' शासनद्रष्टाश्रीजी के मुंह पर मुझे संवेदनाओं का अट-काव करने वाला नकाब दिखाई दिया। उन्होंने कुछ भी संवेदना बतायी नहीं।

''ऑल ध बेस्ट...'' इतना कहकर मुझे वापस से कुछ भी कहे बिना वे उपाश्रय में से निकल गये। शासनद्रष्टाश्रीजी के गुरुणी ने मुझे कहा था कि ''हम दादर जाने वाले है।'' परंतु मेरी **10** बजे की फ्लाइट थी, इसलिए अब मिलना शक्य नहीं था।

मैं वहाँ उपाश्रय में ही जमीन पर नीचे बैठ गयी। मेरे मन की शांतता, मुझे असह्य अनुभव होने लगी। मुझे लगे हुए सदमे को खाली करना मुझे बहुत महत्त्व का लगा।

शासनद्रष्टाश्रीजी ने जान बूझकर मेरे साथ वार्तालाप नहीं किया था, ऐसा मुझे लग रहा था। मैंने मेरी लाइफ में बहुत बड़ा नुकसान कर लिया हो, ऐसा मुझे हृदय में गहराई से अनुभव हुआ।

मैं उपाश्रय की शांती को तोडती कंपन के साथ रोने लगी। उस शांती ने मेरी चीखों को खा लिया।

coming soon

બે-નકાબ ~ 2

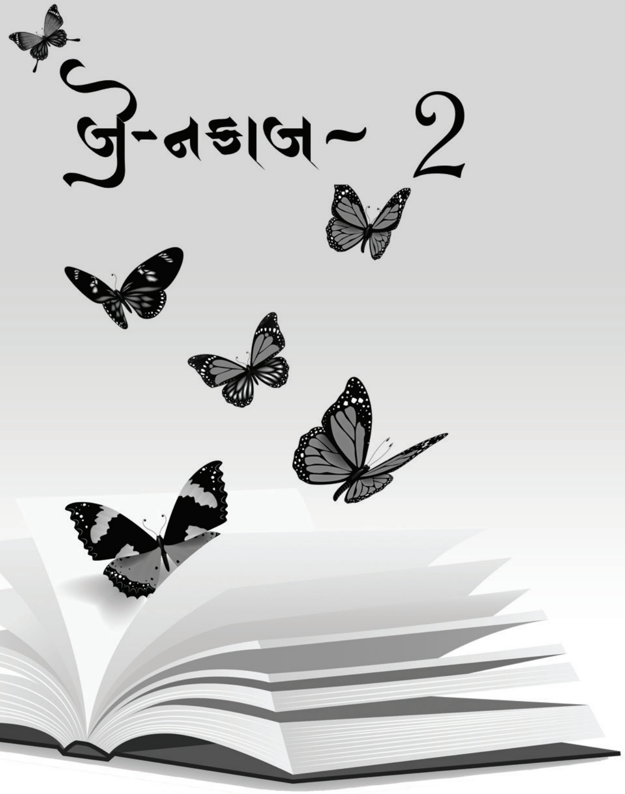

Language :-

Gujarati, Hindi, English

~ नकाबी

Already 5000+ Books

Have Been Distributed In Gujarati Language

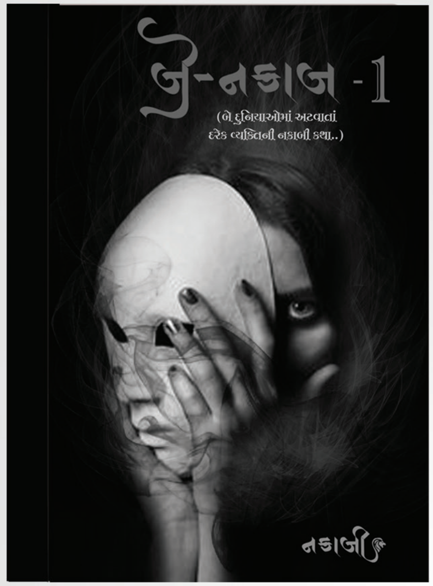

Readers Review :

नक़ाबी ज़िंदगी को बेनकाबी करनेवाले बेनकाबी को मेरा प्रणाम!

सबसे प्रथम तो आपको धन्यवाद कहना चाहती हूँ कि मुझे गुजराती भाषा पढ़नी नहि आती थी पर आपकी बुक बेनकाब की प्रसंशा बहुत सुनी, तो बस मन बना लिया कि गुजराती भाषा कैसे भी सीखके इस बुक को पढ़ना ही है। शुरू - शुरू में गुजराती पढ़ने में थोड़ी समस्या हुई पर पढ़ते-पढ़ते बहोत अच्छे से पढ़नी आ गई ।

आपकी खूब खूब अनुमोदना है कि आपने इतनी ज़बरदस्त बुक लिखी है ये पूरी दुनिया इस समय बहुत दुःख और समस्याओं से घिरी हुई है, और इसी वजह से लोगों में उस समस्या और दुःख में से बाहर निकलने का रास्ता नहि मिलने से वो भटक जाते है और ग़लत रास्ते पे चढ़ जाते है और उस वजह से उनको डिप्रेशन, चिंता और ना जाने कितनी भयंकर बीमारी से गुजरना पड़ता है । मैंने भी अपनी ज़िंदगी में ये सब अनुभव किया है और आपकी इस किताब से मुझे इन सारी समस्याओं से कैसे बाहर निकालना उसका रास्ता समझ में आया है और मुझे इस किताब को पढ़ते - पढ़ते अपनी की हुई भूलो पे पश्चाताप भी हुआ और उसमें से बहार निकालने का रास्ता भी मिला जिससे मुझे बहुत खुशी मिली ।

मैंने अपने सारे दोस्तों को भी इस बुक को पढ़ने की प्रेरणा भी की, ये बुक दुनिया के हर व्यक्ति को पढ़नी ही चाहिए और वो इस बुक के ज़रिए समझ पाएगा कि उसे अपनी ज़िंदगी को कैसे जीनी है । दुनिया का हर इंसान ये महसूस करेगा कि वो कितना खास है और उसे अपनी ज़िंदगी कैसी बनानी चाहिए ,समस्या का हल कैसे ढूँढना, क्या करना चाहिए हमको ? ये सब सवाल के जवाब हमको इस किताब के माध्यम से मिलेग़े। भले आपको बुक पढ़ने की आदत ना हो पर आप इस बुक को समय निकालके ज़रूर। पढ़ना, दुनिया की सारी तकलीफ़ों की दवा इस बुक के माध्यम से मिल जाएगा । मैंने तो इस किताब को पढ़के सबसे पहले अपने शासनद्रष्टा की खोज की क्यूँकि वही मुझे ज़िंदगी जीने का सही मतलब समझा सकते थे और मुझे अपने गीतार्थ शासनद्रष्टा मिल भी गए और मैंने अपनी ज़िंदगी की न्यू जर्नी शुरू भी कर दी, अब तो मुझे बेसब्री से इंतज़ार है बेनकाब **2** के आने का....

जिस नकाबी ने ये बुक लिखी है और जिन्होंने हम तक इस बुक को पहोचाई है उन सबको मैं दिल से धन्यवाद कहना चाहूँगा। अंत में बस इतना ही कि मेरी बिखरी हुई ज़िंदगी को सही रास्ता दिखाने के लिए बहुत बहोत धन्यवाद । ये किताब मुझे जैसे सच्चे हीरे को मैंने पाया है ये ऐहसास करवाती है ।

- आपका बेनकाबी

BENAKAAB-1 : Arriving Soon :

In English Language

- Nakaabi